CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आर्द्रा पुष्ये च वैकुंठे पैत्रे ऽथ -त्रिविधा त्रिषु
मैत्रे मूले ऽर्क जयोः शस्तं इन्धन संग्रहः।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ऽेकादशेराकुञ्चषष्ठेकादशसनि नषष्ठेकादशेभौमसर्वारिष्टनिवारयेत् १ मन्त्रौ छुक्तुधौयस्यधर्मे...
स्पति दृष्ट्वौभृंगारकोयस्यसजातकुलदीपकः २
...रो प्रातकाल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0 Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सिद्धिश्रीगणेशा
यनमः॥ [illegible]का॥ उ
यमेकदंतगणनाथ
गजेंद्ररूपंसिंदूरधूरि
धवलंचक्रत्रिमल्लदं
डं॥ संसारसिद्धिकरु
णायभवसागराय॥३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तंजयतगणपतिमहंप्रनामिं ॥१॥ दोहाछंद ॥ वंदिविस्नविधिशंभुगुरगण
पवासिनीविंध ॥ जथासुमतिशंभूकरिवभाषाजोतिषसिंध ॥१॥ वंदिभूमिसुत
शुक्रगुरबुधशनिसिंहकनंद ॥ जगआधारजेलोकमनिवंदौंसूरजचंद ॥२॥ वंदौं
पुनिदेवज्ञसवकेसवमेचकनाथ ॥ महिपतिगर्गअनंतपुनिआरयनिचोवन
काथ ॥३॥ लल्लवराहवनारसीजतीजवनसुरसंत ॥ वीठलहूरघुवारपुनिआप
तिरामसुमंत ॥४॥ वंदौंतिथिदिनचौथिशनिसुभसुदिफागुनमास ॥ अष्टादस
शतआठपुनिसंवतवृषभप्रकास ॥५॥ ग्रंथरूपसागरसरसतीनप्रकारचदाव
॥ सरगतरगवडवाअनलनागामतमुनिगाव ॥६॥ अरथनीरगंभीरअतिरतन
छंदबहुभांति ॥ जासुमालउरकंठकरिनरतनपावेकांति ॥७॥ सोसागरआ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा.मू.०

गरगुननिपैरनहारकौन॥ कोविदमतमारगसुगमनीरजानसुषभौन॥८॥
सोमारगभाषाकरिवयहमेरीअतिअरत॥ समुअहुसकलबुआवशमिछमहु
सजदेवत॥९॥ कूपवापिकानीरअतिइत्तरपावैकोर॥ तातेंकीहूतडागजलजु
षीसुषारीहोइ॥१०॥ काव्यछंद॥ शाकेकेधरिअंकअंकरवितातिहिमिलावै॥ रह
रेसाठिसोभागदषिनसंवतसरआवै॥ आनंदसकोचहैजोरिनैनोतिहिपुनिदी
जे॥ वरतमानसंवत्तगनितगनिशंभूलीजै॥११॥ इतिसंवतसरप्रापति॥ सो
रठा॥ तिहतरी॥७३॥ वरषकोसाकप्रकासी॥ बारह॥१२॥ जोरेभएसत्रहसौपचा
सी॥१७८५॥ साठिहरैवचपाच॥८०॥५॥ पाचमेनौमिलि॥९॥ चौदहविग
तमानभौवृषभशंभुपंइहै॥ गनिसुकह॥१२॥ इतिठरा॥ग्रंथारंभ

गो

संवतप्रभवप्रजापति॥ प्रभवविभवशुक्लप्रमोदप्रजापतिहैऋ॥ अं
गिरश्रीमुखभावयुवाधाताईश्वर॥ बहुधान्यप्रमाथिविक्रमवृषचित्रभा
नुस्वभानु॥ तारनपार्थिवव्ययएविंसिब्रह्माकीजानहु॥ १२॥ इतिब्रह्मवीसी॥

प्रभव	विभव	शुक्ल	प्रमोद	प्रजापति	अंगिरा	श्रीमुख	भाव	युवा	धाता	ईश्वर	बहुधांन्य	प्रमार्थी	विक्रम	वृष	चित्रभानु	स्वभान	तारन	पार्थिव	व्यय	इतिब्रह्मवीसी प्रथम १
सर्वजित	सर्वधारिन	विरोधी	विकृत	खर	नंदन	विजय	जया	मनमथ	दुर्मुख	हेमलंबी	विलंबी	विकारी	सर्वरी	प्लव	शुभकृत	शोभन	क्रोधी	विश्वावसु	पराभव	इतिविष्णुवीसी मध्यम २
प्लवंग	कीलक	सौम्य	साधारन	विरोधी	परिधावि	प्रमार्थी	आनंद	राक्षस	नल	पिंगल	काल	सिद्धार्थ	रौद्र	दुर्मति	दुंदुभि	रुधिरउद्गारी	रक्ताक्ष	क्रोधी	क्षय	इतिरुद्रवीसी अंत ३

सर्वजीतसर्वधारिविरोधिविकृतखरनंदन॥ विजयजयमन्मथदुर्मुखहेमलंबि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गन॥ विलंविविकारिसर्वरीपलवसुभकृतअरुसोभन॥ क्रोधीविस्वावसुपराभव दि
सवंसिभन॥१४॥ इतिविस्नवीसी॥२॥ पलवंगकीलकसौम्यसाधारनसुविरोधि
पुनि॥ परिधावीसुप्रमाथिआनंदराक्षसनलसुगुनि॥ पिंगलकालसिधार्थरौद्रदुर्म
तिदुंदुभिअरु॥ रुधिरउद्

प्र	अं	ई	चि	सर्व	वं	हे	प्लु	प	स	पिं	दुंदु	०१	संवत सर
वि	धी	वहु	स्व	सर्व	विं	वि	सो	की	प्र	का	रु	०२	परिवत सर
सु	भा	प्रम	ता	वि	ज	वि	क्रो	सो	आ	सि	र	०३	अनुवत सर
श्री	यु	दि	पा	वि	म	स	वि	सा	रा	रौ	क्रो	०४	[illegible]
शुजा	धू	जु	व्य	प	दु	प	प	वि	न	उ	नु	०५	[illegible]
जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	जुग	इति जुग	
वि	ब्र	रु	श्री	वि	अ	पि	वि	चं	रुद्र	ब्र	भ	इति स्वामी	

गारिरक्ताक्षक्रोधीउक्षयअरु॥१५॥ सोरठाछंद॥ नक्षयवीसोनाम
॥ सिववीसीयहजानिये॥ संवत
साठिप्रनाम॥ विधिहरिहरशंभु
भजहु॥१६॥ दोहाछंद॥ एसंवत
सरसाठिसवसुरगुरमध्यमरासि॥ मकरांतहोहिवृहसपतितरप्रभवादिप्रकासि

ज्यो॰सिं॰
३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥१७॥ चौपाई छंद ॥ इहि विधि जो संवतसर होइ । यह विचारि आगे लै सोइ ॥ ताते
मन संदेह मिटाइ । होइ सुख जिमि त्यार यपाइ ॥ १८ ॥ क्रम करि कै गनना गनि होइ । मा
घ मास मास निमेष सोइ ॥ प्रथम धनिष्टा कौ पर पाइ । ताके सुर गुरु उदा करा इ ॥ १९ ॥ नहा

१	२	३	४	५	गनना	
संवतसर	परिवतसर	अनुवृतसर	इदवतसर	दिवतसर	संज्ञा	
अ	भा	चं	ब्र	पा	स्वामी	
मा	व	क	कं	व	म	रासि
मं	मि	ति	तु	ध	कुं	रासि
वसंत	ग्रीषम	वर्षा	सरद	हेमंत	सिसिर	रितु

लोक हित कारन सोइ । आदि प्रभव संवत तो होइ ॥ इहि प्रकार
सो उतपति राषि । जोतिष सिंधु शंभु ज्यों भाषि ॥ २० ॥ दो
हा ॥ प्रभादि पाच संवत गनो होइ सु ता सु जुग येक संवतसरादि
जुग बारह बुध जन कीन विवेक ॥ २१ ॥ तिन के बारा होइ जुग प्र
भवादिक क्रम जान । कहिहौ अब जुग देवता जिहि मुनि निगम वि॰३
बखान ॥ २२ ॥ रोला छंद ॥ विष्णु ब्रहसपति इंद्र अग्नि विसकरमा जानो । अहिर्बुधन्य
हा पितर विश्वदेवा सासि जानो ॥ इंद्र अग्नि पात एक अस्विनी देव भगु राष ॥ ए जुग वा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राशंभुक्रमरिकरिस्ग्रहपतिभाषे॥ २३॥ इति युगाधिपति॥ संवतसर प्रथम॥ दूज
परिवत्सर होई॥ अनुवत्सर पुनि तीज॥ चौथ इदवत्सर सोई॥ पुनि दिववत्स
र पाच॥ जासु पूरव पद आहे॥ एक एक इनि परेवार हा जुग अवगाहे॥ २४॥ दोहा
॥ क्रम करि इन पाचोनि के स्वामी कहौ वषानि॥ अग्नि भानु ससि विधि सिवा अग्र

सिसिर	वसंत	ग्रीषम	देवादिवस उत्तरायन
वर्षा	सरद	हेमंत	देवरात्रि दक्षिनायन

क्रम करि एजानि॥ २५॥ पद्धरिया छंद॥ मकरादि रासि स्वर जं
उ दोत॥ जगत विदित रितु छह होत॥ मकर कुंभ ससि सिसिर कहं
त॥ मीन मेष होउ वसंत॥ २६॥ ग्रीषम सु पुनि मिथुन रवह॥ करक सिंह वरषा हूं सुरह
कंन्या तुला हू रितु सरद सोर॥ ब्रसीक चाप हेमंत होइ॥ २७॥ इति रितु॥ चरन कुल
कछंद॥ सिसिर वसंत हु ग्रीषम सोई॥ देवादिवस उत्तरायन होई॥ वरषा सरद हेमंत
वषानौ॥ देवराति दक्षिनायन जानौ॥ २८॥ अथ तारा दिसायन॥

११	१२	१	२	३	उत्तरा
४	५	६	७	८	९ दक्षि

ग्रहारंभ प्रासाद आरंभ॥ देवप्रतिष्टा करियें थांभ॥ पुनि प्रवेस मूड़ने॥
स

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विवाह मोजीबंधनादिकउतसाह ॥ २९ ॥ मंगलकारजकरशुभकारज । कहिउजायपनमेंजा
चारज । निंदिककाजअमंगलजेते । करियइहितजायपनमेंतेते ॥ ३० ॥ [illegible]

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	[illegible]	[illegible]
अंस	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	[illegible]	[illegible]
दिन	१	२	३	४	५	६	७	८	२	३	४	५	६	७	८	[illegible]	[illegible]
नक्षत्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	[illegible]	[illegible]

नकारजे । गनियअमावासितेनुअमावासि । चंद्रमासतोइहिविधिपावसि । सूरजरासितेजो
गवेजोलो । तिहिसंक्रांतिनामकहितोलो ॥ ३० ॥ संक्रांतिहितेलेसंक्रांती । तोगनिसोरमा

चै	वै	ज्ये	आ	सा	भा	का	का	अ	पू	मा	फा	मास
मधु	माधव	शुक्र	शुचि	नभ	नभस्य	इष	ऊर्ज	सहः	सहस्य	तप	तपस्य	नाम
चि	वि	ज्ये	पूषा	श्र	पूभा	अ	कृ	मृ	पु	म	पूफा	नक्षत्र
विस	कुंडु	इंद्र	जल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र	गुरु	[illegible]	सूर्य	[illegible]

सइहिभांती । एकदिनातेगनिदिनतीसा ॥ सावनमहिनाकहैमुनीसा ॥ ३१ ॥ अमुनिअ
दिरेवतीप्रजंता । तहाभोगचैरोहिनिकं
तो इहिप्रकाररिमासनछत्रा संन्वि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१

राशंभुक्रमरिकरिश्रयपतिभाषे ॥ २३ ॥ इतिजुगाधिपति ॥ संवतसरप्रथम १ हूज
परिवतसर २ होई ॥ अववतसरपुनितीज ३ चौथजदवतसर ४ सोई ॥ पुनिदिववतेस
रपाच ५ जासुपूरवपरब्याहे ॥ एकएकरविपरेवारहाजुगअवगाहे ॥ २४ ॥ दोहा छं
द ॥ क्रमकरिरनपाचोनिकेस्वामीकहौवषानि ॥ अग्निभानुससिविधिसिवाअरु
सिसिर वसंत ग्रीषम देवदिवसउत्तरायन क्रमकरिएजानि ॥ २५ ॥ परजुलियछंद ॥ मकरादिरासिसरज
वर्षा सरद हेमंत देवरात्रिदक्षिणायन उदोत ॥ जगतविदितरितुछहहोत ॥ मकरकुंभसिसिरघकह
त ॥ मीनमेषदोउवसंत ॥ २६ ॥ ग्रीषमसुपुनिमिथुनवृष ॥ करकसिंहवरषाहुसु
कंन्यातुलाहुरितुसरदसोइ ॥ ब्रसीकचापहेमंतहोइ ॥ २७ ॥ इतिरितु ॥ चरनकुल
कछंद ॥ सिसिरिवसंतहुग्रीषमसोई ॥ देवदिवसउत्रायनहोई ॥ वरषसरदहेमंत
वषानो ॥ देवरातिदछिनायनजानो ॥ २८ ॥ अथगारदिरायन ॥ ११ १२ १ २ ३ ४ ५
ग्रहारंभप्रासादअरंभ ॥ देवप्रतिष्टाकरियेशंभु ॥ पुनिप्रवेसमूडनो ६ ५ ६ ७ ८ ९ १०
स

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विवाह मोजीबंधनादिकनसाह ॥ २८ ॥ मंगलकारजकरसुभकारज ॥ कहिउद्यापनमेंत्र्या
चारज निंदिककाजअमंगलजेते ॥ करियदक्षिनायनमेंतेते ॥ २९ ॥ इतिउद्यापनदक्षिनाय

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अंस	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिन	१	२	३	४	५	६	७	८	२	३	४	५	६	७	८	२	३	४	५	६	७	८	२	३	४	५	६	७	८	०	[illegible]
नक्षत्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	०	०	०	[illegible]

नकाजं ॥ गनियअमावासितैंसुअमावासि ॥ चंद्रमाससोइहिविधिपावसि ॥ सूरजरासिभो
गवैजोलो ॥ तिहिसंक्रांतिनामकहितोलो ॥ ३० ॥ संक्रांतिहितेंले संक्रांती ॥ तोगनिसोरमा

चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पू	मा	फा	नाम
मधु	माधव	शुक्र	शुचि	नभ	नभस्य	इष	ऊर्ज	सह	सहस्य	तप	तपस्य	नाम
चि	वि	ज्ये	पूषा	श्र	पूभा	अ	कृ	मृ	पु	म	पूफा	नक्षत्र
विस	कुंडि	इंद्र	जल	हरि	अजैपाद	पुस	अग्नि	चंद्र	गुर	पितृ	सूर्य	मासाधिपति

सइहिभांती ॥ एकदिनातेंगनिदिनतीसा ॥
सावनमहिनाकहेंमुनीसा ॥ ३१ ॥ चलुनिअ
दिरेवतीवजंता ॥ तहांभाजवेरोहिनिकं
ता ॥ इहिप्रकारकरिमासनछत्रा ॥ सांभवि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तम० ५

दितजगतसरवेवा॥२२॥इतिवतुर्मकारमाम॥आभ्यउदकअरुपजैदेवा॥रविमासरि
मैएकरिलेवा॥पितकाजससिमासविभागा॥सावनमासहोमअरुजागा॥२३॥मासन
षतजोकहोविचारी॥एतेकारजहैफलकारी॥सवव्रतारिसंजमअरुनेमा॥इनिकौ
करैहोरसुषछेमा॥२४॥इतिमासकार्जकरन॥मधुमाधवहसुक्रसुत्चिजानो॥नभ
नभसपुनिरस्तवषानो॥ऊरजसहसहस्यगनिलेहू॥तपतपस्यचैतेक्रमदेहू॥२५॥इ
तिचत्रारिद्वादशमास॥भुजंगप्रयातछंद॥तिहीमासकोजानहूनाउसोई॥जिहीना
उकोहोरनह्तत्रजोई॥अहेतासुनह्तत्रकोजोउस्वामी॥गनौतासुहीमासकौईसना
मी॥२६॥इतिअधिपतिनाम॥कुंडरियाछंद॥जानोवितकरमवहुरिरुद्रअग्निउरह
त॥उदकविस्वअजपाद्सिववहुरिअस्वनीपूत॥वहुरिअस्वनीपूतअग्निनिसिक
रगुरदेवा॥पितरभागुक्रमचैत्रमासवारहगनिलेवा॥एनछत्रपरिनामनामअ
धपतिसुवषानौ॥शोभपंडितगपानमानसमुझियकरिजानौ॥२७॥इतिमासाधि
पति॥दोहाछंद॥रूस्मपह्यगनिपितरकरदेवहिकरासितपह॥मंगलकारजउछे

ज्यो०सिं० ५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ष्टुअमध्यमरूसग्रतन्न॥ १८॥ इति शुक्लकृष्णपक्ष॥ इतिश्रीमत्पंडितसिंहरामनरश्रीमं
मूविरचितायांज्योतिषसिंधुग्रंथमच्चदावसैनंतसरप्रकरणप्रथमतरंगः॥ १॥ हेस
छंद॥ विधिब्रह्माविसजमच्चंडघटवटनसुसुरेसा॥ वसुअरु विषधरधर्मञ्जोरगो

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	इति तिथि
ब्र	ब्र	वि	ज	चं	ष्ट्रा	इं	व	ना	स	इं	सू	म	क	ति	इति अधपति
अ	बु	पा	ग	ना	श्री	रू	म	उ	ज	खि	ति	[illegible]	ई	चं	इति [illegible]
नं	भ	ज	रि	पू	नं	भ	ज	रि	पू	नं	भ	ज	रि	पू	[illegible]
शु	बु	मं	स	ग	शु	बु	मं	स	ग	शु	बु	मं	स	ग	[illegible]

शीसदिनेसा॥ मदनकपिलसुनि
कहौविवस्वेवाहुवघानो॥ परि
मातिथिदेश्राहितिथिनिएवअ
धपतिजानो॥ १॥ दोहाछंद॥ ति
थिहिअवावसिकेतहाअधपतिपितरवघान॥ अधपतितेरासितीजंकेधनादस्वामी
ज्ञान॥ २॥ तिथिअधपति॥ पद्धरीछंद॥ अग्निब्रह्मगोरीगनेस नाग

३	१३	३०	इति तिथि
स	ध	पि	अधपति
पा	म	०	[illegible]

स्वामिकार्तिकदिनेस॥ सिवदुरगाअरुजमविस्वदेव हरिकामासिव
ससिप्रत्याधिदेव॥ ३॥ इतिप्रत्याधिदेव॥ हद पहाछंद॥ परिमाछठिएकादसीतिथिनं
दाजानो॥ दोजसप्तमीद्वादसीभद्रासुवषानो॥ तीजअष्टमीतेरसीतिथिजयाप्रमानो॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पृ० ६

श्री

चौथिसुनौचौदसीरिक्ताउनमानौ ४ पांचैदसमीपूर्निमापूनीतिथिहोई
इनिपरिरिषसवपाचहैभनिपांउतलोई प्रथमपाचउत्तमगणोपाषहिअधियारे
प्रथमहिपाचकनिष्टहेपाषहिउजियारे ५ मध्यमपांछेपाचहैवरिसुरिमे

१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	कृष्ण
नि	नि	नि	नि	नि	म	म	म	म	म	उ	उ	उ	उ	उ	तत्व
१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	शुक्ल
उ	उ	उ	उ	उ	म	म	म	म	म	नि	नि	नि	नि	नि	तत्व

सोईहेकनिष्टउत्तमतहांगनिलेष
मदोई पाचअधमनिथितेसहीतै
सौफलजानौ कृष्णशुक्लविपरीत

उत्तमअधमनिष्टस्थानि दोहाछंद मंगलिपरावला
सोगनिशंभुवषानौ ६
षलालछमीवतीवषानि जसामिनाव
लामहतिउग्रकर्मपुनिजानि ७ धर्म
निनंदाजसोवातिजयासुउग्रासोम्य
जयानामफलदोम्य ८ तिथिदेवतानामसंज्ञा पत्रवेगमछंद चित्रलेषमां
गलसुउत्तसववषानिये वेतारिक्तविकर्मवाहिवाजानिये नृत्यगीतवाद्यादिसु

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तिथिदेवता

[illegible] नंदा [illegible] भद्रा [illegible] जया [illegible] रिक्ता [illegible] पूर्णा

ज्यो० ति० ६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विद्यारंभहै ॥ औषधिसिल्पसुकर्मवास्तुनंदाकहे ॥ ९ ॥ इतिनंदातिथि ॥ अलंकारगृहस्था
हज्ञातसुकराइये ॥ गाडीगाडीकर्मसुमारगठाइये ॥ सांतिकपौष्टिकचडुरिथंभुकादेउ
जोरै ॥ सम्भुमितु एतेकाजसुभद्रातिथिकरै ॥ १० ॥ इतिभद्रातिथि ॥ २।७।१२ ॥ वमूरचनसं
ग्रामाविवाहविचारिये ॥ मध्यकर्मसवजंत्रसवोपरिताइये ॥ वाहिवाहनउजांवीनववा सु
इये ॥ एतेकाजजयाजिद्धिफलयाइये ॥ ११ ॥ इतिजयातिथि ॥ ३।८।१३ ॥ वंधनत्रासपुनिधा
तुकेरेसुघपाइके ॥ सस्त्रकर्मअरुअग्निसुरचरुक्नाइके ॥ कूरकर्मग्रहरंभभूमिनिधिगाडि
ये ॥ विषप्रयोगपुनिजानिसुरिक्तामांडिये ॥ १२ ॥ इतिरिक्तातिथि ॥ ४।९।१४ ॥ मंगलउत्
सवलग्नविवाहैकीजिये ॥ सौम्यकाजआनंदजानचितदीजिये ॥ पौष्टिकहूअरुचाहि
समृद्धिकरिलीजिये ॥ पूर्णा एतेकाजकरे इच्छीजिये ॥ १३ ॥ इतिपूर्णातिथि ॥ ५।१०।१५ ॥
अवालिअमावसिमांहियेत्रकारजकरै ॥ करैदानअरुन्हानजापुजपुउरधरै ॥ शंभूएते
काजअवावासिकीजिये ॥ जहलौहैसुभकाजसमृभितजिदीजिये ॥ १४ ॥ इतिअमा
वसिकातिथि ॥ अथपंचकोरसीजोगजोअमपरे ॥ मघाहस्तनक्षत्रसूरनउदोकरे ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा॰मु॰

म

तौगयपछायानांसुउत्तमपुंन्यहै॥ पर्वनिसाधविसेषिसुफलदसगुंन्यहै॥ ७५॥ अतिगय
छाया॥ गुजरसनकदा॥ वदिभादछठिव्यतिपातहै॥ करोहिनीसनितातहै॥ तौक
पिलषष्ठीनानहू॥ तिथिपुंन्यदानस्नानहू॥ ७६॥ अतिकपिलषष्ठी॥ मंजाकेदा॥ सुक

मा॰	८	ह	रा	रु	[illegible]
[illegible]	[illegible]	र	म	म	[illegible]
फाल्गुनि	[illegible]	[illegible]	श्र	[illegible]	[illegible]

लपक्षकातिकतिथिनौमीकृतजुगकीसाआदिकही॥ सुक
लतीजवैसाषमहीनात्रेताकीउतपत्यसही॥ माघमहीनाति
थिसुअमावासिद्वापरकीअकलादितही॥ भादौकृसपक्ष
तिथितेरसिकलिजुगकीपुनिआदियही॥ ७७॥

अतियुगादि॥ एजुगादिकीतिथिहे
चारौसोजुगादिविधिलेवसी॥ जौ
पैएकजुगधर्मकीजियेएकएकजुग
कौकरिकरनी॥ तौपैएकतिथिहोए
भातिशहिवेदपुराननिवरनिकही

मन्वादि-चक्र

शुक्लमास	चै	वै	ज्ये	आ	सा	भा	क्वा	का	अ	पू	मा	फा
मन्वादि	१५	३	१५	१०	०	३	९	१२	०	११	७	१५
कृष्णमास	चै	वै	ज्ये	आ	सा	भा	क्वा	का	अ	पू	मा	फा
मन्वादि	०	०	०	८	व३	८	०	८	०	०	०	०
शुक्लमास	का	वै	कृष्णमास			भा	मा	०	०	०	०	०
युगादि	९	३	०	०	०	१३	३०	०	०	०	०	०

गो॰ सिं॰
७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गेऽशुन्नुभादिमध्यफलसोईकुनिवानीजगछारहही ॥१८॥ अथतिथुभादितिथिपुंन्यफलं ॥ सु
सुनिमाससुक्लातिथिनौमीकातिकसुक्लाद्वादसिधा ॥ तीजसुक्लवैसाषहिकेरीआदोकी
सुक्लातातिथा ॥ सावनवहुलाछमीअमावासे एकादसीपससुकली ॥ दसमीसुकला

संक्रांतिषु	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
दग्धतिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
पक्षरंध्रतिथयःत्याज्य				४	६	८	९	१२	१४	३०		
असुभत्याज्यघटिका				८	९	१४	२५	१०	५	०		
पक्षरंध्रसुभ		.	१	२	३	५	७	१०	११	१३	१५	०

मासअषाढमाघीसातेसुक्लभली ॥१९॥ भा
द्रपदीकृस्नाछमिरोहिनिजाठकृस्नअजा
ढीलसी ॥ कातिककृस्नपक्षकीआठफगुन
कृस्नासनिपंचदसी ॥ चेतजेठकीपूनोएति
थिघोसहमनंतगहिकहे ॥ एकेएकसनंतपुंन्यजोए
तिथ्यतोपुंन्यफलहे ॥२०॥ अथमन्वादिजुगादितिथ्याह
दौजदसैतिथिवराजिकेनवेअमावासिलेहि ॥ पक्ष
छिद्रसमतिथिआनौसुभकारजनकरोहि ॥२१॥ अथपक्ष
रंध्रअसुभ ॥ नवेअमावसिवराजिकोद्वितियादसमी

मेषादिराशि	मे	वृ	मि	क
भौमादितिथयः	१	२	३	४
सिंहादिराशि चंद्रग्रह	सिं	कं	तु	वृ
षष्ठ्यादितिथयः	६	७	८	९
धनादिराशि पापग्रह	ध	म	कुं	मी
एकादश्यादितिथयः	११ ३०।१५	१२ ३०।१५	१३ ३०।१५	१४ ३०।१५

श्रुति४ घटी६ वसु८ नव९ भानु१२ मनु१४ एतिथिअमावस्यामेल
वसु८ नव९ मनु१४ पचीस२५ दंत३२ पघटिकातजिदेत १ रतिघटिकात्याज्य

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा॰मु॰
३

तीजपड्वरंध्रशुभविषमतिथिमंगलकाजकीज ॥२२॥ इतिपक्षरंध्रशुभा ॥ नीलाव
तीछंद ॥ होतजअदितिथिअंतरएकैरासिभानुतिथिदग्धासुहोइ ॥ जुगमाजुगमसी
नधनदग्धा वृषघटमेषकरकरहुतुनिसोइ ॥ कंन्यामिथुनसिंहपुनिवृश्चिकतुला
मकरदग्धाअसुभआहि ॥ विधवाहोइसुनारिविवाहैनि
श्चयमरेसुजावहीजाहि ॥२३॥ इतिदग्धातिथि ॥ काव्य
छंद ॥ परिमादेमेषादिरासिपाचैलगिजानौ ॥ छठितिथितैरसिहादिचंद्रइनिदसलिगिठानौ ॥ ग्यासिधनादिकचारिपनोअमावासे
लागे ॥ पापयहजिनिरासितेतिथिअसुभगनित्यागे ॥२४॥ इतिअनुमतीरा
पनौ ॥ दिनसासउवैनामअनुमतीसुपावै ॥ रातिचंद्रजोवैनुराकानामकहावै ॥ चं
द्रअमावासिदीसनामतेकुहूसुजानो ॥ कलपसेघसासिलाषिहितौसनीवाल्य
वषानौ ॥२५॥ इतिपनोअमावासितिथिनाम ॥ दोहाछंद ॥ परिमाछठेनवेंअ
मारदधावनकरनाहि ॥ नसेजातिकुललछमीजोदानैनिकराहि ॥२६॥ इतिद

दिनचंद्रउदित	१५	अनुमती	नाम
रातिचंद्रउदित	१५	राका	नाम
चंद्रदृष्ट	३०	कुहू	नाम
चंद्रनष्ट	३०	सिनीवाली	नाम

जो॰सिं॰

नथावनवर्ज्यं ॥ दसमी दोजनत्रयोदसी करैं अंगअभ्यंग ॥ इहिकामरत्तिचित्र अनुभक
रहिपुत्रकौभंग ॥ २७ ॥ इतिअंगअंवटनवर्ज्या ॥ नष्टकलासाजेनवैजौ इनिसंपत्तिदेष
॥ बरजनी कच्छस्नानहैकौमहादुषलेष ॥ २८ ॥ इतिस्नानवर्ज्यं ॥ स्नानकरै ॥ छ
ठितेलअसननकी जियै ॥ पलअष्टमीतजिरीजियै ॥
छोरकर्मनचौदसी ॥ विपरैमैनअमावसी ॥ २९ ॥ आपु
आपनिछयचहे ॥ इनितिथिनिकरिकैतौलहे मुनि
नाथजेसोवोलियो ॥ सोसब्भुभाषाबोलियो ॥ ३० ॥ इति
तिथिकर्मदोष ॥ रविवारकोव्यतिपातहे ॥ साधरदिन
संक्रांतहे ॥ एकादसीउपवासहे ॥ दातौनिकियकुलना
सहे ॥ ३१ ॥ इतिदंतधावनवर्ज्यं ॥ सिषाकरै ॥ जलफ
ललोनघारीसुमदुदधितेलऔराहोइ ॥ आमिष
मुषधारीअहसुधारीजानोअनाजआहारसोइ ॥ कस्तूरीभयासुअरुछोरकर्मसुनय

१	६	८	३०	०	०			दातौनिवर्ज्यं
४	७	८	०	०	०			श्रुखानवर्ज्यं
६	[illegible]	७	३०	६	०			तिथि
हिओं	गमा	द्धा	रति	७	०			वर्ज्यं
र	सौ	ए	०	०	०			संजोग
धा	दा	धं	०	०	०			दातौनिवर्ज्यं
१	२	३	४	५	६	७	८	तिथयः
ज	फ	लो	छाम	६	ते	श्रो	म	कवर्ज्य
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	तिथयः
दं	ए	थं	क	भ	श्रो	मे	मे	कावर्ज्य

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नक्षमे परिमादि पूनों अमा नो कराहि दें ये असुभ तिथि पाप मम ३२ इति कांजेव
मा। चरनकुलकठैर एकवार तिथि अंतजु पावे सुतो श्रीम दिन नाम कहावे जो
पावे तिथि को अवसाना सुतो त्रिदिन स्व नाम वषाना ३३ इति श्रीमत्रि दिन।
राहोक्त मंगलकाज अनिष्ट है ग्याचा
रज पह भाष तेरीमत शंभू कहे भाषावि
धि करिराष ३४ इति मंगल कान वर्ज्या
ं। दर्षी आठै दीप अमोदसी च
लस्मा ष्टमी सु दुरगा नोमी व लिसा वित्री कृतो सनी जु गादि दोउ
जो प्रक्रौं नि ये। दुरगा आठै गनेस चौथि हल षष्टी सिवरात्रि त्रयोदसी कसंग
षहिले मानिये वेदनिमत दृष्ट दृष्ट पहिलै तिथि करी क्षै स्मुनि निसातो लीजे सदा
प्रमान हानि ये ३५ इति तिथि पर्व षंड चौपई छंद। जे सुति तिथि कोती
निमहूर्त सरंजनहा भोग इपूर्त अत्तमान घटिका षटमान तो तिथि धर्म का

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जंमेजांन ॥ २६ ॥ दोहा छंद ॥ जागवलकि स्मृति के हृदय हृसु विचार विचारि ॥ आरंभि
स्व रवि चवन ए सम अहु सम अनहार ॥ २९ ॥ उदय होत जानि ध्यं के दिवस नाथ गुन पर्म ॥ सो
तिथि सूभ कहत सब ब्रह्मा नाथ यन सुकर्म ॥ ३० ॥ इति श्री मत्पंडित मिश्र नमनजीवन कवि
विरचितायां ज्योति जालिधु प्रथम बटा वति चित्र के द्वितीय तरंग ॥ २ ॥ दोहा छंद ॥ ईस
सिवा षट्वदन हरिजी वइंद्र अरु काल ॥ क्रमसो एअधिपति गनो आदिहि दिन पाल
ज ॥ १ ॥ सूर्य ससि मंगल अरु बुध गुर सुक्र अरु सनिवार ॥ तातवार के ईस ए अवप्रत्याधि उचार
॥ २ ॥ इति वार स्वामिन अधिपति ॥ अग्नि उदक छिति विसनु नि इंद्र सची विधि जान ॥ ए प्र

रवि	सोम	भौम	बुध	गुर	सुक्र	सनि	वासरेषु
ईस	पार्व	षण्मु	विसनु	गुर	इंद्र	काल	अधपति
अग्नि	जल	भूमि	विसनु	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	प्रत्याधिदेव.

त्याधिक देवता सुर जनें क्रम ठान ॥ ३ ॥ दोहा छंद ॥ ना इति प्रत्याधिदेवत
चान्नृप अभिषेक कर्म कंचन अरु तामा ॥ सेवा पाव
के कर्म का ष्ट अरु धर्म संग्रामा ॥ मंगल सुरभी काज मंत्र साधन अपसेवा ॥ दैनो लैनो सत्व
कर्म शवि रिवसक सेवा ॥ ४ ॥ इति रविदिन कार्ज ॥ हरिगीता छंद ॥ द्रकमलमानिक के
निक रूपो रतन मोती संग्रहे ॥ कृषि पान भोजन वस्त्र त्रिय पुनि गीवाद्य सुनृत्य पै है ॥ म

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

षडरक भूषन छीर पुनि सिषरिनिरसालविकार है॥ पुहुपवेस्या पस्वादि गौ स्वं गि
थ्य रंभन सिवारहै॥ ५॥ इति सोमदिनकाजं॥ विषअग्नि चौरि भेदअनृतपसहुवंधन
घात है॥ रनडिंभवादप्रपंचकीजै नानासुधातु आगर धातहै॥ सैन्यरचना कर्म सुवरन प्रवा
लअदिक विस्तरै॥ एकाज शंभुसिद्ध है जो काज मंगल मे करै॥ ६॥ इति मंगलदिनकाजं॥
नानाकलासाधन क्रिया अध्ययन ज्ञान विज्ञान है॥ वरचित्र अक्षर लिप्य लेषनि काष्ट अ
पधान है॥ धातुक्रिया काचन युक्ति संधिवाद साधन व्याम है॥ पुनि सास्त्रचरजा विविधि
सेवा बुधवार एते काम है॥ ७॥ इति बुधदिनकाजं॥ मंगल्य कांचन वस्त्र मंदिर ज्ञात जान
तुरंग है॥ भैषज्य वैद्यक वहुरि नाना विभूषन मातंग है॥ संवधर्म कारजसो तिपोष्टिक
जपविद्यारंभ है॥ सुरमंत्रि दिन एकाज करू है वगपमत करह शंभ है॥ ८॥ इति गुरदिनका
जं॥ नृतगीत वाद्य सुसयन सिज्या प्रथम त्रिय सौ रति करै॥ मनिपरम राग हुरत्न मुक्ता
रुधी भंडार भै रै॥ गौ काजं चंदन वस्त्र मंगल उत सव अलंकृत कर्म मही॥ पानि हाट सुवा
टिका कय विक्रय कवि दिनसही॥ ९॥ इति भृगुदिनकाजं॥ विषपापलोहो सत्वक ज्यो० सि०
१०

मे प्रवेस मये हवनाइये ॥ सीसोपधान सुदासि पीन रिक्त रवमे सुताइये ॥ वाद्यारि सेष
गर्ग लरी छुयां कर्म अस्थिर लीजिये ॥ एते सनी चरवार मे सो काज शुभ कीजिये ॥ १०
तिसनिरनकामे ॥ दोहा ॥ रवि थिर ससि चर उग्र कुज मंगल मित्र लघु गुरु सम भृग
मदु सनी छिन भानु सुत करु सुभाव सो काज ॥ ११ ॥ अथ तैलाभ्यं ॥
रादितैला ॥ मरहट्ठा छंद ॥ रवि तैलाभ्यंगा करहि सुअंगा जुरसं
ताप जनाइ ॥ ससि दिन छवि उज्जल भ्रतु सुमंगल लछमी वे
हु मिलाइ ॥ भृगु विपति प्रकासे गुर धन नासे सनि पावे स
भोग ॥ ससि बुध सनि पावे तेल लगावे नासे तन के रोग ॥ १२
॥ दोहा छंद ॥ रवि मंगल संक्रांति उ तिथि वेधति अरु व्यतिपात ॥ अष्टा छठि तिथि त्यागनि
पे तेल न लावे गात ॥ १३ ॥ चंद्र पर्व को वर्जिये अरु सूरज की पर्व ॥ पित्र दिवस उ
नि वर्जिये कहे जोतिषी सर्व ॥ १४ ॥ अथ तैलाभ्यंग ॥ भौम नक्षत्र सत तारिकादि
तियान वर्मा जान ॥ दोहा ॥ रवि वेध्य सो करहि न हिन्वरस्नान ॥ १५ ॥ अथ अन्न

वारेषु	र	चं	मं	बु	गु	भृ	स
संज्ञा	थि	च	उ	मि	ल	भृ	ती
वारेषु	र	चं	मं	बु	गु	भृ	स
तैलाभ्यं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तैलाभ्यंगवर्ज्य		र	मं	स	[illegible]	[illegible]	
तैलाभ्यंगवर्ज्या		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
११

नवती ... ॥ चौपदी ॥ अवहीं भाषों वार प्रवेस ॥ कहि आए मुनि नाइ कतेस
॥ सूर्य जो उदये पाछे सोइ ॥ सर्वकाल को उदयो होइ ॥ १६ ॥ लंका ते सु चली है रेष रेषापुर
ते वाध्यो लेष देसांतर की घरी बखान ॥ सूरज उदय होइ सो जान ॥ १७ ॥ इति सूर्योदय
कथनं ॥ रेषापुर को तुहां अंतरा जोजन कीजे ॥ जोजन चारन घटा इसे षके पल क
रि लीजे ॥ ते पल पाहि मनु रेष घटे पूरव मे सोइ ॥ पंडा ॥ घरी प्रमान रेस ध्रुव रहि विधि
होई ॥ वचे दिनार्ध ध्रुव मे घटे दिन प्रवेस दिवस हि चटे ॥ ते ध्रुव घरी वचे दिनार्ध मे दि
न प्रवेस निसि जो कहे ॥ १८ ॥ उदाहरन ॥ देसांतर सो कोस ॥ भए जोजन पचीसा
॥ तामे चरन घरी १ पल मे ॥ उनईसा ॥ पंडा ॥ घरि पल ॥ घटे सिद्ध ध्रुवा पह सोई
सोरा घरि फल ॥ भए तहां ... जोई ॥ लेके दिनार्ध जय अयो ध्रुवा दो घरि
पल ॥ उनईस वचा ॥ ऐती घरी सुर ह ... दिन ॥ गर प्रवेस शंभू विरंच ॥ १९ ॥
... ॥ दिन प्रमान की घरी सम्हु ... आधी क
रि लीजे ॥ ले दिनार्ध की घरी जो रिपे तालिस रीजि ॥ साठि घरी ते अधिक घरी जो

जो०कौ०
११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कछुप्रनिसोई॥ तितनोदिनकेचढे वारपरवेसनहोई॥ पूरेनपाइयेसारिकोदिनप्रवेस
नीसजेधरी॥ वारप्रवेसयहऔरविधिभाषागर्गउचरी॥ २०॥ इति वार प्रवेसन॥
चौपई॥ मीनकुंभअरुधनवृश्चिकमेष॥ कहीरासिएचारिविसेष॥ भुक्तहोइवासरको
जोलो॥ भोगेवारहेरविलोलो॥ २१॥ उत्तरकरकअरुतोलनि
चाप॥ इनिरासिनिदिनपैरविआप॥ वारभोगवेभरिअधरा
ति॥ मुनिदेवगपवचनइहिभाति॥ २२॥ सिंहमकरअरुमिथुन
कन्यारि॥ लसजरहेरासिएचारि॥ सर्वरातितोभोगेवार॥ कह्यो शंभुमुनिवरउचार॥ २३॥
इति वार भुक्ति॥ जिहिदिनकोग्रहउदेप्रमानि॥ उच्चदेसवलकहावषानि॥ तोनउपद्र
ग्रहोइविसेषि॥ कह्योजोतिविनियहमतलेषि॥ २४॥ जौपैग्रहउत्तंगनहोइ॥
निरवलअस्तजानियेसोइ॥ तोफलकारजहोइनिदान॥ करताअतिअसाधकजा
न॥ २५॥ सोमसुक्रबुधगुरएवार॥ सर्वकाजसाधकनुषसार॥ भानभौमसनिश्चरदिनती
न॥ सिद्धिनऔरकर्मफलहीन॥ २६॥ मंजिष्ठाकुसुंभअरुलाष॥ रविवासररसतंजन

मी	कुं	ध.	मे	उत्तर दिश[illegible]
ध.	क	तु	वृ	[illegible]
ति	म	मि	क.	[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आछे केलिवन्नसंरुतभोमविंचार लोहकर्मबलकरुसनिवार ॥ २७ ॥ इति वारकांजेमि
त्रिगिगलकोर ॥ रविदिनपहिरेवस्त्रंवगितोजीरनहोई चंदररहेजलभीजसोवभयमं
गलसोई बुधधनप्रापतिहोरग्यानसुरगुरउपजाई प्रियमिलापभृगुहोरमलिनसनि
रहेसदाई ॥ २८ ॥ इति वस्त्रधारनफल ॥ रविसनिमंगलवा
रछोरकरलोचनफूटे एक सात ७ अरुआठ ८ मासनि
हिआयुसटूटे बुधससिगुरभृगुवारशंभुएलिखिगुनका
टे पाच सात दस रुद्र मासआवरधावादे ॥ २९ ॥
इति छोरवमेफल ॥ वेलाछोर ॥ पाचै दिनकोछोरकमतिथिनछत्रनरहिवार राज
छोरशंभकहेोआनदमंगलचार ॥ ३० ॥ इति गजछोर ॥ छोरविषयअसउचारिउ
श्रीगर्गादिमुनीस पूरवरविवारुनउवैनदपिनमिंपाहीस ॥ ३१ ॥ इति गर्गमुनिव
चन ॥ वचनांगमहर ॥ बुधगुरभृगुशनिवारसुविद्याकोपढे पढेमनअभिलाषआ
रवलजौवढे मध्यमसुरराजवारचंदजरठूटता देषैसनिउजमतुगर्गमतगूटता ॥ ३२ ॥

र	च	मं	बु	बृ	शु	श	[illegible]
११	१०	८	१२	१३	१६	१४	[illegible]
श्री	ती	अ	म	ग्याप्रि	म	[illegible]	
१	८	८	८	०	०	७	आयुछीन मास
०	७	८	५	१०	नो	०	आयुवदेमा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इति विद्यारंभफलाफल॥ दूसर अर्ध सुपहर अर्ध प्रहेर तजो। मंगलकारज सकल आनि सुधको भजो॥ कुज शुक्र २ सुक्र तीय ३ चोथ ४ रविसनि ६ छठे सातें ७ सरबुध ५ पा च आठये ८ गुर पंछ॥ २३॥ तथा॥ वेदसालत अरु नेन तत गनि लीजिये। वसु गुन रस पुनि जानि समुझि करि दीजिये॥ रवितें लेसनि वार तहा क्रम राखिये अर्धजाम यह चक्र सुशोभ भाखिये॥ २४॥ इति अर्धजाम॥

अर्धजामचक्र								
र	च	म	बु	वृ	सु	स	०	वारेषु
४	७	२	५	८	३	६	०	अर्धजाम

सनितें रविलगि हुनि दिवस के जानिये। एक ऊनि करि देहु राति के आनिये॥ प्रहर चतुर्थ क अंस सु मुहूर्त कुलिक है। वरजनी कसु काज जाहि र सुलिक है॥ २५॥ इति कुलिकमहूर्त॥ मंजीछंद॥ चोदह रवि श्रुति अह वसु राबि वेद नोद २ करो २॥ सर जे ते सु अनु क्रम अंस उ मुहूर्त दिनहोर॥ चंद सुक सात सु मंगल उ रमहूर्ते निसि आही अस सुभ महूरत हैं तिथि अंस सकल सुभ कारज को नाही॥ २६॥ इति महूर्ते॥ छप्पय छंद॥ वारादि

कुलिकचक्र							
वारा.	र	च	मं	बु	बृ	सु	स
दिनकुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
रात्रिकुलिक	१३	११	९	७	५	३	१

दुर्मुहूर्तचक्र							
वारा:	र	च	मं	बु	वृ	सु	स
दिनदुर्मुहूर्त	१४	१२	६	८	११	४।९	१४
रात्रिदुर्मुहूर्त	०	८	७	०	०	८	०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कघरिपाइसमुभिकरिह्नीकीजे। भागपाच५ सोलवधराषितजिसेघरिहरीजे। ल
व्य९कमिलिसात ७ तष्टिजोआवहिसिषा। सोहोरापुनिहोरघटीसुऋदाईलेषा। रवि
भ्रगुबुधससिसनिजीवकुजसात ७ वारकहियमुक्रम। जोवरतमानस्निमानकोहो

इति होराचक्र

र	सू	बु	स	स	गु	मं	वासरा:
१११	५	३।।	१५	४।।१५	१८।।	[illegible]	होराघटी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	होरघटी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	[illegible]	[illegible]

राप्तसुहोराप्रथम। ३७॥ तथा॥ दोहा ॥ ३८॥ वारप्रवृतिघ
टिगनिपैभागपाच५ कोरीज। लवधकालहोरागनोका
जसिद्धिसवलीज॥ ३८॥ तथा॥ रविभ्रगुबुधससिमंदगुरकु
जरवितैगनिफेरि। वारप्रवेसकीघटीहोराकहानिवेरि॥ ३९॥
इतिकालहोरापति॥ उदाहरन॥ गुरप्रवेसकीसे२ घरीप
ल२ ऊनइसहुगनेत। आर्तालिसपलचारिघरि ४। ३० भ्रगुहोरासुपरत॥ ४०॥ इतिमु
कहोरा॥ इतिश्रीमत्पंडितसिंहात्मजश्रीशंभुविरचितायांजोतिषसिंधुप्रथमच
तावलावारप्रकरणंनतिपतरंग:॥ २॥ कुंभकुंभा ॥ छंद॥ विकुंभप्रीतिआयुषमानसुकर
सोभाग्यसोभनेजानो। आतिगंडसुकर्मध्रतिसूलगंडवधिध्रुवव्याघातैमानो
हरषवज्रसिद्धिव्यातिपातहुवरियानपरियासोई। सिवसिधिसाध्यसुभसुक्लव

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्वइंद्र वैधृति फलनामेहोइ॥ १ ॥ इतियोगनामानि॥ जेजेजोगविरुद्ध कहेहै इनिजो
गनिहूमेजोग॥ पहिलोचसनलरोहेतिनकोपहरकहेजोतिषीलोग॥ वैधृतिव्यतीपा
तसवहूघाहे तितजुसुभकाजेमाही॥ पूरवअर्धजोग ३० परिघहिकोकहसानिषेधव्यो

वि	प्री	आ	सौ	शो	अ	सु	धृ	शू	गं	वृ	ध्रु	व्या	ह	व	सि	व्य	व	प	शि	सि	सा	शु	शु	ब्र	ऐं	वै	इतियोगनाम
३	०	०	०	०	६	०	०	५	६	०	०	९	०	०	९	०	६०	०	३०	०	०	०	०	०	०	६०	इतिघटीत्याज्यपर्व

गारी॥ २ ॥ घरीतीनिविष्कुंभहिकेरी प्रथमवज्रकीहैनोऊ॥ व्याघातहिकीपुनिनोगानौ
पाचसलैकीसोऊ॥ गंडजोगअतिगंडहिकीपुनितिनछेछेघरिकात्याही॥ घटिका
इनिजोगनिकीहरकोसुभकारजकीजेनाही॥ ३ ॥ इतिजोगघटीनिषेध॥ पंजाकेर॥
इनिजोगकेसीसनक्षत्र रैचक्रगनुइहिभातके॥ मादिनव्याघातमृगसूलपरिघा
मघासर्पव्यतिपातके॥ अस्वनीगंडरैमूलअनुराधदुहुरैअतिगंडके॥ वज्रकेपु
ष्यवैधृत्यचित्राक्रमयेहुग्यानिमंडके॥ ४ ॥ चंद्रकलाकेद॥ रेघाइकठाडीतेरहआ
डीअसघांजुरीचक्रकह्यो॥ पीछेव्याघातहिआदिनछत्रहितेसजोगतनन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

घतलेंद्या गनियें सु विसेषा ऊरध रेषा ससि सूरज इकरे षपरै एकारगल होई दी
ठ हिसोई तो सुभ काज विरोध करै ५ ससि सूरज रेषा पुरुष विसेषा उपजे इकरा है
जोगतहा भ्यानकृतनधारी होइकभारी पाछै त्रिभुवनमध्यमहा मुरमेगलवासाका



ज विनासा आग्रे मारिषीइ हिघरी तो कह एकारगल वुधजनभलभल
तजो शंभुति हिसमुझिघरी ६ कुंडरियाछंद ग्रंथांतरमत कीजे
रेषा ऊरध एक तिरछी तेरा फेरि पहष जूरी चक्र है करपीउनको हेरि
करपीउनको हेरि जोगविष मे केमिलावे पुनि अहु रसजो ॥ जो
गजो पूरो पावे ते आधे कासुले ऊनघत गनि के सिर दीजे एकरेषा
ससिभानु चक्र एकार्गल कीजे ७ तथा ग्रंथांतरमत स्वयमेव
चौपई छंद जोग विकुंभ असु निनै हुत माधे है लिखिये क्रम
तत्र प्रीतिस्चाति सोभाग्य विलाष आयुषमान भरनि ब जु
तराष ८ सोभनवह्नि मैत्र अतिगंड रोहिनि ७ अहसुकर्म

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लिखिमंउ जेष्ठानक्षत्रपोरखत जोग ॥ गंड ॥ मूल मगसलप्रयोग ॥ ९ ॥ वृधि श्रा
द्रा ॥ ध्रुवपूर्वषाढ ॥ अदितसु ॥ व्याघातेलिषिकाटे ॥ हर्षन ॥ उत्राषाढवहोरि ॥ वज्र
पुष्यपुनिलिषिपेजोरि ॥ १० ॥ अभिजित ॥ सिधि ॥ व्यतिपातअस्लेष ॥ श्रवननक्ष
त ॥ वरियानविसष ॥ परिघ ॥ मघास्व
हसिवहू ॥ धनिष्ट ॥ सिद्धिपूर्वफालगु
नी ॥ प्रतिष्ट ॥ ११ ॥ साध्यजोग ॥ सत
ताराजान ॥ उत्राफालगुनीसुभश्रान

विषमसमजोगचक्र

वि	आ	सो	सु	गं	वृ	व्या	व	व्य	प	सि	शु	ब्र	वै	इतिजोग
१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	विषम
प्री	सौ	अ	धृ	गं	ध्रु	ह	सि	व	शि	सा	शु	इ	०	इतिजोग
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	०	इतिसम

॥ २३ ॥ शुक्लसुपूर्वभाद्रपदहेरु ॥ हस्तनछत्र ॥ ब्रह्मगनिलेहु ॥ १२ ॥ उत्रभाद्रप
द ॥ इंद्रवघान ॥ चित्रा ॥ वैधृतजोगनिदान ॥ भानचंदकेजोगविचार ॥ कीयेसुरज
नक्षत्रधिप्रहार ॥ १३ ॥ जोगअंकगापतिनक्षत्र ॥ शंभुहेरएकागललत्र ॥ जोकोव्या
हकरेरहिचक्र ॥ दुषदाइकेतपसनिजिमुसक ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ अभिजि
तसहितकेहोइरजोग ॥ चंद्रसूरजभासंजोग ॥ जातेविषमजानिकेलेहु ॥ एकार

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा॰म॰
१८

गलहोइमतयेह ॥ २५ ॥ इति एकार्गलचक्रं ॥ इति श्रीमत्पंडितमिश्र ... अवि
शर्चिनायां ... प्रथमचंद्राद्वयोगप्रकरणे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥ दोहरा छंद ॥
है ववबालवकौलवजानो ॥ तैतिलगरकरनवषानो ॥ लैगानिवानिजविष्टि स

ब	वि	न	र	ति	गु	न	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	न	न						उतराईकर्ण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]						शुक्लेबातपरा ईत्यु
कौ	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	ति	गु	ब	ब	वि	न	र	न							पूर्वाईकर्ण

मेते ॥ शंभुकहेचरकर्णसुयेते ॥ १ ॥ इतिमप्रकर्णदोहरा ॥

ति च्यपहुन ॥ एकऊन ॥ समहुनै ॥ सेषकर्न ॥ २ ॥ नयाय ॥

... ॥ सितपरिमाकितुयनववपुनिपु

इतिकरणचक्र							
व	व	कौ	ग	ग	व	भ	चरकर्ण
कि	श	च	न	०	०	०	आस्थिरकर्ण

निभद्राभाग ॥ सकुनिहम्मचौदसिपरै ॥ अमाचतुषपदनाग ॥ ३ ॥ इतिकर्णप्रापति
नामकछंद ॥ ववईइसुवालवबुसकहावे ॥ पुनिकौलवकौपतिभानुवतावे ॥ पति
नेतिलअर्जमसूरजहोई ॥ गरभूमिवनिजमसुलक्ष्मीसोई ॥ ४ ॥ ... दोहरा ॥ वृषभ
चतुषपदनागअहिकितुघनहिकेवाउ ॥ भद्राजमकालजसकुनिएकरनाधिप

ज्यो॰सि॰
१४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नाउ ॥ ५ ॥ इति करणाईम ॥ सांतिकपौष्टिक कर्म थिर मंगल काज जान एकीजे वद दान
करन मैं शोभ नीका निदान ॥ ६ ॥ ब्रह्म क्रिया व्रत सच जे पुनि स्वाध्याय न जाप धर्म काज स
इति वव करनकार्ज
ध्यान पुनि सप्त व्रत वाल थाप ॥ ७ ॥ इति बालव करनकाजे ॥ त्रिय काज संजोग रत मि
त्र काज संध्यान एतें कौलव काज करु शोभ सुहास सुजान ॥ ८ ॥

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	७	११	४	२	३	घटिका३०
काना	मर	हानि	[illegible]	बुद्धि	[illegible]	कार्ज

इति कौलव करनकाजे ॥ सेवा मंगल काज पुनि ग्रह आरंभ प्रवे
स सदा करै आनंद कौं तैतिल के लव लेस ॥ ९ ॥ इति तैतिल
करनकाजे ॥ बीज वापि खेती करै पुनि संग्रह सब बीज एगर करन हि कवि बस भु भूमि
कै कीज ॥ १० ॥ इति गर करनकाजे ॥ लेन दैन क्रय विक्रया करिये सब व्यापार वनिज पौर
न कौं जानिये फलदायक संसार ॥ ११ ॥ इति वनिज करनकाजे ॥ विष प्रयोग घल कर्म र
पु घातु कीजियै सोइ भद्रा सुभ काज करै सिद्धि न पावै कोइ ॥ १२ ॥ इति भद्रा करनकाजे ॥
साधन मंत्रोषध क्रिया सांति पौष्टिक अभिचारु सकुनि करन के अमल मैं इतने का
ज विचारु ॥ १३ ॥ इति सकुनि करनकाजे ॥ गो कारज वट कर्म पुनि पित्र कर्म [illegible] पन्नात

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ एतै काज चतुषपद होइन कौन कुभीत ॥ १४ ॥ इति चतुष्पद नैकाम ॥ थावर कर्मसु युग्म सब दारुन पुनि सौभाग । फलदायक शोभूसदा सगु अके जियैनाग ॥ १५ ॥ इति नागकनेकाम ॥ चौपई छंद ॥ सांति प्रोष्टिक थावर काज पुनि प्रवेस सुमंगलसाज । किसु धनादि करनैएचारि करियेस थिरकाज विचारि ॥ १६ ॥ इति किंस्तुघ्नादिकचारि करनकाम ॥ सब

[illegible]								
४	८	११	१५	३	७	१०	१४	भद्रातिथि
ई	अ	वा	नै	द	उ	ई	प	दिसा
८	२	६	४	१	७	३	५	प्रहरमुख
पूछि	अंग	उरू	नेत्र	तीजि	[illegible]	[illegible]	पृ वे	[illegible]गमन

रीभद्रा घटिका तीस ॥ तिन्हि करच्यंग विभाग सु तीस वरजनी कसतारसदंड ॥ तीनि ॥ घरी तरदे सुषमंड ॥ १७ ॥ इति भद्रा घरी तीस ॥ १ ॥ सोला छंद ॥ काज नास मुषपाच ५ मुरनरक कंठसु जानिय हृदयसुग्यारा ॥ घरी सुतेकर दी धनहानिय नाभिचारि ४ करकलहषष्ट ६ कटिवुद्धि विनासहि ॥ पुछ ३ तीनि कारविजयावे छियरि शोभु प्रकासहि ॥ १८ ॥ इति भद्रा घरी ॥ चौपई छंद ॥ दोढती छि हीरघरहुगंउ दुग्र वपाल नासाहितुषंड कारजनासे भातिहजार भाषेशंभसुनि उचार ॥ १९ ॥ अग्निरूप इकलषति हिकाल निकासि ज्वालामुषीकराल ॥ ऐसी विष्टिलोक कहु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीन ॥ जाहिरसवहिस्यो अगुनलीन ॥ २० ॥ इतिभद्रीकोअंगनाम ॥ ठठ ॥ छंद ॥ चौथि
ईसानपहरआठ ॥ मुषआठैमापिदोर ॥ इह्रुग्यासिवायव षटजानिये ॥ नैरितमु
षप्रहरचारिपूनोएक ॥ जामपूर्वभद्रामुषातिथितीजकोजमानिये ॥ सातैउत्तरपह

छ्रौ	सु	कृ	सु	स	हौ	सु	बृ	आगमननक्षत्र
१४	८	७	१५	४	१०	११	३	भद्रागमन
पू	आ	द	नै	प	वा	उ	ई	दिसा

रसात ॥ मुषदछिनपहरतीनमुषरहंतुदसैनमानिये
रसात ॥ मुषदछिनपहरतीनमुषरहंतुदसैनमानिये ॥
पछिमप्रहरपाचमुषचौदासिउरोतभद्रामुषसामें
सुमंगलकाजहोनिये ॥ २१ ॥ इतिभद्रामुषदिसाकथं
नाम ॥ दोहा छंद ॥ मनु वसु मुनि तिथि वेद पुनिदस एकादसि तीज
पूरवईसानलागीविष्टिआगमनलीन ॥ २२ ॥ इतिभद्रादिसिआगमन ॥ पुत्रनसुन
हैपछिसुभग्रहप्रवेससंग्राम ॥ ऊरधकीतौसुभकही ओषधमंत्रघनाम ॥ २३ ॥ इति
भद्रापीठिकाज ॥ दोहा ॥ रसंग्रामभापथमारिकहावषाने ॥ कोप्पांसिवमृदुपि
तलचितहमभद्राउपजानि ॥ २४ ॥ इतिदेवासुरसंग्रामभद्राउतपति ॥ त्रिभंगी छं
द ॥ गदहामुषसोभनपुछवत्तीरनपाउतीनि गनसात भुजा हंपेटपीठ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जसकंठसिंहकसप्रेतासनिश्वसकंठिनउजा॥ ऐंपंतनिमारीकेरेश्रहारी देव सुवारीभए
तहा॥ घट[illegible]पीछीवाघिसुतीछीभद्रातीछीनामकहा २५॥ अतिभद्रामरीरवने
ना चौपई छंद॥ कराल॰ नेरिनि रोद्री॰ होइ॥ दुर्मुखि॰ सुमुखि॰ नामकहसोइ
मिश्री॰ नामंवे स्रवी॰ हंसि॰ आठनामभद्रातिथि
आसि॥२६॥ अतिभद्राद्वनाम॥ नरवेछंद॥ रूसती
नहसमीपरहलविशि तिष्यचतुरदसिसातेजा
वहांपिरि॥ सुकलचौथिएकादसिभद्राश्रंत॥ पूनोआठैपूरवधाभुकहेल॥२७॥ ग्रामर छंद॥ कर्कनक्रमेषडद्दीविशिस्वर्गहेभली चौ
पुक्रुममत्तोसिनारिनागलोकश्रस्थली मीनकुंभ
सिंहवृश्चिकतुलोकमत्यसा
तीनलोमध्यभद्रयाविहारही
सदा २८॥ त्रिलोकभद्रावितम॥ छौसश्रोरसुद्दपछविषे
रूपसापिनी रातिश्रोरकृसपछविछेरूपदायिनी त्वेछ

भद्रातिथिरूपचक्रं

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नागिनीमुंहेसुमध्यवीछिकेलगूरहै। नागिनीमुंहहनैजुवीछिडंककूरहै ॥ २९ ॥ इति
नड़ीमर्पवीछीरूप।दोहराछंद॥ सुक्रचौथिनैक्रमतेएवसुभद्रास्पष्टेवीन। नवतवी
नएविवीसमुखपुछहसुधरिकातीन ॥ ३० ॥ इतिनड़ीतिथिमुखचक्रं॥ चोपईछंद॥ रवि
गुरदेवजातिसुघहैहि। सनिकुजपंछीसोहरिलेहि। सोमसुक्र
मानुषधनजानि। बुधघरजातिविहिकरहानि ॥ ३१ ॥ कालिमुख
जानि॥ इतिश्रीमत्पंडितलिलतमनजीपंथविरचितायां
जोतिषसिंधुग्रंथमचटावकरणप्रकरणपंचमतरंगः ॥ ५ ॥ अथनक्षत्रप्रकरण॥द
रिघ्रमुछंद। दस्त्राजमवह्निधातचंदरुद्रअदितिइज्यकद्रुजातपितरादिज्यवह्निरि

वारजातिचक्रं				
रवि गु २	सोम सुक्र	सनि भौम	बुध	वासराः
देव	मनुष्य	पंछी	गरुड़	जाति
सुषश्च २	धनश्च २	दुषश्च २	हानि बुद्ध	काल

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	नक्षत्र
दा	ज	व	धा	चं	रु	अ	इ	स	पि	भ	अ	स	त्वा	प	वन्ही	मि	इं	नै	उ	वि	न	व	चं	अ	अ	पू	स्वामी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गुरु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भगवधानो। अजैमहिनैसत्वाप्टपवनसक्रअग्निइद्रसामित्रवहूरिविवुधनाथनैरितपु
जानो। तोयविस्वचक्रपानिअष्टवसवअभुपानिवहूरिअजापादजानिअहिवु

CC-0.Courtesy.Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तृम०
२३

धनप्रमानो ॥ पृ्षापुनिकहातत्र अस्वनितेसवनछेत्र १ निकेसुईसजत्र शंसुसमुभिश्रा
नो ॥ २ ॥ इतिनक्षत्रम ॥ अस्वनिअरुगजअवघानछागसर्पसपस्वानमारजारमेढज्ञान
मारजारहोई उंदिरउदिरधेनुमहिषिजानो अरुव्याघ्रभेसिव्याघ्रअनवहुरिअनसो

ह.होवरारि॰

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	ऊ	रे	नक्षत्र
अ	ग	छा	स	स	स्वा	मा	मे	मा	उ	उ	धे	म	व्या	भै	व्या	मृ	मृ	स्वा	वा	न	न	वा	सिं	अ	सिं	गो	ह	जोनि
घोडी	गज	छाग	सर्प	सर्प	कुत्ता	बिलाव	मेढा	बिलाव	मूसा	मूसा	गऊ	भैंस	नाहर	भैंस	नाहर	मृग	मृग	कुत्ता	बानर	नेवला	नेवला	बानर	सिंह	घोडा	सिंह	गाय	हाथी	नामानि

ई स्वानवानरासत्रनकुलनकुलवहुरिवानरासुसिंह वहुरिअस्वासिंहगोगजपेरजोई अ
स्वनितेनघतआनि अभाजितस्पोकरवेषानितिनकीघस्जोनिजानिकहेशंभुलो
ई २ ॥ इतिनक्षत्रजानिजानिचापदीछंद ॥ गारव्याघ्रहीहोवेवेर धोरेभैसिहिमहागुरे
र सुनहेहिरनैनाहीवास नकुलेसर्पहिहोरविनास ३ वानरमैढेवदेविरोध उंदि
रविलारनाहीवोध जोनिवेरवरकेमारेष त्रपसेवककोहे

जोनि विरोध चक्र

गाइ घोरे नकुल वानर कपि मसी जोनि
व्याघ्र भैंसि स्यार सर्प मेंढो विलार जोनि

खविसेष ४ ॥ इतिजोनिविरोधचोपाईछंद ॥ मघाकोति
कामूलहुँसभरनीअसलेषा तीनहुपुनिपूरवानघतए

जो०सिं०
२३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अधमुख श्लेषा ॥ वापी कूप तडाग गर्त का खात खनिजे ॥ निधि गाड ज्यु वध्य तगनितं आरं
भकरिजे ॥ कीजे प्रवेश विवर सिविसे जोति ष वानी उच्चरे ॥ शंभु सु लिंड पांव ॥ ६ ॥ अधमुख
नक्षत्र सिजो करे ॥ ५ ॥ इति अधमुख नक्षत्र काल ॥ अश्विनि जेष्ठा हस्त अरि तअनुराधा रेवे
स्वाति चित्र मृग नक्षत्र तिर्यङ्मुख नक्षत्र गनि लेवे ॥ घोरा मंगल
ऊट भैंस खर बैल वि माना ॥ वारी घोरा पीठि वैठि रे पालिये
पलाना ॥ घोरा ऊंट सुगा इन जंत्र है शंभु नौका वाढिये ॥ वीना
नागर हल कृषि पाजो जा गमन सुसाधिये ॥ ६ ॥ इति तिर्यङ्मुख

अथ तिर्यङ् ऊर्ध्व नक्षत्र मुख चक्र									
म	कृ	मू	वि	भ	श्ले	पू	पू	पू	अधमुख
अ	अ	रे	पु	अ	रे	स्वा	चि	म	तिर्यग्मुख
उ	उ	उ	पु	रो	श्र	ध	श्र	श	ऊर्ध्वमुख

नक्षत्र काल ॥ तीन उत्तरा पुष्य
रोहिणी श्रवण धनिष्ठा ॥ आर्द्रा स
तारिका ऊर्ध्वमुख नक्षत्र वलिये
॥ देवल ध्वज स्थंभ गेह मंगल

अथ नक्षत्र संज्ञा चक्र							
संज्ञाचक्र							
संज्ञा	ध्रुव स्थिर	चर चल	क्रूर उग्र	मिश्र साधारण	लघु क्षिप्र	मृदु मैत्र	दारुण तीक्ष्ण
नक्षत्राणि	उ३ रो	श्र ध श स्वा पु	पू३ भ म	विशा कृ	ह पु अ अभि	चि अनु मृ रे	मू आ ज्ये श्ले
वासराः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

नतोरन ॥ धुज्ज पोथि कोसीस ऊंचि ध्वनी सुख सोरन ॥ भसी पपा टअभि षेचनापासार यम
कोरतन ॥ शंभु सुमुकट छत्रादि देव मंकर्म करिजतन ॥ ७ ॥ इति ऊर्ध्वमुख नक्षत्र काल ॥ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामः०
१८

तीनउत्तरा रोहिनि भान ॥ ध्रुव अस्थिर संता सो जान ॥ ग्रेहन्यार आरंभ प्रवेस ॥ सालि बुवन्यु आराम सुवेस ॥ ८ ॥ बीज ववै श्रुत्सस दीवनाउ ॥ एते आस्थिर काजकराउ ॥ शंभु रासय हक रै वखानि ॥ पावै सिद्धि न साँवै हानि ॥ ९ ॥ इति ध्रुव नक्षत्र काज ॥ श्रवन धनि श्तास तभि षस्वाति अदि चंद्र दिन चर चल भाति ॥ जान सुतर त्रुष गज किंकाम

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	नक्षत्राणि
दे	म	रा	म	दे	म	दे	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	दे	रा	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	रा	म	म	दे	गनाः

अ	मृ	पु	स्वा	अ	ह	श्र	रे	पु	देवगन
पू	पूफा	पूषा	उ	उषा	उभा	रो	आ	भ	मनुष्यगन
कृ	म	चि	श्ले	स	मू	वि	ज्ये	ध	राक्षसगन

इनि की पीहि हिडार पत्तान ॥ शंभु सिद्धि होइ सो काज चरन छत्र सम्पातो साज ॥ जोतिष सागर देखि प्रवने ॥ हहिपरकार कहम्रु निवर्ने ॥ ११ ॥ इति चरनक्षत्र काजे ॥ भरनी मघा पूरवा तीन ॥ उग्र क्रूर दिन मङ्गलीन ॥ साढ्य ना सविष घात वंचन ॥ अग्नि काज रिपु को उचाटन ॥ १२ ॥ इति क्रूरनक्षत्र काजे ॥ वह्नि विसाषा वासर बुद्ध ॥ नाम मिश्र साधारन सुद्ध ॥ उरसंग्राम सकारज सिद्धि ॥ मिश्र काज साधारन विद्धि ॥ १३ ॥ इति साधारन नक्षत्र काजे ॥ अस्वनि पुष्य कर अभिजित जीव ॥ एन क्षेत्र छिप्र लघु लीवे ॥ कला वहग्र रिराति भैषज्य ॥ ग्यानासिलप आलंकृत सज्य ॥ १४ ॥ पाप्र मांकिया विक्रय पुनि जो०सिं०
१८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ जातागमनकरहिसिधिहोइ करौकाजएलघुनछत्र सिद्धिमिलहिविदित
॥ १५ ॥ इतिलघुनछत्रकाजे ॥ सुक्रवाररवितिथ्रगांचित्र मेत्ररूएनछत्रम्रउमित्र
लमित्रकाजसंधान परम्भघनगायनरतिजान १६ ॥ इतिलघुनछत्रकामे

म	चन	उ३	चित्रा	५	५=५	गुरुधनदवदसवारन
मू	च्रु	वि	ध			सीःदवनवधान

॥ निकाछंद ॥ मूलइंद्रसर्परुद्रहेसनी तीक्ष्ण
न्तानछत्रलेगनी भूतजत्रासिद्धिमेत्रसाधरी
बंधबद्धवामेनाधरी १७ ॥ इतितीक्ष्णनछत्रकाजे ॥ चरनछत्रछंदः ॥ रमराम र
रा रामभरेराहेराहेरा रामभरेरारामभंरे एगनचलखनितेगरे १८
॥ रा ॥ मैत्रअरितगुरस्वातिअनुनिकारश्रवनरेवमृगरेव तीनपूर्वाउत्तरारोहिनीसे
मनुजगनेव वह्निमघाचित्राचविसाखतभिषमूलविसाख इंद्रधनिष्ठारगन
शम्भुतीनगनभाख १९ ॥ इतिदेवमनुष्यराक्षसगनचक्रं ॥ चौपईछंदः ॥ रवकी
रजनमप्रीतिघनीति देवमनुष्यगनमध्यमप्रीति राक्षसदेववैरुअधिकार रा
क्षसमनुषमृत्युउपजार २० ॥ इतिगनवरप्रमनमध्यमनिकृष्टभाव ॥ रुद्रमघासततमिष

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामं०
१८

तीनउत्तरा रोहिनि भान॥ ध्रुव अस्थिर संज्ञा सो जान॥ ग्रेहनगार आरंभ प्रवेस॥ सालि बुवं आराम सुवेस॥ ८॥ बीज ववें अरु सांति दीवनाउ॥ एते अस्थिर काज कराउ॥ शंभु रासय हकरी व धाने॥ पावें सिद्धि न सावें हाने॥ ९॥ इति ध्रुव नक्षत्र कार्ज॥ श्रवन धनि छा सतभिष स्वाति॥ अदि

देवमनुष्यराक्षसगननक्षत्र

चं हंहिन चर चल भाति॥ जान सुत र वृषभ गजा कि वाम्न

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	नक्षत्रानि
दे	म	रा	म	दे	म	दे	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	दे	रा	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	रा	म	म	दे	गनाः

अ	मृ	पु	स्वा	अ	ह	श्र	रे	पु	देवगन
पू	पू.फा	पू.षा	उ	उ.षा	उ.भा	रो	आ	भ	मनुष्यगन
कृ	म	चि	श	ज्ये	मू	ध	वि	आ	राक्षसगन

इनि की पीढि हिउ अरपलान॥ शंभु सिद्धि होइ सो काज॥ चरन छत्र संपातो साज॥ जोतिष सागर देखि प्रवे॥ ने रहियर कारक सामनि वन॥ ११॥ इति चरन नक्षत्र कार्ज॥ भरनी मघा पूरवा तीन॥ उग्र क्रूर दिन मंगल लीन॥ साठ्य ना सविष घात वंवन॥ अग्नि काज रिपु कौ उच्चाटन॥ १२॥ इति क्रूरनक्षत्रकार्ज॥ वह्नि विसाषा वासर बुद्ध॥ नाम मिश्र साधारन सुद्ध॥ उरसंग पाज सवार ज्ञा सिद्धि॥ मिश्र काज साधारन विद्धि॥ १३॥ इति साधारननक्षत्रकार्ज॥ अस्व नि पुष्य कर अभिजित जीव॥ एन त्रेता छि फल घु लीवे॥ कलाव हनरि रति भैषज्य॥ ग्यान सिलप आलंकृत सज्य॥ १४॥ पाम्याक्रिया विक्रय पुनि

जो०सिं०
१८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सोइ ज्ञात्रा गमन करहि सिधि होइ करौ काज एल घुनक्षत्र सिद्धि मिलाहि विदित
सावत्र १५ ॥ इति लघु नक्षत्र काज ॥ सुक्रवार रवि तिथ्रि गाचित्र मेत्र रुद्र एन छत्र मृदु मित्र
मंगल मित्र काज संधान पटम्भूषन गायन रति ज्ञान १६ ॥ इति लघु नक्षत्र काज ॥ म

हस्त	विशु	अन	३३	नि	प	पुन्य पुष्य नंद दद्रधान
हर	स्वाति	ञ्छ	चि	ध		श्रीवत्तनवधान

निकाछंद ॥ मूल इंद्र सर्प रुद्र हे सनी तीक्ष्ण
स्नान छत्र लेगनी भूत जत्र सिद्धि मंत्र साधही
भेद वंध वद्ध कर्म नाधही १७ ॥ इति दारुन नक्षत्र काज ॥ चरनवलन छंद ॥ इमराम र
मंदे हेरा रामम हेरा हेरा हेरा रामम हेरा राम मंदे एगन अस्व नि तेगंद १८ तमाम
ती छंद ॥ भेच अरित गुरु स्वाति असु नि कार स्रवन रेवमृग देवं तीन पूर्वा उत्तरा रोहिनी सं
वत्रम मृतु जगनेव वहि मघा चित्रा त्र स्लेषा स तमिष मलावि साध इंद्र धनिष्ठा एगन
राछ्छस शभु तीन गंन भावि १९ ॥ इति देव मनुष्य राक्षस गन नक्षत्र ॥ चौपाई छंद ॥ इको
न्हउ न मघा तिपतीति देवमनु घगान मध्यम प्रीति राछस रेवहि रु अधिकार राछ
स मनु धम्भ सु उपजाइ २० ॥ इति गन नक्षत्र मध्यम निकृष्ट भाव ॥ हेडम घास तनिष

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

असलेष तीनि पूरवा मूल विसेष । ज्येष्टा भरनि करी पुनि शेषु । इनि नछत्र करम धआ
रंभ २१ ॥ इति नक्षत्रारंभ ॥ अमृत सिद्धि ... कर रेवति स्वाति विसाष हु अस्विनि है । अनु
पुनि राध चित्र उत्तरा चीत हरो हि नि है । पुष्य पुनर्वसु जानु धनिष्ट तहा । इनि रिक्ष विषै नव वस्त्र
धारज हा २२ ॥ इति नववस्त्रधारन ॥ अनुराध धनिष्ट विसाष सु रेवति है । पुनि अस्विनि ची
त्र स्वाति के रेवति है । पट लाल सु पाट सुवर्न प्रवाल धरे । रतना मुकताफल रंग हने सुक
रे २३ ॥ ... ॥ सैया रिक गज दंत पुनि मनि राग दिक सोइ । इनि नि को नारी धरे स
कल सिद्धि तो होइ २४ ॥ इति पटरतनलंकारी स्त्री धारन ॥ रोहिनि तीनो उत्तरा पुष्य पु
नर्वसु जानि । इनि को त्रिय धासन करे भरनि हि त्रसु भव घानि २५ ॥ इति स्त्री धारन व
... ॥ हस्त धनिष्ट विसाष अनुराधा । अस्विनि चित्र हु रेवति साधा । हेम
प्रवाल सुसंष सुहावा । धमइ कूल सुरपारि धावा २६ ॥ ... ॥ पुष्य धनिष्ट
सु चीन वरेवे । हस्त पुनर्वसु यो श्रुति लेवे । अस्विनि मे त्रय मसा कन छेत्रा । बालक क
सु नवे धिय पजंता २७ ॥ इति ... ॥ पुष्य पुनर्वसु हस्त धनिष्टा । रेवति अस्व

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

निविसुप्रतिष्ठा ॥ रोहिनिउत्तरातीनमृगाहू ॥ बालकप्रासनउत्तैनकराइ ॥ २८ ॥ इति अन्न
प्रासननक्षत्र ॥ निसिपालिका छंद ॥ पोसमूरहस्तधराजेहूकरांचित्रा ॥ स्वातिमततार
श्रवना आरिताङ्गित्रा ॥ हेपुनिधानिष्टगनुओरश्निकीजिये ॥ भानुकुजमंरपुनिवारन
जिरीजियें ॥ २९ ॥ इति ओरकर्म ॥ चोपरी छंद ॥ भोजनभूषणनत्रुत्तउन्हाए ॥ नृदकाल
निसिसंध्याच्याए ॥ नवेदिनाउपवासप्रवास ॥ ओरवराजिकरधांमहास ॥ ३० ॥ इति ओर
कर्म ॥ नृपआपातुजंबचनविवाहु ॥ यहसंसारविदितसवकाहु ॥ सतकृमक्षत्रवधमन
परीछे ॥ ओरनक्षत्रकौसुप्रतीछे ॥ ३१ ॥ इति नक्षत्रदीक्षादिकर्म ॥ कमसमसनूउ
हिमपार ॥ कौरेनरेसपाचयेवार ॥ ओरनघतनघत्रथवासोर ॥ १५ ॥ गुन सर तारोन
हिहोर ॥ ३२ ॥ इति नृपक्षौर ॥ जिननक्षत्रमहओरकरंतं ॥ तिननक्षत्रलेखियनघरंत
ऐसोकहाऋचाजभाषि ॥ कहीसुधांमुदेषिसुनिसाषि ॥ ३३ ॥ इति नघरदंतादिकर्म ॥ मे
उउत्तरेक्षतिकाघष्ट ॥ मघापाचवनिरोहिनेश्रष्ट ॥ रनिकेवेलावनवेवाल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामo
२०

भुसकैरैतोजियेनसाल ॥ ३४ ॥ इति नक्षत्र वेलाछोरवर्ण ॥ पुष्यपुनर्वसअस्वनिहस्त स्वातिरेवतीधनिष्ठ ॥ म्रगासिरश्रवननक्षत्रसब पेह ॥ मेघलवंधमोछकरिलेहु ॥ ३५ ॥ इति मेघला दिनाम ॥ मूलमेत्रम्रगरेवतितीन ॥ मघास्वातिकृ ३ उत्तरातीन ॥ रोहिनिएनि रवेधनछत्र ॥ पानिग्रहनकरेसरवत्र ॥ ३६ ॥ इति विवाह नक्षत्र ॥ पुष्यइंद्रम्रगपोसमविसाष ॥ अग्नि त्रि उत्तरारोहिनिराष ॥ अग्निहोत्रकरुअग्न्याधान ॥ इनिनषतनिमेमूरैप्रमान ॥ ३७ ॥ इति अग्निहोत्र ॥ म्रगासिवअदितपुष्यअसलेष ॥ मूलचीतकरस्वातिविसेष ॥ हस्तत्रिपूर्व ॥ श्रवनधनिष्ठ ॥ सतभिषविद्यारंभवलिष्ठ ॥ ३८ ॥ इति विद्यारंभ नक्षत्र ॥ इतपरा छोर ॥ पुष्यपुनर्वसरेवतीअस्वनिउत्तरा ॥ स्वातिधनिष्ठाचित्रम्रगासिरसततारा ॥ हस्तश्रवनपुनिजानियेमूलहू अनुराधा ॥ औषधिइनिमेजानियेअरुलधनसाधा ॥ ३९ ॥ इति औषधिकर्मसवसाधनसाधिवा ॥ हस्तपुष्यसततारिकानक्षत्रधनिष्ठा ॥ मेत्रमघा ३ उत्तरा ॥ रोहिनीवलिष्ठा ॥ इनिनषतनिमेकूपकोसुमहूरतकीजे

नक्षत्र वेलाचक्र.

चि	म	अ	रो	उ	नक्षत्रानि छोरवर्ण
६	५	३	८	३	वेला

ज्यो० टी०
२८

शोभगीरासुनीसकीसाचीचितसीजे॥ ६० ॥ इति कूपमहूर्त्त ॥ मूलहस्तसततारिकापुनिपु
ष्यविसाषा॥ अनुराधाहू अस्लेनीमृगासिरपुनिमाघा॥ चित्रातीनइउत्तरारोहिनीवता
दै॥ औषधिनिरुकोरोपियेतोअधिकोपावै॥ ६१ ॥ इति औषधिवनस्पतिनक्षत्र॥ रोप
कूर॥ साधारनदारुनधुवाउग्रनृछत्रहूलीजे॥ इन्यपरववरेसांतरहिनिधिगाइसिरदीजे॥ ६२
इति इक्षुवपननक्षत्र॥ पुष्यपुनर्वसचित्राहस्तअस्वनीस्वाति॥ इननछत्रमेकीजियेगज
कारजसवभांति॥ ६३ ॥ इति गजकार्यनक्षत्र॥ अस्वनिकरमृगरेवतीसततारिकाधनि
ष्ट॥ स्वातिपुनर्वसपुष्यपुनिहयकाजवलिष्ट॥ ६४ ॥ इति हयकार्यनक्षत्र॥ नीलवक
पकरंद॥ अस्वनिरेवतिपौसततारा॥ पुष्यपुनर्वसहस्तविचारा॥ औरधनिष्टनछत्रहि
लीजो॥ धेनुहिवीकयविक्रयकीजो॥ ६५ ॥ इति गाइभैंसमोलनक्षत्र॥ ढोपकूंदल
घुधुवअरुचरमित्रमूलअरुमघाविसाषा॥ रविससिवासरवरजिपापग्रहनिर्वलराषा
वलीचंद्रमासुक्रसुसिनवांसकजलमसी॥ लगनहि केगुरहोइहलप्रवहनसुषवासी
सिंहहरि॥ कुंभ॥ कर्कट॥ अजा॥ मकर॥ तुला॥ तनछयकरी॥ शोभआंठरिलाफठेल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामा० २१

गनहितिथिभयभरी ६६ ॥दोहा छंद॥ लांगलचक्रवनाइयेगुन ॥ वसु ॥ नव ॥ वसु ॥
ठानि ॥ जानिसुभअसुभविनघततैसुभअरुअसुभवघानि ॥ ६७ ॥ इति दोहा ॥ तन हल सुभासु
भ ॥ असुभातेवसु ॥ राम ॥ ससि ॥ राम ॥ चंद ॥ पुनि राम ॥ ॥ चंद ॥ राम ॥ पुनि वेद ॥ गनि

३	८	९	८	नक्षत्रविसारसंख्या
सु०	अ०	सु०	अ०	सुभासुभ

अरथअसुभसुभनाम ॥ ६८ ॥ इति दोहा ॥ अथ दिनहलनक्ष
त्रसुभ ॥ तथा गृह चालन मंत ॥ दोहा छंद ॥ लघुध्रुव

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्रविसार सुभासुभ
अ०	सु०	अ०	सु०	अ०	सु०	अ०	सु०	अ०	असुभसुभ

इति हलचक्र

शीर्षे
२।२६।२७
२८
सू० १
असुभानि
४।१०।११ ...
शीर्षे
२४।२३।२२।२१।२०
६।७।८।९।१०
पृष्ठे
३।४।५
सुभ
असुभानि
१५।१६।१९
११।१२।१३
असुभानि

अ॥ चरमित्रमूलअरुमघाविसाखा रवि
छठिवसुतिथिछठिदिकमेषतीसुभ ॥ ॥ बा
॥ रविनछत्रतेतीजनघतअरुहाइसताते ॥
अष्ट अष्टसुभदानमध्य हलचक्रनसाने ॥ ६९ ॥ इति
दोहा छंद ॥ दोहा ॥ राहुनघततेआठलगिवारहघाइसजानि बीसोअरुहचोबी

जो० सिं०
२१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सोतैंबीजबंधेबढिहानि ॥५०॥ दोहा। नोषिवयो॥ नषार्थं यांत रमत ॥ चौपाई॥ छंद॥
रोहिनिनषतउत्तरातीन॥ श्रवनधनिष्टासतभिषलीन॥ स्वातिपुनर्वसपुष्यविसाष
नि अनुरेह्स्तमृगरेवतिराष ॥५१॥ चित्रामेत्रमघहू पुनिमूल॥ श्रोरनषतसवतजिगानेसूल

रेव	पुपा उभ	श्रुध स	स्वा पुन	पुवि	मूल ह	मू रे	पूचि म	नक्षत्रानि
बु	बृ	स	चं	बु	र	सु	चं	वासरा
वृष	कन्या	मीन	मिथु	वृष	कन्या	मीन	मिथु	लग्नानि
५	७	१५	२	४	१२	८	२	तिथि
३	३	३	५	३	५	३	२	रविनक्षत्रसंख्या
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	फलाफल
विष	सम	विष	सम	विष	सम	विष	तिष	विषमसम
भय	सुभ	भय	सुभ	भय	सुभ	भय	भय	भयसुभप्रद

भोमससीचारविताजिदेहु॥ बुद्धबृहस्पतिभृगु
ससिलेहु ॥५२॥ वृषकन्याकुमिथुनरुमीन
हलकेसमयलगनएलीन॥ दसेग्यासिद्वादस
मोतीज॥ होजपंचमीसातेंतीज ॥५३॥ रिक्ता
षष्ठीद्वादसिपर्व॥ एतिथिहलसमयेतजसर्व
॥ पांभुच्यचारजहरवीजानि॥ हलप्रवहनगुरु
रेफलहानि ॥५४॥ दोहा॥ छंद॥ त्रिक.त्रिक.त्रिक
पुनिपंचत्रिक.बुधरिपंचत्रिकहोर॥ सरजकेनक्षत्रतेहानिवृद्धिक्रमहोर ॥५५॥ जुगत
नषतक्रमजानियेतजोविषमभयहानि॥ सुभदायकसमपांभुकहिगरुनकरियजीय

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०

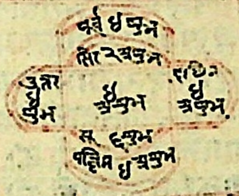
नानि ॥ ५६ ॥ इति हलधरवर्णनं ॥ नवाग्रंथांतरमत ॥ छंदपद्धरि ॥ रविनछवत्तैगनिथ
प्रथमदेतीनपछैलै ॥ पुजवस्त्रआसदेना ॥ सितीनलेदाजैमेलै ॥ पंचारीरेपाचमहानि
धिकोसुवटावै ॥ नहनातीनहरैनिनषतसाहानिकरावै ॥ नहचसेलपरित्यागिये
मुठियातीनैसुभयहो ॥ श्रीनाराइनचक्रपहकै
हौशंभुसोउच्चसौ ॥ ५७ ॥ इतिहलचक्रं ॥ दंडक
छंद ॥ टूटैतैपरनातासछूटैमनकीसुआसटू
टैतैहरैनीविषसाधकोविनासहै ॥ सैलटूटियो
पचारीजोतजुवापारीपुनिवाघसोरभरिकेतो
श्रेसहूप्रकासहै ॥ टूटैहलकीहरीसिटूटियोपरैधनासंतिहियरमहाकलजुगकोनि
वासहै ॥ करैशंभुवेलजोकायरीकराइवोढिश्रेसोहलहलनतोनिपटपुरबासहै ॥ ५८ ॥
इतिहलनलवन ॥ आजवियछंद ॥ आधीधनिष्टरवतिभजंत ॥ एनषतपाचपच
ककहंत ॥ दहिनसगवनछरूपेनदाह ॥ गरहछादनपुनित्रिनकाठलाह ॥ ५९ ॥ नवधा

ग्रो०लि०
२२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इक्कावनपुनिभराव ॥ पुनि त्यौं वितानकौ नही भाव ॥ इनिकाजकाहि पंचककुदार ॥ तेनासकरनकौ है कुदार ॥ ६० ॥ [illegible] ॥ रविनछत्रतेंनघतष हरसव्यंजनपाके ॥ दोमाथेसवदहनमध्यजुगवसिआहिताके ॥ पूरवारिदेचारि ह इभोजनउपजावै ॥ दछिनदिसकेचारिकुरहिसंगमइघदावे दीजेसुचारिपछिमदिसारोगीकादेनरवरे ॥ शभुउदीचिदिस चारिजे विटहाचक्रसुसुषकरे ॥ ६१ ॥ इति कादारिमंग्रहाच

[illegible]



क्रो ॥ मध्यसजलहैनीरछामदिसिधरनी घंडन ॥ निरजलपावककोनदिसारहहि नहि विहंडन ॥ छाउदकेनैरित्यवरु नउत्तमजलहोवै ॥ वायवुइ उहिरेन सजलउत्तरदिसिजोवै ॥ ईसानकोन

६	२	४	४	४	४	४	सरंधू
रस	मू	सर्व	सूरू	दध	का	सप	तंता

जलघोरस्राति कूप चक्र इमिलापिये ॥ पजंतराहिनीखगनघतरोभुजतनकरिष्या

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पिंपु ॥ ६२ ॥ इति कुपवन ॥ परजुनि पर्कंर ॥ सिवसर्प स्वाति भरनी धनिष्ट मूल त्रि
पूरवा अग्नि निष्ट इनि नछत्र रागी पराइ मंगल दिने सम सनिवार पाइ ॥ ६३ ॥ शतपदं द्वादं
सि छठि चौथि तिज तिथि नषत्र वार तिज जोग लीज विधि विसु रुद्र शनि माहि होइ तौ
पैसु मरै नर हि अहसोइ ॥ ६४ ॥ इति नक्षत्र तिथि जोग अनिष्ट
इइज्ञाकंर ॥ स्वाती मघा रोहिनी भर्नि होई ॥ अश्लेषा उत्तरा तीन
सोई ॥ आदित्य रिक्ता दिनै सुक्र चंदा ॥ रोगी अन्न खावै परै रोग फंदा ॥ ६५ ॥
इति नक्षत्र रोगी अन्न नक्षत्र ॥ रिक्ता सु आदित्य यो भौम वा
रा होवै चराल ग्रही कौ पसारा ॥ चंद्रावली ना हिने यो तहा ही ॥ सो
रासि तै आठ पै धाम नाही ॥ ६६ ॥ ऐसो तहा जोग जो आनि होई ॥ की
जै जरा मंगल स्नान सोई ॥ है सिद्धि नीकी कहै विप्र तेरी ॥ भाषा करी केक हो शंभु जे
ही ॥ ६७ ॥ इति मंगल स्नान ॥ जेष्टा धनिष्टा कहे पुष्य हस्ता ॥ सो तारिका उत्तरा तीन स
स्ता ॥ नक्षत्र लेखा रपौ स्मानुराधा ॥ एते विषे वस्त्र आरंभ नाधा ॥ ६८ ॥ इति वस्त्रा
रंभ नक्षत्र ॥ अथ ऽइज्ञाकंर ॥ चित्रा उत्तरा रोहिनी हस्त रेवै ॥ समाकं द्वि त्राअनुरा ज्यो०सिं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धलैवे॥ नक्षत्रएतेअसुनासुलेह्॥ सुराज्यपदीकोतिलकेकरेह्॥ ९॥ दोहा॥ अ
नुराधानजिलीजियेप॥ अभिषेकनछत्र॥ श्रवनधनिष्ठामृगासिरहिज्ञपलोकिये
तत्र॥ १०॥ इतिनृपाभिषेकनक्षत्र॥ पलचंगमचक्र॥ रेवतितेनछत्रषट्पुनिजान
ये॥ आर्द्रादिकनक्षत्रसुद्वादसठानिय॥
जेहातेनक्षत्रनऊगनिलीजिये॥ पर
वमधिपरभागएवहोतीजिये॥ ११॥ आ
दिभागपतिदुलभाग्निपाउभागरे॥ नि
षद्लैभपरभागपुरुषद्भागहे॥ मध्यजोगकेपरैपारसपरपेमहै
कुंभचक्रप्रहावविदितलासुअसनेमहै॥ १२॥ दोहा॥ तीनद्ध
भागनछत्रकेकरपीउनफलहोइ॥ ड्हूनिनामजहवकुपरैसमुआलीजियसो
इ॥ १३॥ इतिकुंभचक्र॥ दंडकलोदा॥ रूद्रसर्पभरनिस्वातिजेष्टासततारकाहृष्म
छत्रनछहजघनकोप्रमानहै॥ रोहिनीविसाषआदितउत्तरातीनहूएनछत्रषट
बृहतनामलेवषानहै॥ मित्रछिप्रहैनछत्रधनिष्ठाहरिमघापुष्यकृतिकाम

आ	श्ले	भ	स्वा	ज्ये	अभि	नघनमर्द्ध
रो	वि	पुन	उफा	उषा	उभा	समसमात्त
पू३	[illegible]	हस्त	मू	उम	चित्रा	[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा० मु०
२७

लए नक्षत्रसम जानने है। ग्रहतारिक्षसासिउ वेधांन्यतो समर्थ होर ज्यं न उवेमहर्षोस
मसमान है ७४ ॥ इति नक्षत्रसमस्तलतानवेध ॥ अंधमंदहि पटासुसु
लोचनचारिभातिकरवरना रोहिनिआदिनघतकरिचारो अभिजितसहितसह

अंधमंदमध्यसुलोचनचक्र

अंधाक्ष	मंदाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
धनिष्ठा	हस्त	आर्द्रा	स्वाति
पुष्य	उत्तराषा	मघा	पुनर्वसु
रोहिनी	अनुराधा	पूर्वभा	श्रवन
पूर्वाषा	शतभिषा	चित्रा	कृतिका
विशाखा	अश्लेषा	ज्येष्ठा	उत्तराभाद्र
रेवती	अश्विनी	अभिजित	मूल
उत्तराफा	मृगशिर	भरनि	पूर्वफा

करना अंधवस्तुगर मिले वेगि हैं मंदकष्टसो दयना
मध्यनैत्रदूरीकरिसुनिये पवरिनघोजसुनफना
७५ ॥ इति चारिप्रकारलोचननक्षत्र ॥ चोपई
॥ कृतिकामृगभय
पुष्याविसाष चित्रा
अधुनि त्रिउत्तराषा
मघाधनिष्ठामूलसु

कुलअकुलकुलाकुलचक्र

कुलनक्षत्र	कृ म	पु फू	वि चि	मूल म	ध म	उ ३
अकुलनक्षत्र	रो पू	अ ह	भ ज्ये	स्वा रे	श्र पू भा	पूषा
कुलाकुलनक्षत्र	आ	अनु	अभि	शत	०	०

जान एनक्षत्रकुलनामवषान ७६ ॥ इति कुलनक्षत्र ॥ रोहिनिअश्विनिश्रवनकरभर्नि सक्रस्वातिरेवतिअरु अश्विनि पूर्वभाद्रपद
पूर्वषाढ अकुलनामएनघतसुकोठ ७७ ॥ इति अकुल [illegible] ॥ आर्द्रा

जो० सिं०
२७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स्अनुराधाजानु॥ अभिजितसनतारिकावघान॥ शंभू एन छत्रगनिचारि॥ नामकुला
कुल कहे विचारि॥ ७८॥ अथ कुलाकुल नामन क्षत्र॥ कुलनछत्र अस्याईजोग॥ जा
हि अकुल के खुधलेगा॥ शंभु कहे कुलाकुल सुद्ध॥ हो वे दोउ निसो मम सुद्ध॥ ७९॥

अथ त्रीपुष्करसंयवचक्र			
१	३	०	नक्षत्रविषम चरन
२	७	१२	भद्रातिथि
सनि	मंगल	गुर	वासरा

तिकुल अकुल कुलाकुल नक्षत्र फल॥ मदहृकोदेग॥ नष
तपरविषमग निभद्रातिथि॥ ७०॥ पुनिसनिमंगलगुर
वार॥ तिथिवारनषतक्र जोगत्रिपुष्कर॥ तो फल त्रिगुन
विचार॥ सो वे व्राधिहानी॥ त्रिगुनवषानीजाई कोअसहार
अ हो भद्रियाईपाघातुराईनी नक्षत्र कवट सोइ॥ ८०॥ इति नक्षत्र पदविषमानति
वारसंजोग त्रिगुनफल फलामरलहमीहदर॥ रेवती अस्विनी संधि चारी घरी ४२
लैसलेषामघाकी घरी जो थी॥ सोघरी जेष्टामूलहू की कही॥ एगंडताजनेभा
ऊंमा भ्रानही॥ ८१॥ तथा ग्रंथानरमता दोहा कंदरा॥ अंतारेवतिदघरी असुनीप
चउठान॥ सिव असलेषा व समघा जेष्टा मूल प्रमान॥ ८२॥ तथा ग्रंथानरमत॥ व

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
७५

विष्णुवचन॥ मूलआदिकीरोपरीजेशाकीदोअंत॥ शंभुगुरुकेवचनएघरीएकभांति
त॥ ८३॥ इतिगंडांत॥ मूलनिमेससुतजनमहीशंभुवचनरिषिलेष॥ आठवरषलौंताहि
कोपितानरहिमुखदेष॥ ८४॥ इतिगंडांतनिर्णय॥ चरनसुप्रथमहिमूलकोजोए
नघरियाच ढुंढुनिवीचंतंतराघरीएअशुभलिषिवाच ८५॥ इतिअभुक्तमूलघटि
कासंज्ञा॥ हेनछत्रतिथिलगनपुनिगंडसुतीनिप्रकार॥ नवम९ चौथ४ तीनकथ
रीकारजकोतेउआर॥ ८६॥ इतिगंडांतघटिकाकानिर्णय॥ उंउल्लिकाछेदा॥ अस
लेषाअरुमूललटेआदिअरुअंत॥ पूरनसांतिहिजबकरेकुसलपरेसुषवंत॥ कु
सलपरेसुषवंतप्रथमपदजनकहिनासहि॥ जननीदूसरपाउतीसराइध्याविना
सहि॥ सतग्रंथउच्चारकहाशंभसुविसेषा॥ भलोचौथपदजानगनितउलटाअ
सलेषा॥ ८७॥ इतिमूलअश्लेषापदफलाफल॥ पदमात्रातीछंद॥ सो०॥ औष
धिलेततारतनसमेतामाटिमगावोसाततरहा॥ तीरथसुपाचजलपंचधान्यभ
लब्रासनमंत्रीमंत्रकहा॥ सोछिंइनिकावाऔषधिभरवामातपितासुतको

जो०सिं०
७५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्रहूवै॥ जपहोमकराइदानदिवाइअरिहमलगंउसोतितिवै॥ ८८ ॥ दोहाछंद ॥ अोर
हुतीननछत्र॥ करसोदोषपुष्पसुहरे॥ पहजाहिरसरवत्र॥ पुष्यदोषज्ञो॥ननसे ॥ ८९ ॥
दोहाछंद॥ जैसेगोचरचंद्रमाचतुपदनिमैसिंह॥ जैसेनछत्रनिकेविषेपुष्यनछत्र
कोसिंह ॥ ९० ॥

अ॰	भ॰	कृ॰	रो॰	मृ॰	आ॰	पु॰	पु॰	अश्ले॰	म॰	पू॰	उ॰	ह॰	चि॰	नक्षत्रसंज्ञा
अश्वमुष	योनिसदृस	क्षुरसदृस	सकटाकार	म्रगसीर्ष	मनिसदृस	ग्रहाकार	सय्याकार	चक्राकृति	ग्रहाकृति	मंचसदृस	सय्याकार	हस्ताकार	मोतिकसदृस	नक्षत्राकार
स्वा॰	वि॰	अनु॰	ज्ये॰	मू॰	पू॰	उ॰	अ॰	श्र॰	ध॰	श॰	पू॰	उ॰	रे॰	नक्षत्रसंज्ञा
प्रवालाकार	तोरनाकृति	वलिसम	कुंडलसम	सिंहपुछसम	गजदंतसम	मंचकसम	त्रिकोनाम	त्रिचरनमे	म्रदंगसदृस	वर्तुलाकार	मंचकसदृस	जमलामे	मर्दलाकार	नक्षत्राकार

दोहाछंद ॥ ग्रहवेधयोगहोइक्रूरयुतअथवाहोइ
त्यागहोइविरुद्धजदपिअस्तंगतसोइ॥ एसवदोषनिवारिसिद्धिसवपुष्यकराही॥ पु
ष्यकाजसवलीनएकुपेव्याहुनआरी॥ ९१ ॥ अथपुष्यनछत्रफल॥ दोहाछंद॥ जोग
लगननहिनछत्रतिथिचंद्रजीववलनाहि॥ राहुजोगिनीकालपुनिपुष्यविघनए
जाहि॥ ९२ ॥ इतिपुष्यविघननाश॥ दंडकछंद॥ अस्वमुषजाननूपोछ्रागगदृअं
गमगमनिग्रहसरचक्रसालसमसेनहे॥ हस्ताकारमोतीप्रवालतोरनअरोकाष्ठ
सिंहघाटहस्तीविलासश्रेनहे॥ सीघरत्रिकोनतीनचरनमादरवाटलीनेसामा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चस॥रिधीपा घा कृत्त लेने हे॥ अस्वनितेगनिनछत्र जानिये सुरूपत्तत्र करे शेभ ऐसे मु
नीस बोले वेन हे॥ ९३॥ इति नक्षत्राकारा संज्ञा ॥ तीन तीन घट पांच तीन पुनि ए
क चारि पुनि तीना॥ पांच पांच दो ऊ अरु तीना पांच एक इक लीना॥ चारि चारि अरु
तीन सु गपारा चारि तीन अरु तीना॥ चारि एकु सैदो शेव त्ति सस घा नव
तसु चीना॥ ९४॥ इति नक्षत्र संज्ञा॥

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१००	[illegible]
अ० भ०	कृ० रो०	मै०	श्री०	प०	पुन०	मूल	सतभिष	रेवती
मृ० पू०	०	म०	त्रि०	पूभा०	ध० पू०	०	०	०
पु० ज्ये०	०	ह०	स्वा०	उ० भा०	अनु०	०	०	०
उ० फा० श्र० उ० षा०	०	रो०	०	०	चि०	०	०	०

इति श्री मत्पंडित [illegible] विरचितायां ज्योतिषविधि प्रथम चरणे नक्षत्र प्रकरणं प्रथमतरंगः॥ ६॥ रोला॥ सिव आद्रा अस लेष अनुराधा मघा धनिष्टा॥ पूरव उत्तर षाढ अभिजित रोहिनी
ज्येष्ठा॥ द्वी सम मूल सतभिषा उत्तर पूर्व फालगुनि॥ एपंद्र है मुहूर्त दिवस के कहे भाषि मु
नि॥ १॥ इति दिवस मुहूर्त॥

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्री	से	अ	म	ध	पूषा उषा	अ	रो	ज्ये	वि	मू	सत उफा पूफा		दिवस मुहूर्त
आ	पूभा	आ	रे	अ	भ	कृ	रो	म	पु	पूषा	ह	चि स्वा	राति मुहूर्त

आर्द्रा पूरव उत्तर भाद्रपद रेव
ति अस्वनि भरनि कृत्तिका
ज्ञा हस्त चंद्र पुनरवस पुष्य भनि॥ श्रवन हस्त पुनि आहि चित्रा स्वाति विषा निय॥ एपंद्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हैंमहूर्त्तरातिकेसमुझिसुजानि ॥ २ ॥ इतिदिनमहूर्त्तं ॥ एकमहूरतभागजानजेतेरादि
नमाभ्या ॥ तेसोरातिमहूर्त्तकेरमानहुउनमाना ॥ जिहिनछत्रकरस्वामिमहूरततेतितदि
जीते ॥ नषतकाजजोकारियमहूरतताेकरीजे ॥ ३ ॥ इतिनक्षत्रमहूर्त्तममकाजे ॥ अ

वारतंजोगदु मंहूर्त्तचक्र							
र	चं	मं	बु	ब	सु	स	वारतः
उफा	म	म	अभि	मू	म	श्रे	महूर्त्त
०	रो	कृ	०	पूषा	रो	आ	महूर्त्त

भिजितनाममहूर्त्तआठयोंकह्योवषानी ॥ भूलिहुतहन
हिकरियजानदृक्षिनदिसिजानी ॥ जात्राआदिकगवन
औरसबदिसाकरावे ॥ मनचीतोसबकाजशीघ्रसोसह
जहिपावे ॥ ४ ॥ इति अभिजितमहूर्त्तदिसिनाम ॥ उ
त्रफाल्गुनिभानुमूलरोहिनिससिवारा ॥ मघाकृत्तिकाभोमबुद्ध अभिजितसिविचा
रा ॥ मघारोहिनीसुक्रमूलपूरवाषाढगुरु ॥ सूर्पस्द्रसनिदिवसएमहूर्त्तदिनवरजि
हुरु ॥ ५ ॥ इतिमहूर्त्तवारतजोमवर्ज्या ॥ रुद्रस्वेतअरुमैत्रआरजाभटसावित्रिक ॥ ३
वैराजगंध अभिजि
तरोहिन्याबालिक ॥ वि
जयराछसाएंद्रवरुन

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रुद्र	स्वेत	मैत्र	आरजा	भट	सावित्री	वैराज	गंधर्व	अभिजित	रोहिणी	बालि	विजय	नैऋत	ऐंद्र	भग	दिवसमहूर्त
रुद्र	गंधर्व	[illegible]	वसिष्ठ	तारन	वायु	अग्नि	राहु	ब्रह्मा	सोम	कमु	पूषा	[illegible]	बैठक	तिति	रातिमहूर्त

भगजानिक ॥ पंभुदेवरसकरेएदिनमहूर्त्तघोनिक ॥ ६ ॥ इति दिनमयानमहूर्त्त ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दोहाछंद ॥ इनिमे कह्यौ स्त्र आठयो जो महूर्त्त अभिजीत ॥ कुतपनाम तिहि कारकी हिउ
पौरानि वखानि प्रवीन ॥ ७ ॥ इति अभिजित कुतपनाम ॥ सिव गंधर्व हू इंद्र विन पुनि परिव
ट्टनारन वायु ॥ पावकरा छठ सत्र सहू सौम्य कमलजा आय ॥ ८ ॥ वाक्यपति पौस्नावहु
सातमहूर्त्तचक्र
२ २ ३ ४ ५ ६ ७ ॥ रि अहिवैकुंठ समीर ॥ पुनि निरिरित्य महूरता निलियो रा
विजय स्वेत सावित्रि त्वरा [illegible] मैत्र वालि ॥ निकृ वीर ९ ॥ इति निसि महूरतानि कनाम ॥ चौपई छंद ॥
विजय स्वेत सावित्रि विराज ॥ अभिजित मैत्र वालिक कहू काज ॥ एपौरानि महूरत मान ॥
हो वै अरथ सिद्धि की वात ॥ १० ॥ [illegible] ॥ कह्यो काज जो पै सन नक्षत्र मारी
॥ करे सो महूर्त्त आठ दै माझ आही ॥ दिसासूल यौ वार मूलौ कहाई ॥ सवै ए महूर्त्ता सुवर्जे
न हाई ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ इति श्रीमत् [illegible] श्री राम [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ र
विन त्ते त्रत्तैं सा न भ कंपा विद्युत पाच आठ सूल र स सनि श्रहारो केतु है ॥ वृ सर्द ड
पंद्रा उत पातु है उ ने स यौ चौ हों निरघात पात इकै स मो हतु है ॥ वार सनि घातक
पु तेइ स चौ वी स व अ पञ्चौ स परिवेष विसेष परियेतु है ॥ एजोग च र रि त्त हो र एते

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जौं विचारिये आदिविषसस्व भातुसध्य सिधि देतहे १ ॥ इति नक्षत्रगकारं ॥ इति पाद छंद ॥ सूरज केन क्षत्र ते ते जेस पुनि होई ॥ अश्विमघाचित्राभेचंद्रहे हरि रेवति सोई ॥ अस्विनि हीतेचंड्रमागननाकरि जूझे ॥ निसिदिन सिव चंद्रगुरुधा पंडितजन

अंक	म	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	स्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
स्पर्श	।	।	।	।	।	।	।	ऽ	ऽ	।	।	।	ऽ	।	।	ऽ	।	।	।	।	ऽ	।	।	।	।	ऽ

न बूझे २ ॥ इति पाद दोहा छंद ॥ पातु परै ते समुझि जिपकीजे कछू न कर्म ॥ करै कर्म कछु सुभ नहीं करै जो तिथि मर्म ३ ॥ इति पातन विचारादि सुभ कर्म नक्षत्र ॥ इति पाद छंद ॥ आनंद काल सुदंड धूम्र प्रजोपति सौम्य पुनि ॥ धाछ्छरु धुज श्रीवत्स वज्र मुदगर छछ्त्र गुनि ॥ मित्र रु मैन मघपद्म लुं वंड तपात नवलु अस्त ॥ कानासि द्धि सुभ अमृत मुसल गज मातंग राछ्छस ॥ शं भ सुचर थिर ह्रवर्द्धहे एजोग अनंत मजानिये ॥ जाको सुजै सो नाम है ताको ते सफल मानिये ४ ॥ इति आनंदादि जोग ॥ सूरज वासर अस्सुनि चंद वासर मृग माध्या ॥ भौम वारं असलेष बुद्ध वासर ग

जहां था। वार ब्रहस्पति गनो नषत अनुराधा का दा। अगुनं इनके दिवसले इगानि उत्रा
षाढा। दिवसे सपुत्र सत्तारिका दिन न छत्र कम करि लिषव। होवे सु जोग अनन्दादि
है यों अनुक्रम्यासि ध्यानि सि षव ५। इति आनंदादि जोग पादा नि। अथा दी ला छंद।

रवि	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	नक्षत्र
चंद्र	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	नक्षत्र
मंगल	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	नक्षत्र
बुध	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	नक्षत्र
गुरु	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्व	वि	नक्षत्र
शुक्र	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	नक्षत्र
शनि	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	नक्षत्र
नाम:	आनंद	काल	धूम्र	प्रजापति	सौम्य	ध्वांक्ष	ध्वज	श्रीवत्स	वज्र	मुद्गर	छत्र	मित्र	मानस	पद्म	लुंब	उत्पात	मृत्यु	काण	सिद्धि	शुभ	अमृत	मुसल	गद	मातंग	राक्षस	चर	स्थिर	व	जोगनि
						५			५	५				४	४	१०	१०	२				२	३	१०	१०				प्रहर घटिका त्याज्य

अस्वनि तें पाचौ नषत सूरजा दिवार च्यानें शादिक जोग सब होइ सु गनित विचार ६।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गनिलीजेजे सरनघततेसरजानोजोग जथानामहंगुनतथाकहेंजानिघालोग १
छांछमुदगावश्रवघान सद्यावपा
वघटिकाप्रमान पुनिपरमलुंवघटिकासुचारि रोरासृकानमुसलहुविचारि ८ ३
तपानक्रतुराछसमतंग तिनसाढिसाटिघटि
काप्रसंग गदजोगकेरिघरिसातहेरि त्यागो
घरीसुशनिजोगकेरि ९

र	चं	मं	बु	बृ	सु	स	वासरा:
ह	म	श्रस	श्र	उ	रे	रो	नक्षत्रानिसिद्धजोग
५	६	७	८	९	१०	११	तिथिवृजोग
१२	११	१०	९	८	७	६	क्रकचजोगतिथिवासरजोग

आदित्यहस्तमृगवारसोम अनुराधबुद्धअस्वनीभौम
गुरपुष्यब्राह्म्यसनिसुक्रलेव सिधिअम्रतजोगपावेनलेव
१० छठिहसनिविलोमकरिगनियसोर सोक्रकचजोगईह
भातिहोर तिथिवारतेरहाजुरेजोग सोक्रकचअसुभ
कारजवियोग ११

तिथिवारसंभवसिद्धिजोग

सु	बु	भौ	स	गु	वासरादि
१	२	३	४	५	पंचिमातिथिनि
६	७	८	९	१०	दसमांततिथि
११	१२	१३	१४	१५	[illegible]

संवर्तजोग १ ७
तिथिवार बुध रवि

कालिनिथिसनिसोर जयाभौमगुरपूरनासंयोग
नंदाभ्रगुभद्राबुधेरि सिधिहोइ १२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२८०

परिमा तिथि बुधवार पुनि सातै आदित वार संवर्त्तक यह जोग है अंग

लकार जआर १३ इति मृत्यु जोग अथ नषत निषिध उपजैं जातु अम्रत यह रंभ कान

मध्य चारी करै यह भाषै कवि शंभु १४ इति नषत दिनवार जोग तिथि वासर संजोग तें

म	कौ	का	रूरं		दसोतर
ला	पा	ए	वे		दोषवर्ज्या
द	रा	वं	वं	ञा	दोषगुन
त्रा	प	जु	वे	ना	पंचदोष

नषत वार संजोग जोग विरुध तिहिका कहै विग्र जो नित धी लेहि

ग १५ इति विरुद्ध जोग ... लागे देस मगध के

लात कौसिल देस जानियें पात कासमीर एक गोल जत्र

वेध तहा वरजे सरवत्र १६ ... लात दलि

इ पात वहु रोग वेधा होइ वेध के जोग जति पसरी त्रास जामित्र पंचदोष एवरजे मि

त्र १७ इति ...

...

को घोरा नाम सुहोइ ससि ध्वांसि कुज महोदरी बुध मंदा कि निसा र बुध मंदाकिनि

सा इनाम मंदा गुर केरी भृगु दिन मित्रा होइ राछसी सनि सुनि वेरी एसंक्रांति सुना

म वेचन मु नि व लव धा नै जिहि दिन जु वके सा इ नाम तिहि दिन का जानो १ ...

...उग्र छि प्र चर मैत्र पुनि धुव मिश्राती छंन एन छ त्रधा जो॰सिं॰ २८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शादिक्रमसात्तहुनाम प्रकुंन २ ॥ इति नक्षत्रसंज्ञा ॥ चौपदी ॥ छंद ॥ ध्वांक्षी वैश्यहिकों सु
खदे १ चोरहि महोदरि लिइ सूद्रहिकों घोरा सुभदानि मंदाकिनि राजाकों जानि
न ३ ब्राह्मनकों मंदा संक्रांति मिश्रा करै सुखी पसु जाति चंडालादिकें अहे समस्त इति

उग्र	लघु	चर	मैत्र	स्थिर	मिश्र	दारुन	नक्षत्रानि
घोरा	ध्वांक्ष	महोदरी	मंदाकिनी	मंदा	मिश्रा	राक्षसी	नामानि
सूद्र सुख	वैश्य सुख	चोर सुख	नृप सुख	विप्र सुख	पसु सुख	चांडाल सुख	फलानि

कों राक्षसि सुभदा सत्त ४
पर वस्त्र अहि निकाल संक्रांति सो संक्रांति होइ
नृपघाति विप्रहि मध्याह्न वसइ घरानि परादि
नवैस्यहि उरी वघानि ५ अस्तमान सूद्रहि उघ

दिनस्य प्रथमांसे	दिनस्य मध्यांसे	दिनस्य तृतीयांसे	सर्ज्या काल	रात्रेः प्रथमजाम	रात्रेः द्वितीयजाम	रात्रेः तृतीयजाम	रात्रेः चतुर्थजाम	सूर्योदय काल
नृपान् हंति	द्विजान् हंति	वैश्यान् हंति	सूद्रान् हंति	नक्तचरान् हंति	नर्तकान् हंति	पसून् हंति	पसुपालान् हंति	पाखंडिजन हंति

घोष धुरी पिसाचहि सदा प्रदोष रा
ति विषै चोरहि कोलटी परजनी ना
टक नटनटी ६ नक्त वैस्या वहुरूपी
जाति लटी सुप्रहरती सरै राति गोती अरुमा इई गुवाल इति कहु लटी प्रतघरिका
ल ७ व्रतसंध्यासी लिंगिजन तपसी अरु संन्यासि मध्यकाल इन कर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम० ३०

लरीजो सेक्रांतिप्रकासि ८ नागचतुषपदतैतिलहिकरैसंक्रम
भान सुपतसूतसुष्वानिष्टहै जगदुरभिक्षनिसान ९ वनिजविष्टिगरवालववहैनि
विष्टसोइ वैठिकैरविसंक्रमनमध्यमवषेतोइ १० किंस्तुघनसकुनकौलवक
रनसंक्रमऊभदिनेस तातुभिक्षसंसारमहनासैसकल
कलेस ११ सुपतमहध

सुपत	निविष्टः	ऊर्द्धः
चतुष्पद	गर	किंस्तुघ्न
तैतिल	वनिज	सकुन
नाग २	विष्टि	कौलव ३
०	वव	०
०	वालव ५	०
सुनिष्टः	समः	श्रेष्ठः

करनेषु संक्रांतस्येदं फलभवति

वैठेमधिमऊरधसुभआरोग
समुभिवचुनउनिद्रासिक
कहाशंभुसंजोग १२ वव
वालवअरुकौलवकर्न तै
तिगरअरुवानिजवर्न भद्रासकुन चतुषपदनाग किंस्तु
घनहूएकरनसुभाग १३ सिंहव्याघ्रवाराहवषान रास
भदंतिमहिषहयस्वान मेषवृषभचरनासुषश्रीर एवास्नववतैगनिजोर १४

समनक्षत्राणि	वृहत्नक्षत्राणि	जघन्यनक्षत्राणि
म रे चि	रो	श्ले
श्र ह	उत्त फा	शतभि
अश्वि पु	उत्त षा	आर्द्रा
अभि ध	उत्त भा	स्वाति
मृ तो	विशा	ज्येष्ठा
मघा पू ३ म	पु न	भरन
समसंक्रमन	वृहत्संक्रमन	जघन्यसंक्रम
मुहूर्त ३० सम	मुहूर्त ४५ सम	मुहूर्त १५ मुहू
फल	मे फल	एवंद्दरासनेत्र

जो०लि० ३०

ते ॥ स्वेतपीत्अरुनंग हरिन्न ॥ पांडु रअरुनकारो असिन्न ॥ चित्रकंदरा दिसि घनवर्न ॥ एवंतारव

वर्ण	धातु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
हिंर	आपु	वाह	गरुड़	वाज	महिष	अस्व	स्वान	मेढा	वृषभ	हंस	वाहनानि
स्वेत	पीत	हरित	पांडुर	आरक्त	काला	असित	चित्र	कंदर	किंकु	मेघाभ	वर्णानि
वैडूर्य	गदा	खड्ग	लाठी	धनु	[illegible]	सांग	पासि	अंकुस	सख	बान	आयुधानि
अंन	पाइस	मिसरी	पक्वान्न	दूध	दधि	[illegible]	गुर	मधु	घृत	खांड	भक्षानि
सोनो	रुपो	तांमो	[illegible]	सीसो	जसु	कांस	पाषान	लोह	[illegible]	काठ	भोजनपात्र
कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोचन	[illegible]	बिलार	हरर	अंजन	अगर	कर्पूर	लेपनानि
मूगा	मोती	रुपो	मनि	माणिक	पंना	सोनो	सीसा	कांसो	लोह	तांमो	विभूषनानि
देवता	भक्त	सर्प	पक्षी	पसु	मृग	[illegible]	क्षत्री	वैस्य	सूद्र	संकर	जातयः
बाल	कुमारी	मुग्धा	तरुनी	प्रौढा	[illegible]	वृद्धी	बंध्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अवस्था
पुंनाग	जाती	बकुल	केतकी	बेलुप	[illegible]	दूब	कमल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पुष्पानि

सचं	धर्मं	रतु	ग्र	सपनद्वार
उत्तर	पश्चिम	दक्षिन	पूरब	दिसागमनानि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वारविरसाहृष्टि

वेतेगानिकर्न ॥ १५ ॥ इति वर्ण ॥
भंतु दिगदा [illegible] ॥ धनतो
मर अरुकुंत प्रचंड ॥ पासअंकुस
सख अरुबान ॥ एआयुधसबव
तेजान ॥ १६ ॥ इति आयुध ॥ अंन
खीरमिस्रीपकवान ॥ दूधदही
चित्रकरनमान ॥ गुडमधुघीउ
सरकरा होइ ॥ ववतेभोजनानि
रसोइ ॥ १७ ॥ इति भक्षन ॥ कनं
करांजितता मोल रुपान ॥ सीसा
हत्ताकासपाषान ॥ लोहमत्तुकादारुविसेष ॥ भोजनपा
त्रएववतेलेष ॥ १८ ॥ इति भोजनपात्र ॥ कस्तूरी कुंकुमघा
सीरे पाव [illegible] मेदरगनेसोइ ॥ सरभागरुकपूरवेवहोइ

कस्तूरीकुंकु
मादि १

ज्यो॰ २१

इतिलेपन॥ प्रवालमुक्ता रूपेमनी मोमेदकसुनीलतपनी॥ सीसोकांसलोह अरुताम्र॥ इतिविभूषन॥ देवभूत अरुसर्पविहंग मृगनरग्रासनछानिय अग
ववर्तेएभ्रषनपरिनाम॥२०॥ इतिविभूषन॥ देवभूत अरु सर्प विहंग मृगनरग्रासनछानियअग॥
ववर्ते एभुवनपरिनाम॥२०॥ इतिवाहन॥ देवभूतअरुसर्पविहंग मृगनग्रासनछा नियअग॥
वैस्यसूद्र अरुसंकरजाति॥ एववर्तेकरनिकीपाति॥२१॥ इतिजाति॥ वालकुमारीमुग्धाधाउ्या
न॥ प्रौढ़प्रगलभावृद्धाजान॥ वंध्याअतिवंध्यासुतचार॥ ववर्जिका

दिसविदिसगमनदृष्टिफल		
गवन	दिसा	उदभय
दृष्टि	विदिसा	लोकउपद्रव
परवगाखन	संक्रांति	पछिमपिर
रत्तिनपछे	संक्रांति	उत्तरगवन

वयववर्तेसाह॥२२॥ इतिअवस्था॥ अहिकेसरिजातीगुनिनाक
वकुलकेतकीविल्वकुरुवाक॥ दूवसरोजवेलिअरुपाडर॥ जपापू
लववर्तेगनितागर॥२३॥ इतिफूल॥ ववर्तेग्पाराकरनसुजान॥
इनकेतहा अरुकेहैभान॥ चहन अरुलभुषपात्रदुकूल॥ लेपप्रम
रनजातिवयफूल॥२४॥ इतिकरणसंक्रांतिपरिभाषा॥ मंदचंदरिन अरुकेभान॥ सौडत
रसंक्रांतिपयान॥ वुधकुजपालुमगवनकराह॥ रविभृगुरविनप्रागग्गजाह॥२५॥ इति
दिनदिसागवन॥ ससिगुरदिनाअग्निजीरत्य॥ चितवतिरविसनिकोनेरित्य॥
मंगलदूषेवारववकोध॥ भृगवुध ईसानहिकासोध॥२६॥ इतिवारकोनदृष्टि॥ जो
संक्रातिजोनदिसजाहि॥ जुडमहाभयतेहउपजाहि॥ जिहिकोनेसंक्रांतिविलोक॥
तोहविदिसाहिउपद्रवलोक॥२७॥ इतिसंक्रांतिदिसागवनकोनदृष्टिफलन ज्यो॰सिं॰ २१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२॥ दोहा छंद॥ नजियेएसंक्रांतिदिनकारियेनप्रसंग॥ तोसुभराइकरोनुकरहिअसुभ कोभंग॥२८॥ इतिसंक्रांतिमाहात्म्य॥ सूरजजुग्ररकेतासैच्यारविसुपरीकहिसार॥ केस्वभावकीरासिपुनिषडसीतिमुखहोइ॥२९॥ मकरउत्तरायनजुहैदक्षिनायनकर्क॥ मेषतुलाकोविषुवतीयाटेतजनन्नप्रसतर्क॥ ३०॥ इतिविसुपदषडसीतिविषुवतीअयनसंक्रांति॥ मरसीछंद॥ नमूंषहिस्वातिवरुनासिवजेहजगन्यपइ१५मुहुर्त॥ धूवाचसाघाच्यादितेवरतुपुनिपेतीनिजोउत्तर॥ ४नंतेसंक्रमतनेजानोतीसमेहूतहोइ॥ ३१॥ घोसस्तनरतनी विधिभाषेयंभूसोइ॥३२॥ इतिसंक्रांतिविधि॥ पूरवभागिनिउत्तरभागिनिजोसंक्रांतिपरार॥ पुंन्यकालहैघटिकाषोडसबुधजनकहेबनाइ॥ पहिलीअथवाहोइपाछिलीमध्यरात्तिउपरांति॥ पुंन्यकालतोदिवसदूसरेच्यारकेजोसंक्रांति॥३३॥ जधापेअर्द्धरात्तिसेपूरनहोइसंक्रमस्भान॥ तघापिपुंन्यकालदोवासरयुग्रहनिहैअनुमान॥ कारियेसबैसुनारिकमेसुअसुभदायकहैजान॥ चंद्र

सिंह	वृश्चि	वृष	कुंभ	रासि	विसवरी
धनु	मिथुन	कन्या	मीन	रासिहे	षडसीतिमुख
तुला	मेष	०	०	रासिच	विषुवती
मकर	कर्क	०	०	रासि	अयन

लग्नसंक्रांति चक्र

पुंन्यपापछयरोरिपांभूकीनवषान॥२३॥रविराहुनसंक्रांतिवि सुपरिपुंन्यकालहैआ
दि॥मध्यसुभागविषुवतीजानोपुंन्यकालअवलादि॥रविउन्नषडसीतिमुषीनरपुंन्यका
हैपाछ॥दानस्नानकरमफलदाइकअैसोरिषिमन्याछ॥२६॥इतिसंक्रांतिपुंन्यकाल॥दो

विसुपदी	पूर्वभाग	पुंन्यकालमान
विषुवती	मध्यभाग	पुंन्यकालमान
षडसीतिमुष	अंतभाग	पुंन्यकालमान

हाछंद॥मकरकर्कथितहोइरविउन्नरराहिनचैन॥हरिपदा
दिसंक्रांतितोहोइकहैरिषिवैन॥२५॥इतिसंक्रांतिप्रकार
॥चौपदीछंद॥जितनोअयनसवअयनच्युतिहैर॥तितनोभेभा
कालरविकेर॥विसुपदादिकहैच्युतिसोइ॥जोसंक्रांतिहिकीच्युतिहोइ॥२६॥परमरहस
यहकहावषानी॥गर्गमुनीसमहाबुनिग्यानी॥तिनकेसत्यवचनपरिमान॥भाषाछं
दकीनवषान॥इतिसंक्रांतिच्युति॥पुरुषस्वस्थवैठोजाहोइ॥पाछैनेत्रसुरेसाइ च
॥ताकोभागतीस३०कौजान॥तातिहिकोसतपुरुषवषान॥२७॥तातपरकोसो१००भा
गविचार॥तोजानोत्रुटिभागहजार१०००यहमुनिनाथ्यनिकरमतदेष॥सोअैभाषा
भाषविसेष॥२८॥रोलाछंद॥तोसंक्रांतिहिकेरकालहोवेसुतहारे॥तितनेजोर
त्रिलोकद्वीभूतसुउपजारे॥तातिवक्रकोभेदिप्रगटयहजगतवषाने॥प्रसपनरि

है

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जोनमनुषग्रहजानश्रयाने।।६०।।इतिसंक्रांतिकालामोदकछंद।।दूजेमेलचंद्रसु
आवहि।।रूपलालरविसंक्रमपावहि।।मासअधिकसुहोइतहाइय।।मंगलनासगरहाउ
पजाइय।।६१।।इतिरविसंक्रम।।[illegible]छंद।।वर्षेदोमासअधिकहोजहा।।प्रथममास
लोपिजेतहा।।दूजअधिकतोकीजेमास।।येरमासतेरा।।कहु
मास।।६२।।मासचौरहोग्रंथनिहारि।।पुन्यनकीजेयहमततामा
रि।।जोकछुअरथरोधिनिकोराघ।।शंभुदासभाषाकरिभाष
।।६३।।इतिअधिकमासभाव।।इदपहलछंद।।जेसोचंद्राहेव
लीसेक्रांतीहोई।।तेसोफलपुरुषहिमिलेभाषेइवलोई।।चं
द्रनीकफलनीकहेहोनोफलहीना।।जोविरुद्धसंक्रांतिसुभ
सुसिसुभलीना।।६४।।इतिचंद्रबलसंक्रांतिफल।।दोहाछंद।।
ताराबलतेतबलगेसासिसूरजबलसोर।।सूरजबलसिगरेत
हाग्रहाविरुद्धसुभहोइ।।६५।।इतितारबलफल।।सातनव
तारिरतीन्यिमुखहृदयसुपाचवखानि।।तीनतीनहस्तानांवियेतीनितीनिपरजानि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥६६॥ अरिल छंद॥ माघेमें पतिवरनहेविग्रहद्रयवर॥ धनाध्यक्षकरदाहिने
सनमानवामकर॥ मित्तकन्यमपहदाहिनवांयेसुपरमेर॥ विष्णुवधरनद्वनेजनमन
घतपर॥ ६७॥ पतिविघ्नफल॥ घटकोनाकतेचन्द्रजनमनछुवहु संक्रांतिघ्न
घतजौतातिफलतजहु॥ त्रि घट त्रिषट पुनिपुनिदेचक्रकमसे
सा॥ हानिसुवृद्धिरोग पटहानिधनदेसा॥ ६८॥ इति घटकोन
चक्र॥ ककट घटिकातीसक ३० दसअधिमकरगन प्रहो
होतेअयनसुपुंन्यकहिवउत्तरायन॥ चापहिकोपरित्यागि
मीनमानसंजोग॥ घरोषअरधनिसातेपराइकेभोग॥ ६९॥
इतिश्रीमत्यंदितसिरोमणिश्रीशंभुविरचितायांजोति
षसिंधग्रंथमध्ये संक्रांतिप्रकरणनवमतरंगः॥ ९॥ दोहाछंद॥ नीके
हैसवरेग्रहनकेहेलाभअस्थान॥ तीनषट दसग्यारहाइनिदाहासुभभान॥ १॥
चौपाईछंद॥ त्रि॰ षट॰ दइ॰ सुभमंगलमंद॥ आ॰ स॰ सपत॰ दइइसुभचंद
नौ॰ दसु॰ पांच॰ चारि॰ सिव भान॥ एक॰ द्वै॰ तीन॰ सुक्रसुभजान॥ २॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१ राहुकेतकरएकप्रमान त्रिषटदसेग्यारोअस्थान २
इनिअस्थानराहुअरुकेतु शुभदासकरसुभदेत १

द्विमुनि ३ पाच ५ नौ ९ गुरसुभसीव ॥ द्वि २ षट ६ वेद ४ वसु ८ रस ६ बुधनीकैं ॥ गोचरमार
गजनमरासिते ॥ ९ ग्रहस्थानइनिथानवासिते ॥ ५ ॥ औरग्रहाकोजोनहिवेध ॥ सुभदाय

रवि	३	६	१०	११	रविग्रहस्थानसुभ
चंद	३	७	१०	११	चंदग्रहस्थानसुभ
मंगल	३	६	०	११	मंगलग्रहस्थानसुभ
बुध	२	६।४	१०।८	११	बुधग्रहस्थानसुभ
गुर	२	७	९।५	११	गुरग्रहस्थानसुभ
सुक्र	३।२	१।४	८।५।९	११।१२	सुक्रग्रहस्थानसुभ
सनि	३	६	०	११	सनिग्रहस्थानसुभ
राहु	३	६	१०	११	राहुग्रहस्थानसुभ
केतु	३	६	१०	११	केतुग्रहस्थानसुभ
		गोचरग्रहस्थानसुभचक्र			

कलोमिटैनिषेध ॥ ग्रहमतकरमुनीसदेव्याप ॥ पटिसुनि
सीधेसमुझेआप ॥ ५ ॥ इतिगोचारग्रहस्थानसुभ ॥ त्रि
षटरुइदससुभरविअरुआहि ॥ सनिवाचीग्रहवेधैनाहि
वीरहपाचचारिनौजान ॥ लगैवधसनिइनिअस्थान
॥ ६ ॥ त्रिषटजनमासिवहिकसुनिधाम ॥ होरचंदमासुभ
इनिठाम ॥ बुधवाचीग्रहओरनवेध ॥ सरवसुरविनोसुनि
द्विनिषेध ॥ ७ ॥ त्रिषटरुइमंगलसुभजान ॥ मेरहु९ने
सुभइनिअस्थान ॥ द्विरविपाचघरमेदरिनेस ॥ लगवे
धफलदेहिमदेस ॥ ८ ॥ षटवसुदसासिवहे सुनिधाम
जनमरासितेबुधसुभपाम ॥ नौसरवसुरविएकविचें

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामु०
२४

९ हो२वेधशनि घर श्रुतिमंद ॥ ९ ॥ सिवनौसरसुनि गुरसुभजान वेधगगनचर

रविघर	सोमके	केरघर	मंगघर	गुरुघर	सनिकी घर	बुधघर	चंदघर
३	४	१	२	३	२	२	१
६	५	३	५	६	५	४	३
१०	९	६	८	११	११	६	५
११	१२	७	४			८	८
		१०	९			१०	९
		११	१२			१२	११

असुभ निरान आठचारितति यो रिकमान ज
नमरासितें शनि अस्थान ॥ १० ॥ इके है श्रुति सरव
सुनौ तीज रवि सिवसुक्र सेष्ट२ नलाज ॥ वेध
चसुभग्रह२ निघरसाच ॥ वसुमुनि इक्सोगुन ख
टपाच ॥ ११ ॥ शनि परिग्रहवेध्योजौ हो३ ॥ तौ गोच

ग्र३

गुरुघर	कन्याघर	बुधघर	अनेंद्रघर	सनिघर
५	३	१	१	३
७	४	२	५	६
९	८	३	६	११
११	१०	४	७	
०	१२	५	८	
		८	९	
		९	०	
		११	०	
		१२		

र फलसुभ नहिकोर हो२ ग्रहा विपरीतक वेध
सो तो फलपुनि करहि निषेध ॥ १२ ॥ हो३ ग्रहा सु
भवेधस्थान ग्रहअस्थान और ग्रहजान ॥ सो तो
हो२ वेधं विपरीत रहिविधि सुनुमुनी समतमी
त ॥ १३ ॥ चौवोला छंद ॥ गोचर ग्रहक्रम कौ नहिजानत जे ग्रहको फल व्रथा करे

जो०सि०
२४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होइमसाइनगभैसोभूठौभांतिभांतिहासीतुलहै। ताकीहोइमसाअपकीरति सोउनि
ताहिकलंकचढे। तातैशंभुसमुझेरिषिनिमनकैहैपिसाचीसाचकढे।२७। इतिग्र

गोचरग्रहचक्र		दृष्टिवर्ज्या
रवि	३।६।१०।११।	असुभसुभदृष्टि
चंद्र	३।६।१०।१।७।११।	सुभअसुभदृष्टि
मंगल	३।६।१०।११।	असुभसुभदृष्टि
बुध	२।४।६।१०।८।११।	सुभअसुभदृष्टि
गुर	२।५।७।९।११।	सुभअसुभदृष्टि
शुक्र	१।२।३।४।५।८।९।१२।११।	सुभअसुभदृष्टि
शनि	३।६।११।	असुभसुभदृष्टि
राहु	३।६।११।	असुभसुभदृष्टि
केतु	३।६।११।	असुभसुभदृष्टि

स्थानसुभग्रहवेधअसुभफल। छप्पयछंद। जन
मरासितैतीकत्रिघटदससासिवरविजानव। त्रिघटरुद्र
देसएकसपतसुभचंद्रप्रमानव। सनिकुजदससासिवत्रि
घटउगुरसिवमुनिनौदोइसर। अगइकद्विवसुत्रिवेदसर
रविनोसिवनीकवर बुधश्रुतिघटद्विवसुसिवरदिसा
सनिराहुकेतक्रमएकहै मंगलसुदायकगोचराक
सनशंभुसुभफललहै।२६। रोलाछंद। सुभग्रहदृष्टि
करारअसुभफलअसुभप्रमानो। असुभग्रहासुभरै
घनोपि ~~असुभफल~~ कैउनमानो। एसैग्रहविसवि
महानिरफलंकरिहोइ। जोकहुदेखैसत्रहोयनिरफल
पुनिसोइ।२७। दोहाछंद। जोग्रहनीचोहोइपुनिअरुअस्तंगतहोइ। इसैकेघरके

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

६

इछुनिश्चयथातासुफलजोइ॥१८॥इति अलंगतनीचसत्रुघरग्रहनिर्फला॥ दुरवल अघवाहोश्केवडेतेवडाभुवार॥जवलगिहोवेग्रहविषमवरजिउएतप्रकार॥१९॥ अविचारकदूरीगवनपारधिजातअकाल॥हयहाथीनविसाहिवोहैअलाभतो

रवि	इंद	मंगल	वुध	गुर	सुक्र	सनि	राहुकेतु
माणक	रूपो	मूगा	सोनो	मोती	रूपो	लोह	लाजावर्त

हाल॥२०॥ चोपहीछंद॥ सूरजमंगलधरप्रवाल॥रूपोधरेसुक्रससिहाल॥वुधसोनोमोतीगुरलेत॥सनिश्चयकाचमनिहुतमकेत॥२१॥इतिधृ हवस्तधारन॥वर

नवग्रहीमुद्रिका		
ईसानवुधमरकत्यचिमरकत	पूर्वसुक्रहीरा	अग्नेचंदमुक्ताफल
उत्तरगुरपुखराग	मध्येरविमानिका	दक्षिनभौमप्रवाल
वायुकेतुवैदूर्ज	पश्चिमसनिनीलरत्न	नैरितराहुगोमेद

वेछंद॥रविमानिकससिमोतीविद्रुमभोम मरकतवुधपदमरागगुरसोमभृगुहीरानी लसनितमगोमेद मनिवैडूर्जकेतकोसमुझोभेद॥२२॥परख

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अथ पावक ससि मंगल जाम । नैरित राहु सु पछिम मंद प्रनाम । पवन केतु उत्तर गुरु बुध ई-
सान । मध्य सूरज दिसा क्रम शंभु बखान ॥ २३ ॥ इति नवग्रही मुद्रिका ॥ मनसिल पुनि
हिंगुहार औ उसीर । राती फूल कमल कौ कुंकुम नीर । ए औषधि जल या लिलु क-
रै अह्नान । नासै दुरित तुरत सो विषम भुजभान ॥ २४ ॥ इति रवि विषम सांति विधि ॥ द-

समयधनादिचक्र

रवि	चंद	मंगल	बुध	गुर	सुक्र	सनि	राहु	केतु	ग्रहविषम
धे									
धेनु	संख रूपो	लाल बैल	सोनो	[illegible]	स्वेत घोरा	कारी गाइ	लोह	[illegible]	दानानि

धि घृत मूत गाइ को गोमय दूध । पंचगव्य गनि लीजिये यह विधि
सूध ॥ संख हाथि मंदु मुक्ता फटिक सकंजु ॥
इनसौ चंद स्न्हावै मंगल मंजु ॥ २५ ॥ इति चं-
द विषम सांति विधि ॥ सिंगुल चंदन ली-
जै बकुल प्रसंग । जटामासी लीजे सप्तऋषि प्रसंग ॥ अरुन प्रसून चीकनो लीजे बेल । भौ-
म विरुद्ध अह्नावे न दुरघट मेल ॥ २६ ॥ इति भौम विषम सांति विधि ॥ फल सुविजोरा
रोचन अक्षत आन । सेव नागू मधु मोती गोमय जान । मूल अपामारग कौ जो बुध
नष्ट । इनि अस्नान सुकौ जे नासहि कष्ट ॥ २७ ॥ इति बुध विषम सांति विधि ॥ जाइ को

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

फललीजैजाईफूल॥ सकलसरषपालीजियैजाहिनभूल॥ मधुकोफूलवघानियैएर
सवचोष॥ अस्नानेगुरकीजियेनासैदोष॥२८॥इतिगुरविषमसांतिविधि॥ मनसिला
एलारचीएलेदोइ॥ फलमूलहिअमरिकोकुंकुमसोइ॥ अगनंदनसुविरोधिकदोषनसान
॥ औषधिनीरघालिकेकरअस्नान॥२९॥इतिसुक्रविषमसांतिविधि॥ लोधचोक
नषिरहटीऔराचोथ॥ सतपुष्पातिलकारेलाजामोथ॥ औरग्रहनितेजानोसनिग्र
हकूर॥ नवघटघालिसपरिपैसवदुषदूर॥३०॥इतिसनिविषमसांतिविधि॥ तिल
अनेकअरुदूरवापुनिकस्तूरि॥ पत्रकमलपामुक्ताजलघटपूरि॥ अस्नानसुकीजि
यैरहिविधिसोइ॥ राहुकेतुसुभदायककयोतेहोइ॥३१॥इतिराहुकेतविषमसांति
विधिसंपूर्णं॥ जिमिऔषधिरोगहिहरैमंत्रसुतवदुषत्रास॥ विषमग्रहाअस्ना
नजिमिसांतिकरेंभइनास॥३२॥इतिनवग्रहसांतिअस्नानविधि॥ सुरजारिग्र
हहोमहिलजोरेसमधैआनि॥ सनिगाधत्वचासरसिसरलनहिमोटीनहिनानि
॥३३॥इतिमरसनमंत्र॥ काष्ठकूर॥ रविग्रहलीजैआकचरपालासवघानियै

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ओमघरिरिकोहे महुद्धत्रयपामारागजानिय। गुरपीवरध्मगुउमरिसनीचरसाक्किनठानि
य। राहुहूवकुसकेतुसमधयएनवग्रहस्त्रानिय ३४ ॥इतिनवग्रहसमय॥ रविकोदीज
धेनुचंदरदरशजितसमेता। मंगलरातोवृषलबुधकोमानोदेता। गुरपीरोभ्रगुस्वेतवा
जिसनिसुरभीकारिय। तमचत्रपवुकराकेतदानएनवग्रहतारिय ३५ ॥इतिनव
ग्रहमान्यदानानि॥ पूजैब्राह्मनदेववचनगुरकेपुनिपालै साधुवचनपरिमानवे
दधुनिनीकधकालै। पुन्यकथाअरुहोमजगपदरसनसुचिअंतर भावसरसजप
दानग्रहनपीडैइहिमंतर ३६ ॥दोहाछंद॥ जोकोअसोकरातिनरपीडहियहनकरा
चि। शंभूसाचेरिषिवचनकेहुनअसाचि ३७ ॥इतिनवग्रहशांतिउपचार॥
इतिश्रीमत्पंडितसिंहात्मजश्रीशंभुविरचितायांज्योतिषसिंधुप्रथमचद
वंगाचारकेनरसमनरगः॥१०॥ ॥रोलाछंद॥

ग्रह	रवि	चंद	मंगल	बुध	गुर	शुक्र	सनि
बल	हस्त	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कार्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

राजादरसनहेतजहांसुराजवलचाहिय। मंगल
काजविवाहजीवकोवलअवगाहिय। मंगल
...भ्रगुजालमेंदवलदीछाजानिय। सास्त्रध्यानवलबुद्धचंदरसवकाजजानिय

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥१॥ इति [illegible]॥ सितपरिमाणते चंद्रबल होइ पाप सुभ जाइ॥ जौन हि शंभ ससिबली तौ पु
नि सुभ बनाइ॥२॥ इति चंद्रबलाबलफल॥ गोचर मारग पाप सित चंद द्वितीय
त्रिकोन॥ गुरु समान तौ फल करै जिमि रसाइनी सोन॥३॥ इति चंद्रबल गुरु समान बल॥
कृष्ण पक्ष को होइ पुनि नष्ट चंद्रमा घट॥ प्रापति करै तेजाइ गिरि सनि समान फल मेट
॥४॥ इति चंद्र विरुद्ध सनि समान फल॥ जनम नषत तें लेषिये सो नव तारा होइ॥ प्रथ
क पृथक तिन नाम लै कहत प्रगट करि सोइ॥५॥ इति
तारागणना॥ जनम संपति विपति छेम पाप सुभ

जन्म	संपत	विपत	छेम	पाप	सुभ	कुष्ट	मैत्र	अति मैत्र
सुभ	सुभ	असुभ	सुभ	असुभ	सुभ	असुभ	सुभ	सुभ

ताराशुभाशुभचक्रं

धाम॥ कष्ट मैत्र अति मैत्र पुनि ए नव तारा नाम॥६॥ इति नवतारा
नाम॥ चौपाई छंद॥ जनम नषत्र आदि दै गनौ॥ वासर नषत्र पाइ कै भनौ॥ हरै भाग
पुनि नव कर लेष॥ लेहु जानि करि तारा सेष॥७॥ इति तारा प्रापति॥ तारा सुषदा इक
ल वषाहि॥ तीन पांच सपतम वरजाहि॥ तारा बल तें बल नहि और॥ अपनो बल सुख
देस वहौर॥८॥ इति ताराशुभाशुभ॥ दोहा छंद॥ चंद्र पक्ष सुधि पारे ही को होइ
प्रधान न सोइ॥ तह तारा को बल प्रधान पुनि भरतानि पक्ष को होइ॥ गयो गाउ पैतो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सबकारजकीरे त्रियासुसमर्थ ॥ कह्यौ सेष्ठ तारा बलसंभूसमुझिलीजियेसूथे ९ ॥ चौ
पही छंद ॥ सुदलपक्ष्कौचंद प्रधान ॥ तारा नही प्रधानेबखान ॥ जौ लौ हैबर तारा ब
लिष्ठ ॥ तौ त्रियन्कौ स्वामीन अनिष्ट ॥ १० ॥ इति ताराप्रभाव ॥ आदि प्रवासहि देग
निसोइ ॥ चंद्र अवस्था बारह होइ ॥ जाताअरु विवाह सुभ
काम ॥ जैसो फल तिहि
तैसोनाम ॥ ११ ॥ प्रथम
प्रवासनष्टमृतजया
हास्यरतिहुक्रीडासुप्तया ॥ भुक्ताज्वरकंपितसुस्थीर ॥ चंद्र अवस्थाए सुनि वीर ॥ १२
एक अवस्थाके प्रमान ॥ १ घटी पल पंद्रा जान ॥ मेष आदि दै भोगै रासि ॥ बप्रप्र
वास सो आदि प्रकासि ॥ १३ ॥ इति चंद्र अवस्था ॥ सुंदर छंद ॥ अजरासि प्रवास सु
है वृषनष्ट उभै मृत कर्कज याहि बखानौ ॥ पुनि केहरि हास्यतिया रतितौलनि क्री
डह वृश्चिक सुप्त प्रमानौ ॥ धन भुक्त समकज्वरादि सु है घट कंपित मीन सुआस्थिर जा

चंद्र अवस्था चक्रं

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मेषादिराशि
प्रवास १	नष्ट २	मृत ३	जया ४	हास्य ५	रति ६	क्रीडा ७	सुप्त ८	भुक्ता ९	ज्वर १०	कंपित ११	सुस्थी १२	चंद्र अवस्था
११।३५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	११।१५	घटी पल भो ग

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्र० म०

नै॥ सुन नाम जथा फल जानु तथा कहि शंभु सु चंद्र अवस्थ हि आनौ ॥१७॥ इति
श्री मत्पंडित सिंहात्मज श्री शंभु विरचितायां जोतिषसिंधु प्रथम पदावचंद्रता
राबल प्रकर्ण कादशतरंगः॥११॥ दोहा छंद॥ छापा पद गनि द्वगुन ये चोद ह
मिल्यौ लेष॥ रासे वा नव भागि ये लवध घरी पल सेष॥१॥ इति [illegible]॥ अ
था॥ चोपई छंद॥ छापा पद गन सीस उघारि॥ जो मे जो रो षट गानि तारि॥ इ
कसत इक इस भाग हरे ह॥ लवध घरी पल सेष करे ह॥२॥ अथा॥ तीन सु बुद्धी

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कहे सु मान॥ भाग तीन सो
इक करि जान॥ शंभु घरी
लवध उनमान॥ दिवस
साग मान प्रमान ३॥ अथ लग्न साधन॥ उदय अारित घरी पल हि॥ आधी लो
आधी ना जि देहि॥ रविन छत्र ते दिवस नछत्र॥ लग्न स्थल जानिये तत्र ४॥ इ
ति लग्न साधन॥ जो रो लग्न घरी पल होइ॥ गत दिन घरी जु आवो

जो०सि०
२८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सो३ सरनलगनहितेंगनिआनि॥ होरजेसरीनामवखानि॥२॥ अथान्य॥ गत्र
राघटगुनकरिलेहि॥ दिनसंक्रांतिजोरितिहिदेहि॥ हेलवधोकसुभांजनेत्रेंस॥ लग
नउदयतेगनुलगनेंस॥६॥ इतिलग्नसाधनं॥ मीनमेषएकेकला तीन की
हे३ इकतालिस३।४१ पला॥ वृषकुंभहिकीएकेकला॥ चारिदंडतेरह४।१३ पला
॥७॥ मकरमिथुनकीएकेकला॥ पंचदंडचारी५।४ पला॥ धनुकरकटकीए चार
केकला॥ पाचदंडआलीसपला॥८॥ सिंहवृश्चिककीएकेकला॥ पाचदंडपे
तालिस५।४५ पला॥ कन्यातुलाकीएकेकला॥ पाचदंडपैतीस५।३५ पल॥९॥
तथा॥ घरितीन३ वेद४ पुनिपुनिसर५ लीन॥ मेषआदिउलटादिकमीन इक
तालिस४१ तेरह१३ चारीस४ च्यालिस४२ पेतालिस४५ पैतीस३५
॥१०॥ इतिलग्नप्रमानं॥ दोहा॥ भुक्तिसात७ कीमानजमनआर८ कुंभ
पुनि वृषलेख॥ मिथुनमकरदस१० मीनएकादस११ पलसेख॥११॥ लगनदूनि
तेहो६पलपनतेविपलवहोर॥ शेभुक्तिहिविधिलगनप्रतिभगनेरविचक्रमा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
२९

२।१२॥ इति भुजामूर्तिसाधनं ॥ काव्यछंद ॥ कालअंगसवअहै मेषआदिकजे
रासी ॥ सीसवदनपुनिवाहुहृदयअरुजठरप्रकासी ॥ कटिवस्तिकअरुगुह्यजंऊ
रुजानहुजाधपद ॥ इहिप्रकारक्रमदेउशंभुदाससोसमुझिवर ॥ १३ ॥ इति मेषा

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सीस	मुष	वाहु	हृदय	पेट	कटि	वस्ति	गुह्य	ऊरू	जानु	जंघ	चरन	कालअंग
रक्त	स्वेत	हरीत	स्याम स्वेत	पांडु	विचित्र	कृस्न	पीरो धौरो	पिंगल	कर्बुर	वभ्रुक	मलिन	वरन

दिराशिकालअंग ॥ रक्तश्वे
तहरितवरनसुपाटलपांडुक
जानो ॥ विचित्रसुस्यावसु
पिसंगसुपिंगलठानो ॥ कर्बुरवभ्रुकमलिनवरनमेषादिकरासिय ॥ इहिविधिभा
षिउशंभुसिंधुजोतिषप्रकासिय ॥ १४ ॥ इति वर्णवर्न ॥ कहियेलालसुपेत
रंगहरपाटलजानिय ॥ पियरोलालपिसंगरंगदोईकरिठानिय ॥ पिंगलरंग
पिसंगएकवस्तुभेदवषानिय ॥ वीछीरंगपिसंगपिंगलचिरवालविमानिय
॥ १५ ॥ इति रंगभेद ॥ दोहा छंद ॥ राजपाटअभिषेकपुनि कारियधातुसेवं
ध मेषलग्नमेसिद्धिए कहिसोजोतिषसिंध ॥ १६ ॥ इति मेषलग्नकार्जं ॥

जो०सि०
२९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कंन्यादान प्रवेस यग्य षेती छेत्रारंभ॥ अस्थिर काज विवाह पुनि कीरै पस्यु व्रव
श्राम॥१७॥ इति व्रषलग्नकाज॥ चौपई छंद॥ काज विवह कर्ता विग्यान॥ मेहंद
लाधवादिक कर्मान॥ गहि वो पहिरव सब लंकार॥ मिथुनलग्न संवंध विचा
र॥१८॥ इति मिथुनलग्नकाज॥ वापी कूप तलाव तलाव॥ पानी वांधव चे॥ छंद
वाव॥ सांतिक पौष्टिक करियें जान॥ कर्कलग्न ए काज सिरान॥१९॥ इति कर्क
लग्नकाज॥ वानिज मारग करवें जोग॥ क्रय विक्रय नृप सेव प्रयोग॥ कीजें
तीक्ष्ण संग्राम॥ सिंहलग्न ए काज प्रनाम॥२०॥ इति सिंहलग्नकाज॥ औषधि
रचना काहु पधान॥ अलंकार सिल्प विग्यान॥ मेहंदजाल क्ष्रनुचर स्थी
र॥ सांतिक पौष्टिक लगन त्रिय धीर॥२१॥ इति कन्यालग्नकाज॥ कृषी कर्म सवा
ओपार॥ तोल माप दार क्रस्युवसार॥ जात्रागमनादिक पुनि कीज॥ तुलालग
न ए काज गलीज॥२२॥ इति तुलालग्नकाज॥ चोरी कर्म कर्म आविचार॥ करिय
पाट अभिषेक सु वार॥ तीक्ष्ण उग्र स्थिर नृप सेव॥ लगन व्रस्चीक सुख वांछे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

व॥ २३॥ इति वृश्चिकलग्नकार्ज॥ सोंतिकपौष्टिकगमनविवाहू॥ वाहनविधि
चरकर्मकराहू भलीभांतिसंग्रहोवस्त॥ चापलगनएकारजसत्त॥ २४॥ इतिचा
पलग्नकार्ज॥ छेत्रनाउआरोहप्रवास जलवांधवछोरवृत्तजिआस दासां
तनसंग्रहपसुऊट॥ मकरलगनआवहिनाहिंटूट॥ २५॥ इतिमकरलग्नकार्ज॥
नीरतरनरोहनजलजान॥ बीजसेपुवीजोपातिजोन॥ आस्थिरचरहूकर्मजेआ
हि कलसलगनकेउदयकराहि॥ २६॥ इतिकुंभलग्नकार्ज॥ विद्यालंकृतकाट
पधान॥ सिल्पकृषीजलकर्मवखान॥ जात्रापसुअभिषेकविवाह॥ एकरूअष
लगनोरयमाह॥ २७॥ इतिमीनलग्नकार्ज॥ सोवान्नाछंद॥ सुद्धहोइमेषादिक
लगनैहोइनकोनहूक्रूरग्रहा॥ कहिआएजेतेजोकारजहोइसिद्धितोकाजतहा
क्रूरग्रहाहोइजोतहवाअपवादेषेक्रूरसवे॥ कहेशंभुतोसिद्धिनपावहिज्यो
कोहरराविभासदवे॥ २८॥ इतिमेषादिलग्नक्रूरग्रहरहितसिद्धिकार्ज॥ नवि
कांकुरा॥ लग्नहोरद्रेषकानवांसहे॥ द्वादसांसओरयांत्रिसांसहे॥ जेसषटवव

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गेको अक्रूर है। सौम्य षेट सौम्य क्रूर क्रूर है ॥ २९ ॥ इति षड्वर्ग सौम्य क्रूर ग्रह प्रकार
फल ॥ सौम्य षेट वर्ग लग्न सौम्य है। सो तिपो सि हर्षकाज सौम्य रे। फुरि उग्र वर्ग
शंभु गावही। क्रूर दारुनारि सिसि दुपावही ॥ ३० ॥ इति फल ॥ जन्म लग्न मकर चाप मी
न है उच्च नारि लग्न सौम्य स्थान है। कुंभ सिंह वृश्चि
क मेष है लग्न क्रूर भाव के विसेष है ॥ ३१ ॥ इति
सौम्य क्रूर लग्न नामा [illegible] छंद ॥ सौम्य प्रकाति क्रूर सुत हा है १ कंर्क बुध लो १ जो पं
सुभ ग्रह आश्रवै सौम्य रासि ग्रह हो १ ॥ ३२ ॥ जो कौ नू ह ग्रह हो १ नारि ग्रह अरु आवलोक
हि नारि। सकल भांति तौ रासि पुनि आपनो भाउ कराहि ॥ ३३ ॥ इति रासि भाव ॥ प
नयंग [illegible] छंद ॥ प्रथम हि नीनन वांस लगन आदि हि लगे। संपूरन फल देइ का
ज जो मन जगे। पुनि पाछे फल मधिम सूलप अति फल करै। इहि प्रकार [illegible]
१ सु शंभु उच्चरै ॥ ३४ ॥ इति फलाफल ॥ एक १ वेद ४ द्विक २ सात ७ सुकंर १ सुद
है। कोन इष्य हान हो १ भाव सुव दुहे। उदय लगन अस्थीर वर्ग तो सुभ ग्रह॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रम०
३०

ऐसे जोग सु वस्तु अन्न आरंभ हित हो ॥ ३५ ॥ इति वस्तु आरंभ ॥ जानि पूछि चर लग्न
करो चित्त नकी जिये ॥ मनुष्य सालित्ता हो ३ विसेषि हितु लीजिये ॥ ९ ॥ रेऊ परे कारस मुझि
बुध राघव ही ॥ सो ३ ३ भू दास अगट करि भाग्य री ॥ ३६ ॥ कुंभ रासि को वरजि और थि
र जानिये ॥ दुस्वभाव औ लग्न होइ सो आनिये ॥ ६ ॥ दूर ३ वा ग्यारह ११ दिसा ५ धाम
३ निसुभ ग्रह ॥ पापी ग्रह व्यय १२ वरजि होइ ससि सुक्र हो ॥ ३७ ॥ दोहा छंद ॥ हो
इ वाटरचना करो ऐसो जोग विचारि ॥ करहि सिद्धि इन काज की सव अव वरैटेरा
रि ॥ ३८ ॥ इति हारवाटरचना ॥ वसु ८ त्रिकोन ५।९ नहि सु ड्रम ह अरु चर लग्न
प्रकास ॥ भोडार अस्थापिये पुनि प्रयोग इव्यास ॥ ३९ ॥ इति भंडारादि प्रयोग
कार्ज ॥ चंद्र ३ पुत्र जो लग्न कर मंगल ह सत म ७ स्थान ॥ ऐसे जोग विधे करे चोरक
मे परिमान ॥ ४० ॥ इति चोरकर्म ॥ रासि लग्न सुभ जानिये ३ स १० अरु रुद्र ११ क
हे व ॥ रवि बुध जन न वैये ९ जो वसहि पद विद्या प्रभु सेव ॥ ४१ ॥ इति विद्यारंभ
नृपसेवा ॥ सो म्य लगन अष्ट ८ ये ८ भवन सुभ ग्रह वरजित होइ ॥ होइ न वत जो

जो०सिं०
३०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आपनेचौ पदराखियसो १॥ ७२॥ इति पशु संग्रह॥ हो१सबलदोसुक्रगुरनिरबलचौ
थ्यस्हाउ॥ जोसुतउतपतिचाउ उरतोत्रियसोरतिठाउ ७३॥ इतिमैथुनकर्म॥ लगनाद्वे
कोनीसुक्रयहत्र्यथवागुरसंजोग॥ इहिप्रकारकैकहतहैनराजोतिषीलोग॥ ७४॥
शुरुषलग्नअथवात्र्यपनिजनमरासिकोलग्न॥ सुतरहितत्र्युहीभोगवकामकेलि
करिमग्न॥ ७५॥ इतिद्वितियमैथुनकर्म॥ नारच॥ ७२॥ सुभग्रहचरचौथवलग्न७॥
१ घरे॥ पुनिपापग्रहाबलसोनभरे॥ ग्रहवार्जितत्र्याठपहैसचरै॥ थिरलग्नसुधा
मप्रवेसकरै॥ ७६॥ इतिग्रामनवगृहप्रवेस॥ गुरलग्नविषे१ रविचौथ४ घरे॥
रविवासरधर्मअरंभकरै॥ इतिधर्मारंभ॥ सनितानतहसे१ गुरलग्न१ विषे॥ अभि
चारसमंगलकाजलिषे॥ ७७॥ इतिमंगलकाजअभिचार॥ गुरलग्न॥ सुपरनबुद
षिता॥ इसये॥ रविहैचरलमाहिता॥ अभिषेकसुकाजसवोसि॥ वे॥ गरवारजुत्र्या
गुरमादिविधिवे॥ ७८॥ इतिअभिषेककाज॥ ससिउदितसोमसुवारजहा॥ मुनि
४ चौथ४ दिसा॥ सिव॥ जीवग्रहा॥ सरवापिउद्यानसुवीजववे॥ अपसेवके
रेसोसुकाजसवे॥ ७९॥ इतिउत्नासपउद्यानवीजोपातिअपसेवा॥ गुरकमादि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
३१

१० पापन वे ९ नवसी ॥ अहहोवहि अस्थिरलग्नभली ॥ सुतजन्मप्रवज्येसुजो
ग करे ॥ पुनिकारजुसाधिसुदीछलहे ॥ ५० ॥ इतिदीक्षा ॥ गुरवुद्धसुलग्नहिआर
रहे ॥ इनिकोषडवर्गसुहोइतहे ॥ समतेसुपुरानआरंभकरे ॥ पुनिधर्मसुकारज
कोसुधरे ॥ ५१ ॥ इतिधर्मादिपुरानश्रुतिआरंभ ॥ वुधजीवसुलग्नहि १ के
न्द्रहा ॥ इनिकेषडवर्गसुचंद्रग्रहा ॥ सिलपादिकविद्यआरंभलहे ॥ इननैकरिसि
द्धिसुशंभकहे ॥ ५२ ॥ इतिसिलपादिविद्यारंभ ॥ विष ६ जुगमसु २ वुद्धिकरासि
समी ॥ ग्रहसुद्धरलग्नविषेपरसी ॥ पुनिपापग्रहनहिलग्नविषे ॥ सिघआतमपा
नसुसाधिसिवे ॥ ५३ ॥ इतिआतमपानसाधन ॥ ग्रहसुद्धरकेरिसुहैलगना
ससिपुत्रनिसाकररासिगना ॥ ग्ररदेघरहिचोथहिसौम्यग्रहा ॥ वतरूनाउपहिके
रआरंभतहा ॥ ५४ ॥ इतिनावआरंभ ॥ दसई १० अलग्नपारहिलग्नकुही ॥ वित २
केन्द्र १।७।४।१० त्रिकोनसुषटमही ॥ घटकोपुनिलग्नसुवर्जिधरे ॥ गोलिहाट
सुलेनहुदेनकरे ॥ ५५ ॥ इतिहाटवाटलेनदेनसिद्धि ॥ वुधलग्नपरेअष्टवाग्र जोतिसं०
३१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है। बलहीन सुसक्र ग्रह डरै है। जलचारि परासि हि चंद बसै। करि यै सु जलासय सुन
हसै ॥ ५७ ॥ इति जलासय ॥ सुभ घट बलिष्ट कजानि जुए ॥ सुनि ३ छै ८ वसु ९ पारहि
११ सुद्ध सुए इहि जोग सु औषधि सेवत है। नर आयु महा बढिहै वन है ॥ ५८ ॥ इति
औषधि साधन ॥ तोटक छंद ॥ पूरवफालगुनी भ्रगमेत्रय ॥ जन्मकु औरसु पुष्यन
क्षत्रय ॥ आठय ८ नै तिलक नैव धानिय। लग्न दिवे सुभ चाप सधानिय ॥ ५९ ॥
इति धनुष संधान ॥ मूल मघा भ्रग भरणी सु आद्रव ॥ ए उ इस्त्र आठय ८ लग्न जु सुद्ध
के भ्रग है घट लग्न सुजानव ॥ ऐहि प्रकार सुए सिधि आनव ॥ ६० ॥ दोहा छंद ॥ भू
तप्रेत वेताल पुनि पिसाच गन अभ्यास ॥ छत्रपाल प्रथवा हु रिके कर्म सिद्धि
परकास ॥ ६१ ॥ इति उनि गुनसाधन ॥ चौपाई छंद ॥ अथवा है घट वर्ग क्रूर कर
क्रूर चंद्रमा एक थली ॥ क्रूर रहि की पुनि लग्न नहो नो रिपु के आठय ८ सुद्धवली ॥ नी
तके केउ तपतिके अवसर पायो जोग अहि कहा ॥ अस जोग सत्र अपनें को की
जेसो अभिचार तहा ॥ ६२ ॥ इति सत्रु उपचार ॥ लग्न रहि तै सो एग निती जै आठ ८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामं०
५२

षष्ट ६ व्यय १२ सुइमहा ॥ तीन ३ षष्ट ६ दस १० हइ ११ लग्नह्मजनम रासितेगनिय
तहा ॥ इनि लगननिपुनि होइ चंद्रमा सुंदरग्रहपुनिनजरिकरो ॥ यामे सर्वकाज आरं
भो शंभु जो लिखिनिभाषि धरे ॥ ६३ ॥ इति सर्वकार्जारंभ ॥ तहा महा वलउतकट होइ सु
चंद्रमा द्वितिय २ कहा ॥ मंगल गुरु आदित्य सु ओसो त्रितिय ३ हीन वल करियतहा ॥ जेल
की रासि की जिये चंद्र लगन वृहसपति आइ रहै ॥ ओसे जोगक मे षेती को करे भाति
सब सिद्धि लहै ॥ ६४ ॥ इति षेती कर्म ॥ भले काज सरव त्र सुभा ग्रह आठय ८ व्यय १२ घर
वरजि के है ॥ केंद्र १।४।७।१० त्रिकोन ५।९ आठय ८ वारह १२ वरज पाप इनि धाम मरे
॥ रजनी करजो परहिलगन को पुनि मुनी सब आस स्थ्राप्य भजो ॥ जनम रासिते आठय
८ मंदिर सुभग्रह संजुत पुनपि तजो ॥ ६५ ॥ दोहा छंद ॥ लगन आदि सब काज हित चं
द्रवल अवलोक ॥ सासि वल तो सव ग्रह वली या मे नहि कछु धोक ॥ ६६ ॥ इति सर्व
वकान ॥ चौपही छंद ॥ चंद्रवल तै आधार धरे ॥ और ग्रहा वल आधा ऊपरै है
इ अथवा वली जो नि[illegible] ॥ तो आधउ पर वस्त वलिष्ट ॥ ६७ ॥ सब वल आवित स

जो०सिं०
५२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सिबलतैरि। सुभग असुभ पय ग्रह बल ऐरि। जो सम प्रति ईडी वरतार। आप न
आपन करओ पार॥ ६७॥ इति चंद्रबल प्रभाव॥ अरिल छंद॥ अस लगन तउ वे
तिन असहोइ ग्रह। तो फल लगन रहि कर अति सपसन कर। अस मुक्रम फल देइ ते
दूसर थान कर॥ इनि पर वार हि भाव पाछु भाव बल पेवर॥ ६८॥ ग्रह तौ लग्न हारा मा
न प्रमानिये॥ त्रिभाग तो द्रेषकान नाम बषानिये। नवांसक द्वादसांसा त्रिसांस ष
ड्वर्ग। एक एक बल वरतए वचन मुनि गर्ग॥ ६९॥ इति षड्वर्ग गर्ग वचन॥ पाइ सक
ल गुन लगन मंगल काज करइ॥ सुलप दोष गुन बहुत दोष को बल हरइ। प्रज्वलप
वक ज्वाल सतु ईजल डारिय॥ बुझ इन हीसो अगिनि सो पेजर आरिय॥ ७०॥ एक दोष
गुन लछ विनास करि डारहे॥ पुनि पो दोगुन होइ लष दोष हि मारहे॥ पंच गव्य प
वन लु कलस तिक रिभेरे। एक विंदु मइ पराहि जु पावन ता हरे॥ ७१॥ इति गुन दोष वचन॥
इति श्री मन्यंडितन सिरात्मज श्री शंभु विरचिता यां जोतिष मसिंधु प्रथम चंद्रा बल
प्रकर्न द्वादस तरंगः॥ १२॥ दोहा छंद॥ रिक्ता तिथि न रहि कुरांइन दगाधा कुहून

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

विचि॥ कारियेहोमारंभनहिहोइचंद्रमानिष्ट॥ १॥ तिथवताअसलेषामघाभरनीहि
तिपाविसाष॥ आरद्रावारुननषतहोमसुविधिकरिराष॥ २॥ चौपही छंद॥ वरनमू
तिथिजोरोवार॥ अग्नि ३ भागहरचक्रविचार॥ एकस्वर्गवसदोपाताल॥ मृत्युलो
करहत्नयसुवाल॥ ३॥ अग्निआग्नितिलोकवास॥ वसिपातालकरैउतपात॥ मृतुमं
डलमेसुभविष्यात॥ वसेस्वर्गलोकरिमेआगि॥ सुतदाराधननासहिजागि॥ ४॥ ग्र
हलोकवासफल॥ रविनछत्रतेनषतगनेहि॥ तीनतीनसोगनिकेदेहि॥ भानुबुद्ध
भृगुसनिससिभोम॥ गुरुतमकेतुकरोक्रमहोम॥ ५॥ अग्निप्रथमनषतफल॥ दोहा छंद॥ भानुसो
कबुधसेपदाभृगुकरिधनआवै॥ सनिपीडाससिलाभकुजवं
धवधावै॥ परमकल्यानगुरकैरसिंहिकसुतहानी॥ हरैस्वभ
नजुज्ञानकोलेहुसुफलजानी॥ ६॥ अग्निफलाफल॥ आंवे
चक॥ कर्कमीनअरुमकरहैबुंभहुअवतेसा॥ जलचरलग्नहोवहीअथवाइन
केसो॥ करुपावकआधानकोसासिलगनप्रकासि॥ आसनकोभयजानियेअग्नि

रवि	बुध	सुक्र	सनि	चंद	मंगल	गुर	राहु	केतु	ग्रह
सोक	वृद्धि	धन	प्रीत	लाभ	बंधहानि	पलायन	हानि	ज्ञानहानि	सुभासुभ
धनपुत्र		धारानास		स्वर्गलोक					
सुभ	दाता	०	०	मृत्युलोक					
उत	पात	०	०	पातालोक					

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हिकरिनासै ७ ॥ इति रामभुर्जा ॥ नौ ९ सर ५ केंद्र ॥ १।४।७।१० ॥ तीसरा ३ लिंव घट ६ च
स्थाना ॥ सूरज मंगल जीव हे पुनि सासि वर माना ॥ भृगु बुध सनि घट तीसरे ३ लिंव
११ इसये ९ ठामा ॥ ऐसो जो धर्मधुजा उपजा इह नामा ॥ ८ ॥ इति धर्मध्वजा ॥ व्रासन न
की तो भृतु है आहै ५ ससि होई ॥ वेगि आगि हो तीमरे कुज आठये ८ सोई जीव स
नी चर भानु जो आहै ६ अस्थाना ॥ तो व्रासन रोगी परे असाध्य पुनि जाना ॥ ९ ॥ इति
अग्निहोत्र योग ॥ क्रूरग्रह घर दूसरे २ हरिद्रि तो होई सुभग्रह तहा ५ धनी करे लसि
आनंद सोई ॥ बुध सनि दूसर २ लग्न ते अथवा सलि आवे ॥ अग्नि लोक की अग्नि के
मिलि नासहि पावे १० ॥ इति सुभासुभ ॥ भूमिपुत्र अरु चंद्रमा ग्रह संग विराजे स
त्रु छेत्र के जो परे तो होइ पराजे ॥ अस्तंगत पुनि जानिये ग्रह नीच प्रकासी ॥ अ
ग्नि परिग्रह की जिय थानी कर रासी ॥ ११ ॥ इति नख ॥ चापे लगन हो कोन हो जो सु
रगुर पावे साते ७ इस मस्थान मे ५ कुज मे षाहि आवे तीसर ३ षष्टम ६ ग्यारसा
रवि के ससि होई ॥ ऐसे पावक परिग्रह हो व्रासन न जप सोई ॥ १२ ॥ इति सुभ ॥ इति श्री

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मन्येरितनसिंहात्मज श्रीरामविरचिता यां ज्योतिर्विनिबंधे रामविनोदव्रतौ तु वक्ष्या
दिच्छित्रिपरीग्रह इत्यानन फल प्रकरणं त्रयोदशमम् ॥ १३ ॥ दोहा छंद ॥ पापग्र
हे रुकुजोग पुनि अस्तवाल भ्रगु होइ ॥ राजहि अभिषेक न करै पंडित बुध कहै को
॥ १ ॥ इति नृप अभिषेक वर्ज्य गृहा ॥ चंद्रवल अरु लग्न कर सुकलपक्ष अ
रु जान ॥ चैत्र वार भ्रगु वार पुनि नृप अभिषेक विधान ॥ २ ॥ इति नृप अभिषेक कर्त
व्य ॥ चौपई छंद ॥ रोहिनि निनष्ट उत्तरा ॥ तीन ॥ श्रवन अनुराधा अगलीन ॥
ज्येष्ठ पुष्य श्रवन कर रेवं ॥ विधु तारावल तिलक करेवं ॥ ३ ॥ इति अभिषेक नक्ष
त्र ॥ चौदसि ॥ चौथि ॥ नवै ॥ तिथि जानि ॥ एगधाति तिथि अरु नवरजानि ॥
होइ निसाकर छय पुनि सोइ ॥ इन मै राजतिलक नहि होइ ॥ ४ ॥ इति अभिषेक
तिथि वर्ज्य ॥ केहरि कुंभ वृसीक समीन ॥ कामुक उत्तन राशि मिलीन ॥ ए
लगन करि सुविवेक ॥ कीजै भूमिपाल अभिषेक ॥ ५ ॥ इति फलम् ॥ तीसर
छठ ॥ लाभ अस्थान ॥ पापषेट फलदाता जान ॥ सुभ ग्रह आवै केंद्र त्रिकोन ॥ नृप

१४७॥ ॥ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अभिषेककरैसुषभौन ६ लगनजनमअधिपत्यरसापाति सूरजमंगलएवलिइअ
ति जीवसुतअरुकलानिधान ऐसेजोगतिलकपरिवान ७ उच्चामित्रग्रहकेंद्र
[illegible] त्रिकोन रमाचिराग्रुतिलकसुषभौन अस्तगननीचोग्रहसोइ सत्रुछेत्रमअ
स्थितहोइ जोकरियेराजाअभिषेक करैसाकअतित्रासअनेक ८ तहाजनमरा
सिहिकरिहोइ तीन षष्ट ग्यारह दिक सोइ लग्नास्थिरसुलग्नासिरउदे संजुत
वकुरिघेरसुभछुवे १० क्रूरग्रहानहिसंगपराइ अरुक्रूरहुनाहिदृष्टिकराइ ऐसेमे
राजाअभिषेक जोतिषसागरकीनविवेक ११ [illegible] तारावलससिवलसु
ग्रहदिनारिकतातिथितजिडार नो सर भानु केइ [illegible] वसु दूसर एअस्थान
विचार शनिअस्थानहोइग्रहसुंदरपापग्रहानहिहोइ ऐसेजोगमेपअभिषेचनति
लकमुहूरतसोइ १२ कीजेतिलकक्रूरग्रहधन व्यय होइभपधनहीन पाचप
[illegible] तासुराज्ञनोविगरैजोपिहोइदुषदीन दसय निरउद्यमितोहोइसीधमग्रर
घाम नवे अमंगलअलपआयुवसु चि षट लाभ धानितान १३
[illegible] पाचय घरसासिहोइ केसुभषट वसु सोइ पापग्रहानजाइ सी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

छूरि नृपमरिजाइ ॥ १४ ॥ द्वादस ॥ अष्टम ॥ षष्ट ॥ घरजे सब रे नष्ट ॥ सुभग्रह सुभ अ
स्थान ॥ लहै पाछिले जान ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ लगने जरपि ॥ त्रिकोन ॥ ॥ होइ जो देव
पुरोधा ॥ लगने दसम घर दसै ॥ छठे घर मंगल सोधा ॥ पाइस ऐसो जोग भूपको कीजै टी
का ॥ दीरघायुस्यो रमा बहू बहु भोग हिनीका ॥ १६ ॥ भानुपुत्र पुनि भाखु तीसरे ॥ ग्यारह
होई ॥ सुरमंत्री पुनि जान चौथ ॥ दसमै ॥ घर सोई ॥ ऐसे जोग विचारि भूपको टीका
धावै ॥ संपति थिर चिरु आयु सुरतन को सदा हि सावै ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ सबल पाप
६ ग्रह केंद्र [illegible] त्रिकोन रि [illegible] उग्र भूपजो होई ॥ इनि अस्थाननि सबल सौम्य ग्रह
सौम्य धराम नृप सो ई ॥ उग्र सौम्य नृप मेष्ट हो ई तौ फल सुभ केंद्र [illegible] त्रिको
न ॥ ऐसे सय होइ महिपालितै इनि लछन नृप तौ ना ॥ १८ ॥ सूरज जोग जो भाचं
द्रा को ओर जोग और भंग ॥ वास्तु लगन को जोग जानिये एसवा विधि सुभ अंगा
राजा के अभिषेक हेत कारए सब जोरी जोगा ॥ प्रभुदास श्रीराम कृपा करि भूप भो
ग वभोगा ॥ १९ ॥ तोर ध्वज वृष सींग छाल नरु लोध पतं ग गज दाता ॥ उर्द्धकरा
लिमाटी पर्वत पुनि कोष्ट चर्म जल जाता ॥ हरदी होइ रमरु वा मुक्ता गोरोचन ॥ जो०सिं०
३५

[illegible]

सुउसीर देवदार वच तगर दूरवा वेलु सहदेई षीरा ॥ २० ॥ कंचनके सुभ वलस
साजि करि आठ आठ दिसि राषे ॥ आगे सकुल तहा लै धारिये करि मन सुभ अभिलाषे ॥
कंचन कलस आठ आठ झारी सि आगे इक धूरि सत्ता ॥ कंचन मनि मोती घट भरि
अरू पाछिली वत्ता ॥ २१ ॥ तहा नवीन रुचिर सिंहासन तिहि ऊपर वे ठारी ॥ पुनि राजा
आसन अनूपा वेत्ति तिहि घर कर लेवारी ॥ इहि प्रकार करि सो धरनी पति लै करा अ
स्नाना ॥ तिहि उपरांत कीजिये असो शंभू दास निदाना ॥ २२ ॥ इति अभिषेक स्नान
वंइ ऊगा छंद ॥ सिंहासन ऊपर चर्म व्याघ्र कर पुनि नृप वैठार विछाई ॥ पाहिरे प
र भूषन छत्र चवर गन वेदोक्ति करान कराई ॥ मानिक कमल रच चौक पूरि वर
गोरोचन अरु दूब दही ॥ अक्षत सुभ भांति छालि सुपाती नृप अभिषेक सुभांति
कही ॥ २३ ॥ पुनि चारि वेद का मंत्र भेद करा राजा को अभिषेक करे ॥ नृप आयु वदा
वै सुजस चलावै निज वैरी के प्रान हरे ॥ आनंद करावै जम प्रजा सुपावै असत्र पालम
हि राजि रहा ॥ परम मुनि मत जाना शंभु वषाना वेदो विद सिद्धांत कहा ॥ २४ ॥ इति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अथ अभिषेक विधान ॥ चौपाई छंद ॥ संबसवदर्तिहिसमयकराइ ॥ गीतअनृत्यभेरि
बजवाइ ॥ नृपआगेतहप्रोहितआइ ॥ धारनीरकीन्हाबहाइ ॥ २५ ॥ भेरिमृदंगमरि
वादोल ॥ चारिप्रकारसुसबरअमोल ॥ पढेसुगनमागधभाट ॥ प्रोहितमंत्रतिल
ककरिठाट ॥ २६ ॥ इति अपतिनय ॥ टीकापीछेदानदिवाइ ॥ कीजैसबसनमानबनाइ
तापीछेसेनापलनाइ ॥ दिसाविजयसबभांतिकराइ ॥ २७ ॥ इति दिग्विजय ॥ इति
श्रीमत्पंडितसिद्धान्तमज्ञश्रीशंभुविरचितनायजोतिर्ग्रंथे पंचमचंदावरना
भिधवप्रकर्णे चतुर्दशतरंगः ॥ १४ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ सुनजाततविधानापरमसयाँ
नाकररेपयानासोउनहा ॥ परिसर्वगुननिधरिसंपूरनभरिनृपातेआदिकरिबर्न
निकहा ॥ तिनकरगुनमानातनमनजानसमयपयानाफलाहेफले ॥ सुनअहहरजे
सोविधिवसतेसेकहिमुनिजेसभलेभले ॥ १ ॥ दोहा छंद ॥ प्रस्नकालकोलगनपु
निसकलचिह्नपुनिजान ॥ सबसुभासुभउचरैअसआचारजज्ञान ॥ २ ॥ मीनमिथु
नकन्याअतुलापुनिधनलगनवखान ॥ होरचंदबलसकुनसुभतोसुभहेइपयान ॥ ३ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दोहेकुंडर॥ जनमरासिकौजनमप्रस्नहैलगनताकोपतिउदै॥ अथवासुभग्रहतहांको कैरांते॥ लाभ॥ रिपु॥ कर्महि॥ हुवे॥ ए होर प्रस्नलगनेतहांस्वामीजुतवषानियें जोपूछै ताकैसुतकोछैयेभयोंतोजानियें॥ ६॥ लीजेसुजानिपाछिलफलेरासिरि पुकीतेकहै॥ चौथे॥ ४॥ सातये॥ ७॥ प्रस्नलगनतोंविजयकोफललहै॥ पापेसकोष्पर हेयोकूरैलगनसोंपिडवैतहां॥ ग्रहग्रहवर्गषड्वर्गहैचलिहैसुजीरनिजरा॥ ५॥ चरासिग्रहसुभजुतदिषेतोफलडुहूकेकरे॥ अस्थिरसुलग्नकौप्रस्नमेंतोगमन हीकोंपरिहरे॥ देषैसुसोम्यग्रहजुततरा॥ सुस्थानसुभ होवही॥ पापीसुग्रहजुत जोलषेस्वस्थानअसुभजोवही॥ ६॥ हरिगीतीछंद॥ द्विस्वभावसुरासिउदयो कातसमयोपाइकै॥ पापीग्रहाजुतसमयानेरिपुनिहारेराघहितलाइके॥ जोप्रस्न आसीमेचलेतोवेरीपराभवानेरवरे॥ सुभजुतलवेजोप्रस्नआसिरितोसंधिक रिआवेघरे॥ ७॥ मंगलमनोहररूपपृच्छीहोरप्रस्नहिकेसमे॥ मंगलवलकों आकलैरासनहोरआगमगामे॥ भांतिभांवाविचारिकेपुनिजोतिषिरिचांतना

रामु०
३२

रे ॥ तौ विजय भांति निभांति रीजो पूछ प्रश्नकसारे ॥ ८ ॥ इति प्रश्न विचार ॥ वरंवे छंद ॥
हस्त श्रवन अनुराधा अस्वनि रेव ॥ मृग मृगा आदित पुनिशा उ उ नव ॥ ये व ॥ जात्राको सु
भदा इव जानि सुलेहु ॥ त्रि ॥ मुनि ॥ इक ॥ सर ॥ तारा तजि केदेहु ॥ ९ ॥ इति जात्रा सुभनक्ष
त्र ॥ स्वाति विसाषा चित्रा भरनी होइ ॥ मघा कृत्तिका आद्रा अरु अहिसो इ ॥ ए आठहु
नक्षत्र सु जात्रा काल ॥ एसुभ कौन हि देही असुभ कराल ॥ १० ॥ इति जात्रा अशुभ नक्ष
त्र ॥ रोहिनि तीनो ॥ पूरवा उत्तर ॥ तीन ॥ सतभिष मूल इजेष्टा ए दस ॥ लीन ॥ जात्रा
कारजमध्यमधिस्ना सोइ ॥ नही भला न हि बुरा सु मध्यम होइ ॥ ११ ॥ इति जात्रा मध्यमन
क्षत्र ॥ कृत्तिका नक्षत्र तरह कहे सु ॥ सात ॥ पूरवा दिसि सवरी दिसा विख्यात ॥ पुष्व
हि आगे वायव रेषा आदि ॥ परिघ उलंघे नाही येहु मनसारि ॥ १२ ॥ पूर्वभाद्रपद दक्षि
न पूरव जेष्ट ॥ उत्तर फाल्गुनि उत्तर स्रेष्ट ॥ पश्चिम दिसि की जात्रा रोहिनि होइ ॥ नषत
सु ए चारो सुभ दिसि दिसि सोइ ॥ १३ ॥ एजो कहे बषानी चारि नक्षत्र ॥ सकल जातरा
को जे कहि सरवत्र ॥ तौ आकास फल फले कहि बुध लोइ ॥ आवे तरा मुरा के केजा
नो सोइ ॥ १४ ॥ पारप्रयोजन होवे कारज वात ॥ सुद्ध लगन जिहि दिसा सुत्ति हि दिस

ज्योतिसं०
३२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गात तौ उत्तर दिसि के चालिये पारि घरै ॥ सूल नछत्र तुव तौ तहां विसेष ॥ १५ ॥ अ
देनहगोछंद ॥ पूरव सु द्वार वरनयत जानि वरावरि दिसि कृत तासन्न वो मानि वारिये प्रया
न इहि नवे अग्नि आदि नैरति जाही पादि मको वा पव वृष्णा उत्तर ईसान ॥ इनि पर जो चं

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिसा
अग्नि	नैरति	वायव	ईसान	विदिसा
पुष्य	हस्त	[illegible]	अस्वनी	नक्षत्र
जात्रा चक्र				

लिये सब दुख टारि लिये गुर कर मंत्र अस्तुनि विचारि नस तन रचा
रि सब भांति भला ई जिहि दिसि जाई नरी सु परि घर नमें आरि
थं भु उचारि ॥ १६ ॥ थिर मिश्र गनी जे जात्रा न कीजे तातें न जिन
जितजीर है जो निषीकरे ॥ तीछन मध्या ह्ला लघु अपरान्हा मृदु नछत्र
जनी सुख मरे है नरी लहे ॥ उग्र नछत्र प्रात मध्य राति गुनि चर नछत्र निसि अंत सुजान व
रजे हि प्रयान ॥ श्रवन मृग हस्ता पुष्य कृ सस्ता इन करत सकार
सुभ मान जात्रा विधान ॥ १७ ॥ [illegible]
दोहरा ॥ भानु चंद के अयन नै तनु सा न कुस तो ई ॥ दो ई वे
गमला अयनानि श्च यव रि हाई ॥ तो वि दिवस की रात में
क रिय सु प्रयाना ॥ या को करै सु ज्ञान या वध वंध न जा

संज्ञा	तीछन	लघु	मृदु	उग्र	चर	ध्रुव
नक्षत्र	ज्येष्ठा मूला [illegible]	[illegible]	चित्रा [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ना॥१८॥ शेनाकुंडरा॥ रविससि उत्तरअयन प्रागउत्तर दिसि जावे पछिम दछिन दिसा
नही सो जात करावे ॥ रेउ दछिन अयन रविन पछिम करु जाना॥ उत्तर पूरव दिसा जात की
जहि यनवाना॥१९॥ ससि रवि अयन सुधुमन विगरा अरु सपाते होई॥ प्राग उत्तर दिन च
ले राति के चले न कोई ॥ दछिन वरुन निसि चले दिवस करिये न पयाना॥ और वरो विप
रीत रोग वध बंधनु जाना॥ २०॥ अंतमधर्थवंदअयनजाना॥
पूरव ससि सनि जेष्ठ पछिम रोहिनि भृगु भाना॥ दछिन दि
सि गुरुवार पूरव भाद्रपद जाना॥ उत्तर मंगल बुध उत्तरफाल्गु
निमाना॥ दिसि दिन उडु दिकसूल जानि नहि करिय पयाना॥
२१॥ इतिदिसासूना॥ जिहि दिसि उडु हो का रतो पि एक न भ्रमारी
तिहि दिसि रवके दिक द्वार नछत्र विचार करारी॥ एक दिसा तो जानि कै हैं यह जो तिथि
राशि सनमुख सुक्र हि के उदय शंभवर जाई॥ २२॥ धनिष्ठ अरु अस्लेष रन हि जुवलि
भृगु भोगे॥ पूरव उत्तर दिसा जाहि न हिउ हि संजोगे॥ जो कदाचि उनि जाई जाई के न ह
तो हारे॥ ता ते शंभु दास जोग यह समुझि विचारे॥ २३॥ मघा आदि ते भ्रवन भोगज

दिसाः	पूर्व	दछिन	पछिम	उत्तर
वारः	चंद्र सनि	गुरु वार	सुक्र रवि	मंगल बुध
नक्षत्र	ज्येष्ठा	पूर्वभाद्रपद	रोहिनी	उत्तरफाल्गुनी

दिक्शूलचक्र.

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वलागिअगनंहा पाछैमद छिनदिसा होइजवलगिफलमंसा ऐसेमैनदिजाइसमुझि
केपरिहरिहीजे २मुनीसमतवचनमानिकेहइनरहिकोजे २४ हस्तिकाआदिनछत्रस
तजवलागिविचराई उत्तरपूरवदिसागवनकीजेअसपाई तोमारियेंवेरीयद्दलद
नसुकहाई धनिष्ठादितिनपरिदिनषनपुनिसातग्रहाई २५ मघाआदिनक्षत्रसा
तजवलागिअगुहोई पाछैमध्यमदिसाजाइदक्षितवलगिसोई तिनपरिअनुराधादि
सातनक्षत्रवषाने वैरीमारिपजराजाजानजोकरपयाने २६ [illegible]
[illegible] सनमुषसुक्र हिंवराजियेजसेहीबुधमान जानियअंधसम्मुषीकरियप्र
शुफलपयान २७ [illegible] जोसुक्रप्रति
हिजाइहीजाव तोस्वत्सपथ्यर्थपुनिसेधिनपाव अथासुक्रप्रतिअभिलाषजारि पु

कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	हस्तिवादिसु
ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	धनिष्ठादिसु
म	पू	उ	ह	चि	स्व	वि	मघादिसुन
अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध्र	अनुराधादि

निअस्तंगतप्रतिनरीआहि २८ [illegible] पु
इगाउएकवासीनहाइ पुनिधर्मव्याकुलीरथहिं
जाइ व्रेपचासभीतरिपुअरहइकाल एतनद
इप्रतिसुक्रसाल २९ [illegible] आया

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ज्यो० ८०
३९

नक वसिष्ठ रिषिराज । कास्यपह अत्रि भ्रगु भरद्वाज । पुनि वतस अंगिरस स्वछ गो
त । भ्रगु सो घस्न रिसि न मघन हो त ॥ ३० ॥ इति गोत्र सकर्दा मनात । इ वे न हे अस्त
ति का व्रजंत । जब लसे चरत स सि कला वंत । तब लगि हि सत्र धभ्र गन इ हो र । सुनमुष्य

रवी	गुरु	मनी	छीत	चंद्र नक्षत्र
सुक्र	सुक्र	सुक्र	सुक्र	सुक्र अंध

सु ष्धन हि दु ष्व को र ॥ ३१ ॥ इति सुक्र अंध ॥ नी च ष ट जित ब
क्रो वि व र्न ॥ भ्रम चाल वक्र इ चलंता कूर्न ॥ पुनि सत्र छै नमे जो
य रा इ ॥ इति मा तिस्र अछति क हा आ र ॥ ३२ ॥ धनी सु पाल चढि चले सो इ ॥ तो ज हा व इ
सत्र नव लवं त हो इ ॥ त ह वे गिलाटि या इ पाव ॥ इ हि भाति शं भु य ह फल जताव ॥ ३३ ॥ इ
ति सुक्र अति ॥ दंडिका छंद ॥ भ्रग छ त च्छे सो जा नि के की जे तु हा पयान ॥ हो इ
नही मिथ्या न तु कजो तिष सिंधु प्रमान ॥ जो तिष सिंधु प्रमान जो रवु ध सा न कु
लहुव ॥ स क्ल हो इ सम दु इ नमा ना चले सु वुध ज्ञव ॥ ताही कर पुन रा षे सम झा ऐ
चता वैं मुनि म त ॥ औ र य ह पुनि ना ही सम र्थ शं भू सुक ह त ॥ ३४ ॥ पूरव के सु दि सा
धिपति रवि भ्रगु ह दि सि ईसान ॥ द छिन के पति भूमि सुत नैरि ति रा हु सुजान ॥ नैरि
ति रा हु सुजान पछिम सनी वा यव ससि ॥ उत्तर वुध पति गुरु ईसान ह दिसाधिपती ज्यो० सिं०
इति सुक्र छंद बुध बल फलं ३९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रासि केंद्री सो ह्वनाते जाइ ह्वतो फल पाइव । होइ लजा रसुतानरिजा ह्व शंभु वता
इव ३९ ॥ इति दिसाधिपति ॥ दोहा ॥ रवि लगन छतजो पेजाइ पे पूरव दिसि तर
तो लखा रगन हूवघानिये ॥ आग्नि सुक्र जाम ॥ व्यय दसए ॥ भोम दछिन नेरितयरा

पूरव	आग्नेय	दखिन	नैऋति	पछिम	वायू	उत्तर	ईसान	दिसा
रवि	सुक्र	भोम	राहु	सनि	ससि	बुध	गुरु	ग्रह
१	११	१०	९	७	५	४	२	स्थान
०	१२	०	८	०	६	०	३	स्थान

हू नवम ॥ आठहू ॥ प्रमानिये ॥ पछिम सनि सी
त ॥ वायव ससि पाच ॥ हौ ॥ उत्तर बुध चाय ॥ गु
रु ईसान द्वि ॥ त्रि ॥ जानिये ॥ जाइ ये न छता वि घे
लला रवरा जैसा कहे शंभु केंद्री तो जा त्रास ठानि होइ
ये ३९ ॥ इति [illegible] नारिवारा लीलावती ॥ दोहा ॥ जनम लगन ते छ्यथ वा रहो वृति
जनम रासि ते आठहू ॥ स्थान करि है सोइ ॥ वैरी की कुसालिनेग निज छठे लगन को
स्वामि जहं होइ ॥ ऐसो अपुलन्नु फल नीलन कतु अनी पाल को जानारहू ॥ सो
विषमहू मनरी पिजानो शाम ते हे ननि केतु सोहु [illegible] ॥ दोहा ॥ जनम को
लगन [illegible] सबै सु रासि हू सरो वैरी ॥ सो [illegible] जन्म सो जानिली जियेनरी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कै पिभान मैं द्वितीय सों म्पजु न्मक हूनरी ॥ तौ पिसत्र भावतें लखा ०८ मो सुभासही ॥ ३७ ॥
देराक्षर ॥ ऐसे जोग ह्वि पार्के तहां कीजिये जात ॥ शंभु दास व षानि ही तो सुभता
के गात ह ॥ चौबोला ०६२ ॥ सीरषउद्य लगन जिहि हि लिकी तिहि हि रिलि कीजे ना
तसही ॥ गनिये नो समरंगत हार आवे पत्नु उअूळ नरी ॥ आपनि जनन म रासिनि हो
इत्रि ॥ घट ॥ दिसा ॥ सिव ॥ लग्नतरी ॥ नो हारै जीतें नहि सो इयह विधि शंभु दास कं
ही ॥ ६० ॥ मीन लगन मीनांल करो ऐसे ही मे जात करै ॥ मारज हो इतासु अरुभू
ले हो इनकारज आवघरै ॥ कुंभ लगन कुंभांस कजानो सर्व स्थान सुद्री जतरी ॥ जल
लग्न जल ऐसइ नमारी नाउ वांधि जल जान करी ॥ ६१ ॥ मूरति १ क ॥ द्वै ॥ कोस तीन
धन वाहन चोथ ॥ मंत्र ॥ पचये ॥ षट ॥ रिपु मारगसात ॥ आयुवसु ॥ मनुनवे
व्योपारसुदसये ॥ जानो वकारे ग्यारहे ॥ पापति द्वादस ये ॥ अनप्रापति करी
॥ वारह भाव लग्न ते चिंतिय सुभ असुभ फल जोग सही ॥ ६२ ॥ भ्रात ॥ ह्ड ॥
अस्थान सु वरजिवपापी ग्रह ल रनाम करे ॥ नासहि पनि सूरजन मेगल र सो

जो०सि०
६०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१॰ आठय ॥ पाइयौ ॥ इन स्थाननि ही को पोषत सौम्य ग्रह सबै सुभ से ॥ बसे सुकतातैंये ॥ आछय ॥ चेर ॥ एक ॥ आठ ॥ घट दसे ॥ ६३ ॥ दोहरा छरा ॥ ति घर ॥ दिसा ॥ सिव ॥ सुभग्रह क्रूर ॥ हसयो ॥ असुभ सनी चर क्रूर ॥ जनना दे क सुभ सब स्थान ॥ सुक निषेध सात ये ॥ जान ॥ ६४ ॥ जे ग्रह मूल त्रिकोन गत जिन आरि ॥ नीच अस्थित वैरी नजरा हि ॥ वैरी छेत्र विवर्न विसेष ॥ सेसा अरथक वित पदि देख ॥ ६५ ॥ अनुसार क एसाने लग्न ॥ किंचित मात्र वदे बुध मग्न ॥ अपनो फल दरसावै नमर्थ ॥ भाषा जोतिष सागर अर्थ ॥ ६६ ॥ जिहि ऐसहु जोग संजोग ॥ अपनत विघ्न करे सभोग ॥ तैसे निज फल करे प्रकास ॥ होवे फल ग्रह जोग निवास ॥ ६७ ॥ ग्रह जोग ते नृप फल हार ॥ विप्रन घत गुन ते फल सोइ ॥ सगुन हि ते चोर फल राय ॥ हि ॥ घरि मइहु ते लोक जन भाव ॥ ६८ ॥ जो गमहूरत लग्न विचार ॥ तिथि अरु वार नषत्र अरु बार ॥ चद्रा बल तारा बल साध ॥ एस वेरा कि लिहाइ विरोध ॥ ६९ ॥ इतन नि करमे टिके दोष ॥ छत जात्रा सुसेर फल तो घ ॥ लेहु जानि ग्रह जोग निदान ॥ ताको शुभ करे वषान ॥ ७० ॥ सुरज लग्न ॥ दस ॥ स सि जान ॥ हार मर षष्ट म स्थान ॥ चले जोग असे करि सोर ॥ कारजा सिद्ध रमा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
६१

जयहोइ ५१ होइसनीचरतीसर धाम चंद्रपुत्रचौथेपै प्रनाम सुक्रलग्नके
सुरगुर सात छठेपै घरमंगलपुनिजात ५२ ऐसेजोगचलेनृपसोइ रिपुसं
नाश्रागेथिरतिहोइ पावेविलषमहाउरअथ वेरीअग्निकरिजेसीलाष ५३ जौ
वलग्न वुधससिभृगु दूज सनिमंगलरविग्यारहदूज ऐसेजोगचलेतनिसोक
तौरिपुचमूजाइजमलोक ५४ लग्नभानब्रत ससिधन सोम्य ऐसेजो
गचलेकरिजोम तौततकालिसेनरिपुमारि हतीपूतनाजिमिसुमुरारि ५५
केंद्र त्रिकोन सौम्यग्रहहोइ दुश्चिक लाभे छठे षलसोइ ऐसे
जोगप्रयानकराव दुहूतरफअभिलाषापाव ५६ गुरतन रिपु रविआठन
इंद्र ऐसेकरेप्रयाननरिंद तौआगेथिररिपुकीधारी जेसीषलदुरजनकी
यारी ५७ सनिमंगलरिपु लाभ परारि सन्निभाजसुभघटकआदि ऐसे
मेंभूपालप्रयान तिहिकेगजथिनप्रथ्वीसमान ५८ वक्रीग्रह नहिकेंद्री
दीज तौसुषद्धवर्गलगनलीज ताहीकोधनिवरजेवारू चलैसुनोसवहु
प्रकार ५९ महालक्ष्मी जानकीराजजोगापरे शंभुताकेफलेउच्चरे जो०सिं०
६१

भूपताकी चलैरीतलै ॥ आपनेसत्रकोजीतलै ॥ ६० ॥ पराजुनियवछंद ॥ रवोपटनो
गहै अधिकजोग ॥ जोगाधिजोगकतिकहैलोग ॥ ऐसैआगेकरिचलैनेम गमना
गमतोकरैछेम ॥ ६१ ॥ अधिकजोगमेंजोचलंत ॥ तोसत्रुआपनेकोजितंत जोगा
धिजोगकरियेप्रयान ॥ जीतेप्रथीसवसैनवान ॥ ६२ ॥ केंद्र ॥ धर्म ॥ अरुपुत्र ॥ धा
म ॥ सातिसुतजीवसुखअनदाम ॥ तोपानीवलाजोगउपजाइ ॥ जोगाधिजोगफलशं
भुगाइ ॥ ६३ ॥ दोहाछंद ॥ जीवलग्न ॥ सांसिआठये ॥ भृगुसुतअस्त ॥ निवास ॥ ऐसे
मेंजोगमनन्नृपतोदुखमनाहिउलास ॥ ६४ ॥ इतिजोगाधिजोगनानाफलाफलं ॥ स
कुनचिंहू मनलागनहुभपुनिग्रहजोगवताव ॥ इतनहिछनरिपुहिसिचलैप्रतिज
यलछमीआव ॥ ६५ ॥ सगुनसुरासिअकेलमनएकअंगमनसुद्धि ॥ जेसोचितुते
सीसुसिधिशंभूकहैसुबुद्धि ॥ ६६ ॥ इतिमनचलनि ॥ हरिप्रियाछंद ॥ उरर अनुनत
दुलतिलभरानिक्षतिकारधिज्ञास्यरूधहिस्नमासचंदरुधिरासिवचपानो ॥ नवनिति
लोवीअरितधीरिपुघ्नपेखिमासुसपेतिलभातुमघासठिधान्यपूर्वजानो ॥ उत्तर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उत्तरसुरा हस्त तीतुरकोमासुतुष्ट जवासाति कुरिचि हीसमधु घृतमैत्रमानौ
श्रोषधिमूलजेष्टभइकेपूष सांतऊषसालिकरुवधनिष्टसागुभाषिग्रयानौ ६९
लीजियेविलाउमाससतनारिकाप्रकासभइत्रवुकराकोमासपूर्वभाद्रपदसो ई

जात्राहाचित्रामि षवहोरिउत्तरभाइपदनछत्रकोकहोजोतिषीन्हिलोई अस्वनी
नछत्रजानिरेवती कहीवषानि एककहीप्रमानजानिउरदप्रसन्नहोई भोजनएनछ
त्रदोषकोहरैसुतत्र जोतिषसमुद्रशंभुभाषभाषाकरिजोई ६८ अतिनक्षत्रभ
[illegible] घृतकोभोजनकराहिहात्तिचढि
परवजाई भोजनातिलदधिभातुदाधिनकोरथचढवाई ह
यवाहनभुषमासुपाछेमरिशिजातकराई उत्तरदधिखघ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

डोलिचढियपरयचकाजितारै ६९ ॥ इतिभोजनवालदतिमाजा ॥ मलिवालुरविवा
रसोमकोंसखिरिनिचावे कांजीमंगलजानियऊरिवुधसिखिरनिभावे दहीगुरु
सयतिवारदूधकाचोम्रगुभावे सनिकौंतिलदधिभातुएसुरनिसोषनलावे ७०
॥ इतिवारभोजननानामभ ॥ दोहा ॥ अथिसोमतर

रवि	चंद	मंगल	बुध	गुर	सुक	सनि	वासराः
म	सिखि	कां	सिखि	द	दू	तिल	भोजन
दू	दिने	जी	रिनि	ही	घ	भात	भोजन

कीजियेदेवहिकरियेप्रनाम शंभूज्ञानविधानकरिसो इ
सिद्दिसवकाम ७१ ॥ इतिनानाविधान ॥ तहासुकारज
करनकरनसाहोरअनेप शंभूअवसरसमुझिकैकरिहैकारजतेप ७२ ॥ इतिभोजन
काजे ॥ इदपहाकड़ा ॥ चाहैचलनतुरतसी अवकासनपावै तहासुसंध्याकसमैप्र
स्थानचलावे छत्रासुधभूषनतडागमनादिकसावे महापियारीवस्तुजोप्रस्थान
धरावे ७३ ॥ इतिगमनप्रस्थान ॥ प्रस्थानजुत्तस्थानतैधनुषपाच ॥ सेई इकस
त ॥ लेइकमुनिवहैसात्रआधी ॥ लेई ॥ औरधनुमदस ॥ जोकहैआरजसो
सोशंभूभाखाकहैजानोबुधलोई ७४ ॥ इतिधनुषपमानप्रस्थानमध्यम ॥ जा
नोसुभप्राचीदिसादिनसात ॥ वखानो सुभप्रदरहिनकीदिसादिनपाच ॥ प्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०प्र०
६२

मानो बहुरितीन ३ वासरकरे दिसिपश्चिमजानो दो २ दिनउत्तरकीदिसाप्रस्था
नसुजानो १५ दिनदस १० प्रस्थानदिकियेनहिगवनैराजा मंडलीकदिनसातयै
नदिसाजदिसाजा प्राकृतलोकरिकैतहापाचे ५ दिनत्याजा औरमहूरतसाधि
कैतोकीजेकाजा १६ ॥ अथ प्रस्थानदिन[illegible]

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिसा
७	५	३	२	दिनसंख्या
राजा	मंडलीक	लोकजन	०	जात्रीवर्ज्या
१०	७	५	०	दिनसंख्या
७	५	३	०	क्षितिपतिसंख्या

[illegible] दिवससात ७ नृपकरेमंडलिकसुपा
चा ५ ॥ प्राकृतकेदिनतीनहे ३ जानोसोसाचा ॥ १
नप्रस्थानसुरहे आगेनदिराखै औरमहूरतनोधरै
गोतममुनिभाखै १७ ॥ [illegible]
बुद्धिवंतअसोकहे पाछिलोपकासै आयुसछयसारिषकरै निश्चयप्रतिभासै
प्रथममहूरततहारजो औरनठहरावै १८ तहामहूरतकेधे दिन ७ सातविचा
रै नभनिरघातकताकही अकालफलसारे उलकपातकेपमहीविपरीतिके
मारे असेचिंहविलोकही तमहूरतमारे १९ ॥ इति [illegible]
फल ॥ भवनगोधअरछूछुकाधोरीपनिसोई पिंगलाचिरियासकरीपो

ज्यो०सिं०
६३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तकिपिकहोई एतीपुरुषसुसंगिकाजनोपुधलोई शंभूहासवपानहीवायेसुभतो
ई ८० भासचापुत्रस्वानराचातकत्रुरुमारे छिकरात्रोरसचीतरावरनेसवदा
रे एचत्रीसंग्याकरीहाहिनसुभराषे इंपातिसंग्यालेषिकेशंभूफलभाषे ८१

छेछ	विल	धो	चि	सू	पा	को	पुरुषसंग्यावामूल
दरि	मरा	टी	री	वहरी	तकी	किला	
री	स्या	वान	चा	मो	छि	चीत	वस्त्रीसंग्यारहे सगुन
छो	र	र	तक	रि	करा	रा	

इति पुरुषस्त्रीसंग्या समानिकाछंद [illegible] मोरदामे
मोरहे वापु छागमोरहे तासुदसरेषिये जा
तनीवलेषिये ८२ इति [illegible] गोहसप
हेससा विहंगवावनोकसा जो [illegible] समेतहा
देषिवेचुरेवहा ८३ इति दसैन निषेध प्रमानिकाछंद विलारसप गोधहे ससा
हुओरकोलहे सुजातमध्यदीवहे सुनेसुकाननीकहे ८४ इति नाम सुभ दोधक
छंद हासससवदइनेकरलटाजाजाकालवषान नामरीछकपिकरलटादरासनसु
भप्रदजान ८५ इति [illegible] गीताछंद घटतामत्रपसुवाध्योरतनअरुमालु
मुकटहूवानही गजपालकीपलनकलसअषछत्रहासनअरुदही वीनाकेमल
मधुघीउकेन्याविप्रगोरोचनकहे परपूलसतसुसेनत्रयदरजानदंपसुनन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

।८६। इति नानाकालदृष्टिसुभं। प्रज्वालमानसुअग्नि हाथीवाजिगनिकाजानियै। पुनिकोरी सुमाटी सुअंकुस ऊष फल परिमानियै। पुनि सेतु पट भद्रयान चामर भइ पीट वषानियै। आनंद मंगल दान शंभु जात सम पेमानियै। ८७। इति नानाकालदृष्टिसुभं। भेरी निसान अरु संग

वीना वेस वेद धुनि करी। अरु मधुर मंगल गीत

घोष सुपुत्र अन्वित त्रियरही। पुनि सधु वक्षा सहित सुभी धौ

तवस्त्र लहै सही। सरसो परे ट सुजात सनमुष प सुभ दैन शंभु है सही। ८८। इति नानाकालदृष्टि सुभं। अनकाउ पनग चाषु को स्तत पंक टिपु दरासि रिपरे गुड तैल मारे हाड लोन तुअभ्यंग रोगी करे। औ घांधेन प्रसक धानकारी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आचारभ्रष्टकुपरसमही। उनमत्तमुंडिया जटिलरंक्रुउपरदेषैसुभनरी ॥८९॥ इति
नानाहरिश्चमुभाशेदाकंर। मुकतकेसकाषायउनिधनावेउद्विमानय ॥ छवन
छेधवंधाधिरजानतदेषेसुभमग्न ९०॥ इतिभीकंर॥ पानिग्रहनसुभगालउनसवंजी
लकमकस्यान। भूदंयननजघ्रासम्नष्ठातवंधनजगपवलेप्रनिजान ॥ ब्रद्धिसूतकादिक
सेपूरनहोइं जाजाकाल ॥ कौजगवननरतीतिहिश्रवसरसोसमयोविकाराल ९१॥ इ
तिनानाहरिश्चसुभे॥ महिषजुष्टश्ररूनारिरजस्वलगोनकलंकहृदयदुज्वाल ॥ मनके
क्रोधहोइतिहिश्रवसरदेषैलरतविडाल ॥ सीकोंकरतेवस्त्रसस्त्रफलरतनहूश्ररु
तांबूल ॥ देषैपसततहाथतेएतेजाजाश्रसगुनमूल ९२॥ इतिनानाहरिश्चसुभे॥
लटीछीकसरवत्रकहीहलीजोपंडितजानि ॥ गोइकेरिछुतमरनकरेपुनिसुनिवा
रिकारिऐकानि ॥ कोउककहैश्रचारजशंभू पहजानोसवकोइ ॥ छुतपीनसश्ररुवा
लककफकीएतीनिरफलहोइ ९३॥ इतिछींकसंकर ॥ मृगविहंगजाजाकेश्रवस
रजहाप्रहाहिनजाइ ॥ काजहोइसकलमनचिंततनोनृपकेरनहोइ ॥ संध्याविषे
मकहीहिरनाकीनृपकेदासनहोइ ॥ जाजाधामसवननजोचाहियमाथनपोंइनलो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शु॰सं॰
६५

१९४ ॥ इति प्रदक्षिनसुभ ॥ दोहा ॥ छंद ॥ एक होइ के तीन पुनि पंच सात कै नौ
उ करहि प्रदक्षिन ताहि अगभाग्यमान नर सोउ ॥ ९५ ॥ इति उनेव गप्रदक्षिनसुभ ॥
चौपाई ॥ छंद ॥ प्रमहि सगुन विरोधिक होई प्रानायाम ग्यारह होइ रहै प्रानायाम तो

प्रानायाम	प्रथमसकुन	ग्यारह ११ ॥
प्रानायाम	दूसरसकुन	बासठि ६२ ॥
०॥०	तीसरसकुन	जात्रीनष्ट

बासठि रहिये लरा सगुन जो दूजल है प्रथम ग्यारह आदू
जै बास हि दिनके पाछे वहुरि चले नष्टसकुन तीसरे न
जाइ ये न ष्ट काज कहू काज न फले ९६ ॥ इति नष्टसगुन
भंग ॥ मारग ते सु विरोध तहवा पाछे जो वे सगुन भये करनि पघारि करहि प्राच
मन सकुनो नर पुनि जात ठये तौ वर सकुन फल सब भाति निकंचन होइ अन्निका
छिये जात्रा काल रोव सोना सैभाषे शंभु मुनि मत लिये ९७ ॥ इति स्त्रसगुन
दिगानसुभ ॥ भूप चलावैरी के देसा है एते तोन अठउ करे आसन कोन दृष्ठ
रि न धारि यव लत्रियत न नहि हाथ परे सरनागत कुअंगुली धरत नि हीन सं
ख न हि यान हरे प्रभु हित हृदय महातानी को अपने नगर प्रवेस करे ९८ ॥ इति
उठाव रावत सुभ ॥ इति श्री मत्यं डितामेर राम जयी रामनु विरचिता पोजोनि

ओ॰व॰लि॰
६५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इतिसुप्रथमचद्दावजातापकनेपंचमतरंगः ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ ग्रेरिधर्मै
तैधर्मनक्कोर भावेग्रयसंतसबढोर सीलवंतमोनारीहोर मोपिविवाहलग्रलु
मसोर १ मकरकुंभवेनिकवृषमेष कहीरासिरपाचावमेष इंनरासिनिकस
रजहोर तवलगिकरियेविवाहसोर २ अतिनित
ईननेमथितगमि ॥ चैत्राषाढभाद्रपदपूष सावन
असुनिमासखट हूष नहीविवाहहोइनमास क
त्योकहूमतणभूहास २ अतिविपुरुमासवत्या ॥ ...
पाछेर ॥ थ वोनरग्रानि
हिमन ॥ धनवंतिकन्या
माघफालगुनसुभगानी
री ॥ जेठमासवैसाषहोइपतिसोरतिभारी ॥ अतिकेवाढेवंसमा
सन्याषाढविवाहे ॥ वरजेमहिनाचैमानयथांतरभारे ॥ मंगलब्याहसुकाजंको को

मेष	वृष	मिथुन	मकर	कुंभ	पंचासि
१	२	३	१०	११	संज्ञा
सर्जे	सर्जे	सर्जे	सर्जे	सर्जे	स्रातित

मार	फागुन	वैसाष	जेठ	सूसा	अगहन	विवाहमास
१	२	३	४	५	६	संज्ञा
धनवंती	सुभगपतिवती	पतिसारति	पतिसारति	कुलवृद्ध	अकुल	फल

विवाहमासप्रातिछिचक्र

विवाहमास वर्जनीय	असु	सावु	पौष	वृ	पस	[illegible]
संज्ञा	१	२	३	४	५	६
विवाहमास सन्मत	मार	फागुन	वैसाष	जेठ	[illegible]	अगहन
संज्ञा	१	२	३	४	५	६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ऊ ब्याग हन कौं करत। सीता विवाह वन गमन यताते शंभू नहिं लरत ४॥ [illegible]
[illegible] कहूं लये व जो कहू मास अ साढ विचारि।
तातें लीन त्रिभाग करि शंभु समय सम्हारि ५॥ [illegible] तमस निकु
ज भ्र ग्र रवि सहित व्याह काल ससि होइ। तौ उभंग वेध व्यता कौ त्रिया को सोइ ६॥ गु
रु बुध जुत जो चंद्रमा होइ करय ग्रह काल। तौ विसबिसो भाग पसुभ सब भांति निसो वा
ल ७॥ [illegible] मूल मै म्रग रेवति

मूल	उत्तरा तीनि	म्रग	रेवती	मघा	स्वाति	हस्त	रोहिणि	उत्तर	विवाहनक्षत्र
१	२	३	४	५	६	७	८	११	संता

तीन मघा स्वाति कर उत्तरा तीन रो
हिनि एनि रवेध नक्षत्र। पानिग्रहन क
रै सरवत्र ८॥ [illegible] बुध सुक्र अरु चंद्रा जीव सत्त सुदा सुभ

बुध	सुक्र	चंद्र	गुर	सुभवार
रवि	मंगल	सनि	०	क्रूरवार

मैं निलीव। रवि सनीच रमंगल सूर। तजिय जतन करि एरि रन
क्रूर ९॥ [illegible] वेलावार कुहू अरु रिकता। क्रूर वार गंडांत
ऊ निकता। जतन हिकौ वरजे सुभ कर्म। कहे शंभु सम झोबुध मर्म। १०॥ [illegible]
[illegible] नंरा भद्रा जयाज्ञु रिकता। पूरना रूप रिमाते तालिकता। तीन अवर्तते

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सहीभोग भ्रगुबुधकुजसनिगुरसिधिजोग ११ इति सिद्धिजोग तथान्य इदप
हा कहेर नेदसभ्रगुभद्गबुधरिक्तासनिसोई जयाभोमगुरपूरनासिधिजोगसुहोई
नीचमध्यउत्तमतहासितपोषिलेषा उत्तममध्यनिकष्टहैगनिहासवित्तबा १२

स्वंपु दी	निकष्ट	मध्यम	उत्तम	कृष्ण पक्षे	उत्तम	मध्यम	निकष्ट
सुक्र	१	६	११	सुक्र	१	६	११
बुध	२	७	१२	बुध	२	७	१२
मंगल	३	८	१३	मंगल	३	८	१३
सनि	४	९	१४	सनि	४	९	१४
गुर	५	१०	१५	गुर	५	१०	०

इति सिद्धिजोगभेदा दोहरा
जे सो चंदा है वली ने सोई सिधिजोग था
भुवचनमिंथ्यानहीकेहैंजातिषीलाग १३
इति चंद्रबलनामसिद्धिजोग वेदलान
दोभूतवसुरामषट्क्रमभान सुनेलिय
कुजामोद्रहेवेलावारवधान १४ इति
रविला तथान्य मतान्तरे रविकोचौथेपहरचं
द्रमासातेंहोई भौमिपुनदूसरेबुद्धपाचेपुनिसोई
जीवआठयेप्रहरसुनपुनिपहरसुतीज पुनि सनि
छठयेजामसंभुसुभकोतजिदीजे १५ इति वारवेला मतान्तरे विदिकु

अर्द्धनामचक्र

वार	रवि	चंद	मंगल	बुध	गुर	सुक्र	सनि
अर्द्धजाम	४	७	२	५	८	३	६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लिकभाअंतपुनिकर्वात्चअनितिथिअंत ॥ याधातिथिअंतपुनिजमघंटआ
जंत ॥ २६ ॥ ॥ तिथिभद्रा ॥ कालभरं ॥ कृसपक्षपरत्लेविदिहस्तमांओर
तीजहि तिथिसातैचोदसी विष्टिपूरबगानेलीजहि सुक्लपक्षउपरांतचो

२	१०	३	१४	शु. सप्त
६	११	७	१५	कृष्णपक्ष
अपरांत	ऊपरान	[illegible]	[illegible]	भद्रा ३०

थिएकादसिभद्रा ॥ पूनोंआठैआदिदसौसुसोकहेउप
ड्राः ॥ २७ ॥ भद्राअंगफलवरनैकंठ ॥ भद्राकोप्रमा
नेहे घटिका तीस ताभद्रकेवरनेअंगअंगनीत
सताइसताहीकेवरनेहेउं घरीतीनसुषराइकसोकविहेहु ॥ २८ ॥ अंगभद्राफल
प्रमान ॥ काजनासमुखपाच ॥ मरनएक ॥ कंठसुजानिय ग्यारह
घटिकाहृदयकैसोंधनहानिय नाभिचारि
करकलहषट कटिबुद्धिविनासहि पूछि
तीन करविजयविष्टिघरि शांषप्रकासहि

भद्रा अंग	मुष	कंठ	हृदु	नाभि	कटि	पूछ
भद्राघरी ३०	५	१	११	४	६	३
फल	काजनास	मरन	धनहानि	कलह	बुद्धिनास	विजय

२९ ॥ [illegible] ॥ भद्राभेदसुवहुतहेदेषोंकरन
प्रकर्न ॥ इनमेंकरेनभावरैतातेलेवछोडनै ॥ २ ॥ [illegible] ॥ होज॰ इसे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तिथिवरजिकैनवे अमावसि सेरि पद्दछि(सम)इतिथिगनोसुभकारजनकोर
हि २१ इति पद्दरंध्रसुभ नवे अमावसिवरजिवे द्वितिया दसमी तीज
पद्दरंध्रसुभविषमतितिमंगलकारनकोज २२ इति पद्दरंध्रसुभ तीना वनी

तेकौतिस	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
दग्धातिथि	९	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
पद्दरंध्रतिथयस्त्रास्य				४	६	८	९	१२	१४	३०		
असुभत्याज्या घटिका				८	९	१४	२५	१०	५	०		
पद्दरंध्रसुभ				१	२	३	५	७	१०	११	१३	१५

दोज आरितिथि अंतर एक
सुरासिभात तिथिदग्धाहोइ
ध जुगमा जुगममीनधन द
ग्धा वृषघटमेषव.कंपुनिसा
ईय कंन्यामिथुनपुनि चौथि
कतुलामकरदग्धाअसुभआहि विधवाहोइसुनारि विवाहेनिश्चयमेरसुन्ना
चहीजाहि २३ इति दग्धातिथिदोहाछंद दग्धाविधवाकामिनीमासन्न
तमतहोइ तिथिभावंतअपुत्रिनीमद्यामेरसुहोइ २४ इति नाग्रियंत्र
तपत बद्द अहपाव पुनिवेद आग्र नैग
चंद एतिथिकुलिकजुभानेतेहैविनासकोम

वार	रवि	चंद	मंग	बुध	वृह	सुक्र	सनि
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

६ २५ ॥ इति [illegible] ॥ हे षडाष्टके म्रत्यु वली होवे सो वाचे ॥ नवई पात्वे रा
सि महा अति कलहे होमा चै ॥ द्वे द्वादस दारिद्र से षष्ट भरेउ निप्रीती ॥ कंन्या वर की
रासि मित्र वश्य शुभ सुभ रीती ॥ २६ ॥ इति [illegible] मेलन ॥ ग्रंथांतर मतं ॥ पिता मात

६	९	२	रासि	कंन्या	वर ९	६
८	५	१२	रासि	वर ५	कंन्या	८
म्रत्यु	कलुष	दारिद्र	फल	[illegible]	[illegible]	म्रत्यु

म्रत्यु होइ जा पिनव पंचम याहे ॥ वर हि कंन्यका पाच
कें निक हि नव वर आहे ९ त्रिकोन कोग्रहे प्रचपोच
क सुष लाहे ॥ म्रत्यु षडाष्टके रासि शुभ कहि समुझिवि
वाहे ॥ २७ ॥ इति [illegible] मेलन ॥ चौपाई छंद ॥ अला मेष ऊ वा व्रष ले ष
कछा मिथुन डह कर्क विसेष ॥ मटा सिंह अरू पा षा कंन्या ॥ राता तुल नु ज व्रश्चिक

मेष	व्रष	मिथुन	कर्क	सिंह	कंन्या	तुला	व्रश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन	रासि
अ ला	ऊ वा	का छा	डा हा	मा टा	पा षा	रा ता	ने जा	भा धा	षा धा	गा सा	दा चा	अक्षर
३३	२	२	२	२	३३	२	२	फढ	१३	२	ओ३	अक्षर

गंन्या ॥ भा धा धन षयष [illegible]
रसु लीन ॥ गो सा कुंभ रुदा
चा मीन ॥ अने मीने धने सु
फादा ॥ ठा ना कंन्या ना तु का दा ॥ २९ ॥ [illegible] ॥ एवं मकरा विज्जानिये आला ई
हे मेष ॥ सिभ अह्नरती सिए रासि वार ह्रू पेष ॥ ३० ॥ [illegible] ॥ कहि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

येगरुड अवर्गहोइ कवर्गमंजारा सिंह चवर्गसु अहे स्वान टवर्गसंचारा होइ तवर्गी
सर्पमूसो पवर्गीविसेषा हैजवर्गगजराजसवर्गशभुकहिमेषा ३१ इति अष्टवर्ग
तथा च आइऊईगरुडविलवकाघागाघंना चाछाजाञनसिंहस्वानटाठाडाधं
ना ताथादाधनसर्पमूसपाफावाभंमा यारालावागयदृसंघसाहामेढेमा ३२ इति अष्टवर्ग
[illegible] तथा च अकचटतपयसवंगिसुजान गरुडविलारसिंहअरुस्वान संर्पम्रग
मगगमेढोसोध शत्रुवर्गपाचयेविरोध ३३
इति अष्टवर्गभेद गरुडसर्पहीकोधरिघाइ मूसविलारदे
षिडराइ कूकरमेढेहोइविनास सिंहगयंदहिनाहीवास
३४ इति वर्गविरोध हैस्ववर्गीते मित्रचतुर्थवर्गीसरवत्र उदासीनपुनतीजेवर्गो
वर्गोभेदसमुझोसंसर्गी ३५ सत्रुवरगकोमरववधान पुनिस्ववर्गकोसुष्यमहान
रहिविधिकोरियवर्गमिलाव करियेतासुफलाफलभाव ३६ इति वर्गभेद

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग	इति अष्टवर्ग
१	१	१	१	१	१	१	१	स्ववर्गीसुसमरस
४	४	४	४	४	४	४	४	चतुर्थवर्गमित्र
३	३	३	३	३	३	३	३	तिजियवर्गउदासीन
५	५	५	५	५	५	५	५	पंचयवर्गविरोध
गरुड	बिलाव	सिंह	स्वान	सर्प	मूसो	मृग	मेढा	जानयः
सर्प ५	मूसो ५	गज ५	मेढा ५	गरुड ५	बिला ५	सिं ५	स्वान ५	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

पाचयसत्रु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ज्यो० सि०
८९

मेत्र अदितगुरस्वातिअस्तुनिकर श्रवनरेवग्रगदेव। तीनपूर्व
॥ उत्तरा ॥ रोहिनि सिवजममनजगनेव वह्निमघा चित्रा अस्लेषा सतभिषमूलविसा
षा जेष्ठधनिष्ठा एगनरह्नस शंभुतीनगनभाष ३७

देमराममदेमदेदेरा राममदेरादेरादेरा
राममदेराराममदे एगनअत्वनितेगदे ३८
इक्कागनेउत्तमेप्रीतिप्रतीती देवमनुषगमध्य

अ	१	३	स्वा	श्रु२	ध्र	रे	म्र	देवगननक्षत्र	
पू	पू	पू	उ	उ	उ	रो	आ	भ	मनुष्यगननक्षत्र
कृ	म	चि	श्ले	स	मू	वि	जे	ध	राक्षसगननक्षत्र

													चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	स	पू	उ	रे	नक्षत्रनि
अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	१	३	श्ले	म	पू	उ	ह															
दे	म	रा	म	दे	म	दे	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	दे	रा	दे	रा	रा	म	म	दे	रा	रा	म	म	दे	इतिगनानि

मप्रीती राक्षसदेववैरुअविकार राक्षसमनुषमृत्युउपजार ३९
अस्विनिभरनिकृत्तिकापरलेष एनवचरनरासिहैमेष रोहिकृत्तिकाकेपर
तीन आधीमृगशुषरासिप्रवीन ४०

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी	रासि
अभ कृ१	कृ३ रो	मृ२ आ	पु३ पु१	म पू उ१	उ३ ह	चि२ स्वा	वि३ अनु	मू पू उ१	उ३ श्र	ध२ स	पू३ उ भ	नक्षत्र
कृ१	मृ२	पु३	श्ले	म१	चि	वि३	ज्ये	उ१	ध२	पू३	रे	चरन

आरद्रापुनरुमृगपररास त्रिपरपुन
वैसमिथुनसुहार आठचरनपुष्यह
असलेष चरनपुनर्वसवकैविसेष ४१ मघापूर्वाउत्तराचर्न नषतसवारासिहैव

नै त्रिपद उत्तराहस्तनक्षत्र द्विपद चीत कंन्यापरवत्र ४२ चित्रा अरध त्रिचरन विसा
ष स्वातिनक्षत्र तुलातरभाव परविसाखजेष्टाअनुराध रासिवृसीकहो १ १रिसाध
४३ मूलपूर्वाषाढवषान उत्राषाढचरनधनजान त्रिपद उत्तरा[illegible]धनिष्ट पूव
नक्षत्रमकरपरतिष्ट अरधधनिष्टासतभिषकुंभ त्रिपदसुपर्वभा
द्रपदकुंभ पूर्वभाद्रपदएकपदलीन उत्रभाद्रपदरेवतिमीन ४५
इति नक्षत्रचरनरासि दोहा मकरसिंह अजकंनिकाधनवृ
षमिथुनवृसीक तुलामीनअरु कर्कघटरासि विरोधअनीक ४६
इति रासि विरोध दोहा अलिकर्कटमीन विप्रगनो धन मृ
मेषरुकेहरिछत्रितनो वृषजोबनिनकेवनिजतहो मिथुनायट
तोलिकयस्यकुंभ ४७ इति [illegible] दोहा अष्टालि नवांश
नृपालवेस्यअंधिजा सुनासु[illegible]हवा
रे ४८ दोहा कर्करासितेरासिस
वर्न उभवरनकंन्याअभलि एकवरन
नारी पुरुष स्वभावजो दिन दिनमु ष

रासिविरोधचक्र

१०	म	सिं	५	०
९	मे	कं	६	०
८	ध	वृ	३	०
[illegible]	मि	वृ	९	०
७	तु	मी	१२	०
४	क	कुं	११	०

कर्कटाद्विजा
नसत्तशंभुउच्च
ववि प्रववसनेते
लुभकने ४९ इति रासि वर्नकंन्यावर्नभेद

कर्क	वृसी	मीन	विप्रवर्नरासि
सिंह	धन	मेष	छत्रीवर्नरासि
कंन्या	मकर	वृष	वैस्यवर्नरासि
तुला	कुंभ	मिथुन	सूद्रवर्नरासि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आनंद॥ आनवरननारीपुरुषपुनिपुनिभयदुषफंद॥ ५०॥ वरनश्रेष्ठजोकंनिकाजियेंन
ताभरतार॥ जोजोवेंभरतारकुहुनहीसिद्धिसोनार॥ ५१॥ विप्रवरनजोजोछित्तामानुष
काइथवेस॥ सुतोसूद्रकीहोरकिनिरउपनभुगतेस॥ ५२॥ इतिकन्याश्रेष्ठवर्णं
[illegible] केहरिभक्षाभक्षद्विपदरासियजेआ
ही॥ औररासिसवववश्यचतुषपदजलचरघारी॥
सिंहहिकेसववसवश्यएकवृश्चिकनहिहोई॥ औरलोक
व्यवहारवश्यावश्यगनिसोई॥ ५३॥ इतिरासिवश्या
[illegible] सिं
हविनासवमनुजवसजहलगि
हैचौपाव॥ जलसंभवतिहिकेर
भुकसरीसवपाभयभाव॥ ५४॥

वश्यावश्यचक्र

सिंह	द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट	सर्प	राशिसंज्ञा
भक्ष्य	भक्ष्य	वश्य	जल	वश्य	भय	स्वभाव
द्विपद	सिंह	द्विपदसिं द्विपदसिं द्विपदसिं द्विपदसिं			ज्ञानि	वंसो

द्विपद	जलचर	सर्प	कीट	चतुष्पद	राशिसंज्ञा	कन्यादि ष्ववर्न	वर्णहीन वरने	०
मि० तु० कुं०३	कुं० मी २	वृ० १	क० १	मे० सिं० धु०३	राशि	विप्र	सूद्र	०
धनपूर्व भाग॥	मकरप भाग॥	०	०	मकरोपूर्व धनपरोत्त	राशिभाग	छत्री	वैस्य	०

[illegible] धनकोपूरवभागमिथुनअरुतोलिनकंन्या॥
द्विपदरासिएजाननमनुजिपंडितगुनगंन्या॥ मकरपरारधभागकुंभअषजलचररासी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पैनगम्रासिद्धसीककर्क पुनिकीरप्रकासी॥ अजसिंहधनुषवृषचतुष्पदमकरसुपूर
वभागहै॥ कीटभूसुसमुझिकरिलीजियेवरकन्याजिहिगहै॥ ५५॥ इतिवस्यप्रीति॥
रिपुयोनिवैर॥ अस्वनियोगजवघानछागसर्पसर्पस्वानमारजारमेढजानमारजार

अ	भ	कृ	रो	म्र	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्री	श्र	ध	स	पू	उ रे

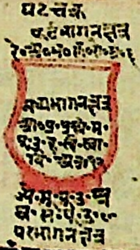
[illegible]

गाइ	घो	मृग	सर्प	वनु	मेसी	जोनि
व्याघ्र	जसि	कूकर	नौरा	मेढो	बिलो	जोनि
वैरु	वैरु	[illegible]	वैरु	वैरु	वैरु	वैरु

होई॥ उंदिरउंदिरधेनुमहिषीतिहास्वश्रोरव्याभैसिव्याघ्र
श्वेनवड़ोरश्वेनमोर्ई॥ स्वानवानराहनकुलवड़ोरवानरा
ड्डसिंहनकुलअस्वसिंहगागयंदजोई॥ अस्वनितनघ
तआनिअभिजितसेगकहवघानितिनकीयहजानिजानिकैहशंभुलोई॥ ५६॥
गाइव्याघ्रहीहोवेवेर॥ घोरहिभैसिहिमहागुरर॥ सुनह
हिरनहिनाहीवास॥ नकुलेसर्पहिहोरविनास॥ ५७॥ वानरमेढेवहैविरोध॥ उंदिर
बिलारेनाहीबोध॥ जोनिवैरुवरकन्यारेष॥ वरजनीकच्छपसेवकलेष॥ ५८॥
पोस्पादिम्रगसो॥ गनोपूरवभाग॥ आड्रादिअनुराधलो

मु०म०
५१

मध्यप्रलाग जे सुधा दिउत्ता भलौ परसौ जान ॥ घटं द्वादस नव नछत्र भाग त्रिछात्र
५९ ॥ इति घटचक्र ॥ पूरबभाग सुगानियेत हुव रासि ह ॥ परभाग है कंनिका रासि ह
वीलिह ॥ मध्यभाग नछत्र मेरो उनिश्रीति ॥ पुरुघट चक्र की करी शंभु रीति ॥ ६०



इति नरचक्र पीति ॥ अस्वनी को आदि देरेवधजंत सर्पाकार



त्रिनाडिका तीन कहंत ॥ परचक्र को सोधिये सेवा व्याह ॥ जो इन दो
उ शंभु कहि अवगाह ॥ ६१ ॥ दोहा छंद ॥ भिंन नाडिका की जिये आ
न हमंगल काज ॥ इक नाडी अस्थित नखत करि दीजे परित्याज ॥ ६२ ॥ इति सर्पाकार च
क्र नाडी ॥ लगन जोग सुभ सोम्य दिन विधुवल आहन छत्र रिक्ता [illegible] तजि व
र कौ वरै सुभ कुल सुभ घर तत्र ॥ ६३ ॥ गाउ सगाई छांडिये अस्व रोकुलटाक विन

ज्यो०सं०
५१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जानै अचल निधरी करै सो कपरिपाका ६४ जहां भूपन हिमन बकी ओछो वास
ति मुग्ध विधि की विधि वे हाथ है है जिमि पाटो दुग्ध ६५ एक गाउ पर जो करै तौ
सुभ सकल प्रकार देषि दूमि शंभू कहे ली जे गोत्र विचार ६६ ॥इति वरदान॥
सप्त रिषि निसु प्रनाम करि कहैं गोत्र रिषि नाम होइ विवाह न परसपर कौ रिषि
वंस प्रनाम ६७ ॥छप्पै छंद॥ भृगु सावरनि सुच्यमन वत्स अरु च्यापलवाना॥
पान नि अरु रिवारा तजामदग्नि हू पुनि जाना॥ वाल्मीकि प्रकुंडन सावेत्स अरु
वैतहवि जस्कोवा शुंलि जैमुनि सालंकायन अरु कहवि॥ अवला पमोन विरिवारा तम
कौ श्रीवत्स विदमोउ विवर॥ दालभि कत्यायन वंस भृगु होई विवाह न परसपर ६८
॥इति भृगु रिषि वंस कुल विचार छप्पै॥ ॥रोला छंद॥ अंगिरे गर्गा हू कपि शठ्ठायन
भरद्वाजा॥ अग्निवेस्य अरु सेन सघायन मुनि राजा॥ वाइन कपिल हू उजिकुसिंद
वृहस्पति नारमद कंवल इन न विवाह यह अंगिर रिषि वंस वर ६९ ॥इति अंगि
रिषि वंस कुल विचार छप्पै॥ गौतम अरु कोमंड वहरि वृहदुकथ्य दघाना॥ स
रद्वता पुनि अरु है करेन पाल सो जाना॥ कद्दीवान सु नाम ए त गौतम कुल वाना॥ इति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मैहोइनव्याहुपरसपरशंभुनिराना ७०॥ इति गोतमरिषिवंस इक कुल [illegible]
[illegible] ॥ जानोकुल हारीतकौकुतससिंगकरितस्य संघोवरिसुघद
नेकामंनातजुवनस्य माधातजुवनस्यवैन्यत्रूरूकपिरोक्षाना तारछनुदगल
परमरीजवव [illegible] ाना घोरकरावसगोत्रएतेसुवघानो शंभुनरनिमेव्याहु
कुलहारीतकोजाना ७१॥ [illegible]
[illegible] ॥ वृद्धिविसकघनपुनिरोड वारायनकुमोडनसोड पुनिपुरकत्सत्रिसदसगोत
परसपरहिइनव्याहनहोत ७२॥ [illegible] ॥ अत्रि
निगविष्टिरजातुवघान ॥ करन्यातिथिधनंजयजान मुदगलस्यो इनहोइनव्या
ह अत्रिमुनीस्वरकुलकेकुलमाह ७३॥ [illegible]
[illegible] ॥ वसिष्टसांघकोडिन्यघुलायनपारासरउपमंन्यु हिरनाहुव्यास
माध्यांदिनिखिवलोगाक्षीजतुकंन्य हरिषिसंकृतिवामरथ्यकोव्याघ्रपातपुति
माघ ॥ होइनव्याहपरसपरशंभु यहवसिकुलराघ ७४॥ [illegible]
[illegible] ॥ विस्वामित्रकतंचाजेअघमर्षनाधनंजकुसिक

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कौसिक वषानियै । कामकायनौ अरु रोहितरौ छ कंसावतिमाधु हूं ऐसो मनु जानिय
वलक आनियै । सांवर्नि कपिल हृव्य वैनु देवरात वाल्हषिल्य सालंकायनरा हिन
पुष्प आनियै । जंहू देव सवारे नो विस्वामि वंस केन परसपर विवाह नही करि ठानि
यै ॥ ७५ ॥ इति विस्वामित्र रिषि वंस कुल न विवाह वर्ज्य ॥ ॥ कस्य
पंपर आगे आत्रेय सुसांडिल वैसंपायन जानौ । देवल अरु मुनी सधन्वंतरि देवरा
तं यारे मानौ । संकृति भागुरि सांचि मारीच अरु सितल गालव उनमानौ । ब्याकुपरसप
रउनसौ नाहिन कस्यप वंस वषानौ ॥ ७६ ॥ इति कस्यप ऋषि वंस कुल न विवा
ह वर्ज्य ॥ ॥ सोम धम हे से सो भी हु जान । वासंत तरा कुंभज वषा
न पुरुरव पुलस्त्य पुलह सगोत । इनि सोम वंस न हि व्याह होत ॥ ७७ ॥ इति सोम
वंस कुल न विवाह वर्ज्य ॥ ॥ एक सगोत्रि रक्षा रेषि कै हैं निज नि
ज कुलन विवार । तातै कीजे सम्मुझि कै संभु वदनि रवार ॥ ७८ ॥ इति ... वि
वाह वर्ज्य ॥ ॥ वरन एक गुन हो रवस्य के रो गुन जानौ । तारा के
गुन तीन जोनि के चारि वषानौ । ग्रहमैत्री गुन पाच । षष्ठ गन मैत्री आ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मे ॥ प्रतिभकूटगुनसात ॥ नाडिगनआठ ॥ प्रमानो ॥ ऐसें प्रकारगुनअधिक
है एकएकगुनलीजिये ॥ वरकन्याकेगुनशुभसमुझिवरकौवरनसुकीजियै ॥ ७९ ॥
अथ वरकन्यागनविचार ॥ दोहा ॥ वरकौसूरजकेरवलकन्याकोगुरकेर ॥
पुनिदोउनिकौचंद्रवलशुभव्याहनिवेर ॥ ८० ॥ प्रमानिका[illegible] ॥ इकादसतती

रविचक्र

र० ११	र० ३	र० १०	र० ६	०	शुभसंज्ञं
र० ८	र० २	र० ५	र० १	र० ९	पूज्यसंज्ञं
र० ४	र० ६	र० ७	०	०	अपूज्यसंज्ञं

यमे ॥ दिनेसकर्मषष्टमे ॥ वरेसुनीकहैसदा ॥ विवा
हमंगलप्रदा ॥ ८१ ॥ अथ रविविचार ॥ नवैद्वितीय
पांचयें ॥ दिनेसजन्मसातयें ॥ करथहासुकीजियें ॥
दिनेसपूजिलीजियें ॥ ८२ ॥ अथ रविनिष्फलवल ॥ दिवसचतुर्थमें घरें ॥ चतुर्थद्वार
सैपरें ॥ विवाहकालकोलटै ॥ हनैसुआयुकोघटै ॥ ८३ ॥ अथ [illegible] ॥ इका
दसुपंचमे ॥ द्वितीयसप्तमेनमे ॥ परेगुरूइनेघरें
सुताकाग्रहाकरै ॥ ८४ ॥ अथ गुरुवल ॥ तृतीयकर्म
जीवहे ॥ स्वजन्मषष्ठलीवहे ॥ प्रपूजितासुकोतहा

गुरुचक्र

शुभगुर	गु० ११	गु० ५	गु० २	गु० ७	गु० ९
पूज्यगुर	गु० ३	गु० १०	गु० ९	गु० ६	०
अपूज्यगुर	गु० ८	गु० ४	गु० १२	०	०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

करैसुताकरग्रहा ॥८५॥ इतिगुरमध्यमफल ॥ पुरोधदेवशुभ्राठयै ॥ चतुर्थद्वादसठयै
॥ तदानमंगलंप्रहा प्रपूजिजीवकौजदा ॥८६॥ इतिगुरहीनफल ॥ कृष्णपक्षदा ॥
जनमचंदफलदेइद्वजचंदासुषदाइक तृतियराजसनमानचौथकरकचभयला



कुरुणी	अंश	बल	हीन	फल
गौरी	८	गुरु	ग?	[illegible]
रोहिनि	९	रवि	भेन	[illegible]
कंन्या	१०	चंद्र	[illegible]	[illegible]
रजस्व	११	०	०	०
[illegible]	१२	०	०	०
वर्ष बल हीन नक्षत्र				

इक पाचपवुधिवेड्डिषष्टसातैसुषप्रावै प्रानहानिप्राठयैहानिपुनिद्वादसभा
वे नासिकतैसनवदसयसुष एकादसजयलाभपुनि ससिसुक्कसुष्पनवपाचपक्ष
चंद्रमासुभगुनि ॥८७॥ इतिचंद्रबलाबलचक्र ॥ गौरीवरषसुभ्राठवरष
नवरोहिनिजोई कंन्यादसवरषरजसुलाऊपरहोई गौरीगुरबलदेइरोहिनिर

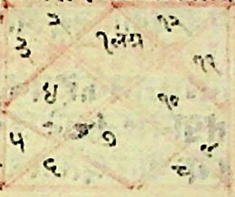
रनि बलदीजे। कन्याको बलचंद्र दोय अरु आठ कविनकीजे। कन्या लुमरै गुरहीनतै भानदी
नमरतु वरुग्रहे। लक्ष्मीसुहीन विधुहीन वलतातें शंभुवललहे। ७८। [illegible]
[illegible] कन्या जो कहु होरवर वहादस एकादस। जद्यपि होरनसुद्धकरिये वेद
विधानजस। पूजासकुन विचारलगनअस्थापनकीजे। करहलगिदोषविचारदो
षतादससगनीजे। जेठो सुवंधमातामितारजसूलाअवलोकनकरै। संदेह शंभुयामे
नही तौ नीतिनर्कहिपरै। ७९। [illegible] जिहिदिनछठौ चंद्रभानुजिहिनष
० ५ ४ ६ १० ११ १५ १६ १९ २० दसजोग। नहिकेरौ अस्वनितेगनननषतएककरिरिहानि
वेरौ। हरैनषतकौभागसन्पमुनिएक वेदरस। द्विसारुद्रतिथिधत्पकुन विंसअरुविंसप
स। जानोसुयेदसजोगक्रमसघहनिधनत्रासहिकरै। शंभुसुसमुझियातेंतहामंग
लकाजपरिहरै। ८०। [illegible] चंद्रभानुकोनषत नहासं
जुतकरही। जेकेछौजुरैनछत्रनषतसोसेषधरेहो। नभ धरनी जुग अंग दि
सा सिव तिथ्यवषानो। अष्टादस। उनइस। नव। जोगदससंगपाजानौ। वी
तघनां अत्रन पचौर हैमरनदिसापाविवाह छतिं शंभुसुनामदसजोगए है विवा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हफलनामगति ॥ ९१ ॥ इति दसजोगनाम फल ॥ जैसे एदसजोगलात अरुपातविचा
रौ ज्ञामिन्नकजुति औरवेधषडूरि निवारौ पंचवानेउपग्रहाक्रांतिसाम्यादि पुनि
थि जनिये इग्यातिं पुनि हो इहोडशग्यारहस्गनि ससोधिलगननानेतहांतजियेदोषद्य
हनवलिये शांभविवाहकोक्रम

०	२	४	६	१०	११	१५	१८	१९	२०	दसजोगसंख्या
पवन	मेघ	अग्नि	नृप	चौर	मरन	विष	वज्र	बाट	छति	दसजोगनाम
घात	घात	घात	घात	घात	घात	घात	घात	घात	घात	दसजोगफल

करिहै सुषसंपति मंगफलियु ९२ ॥ ल
इतिदशयुत्याग ॥ सो म्यवारतिथि
नक्षत्ररिभद्राकोदीजे चौकपूरिघटथापिवृअिपाचनकोलीजे पंडितसोधिवि
चारिदोषविनालिषियेलगना प्रथमहिसिद्धिगनेसादि धनतानेसवभगना लिषि
येगनेसअसलोकतहंग्रहसलोकदूसरालिषै शांभसुलग्नकुंड
लिलिषिपुनिप्रतिष्टिलगनहिदिषै ९३ ॥ इति लिषिवेकीवि
धान ॥ सिद्धिश्रीगणाधिपतयेनमः श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ स्वस्ति
श्री ॥ सजयातिसिंधुवरनोरवोयत्पादपंकजस्मरनं वासरम
निरिवतमसांशासिंनासयतिविघ्नानां ॥ १ ॥ आदित्यादिग्रहासर्वे



CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सनक्षत्रसरासयः ॥ आयुर्लक्ष्मीप्रजहंतिजस्पैषांलग्नपत्रिका ॥ २ ॥ सकलठौरगंनेसध्या
नपूजनुसिधिदारक ॥ गजकेसामुषजासुरवश्रैसैगनत्याश्क ॥ सुमिरैतेपदकंजनसैविघ
ननिकौराशी ॥ जिमिसूरजउदौतजारफूटितमश्चनियासी ॥ श्रैसैगनेससुषकरहैभा
षनिगमपुराननित ॥ तातेसुशंभुप्रथमेसुमिरिमंगलकारजसिद्धिहित ॥ ९४ ॥

सिंह५	वृष५	धन५	कुंभ५	तैल ५
कंन्या१	तुला१	मेष१	मीन१	तैल १
वृश्चि८	कर्क८	मकर८	मिथुन८	तैल ८
सम	सम	शुभ	शुभ	तैलफल

सूरजादियहसवचंदकुजचंदकुमारा
देवाचारजसुक्रमदतमकेतविचारा ॥ असानेआदि
देनषतसकलसतारसजानौ ॥ मेषआदिदेतहाराशि
वारहप्रमानौ ॥ एतेसुसकलशंभकहेमंगलकाज
पवात्रिका ॥ देवैश्रीआयुश्चरुलक्ष्मीजाकीलगनसुपत्रिका ॥ ९५ ॥
कंठी वृष कोदंड कुंभ एचारौरासी ॥ पाचपाचहैतैल
विग्पजनकहैप्रकासी ॥ कन्याधरअजमीन रासिएजानौचारी ॥ सातसा
तथांनितैलचढैसुंदरवरनारी ॥ ब्रश्चीककर्कमृगमिथुनकै नौनौतैलचढा
इये ॥ औरेसुतैलशंभकहैपातिकौनासवतारये ॥ ९६ ॥ ऊरधरेषासात

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सातपुनितिरछीरेषा। सप्तसलाकाचक्रलिषियइहिभांतिविसेषा। जोईसानस
रांशदोजिपंक्तिकातारा। नषतवेधसुभअसुभव्याहकोजोग्रहउारा। उत्तराषा
ढअंताचरनश्रवनआदिचारिकघरी। शंभूनहंनअभिजितपकीभुक्तिघरीउन



इसघरी। ९७। इतिसप्तसलाकाचक्र
॥ ऊभीरेषापांचपांचरेषाफुनि
आडी। रेषादोदोकोनकौनासिव
ढूसरिछाडी। तिहिंदेवहीनछूवे
सब्यमूरगलेताका। अभिजितन
षतंसमेतचक्रयहपंचसलाका
॥ रेषासुएकनछेचपरअपवा



सुभकेअसुभग्रह वेधमेंछूवशंभकेहेचक्रचरनसोवेधयह ९८ इतिपंचसला
काचक्र। विस्वदेवपदअंतश्रवनआदिकघरिचारी। पहंअभिजितकीभुक्तिघरी।
उनईसविचारी। अभिजितकोग्रहहोइरोहिनीकोसोवेध रोहिनिकोग्रहहोइवेध

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अभिजितहिनिषेधे येही प्रकारनक्षत्रग्रहवेधनछत्रवषानियै ॥ शंभविवारकेहेत
करिवेधसमुझिउरआनियै ९९ ॥इतिअभिजितभुक्ति॥ आगिलचारहुनषतनषत
निजतेरविमारे तृतियआगिलोनषतभोमतिहिलातप्रहारे छठयआगिलगुरलात
हनेसनिआगिलआठय वुद्धपाछिलानषतसातयेकोपरताउय ।पाचेनछत्रेपा
छिलहनेभ्रगुनंदनपरकैतहा चंदासुपूर्नवाईसयोराहुनमयपाछिलरहा १०० ॥इ
तिलत्ता॥ वितुनासैरविलातत्रासदुषससिकीलाता भ्रसुभौमकीलातलातवुधकी
भयगाता वंधुनासजोहोइलातगुरकीनोलागै वह्रारसुक्रकीलाततहा
राहुनदुषसागै आरकीलातकुलछयकरैराहुलातपुनिनासभय ल
त्तासुदोषशंभूकहैपंचसलाकाकेरठय १०१ ॥इतिलत्ताफल॥इदप
ताठ८ सूरजकेनक्षत्रतेजेसरपुनिहोई अरिमयाचित्राभेत्रसेहरिरे

रवि	लात	धननास
चंद्र	लात	त्रासदुख
भौम	लात	भ्रातृनाश
बुध	लात	भयदाता
गुर	लात	वंधुनास
शुक्र	लात	महादुख
शनि	लात	कुलक्षय
राहु	लात	हानिभय

सूर्यनक्षत्र । । । । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ । । ऽ । । । । ऽ । । । । ऽ
चंद्रनक्षत्र [illegible]

वतिसोई सूक्ष्मनिहोतिचइमागननाकरिजूअै ॥ तिहिदिनसिवचेडाउध
पतितजनवुझै १०२ ॥इतिपात॥दादठ८॥ पातमरैलेत्रप्रनतोदी जो०सि०
५६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जेकहुकर्म अवसिविवाहनकर्मसुभकरैजोतिषीमभे १०३ ..... हरषन वेधृतिजोग जोगपुनिसाध्य वधानो वहुरिजोगव्य तिपात गंड सूलहि जानो षटजोगएनामसमुझिउररापसधानो जोनछत्र

ह	वै	सा	व्य	गं	सु.	जोगपूर्व
२	२	२	२	२	२	नक्षत्रअंत
हे	म	चि	स्व	रे	श्र	नक्षत्रपूर्व
पुष्य	पूर्वा	चित्रा	कलह	मघा	छय	नामफल

कौअंतपाततोशंभुठानो १०४ ..... ति. अ हे पापवमानमघापावकपुनिलधो चित्रापातविकारकलहअनुराधारचो घनुदा तारवतीश्रवनछयपातविसेषो पातछहूवे चिहूशंभुयहव्यारहपरेषो १०५ ..... कृतिकाने साधवेधरोहिनिअभिजितसोम्यहुउत्तराषाढपूरवाषाढआइहे अदितमूलपु ष्यजेष्ठभाषाधनिष्ठवेधमघाश्रवनअस्वनीपूरवाउपडइहे रेवउत्तराफाल्गु नीउत्राभाद्रपातहस्तचित्रापूरवभाद्रपानवेधकरीमडइहे स्वातीसततारावि षभानीअनुराधातेविवाहवरजिशंभजानिवोअभइहे १०६ ..... मा नुवेधवेधव्यराचंद्रवेधदुषजानभौमपुत्रवेधतेवंसरिकानासुरे दुवेध

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वंध्यावां अ गुरुको जा लगे वेध संन्यासिनी प्रव्रज्या ताको प्रकासु है। सुक्रतै अपुत्रनारि भारी दुष मेद वेध राहु वेध विभिचारकि निवासु है। इन्हा चारि के तवे धक हो। शंभु हे तत्पर भए एक रेषा ग्रह वेधको विसासु है॥ १०७॥ इति वेधफल॥

रा	सुफा	बुधा	शुभा	म	स्वी	म	म	भने	रू	रू विनासन्त
[illegible]										
[illegible]										

[illegible] वे टेलानन छंद॥ तेन षत चोट होसो ए॥ हो इ दोष जा मित्र तो सुभ संजुत सुभ होइ सुभ संजुत सुभ होइ वर जस संजुत ग्रह पापी। चंद्र बुद्ध गुरु सुक्र करै सुभ सकल ग्रह पापी रा हु केत रवि भोम मेद फल करे नसै। शंभु जे सो षट तेस ह फल कारे वे है॥ १०८॥ इति [illegible] फल॥ होइ ससि जोहि रासि को जो हि रासि हि ग्रह भोग। होइ सुभासुभ सुफल वेनय हं जु तिसो षप्रयोग। ग्रह जुति सो षषयोग हानि सासि भानु सम ता। भोम निधन बुध रोग सुक्र गुरु स्थान द है ता। रवि सु

रासि	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
चंद्र	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं
युत ग्रह	सू	मं	बु	गु	सु	स	रा	के	०	०	०	०
फल	हानि	मृत्यु	रोग	सुषं	सुषं	मल नास	ज्ञान हानि	धन नास	०	०	०	०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तनासहिमूलराहुपुनिइहाही केतचंदविननामशंभुत्रुतिव्याहुनहोही १०९ [illegible]
[illegible] कोजेरषापूरषरवतिरछीनरहफेरि पहषजुरीचन्हेकरपाइनकोरीरि करावैइ
नकोहोइजोगविषमकमिलावै पुनिछुहाइसजोरुजोगजोपूरा
पावै तअधूकरिलहूनषतगनिवसिरदीजे इकरवासनि
नुचक्रएकागनकीजे ११०
[illegible] जोगविकुंभअसुनिननछत्र मोपौनि
षियेक्रमतत्र धीतिस्वातिसोभागविसाष आयुषमानभूरनि
तराष १११ सोभनवह्रिमनअतिगंड रोहिनिउत्तरवमलिठ
मेड जेश्रानषतओरवतिजोग गंउमूलमगसूलप्रयोग ११२
वृधिआद्राकुवपूरवाषाढ ओरितसुआधातलिविकाढ ह
रषनउत्राषाढवहोरि वज्रपुष्यपुनिलिषियेजोरि ११३ स
मिजिनसिधिव्यतिपातहस्त श्रवननषतवरियानविल्व
परिघमघाअस्रसिवकृधनिष्ट सिद्धिपूरवफालगुनप्रति
११४ साध्यजोगसतनाराजानि उत्तरफालगुनीसुभआनि पूर्वभाद्रपदसुरज

रहत्तन छत्र बुध लगानि लेहु ॥ ११५ ॥ उत्तराभाद्रपद रहै वखान । चित्रा वैधृति जोग निदा
न । भान चंद्र के जोग विचार । करि यों सुजन सोधि प्रहार ॥ ११६ ॥ जोग अरु कणापात न
होत । शंभु हो एकार्गल तत्र । जो को ग्राह्य बरे रहि चक्र । भय दुख परस्त्र पास निजि मिस
कै ॥ ११७ ॥ [illegible] इनि जोग के सी स एन खत
रै गनि चक्र रहि भानत के । आरे न व्याघात मूग सूल परिघ मघा अहि अति पातके
अस्वनी गंड है मूल जो मे त्र पुनि है अति गंड के । वज्र वे पुष्य वैध त्यो चित्रा न भयहा
न मंडके ॥ ११८ ॥ [illegible] रेखा रकठडी तेरह आडी अस खडी री चक्र कहो
पीठ व्याघात हि आदि नछत्र हि तै सजोग तस नखत लह्यो । गनिये सुविलोके
रघ रेखा सस सूरज नद्भव रेख परे । एकार्गल हो ईढीठ सो ई तो सब काज विरोध करे ॥ ११९ ॥
रनि [illegible] । सासि सूरज दृष्टा पुरुष विस वाए कउपज रहि जोग तहा । व्या
न वतन धारी रासि लु भारी पौछै त्रिभुवन मध्य महा । गुद मंगल वासा काज विना
सा अग्नि सारिखी टष्ट घरी । तौ कहि एकार्गल बुध जन भलभलत्त जो शंभु तिरि
सम्मुख धरी ॥ १२० ॥ [illegible] पंड़ा पुनि वारह दिसि वड़ु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धारह्वसुरिचारिको अंकधरो संक्रांतिदिनतें होइ दिनगनि लेसी आकानि आकनि
जोरिकेरो लाव हिनो भागे पंचक लागे रोग आगिनृप चोर मृत्यु नहिं पंचक गचे
पावनवाचे कहौ शंभु यह सम्भ्रमता १२१

१५	१२	१०	८	४	शेष
					संक्रांतिदिन
रोग	अग्नि	राज	चोर	मृत्यु	पंचक ५
५	५	५	५	५	

षट गुन ससि आठ धनि श्रुति लौ जोरौ
तिन तिनसे संग लगाए रुजवह्नि नृपति पुनि तसगरु
तिपाच पाच यह सब लहए सब पंचक सघाइ के कार
रहा नौ के भागे पांच बचे सरसत्य समता राहनये ता शंभु बानके वरनस चे १२२

१	२	४	६	९	शेष नव से
मृत्यु	अग्नि	राज	रोग	चोर	पंचक
९	५	३	७	०	शेष नव से सुब सुभ

मासुएक दो अग्नि
ध्रुजुग रुजवसु षट चोर नव मृत्यु पांच वि सप
त पुनि शंभु सुन्यसुभ ओर १२३

शेष	९	३	१	८	४
संक्रांति शेष					
पंचक	रोग	अग्नि	राज	चोर	मृत्यु
समस्त पंचक ५	५	५	५	५	५

रावनहु तें
सातअंक पांच विधु पांच यौ वसु लूलाहिक सनि अठार हो के तनहे बस्नर ड पंद्रा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पातहै ऊनसयो चोरा निरघात पात इवें समो हैतहै वारसनिर्घातकंपतेइस चौवीसवज्र पंचीसपरिवेष विसेषपरियेतहै एजोग चंद्र रवि हो इ अग्नि विद्यु

मंद	विद्युत	रज	...	केतु	धूलकेतु	तथा	निर्घात	निर्घात	कंप	वज्र	परिवेष	सर्जैनजनितेउपद्रहनाम
२	५	८	१०	१२	१५	१६	१८	२१	२२	२३	२४	२५ सर्जैनितेतेउपद्रह
विप	सू ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	केर	सर्जैनजनितेउपद्रह				
इत्रनाप्ति स	कुल नास	देशघात	द्रव्य नास	वंध हर	वंध नास	कर विनि चारि	०	फल				

सर्वघात फलकर्म एन छत्र सुभ न देत है १२४

[illegible] सूर्जतेनक्षत्र पाचयो जानो विद्युत सो इ सकलत्राउसनिपात चतुरदस केतु ऊनतीरो हो इ ऊनविंसनक्षत्रसु उलकावाईसो निरघात तेइसकंप वज्रचोवीसो उपग्रह ए विष्यात १२५ [illegible] करे विनास पुत्रको विद्युत सकल प्रानपति लेत संनिपात कुलको घात गोर देवर नास रिवेत उलकानर नइ ब्रेह रिलेही वंधनास निरघात कंपक वविभिचारि वज्र विप एन शंभु सुभ मान १२५ [illegible] छंडी आदीते तैरे घामा अ्ौलिषि पेमीन इहि हैं

जो०सिं० ५९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

३ दिनकरु चंद्रा की क्रांति साम्य सो लीन । अथ केन्द्रा अजा सिंह मकर वृष चाप मिथुन
आलिकर्क । कुंभ तुला इन विधि विवाहे सुभ नासनको अर्क । १२६ । [illegible] । राग
कलेस मंगल नौ [illegible] केरे कर अरु त्रास । क्रांति साम्य ता तें तजो भाष्यो शंभु दास । १२७ ।



इति [illegible] । अथ [illegible] । लग्न मगध देस हि मिलान को
सिलहैस जानिये पात । कासमीर एकार्गल तत्र । वेध तहां वरजे
सरव र । १२८ । इति [illegible] । लातहालिइ पात बहु रोग वंध्या
होइ वेध के जोग । ऋांति पंसरा वा
सजामित्र पंच दो बए वरजे मित्र
। १२९ । इति पंचदश [illegible]
[illegible] । मोरदा [illegible] ।

देस	नगर	[illegible]	काल मार	सर्व देस	
देसमान्य	[illegible]	पात	[illegible]	वेध	
पंचसरोल	[illegible]	[illegible]	वेध	[illegible]	जामि
फल	हानि	रोग	वंध्या	[illegible]	[illegible]
देसदोष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	जामित्र	[illegible]
फल	दुख	दुख	मरन	[illegible]	[illegible]

गुरु है नक्षत्र पात । कासमीर एकार्गल । मालव मे जुन
लाते । सवही वधस्तु वरजिये । १३० । लात पात दुख
होय मरन होइ इस जोग ते । सेव रोग भय सोइ मृत्यु वेध जामित्र ते । १३१ । इति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

छप्पय। दग्धांत। तीनघरीअंतानघतजुगलघरीतिथिअंत मासअंतदिनअंतरकशंभुविवाहतजंत १३२ इतिनक्षत्रांततिथिमासदिनअंतघरीविवाहवर्ज्य॥ जनमनषतपरित्यागियेजनमतदिवसअरुमास प्रथमपुत्रअथवासुताजेठमंगलनासे १३३ इतिजन्मनक्षत्रादिवर्ज्य। जेठसुताके जेठसुतहोइमहीनाजेठ इकअंतरहोजेठमेकरपीडन करिवेठ १३४ इतिद्विजेष्ठविवाहशुभ। सुक्रअस्तअरु बालपुनिहोइवृद्धअधिमास जीवअस्तरिक्ताकुहू अरुपुनिविष्टिप्रकास १३५ इतिविवाहवर्ज्य। चौपईछंद। जोकछुपरहिअधमदिनआइ अरुपुनिव्याधिछययातिथ्यपराइ इनिमेकरैविवाहै नाहि असुभअहैवरकन्याकाहि १३६ इतिविवाहवर्ज्य। गुरुवादित्यासिंहकेजीव। वक्रीअरुअतिचारीलीव। चैतपौषमासांतविचार लुप्तवरषशंभुउच्चार १३७ सिंहस्थके

नक्षत्र	तिथि	मास	दिन	अंत
३	२	१	१	घरीविवाहवर्ज्य
जनम	जनम	जनम	जनम	जनमविवाहवर्ज्य
जेष्ठा	जेष्ठ	जेष्ठ	०	विवाहवर्ज्य
अस्त	बाल	वृद्ध	शुक्र	विवाहवर्ज्य
गुरुअस्त	रिक्ता	अमावस्या	षष्ठी	विवाहवर्ज्य
गुरुआदित्य	सिंहगुरु	वक्रीगुरु	अतिचारगुरु	मकरगुरु	विवाहवर्ज्य नर्मदागंगामध्य
दिन	मास	दिन	दिन	दिनमास
१०	२	२८	२८	विवाहवर्ज्य

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

एकैजीवविराज करिपैनहिउरवारलुकाज गंगाजुरुगोदांतरयाहु सुमनकरैकेतु
अवसिविवाहु १३९ इतिविवाहवर्ज्या गुरुवादितके हिनदससपाग जीवसिंहसाम
सविभाग जीवहोइवक्री अतिचार अष्टाविसतवासरउार १३९ इतिग्रहण पूरवद

वाल	३	वृद्ध	१५	पूर्वेसुक्रोदि
वाल	१०	वृद्ध	५	पश्चिमसुक्रदिन
वाल	७	वृद्ध	५	पूर्वगुरदिन
वाल	५	वृद्ध	७	पश्चिमगुरदिन
वाल	७	वृद्ध	५	द्वितीयमतपूर्वसुक्रदि
वाल	५	वृद्ध	७	द्वितीयमतपश्चिमसुक्रदि

रयवालदिन तीन पाषएक पुनिधगवृधतीन
दिनदस पछिमभेअगुवाल वृदपंचदिन प्रौ
भुमहाल १४० इतिमुखवालवृद्धजीवसुक्र पु
रवपछिमवालहैजीवसु विषयात सात पाच दि
नशंभुकेहिवृद्धपख्व अरु सात १४१ इतिग्रुम
वालवृद्ध समेमत फागुनसुक्लाअष्टमीपु
नोलोदिनआठ ८ सोहोलाष्टक होइयहवरजनीकसुभदाट १४२ इतिहोला
ष्टक सतलहुडात्रिपुष्करहुएरावत विपास हालाटकसुभअनतेरइनदेसन
मेनाहि १४३ इतिहोलाष्टकवर्ज्या इतिकालवृद्ध धनुवमिथुन
कन्यातुलाओरवृषलग्न एसुभशंभुविवाहकोओरलग्नसुभमध्य १४४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होइ आपनो पुनि मित्र छत्र वे होइ । तामिन अंस हि मेकरे करग्रहा हि सुभ सोइ

१६५ इति ... मेष धनु वृष अस सिह नवांस

मेष तें होइ । वृष कंन्या अरु मकर नवांस मकर तें सोइ । तुला मिथुन अरु कुंभ नवां

स तुला तें जानो । अब अंस कर्क अरु कर्क नवांस कर्क तें ठानो । १६६

इति नवांस चक्र ... अज वृष घट कर का हि

तें क्रम नवांस गनि लाह । धन वृष घट कंन्या मिथुन शंभु नवांस वि

वाह । १६७ । इति नवांस । शंभू एक हि लगन के तीस अंस की

लाग । तीन वीस एक भाग है सु सेहे नव भाग । १६८ । इति

... गननाकरो नवांस को ताको क्रम सुनि लेह । कहो चक्र नौ भाग करि स

ब भ्रम मिटे संदेह । १६९ । ... तीन वीस एक भाग भा

ग तीन छै । ... चालीसा हस पू

रन त्रै भाग चौथ तेरह ... वी

सा सोरा अरु चालीस भाग पाचो पुनि तातें छठयो पूरन वीस तेइस

१	१०	७	४
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

नवांसा चक्र

तीस३० अंसमा ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९
हीसन्नवमेअंस	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
विअंस	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२३ नष २० सातै छब्बीस अंस २० चालिस ६ विलव आठभाग प्रमानिये शंभुजुती
स ३० पूरन नवौ मेष आदिग निजानिये १५० इति नवां[illegible]
[illegible] नवम भाग ते भोगि सव भोगे चके तवयक औरलगन तव भाग वे शंभु
कौन विवेक १५१ इति लग्न नाम अंकित
मचक्र। लगन सुद्धि नाहि हो इ जो तौ वल लेहु
विचारि शभुन वास करै तमु मकरय हदोष
निवारि १५२ इति [illegible]
[illegible] आंधरी दिन लेष
वृष सिंह पुनि मेष कंन्या हो मिथुन कुली
र एरात्ति अंध सुधीर १५३ तौल निमकर अलि सोर परि
लसव हिरी हो इ घट चाप अरु अषलग्न संध्या सुटेटी मझ
१५४ इति [illegible] वरु हानि कर दिन स
रि निसि अंस षन करह रि पुनि वधिर दुष कोलाह कुल नास कुवजा विवाह १५५

१	२	३	४	५	६	७	८	९	भाग
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंस
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	विकंस
२६	२३	२०	१६	१३	१०	६	३	०	अंसवक्रि
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	विकंसवक्रि

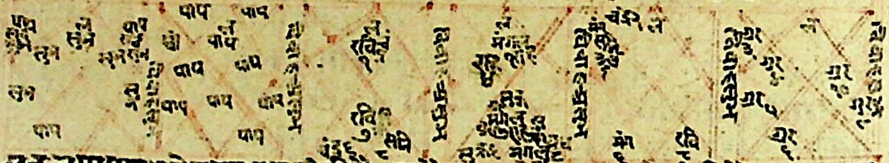
लग्नांस शुद्धि चक्र

दिवस	रात्रि	[illegible]	संध्या
मेष	मिथुन	तुला	धन
वृष	कर्क	वृश्चिक	कुंभ
सिंह	कंन्या	मकर	मीन
अंध	अंध	वधिर	कुबज
वारहानि	[illegible]नि	दुःख	कुलनास

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥इति... फल॥ पापी होइ त्रिकोन सुकेंद्र कन्या नियें। मर्म वेध ग्रह पाप सु लगन स्थानियें। दसयें चौथे पाप सल्प तानाम है ॥सानयघलतें छिद्र इव वारन्ह काम है ॥१५६॥इति...॥ पुत्रा विना सो होइ सल्प त्रपभय करें। मर्म वेध तें मरन सु कंट कधन हरे। वर कन्या कोतहा कर ग्रह की जियें। चारि दोघरुक छिन शभु तजि दीजियें ॥१५७॥इति चतुष्टय फल॥ सुभ ग्रह केंद्र न कोनसा तंयो छंड़ि घलन तीय रिपु लाभ ज्यारु सुभ मांडेरे

पाप पाप पाप पाप पापग्रह
१५१ १०८ ७ आयन
केंद्र मर्मवेध सल्प छिद्र चतुरद्रोषगम
धनुना मरन व्रप ७ आ फल



सकल पाप सुभ घेट लाभ वातो जियें। वरजो सातयग्रह मारु करि लीजियें ॥१५८॥ लगन चंद्रमा वरज पाप ग्रह अंतरे। वर को मारे लग्न चंद्र कन्या हि हरे। सुभ दाइक ष

जो०सिं०
६२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

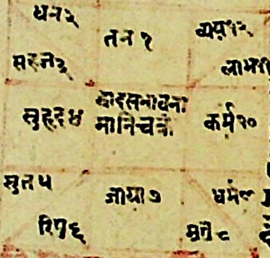
सग्रुहच्चेर्धनघरपरे कैंद्रत्रिकोनीसौम्यखेटसुभकोकरै १५९ पापीतनधनचो
थपंचमभेनमाठयौ नवद्वादसदसवरजविवाहकुठाठयौ तनमुनिवारविमंदच्य
हरिपुतनससी जौकरवावहिव्याहवुद्धिपंडितनसी १६० कुजतनअठयेसपत
म्यरवसरिपुभनी तनमुनिचौथेराहुवुदमुनिचसुपुनी जीवआठयेहाइविवा

हैजोकरै रोगत्रासआनिदेहे धंभुपरहउचरै १६१ अष्टतातियरावेमंदविवाहेल
भलहे तीजेधनघरमाहिचंद्रमायहरहे भौमसत्रतीसैरेनीकफलकोकरै इहि
विधिधंभूदातसमुझिकेउच्चरै १६२ इसयेपंचात्रिवैरसत्रनवयोकहे इनिघ
रजीववविवाहवृद्धिलुनकीनहे दूसरवंधत्रिकोनकमेअहतीजहे इनिअस्थान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामु०
६२

सुक सुष्म वृहलीजहे १६३ दोहाछंद॥ राहुपाचयेतीसरो वह आठयेधर्म कर्म
वारहेयेग्रह पुनि नीकवरयग्रह कर्म १६४ प्रमानिकाछंद॥ त्रतीयहोइ आठये हिन
सनीकछाटये छठे अठै सनीचरा विवाहकानिकावरा १६५ चतुर्थपंचधर्मेहे द्वि



तीयधामकर्महे विलग्रहोइपेजरा विवाहभौमफल्लदा १६६
नंदमोषवाछंद॥ चोथयेपाचयेलग्नयेहेनमे तीसरे
सोम्पजोसिद्धिदेकरमे तीसरेसत्तयेलाभपापीग्रहा व्या
हपत्रिरिष्टियाजात्रयाकोकहा १६७ दोहाछंद॥ वधूधर्मसु
तलगनपुनिगुरअथवाभ्रगुहोइ असुभमारिसुभवुद्धिदेमं
गलवारजसोइ १६८ हेमवलीगुरलगनकेजद्यपिकेउक
दोष तेविलाततेसेसकलजिमिगजकेहरिरोष १६९
[illegible] लगनएकहीकेकहेवार
हभावविचार आदिभानग्रहकेतलोतनक्रमफलउचार १७० तन धन सहज
सुहिरद सुत रिपु जाया म्रत धर्म कर्म लाभ व्यय वारहोग्रहोंके

ज्यो०लि०
६२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मफलमर्म ॥ १७१ ॥ इति द्वादसभावनामानि ॥ ठो मेव द्व ॥ भानुभावफलसुनो
लग्नरविमृत्युप्रकासहि । धनदारिद्रधनसहजसहस्पुनिवंधुविनासहि । पुत्रसो
कसुतकरेसत्रपतिराज्यकरावहि । जायारविवैधव्यमृत्युचित्रआयुवदावहि ।

मंगलसुहानिरविधर्मकेरसंपसुराजकरकसा । नानासुवस्तप्पारहिभिलेशंभुकं
हैव्ययकुलनसा ॥ १७२ ॥ इति रविफलम् ॥ करैमृत्युतनचंद्रचंद्रधनसंपति
देही । सहजचंद्रधनप्रीतिबंधुवधिचोध्यकरेही । वंध्यापुनिसुतभावजनविरा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा॰म॰
६४

धरिपुचंद्रा। जायासेंपतिच्चपलमृत्युससितेंजमफंद्रा। कंन्याप्रसूतिसासिधमेघ
रकमंचंस्वदासीकरे। प्यारोनरेसपरवारहै। शंभुकरेच्यारथहिहरे। १७३। इति चंद्र
भावफलं॥ भौमलगनतेंमरनदलिद्रदूजेंघरजाई। सहजभौमधनमिलेंबंधुबंध

वरिपुताई। बंध्यासुतकुजकरेंसत्रलछमीमिलावें। सातपंथुच्छलिहोइआठयेंरस्म
वहावें। भूपुत्रधर्मऔराहिरताकर्मभौमच्यामिथभषे। पावेंसुवित्तकुजच्यासुष्ठरश
भुकरेंव्ययधनचषे॥ १७४॥ मंगलभावफलं॥ प्रथमभावबुधहोइस्वामिवरती

ज्यो॰सिं॰
६४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नियहोई धर्मसीलहूसरैगोत्रमान्यकन्हतिसोई बंधुपून्यहैचौथपुत्रवनितापांचेना
री छठयेहैनिरवैरसातयेबंधाभारी आठहैसुमरनसुकृतिनिनवेकपटिदसयें
जानिये ग्यारोधनीवारहूंहालिरशंभुभावबुधआनिये १७५ [illegible]

[illegible] तनगुरुप्रियपतिधामीवहारिधनधान्यसुधनतें सहजहरखआतुहांइसंपति
सुहृदभवनते पुत्रवतीसुतजीवनष्टवैरिनिरिपुग्रेहा [illegible] गयान्तस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
६५

गुरछांडैदेह॥ धरमिष्टधर्मकेगुरपैरैकमेधामंअरथनिफली॥ लक्ष्मीकुंआयु
व्ययद्दलिद्दिनीधंस्सुहोइवैसैभली॥ १७६॥ इतिगुरभावफल॥ तनमंगुसैपति
२ ब्रताहितियपुंन्यीधनलोभिनि॥ देवरतिवियसहजश्रेष्टकुलचौथेसोभिनि
॥पुत्रवहुतसुतधाममेरूवहुतकउरथ्यावै॥ जायाविलाहोरमरनमंगुमत्सुमि
लावै॥ धर्मिष्टधर्मडसनापैरैपुंन्यसीलकरमसुलगै॥ धोभसुराज्ञुग्यारौमिलैमं
गुवारहभिज्ञामगै॥ १७७॥ इतिभृगुभावफल॥ लगनमेंदपुसचलीद्दलिद्दिनी
दूजेधामा॥ अरथवतीसनिसहजचौथपयहीनीवामा॥ हृदयरोगपाचयेंसत्त
४ निरवैरघानी॥ गर्भपतनसनिसपतअष्टआरोग्यसयानी॥ हैनष्टभंगउन्नतकौ
नमयपुनिदुसीलदसयेंभवन॥ धोभसुसंपतिग्यारहेमंयवंतसुव्ययसनिगव
न॥ १७८॥ इतिसनिभावफल॥ वारहघरकौकह्यौसनीचरकौफलऐसो॥ रा
हुकेतुहीकेरजानिलीजेफलतैसो॥ तीन्योएकप्रकारएकघरएकहिभाती॥
यामेंनहिसंदेहपरसजिमिस्वकहियाती॥ यामेंद्विभेदहैनाहिहैंवक्र संतसंपथं

जो०सिं०
६५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ऊतिनकहत मिथ्यानजानशंभूवोहएतीन्योइकगतिरहत १७९ इतिसनिग्रह [illegible]
[illegible] चौथदसैनवपाचये गुरुवाभ्रगुहनि
थान सुभनैहूनोकरतफलअसुभहितेसुभजान १८० [illegible]
चौथदसेतनकेइघरजोवु
धउवेवलिछ करैशंभुनेवु
धहरैइकसतदोषअनिष्ट १८१
[illegible] सुन
दोषदोसेहोइनघरवलीउदोत
शंभुवलीगुरजोउवैनास[illegible]
बहोत १८२ इति [illegible]
जीवलग्नवावुद्धभ्रगुहोइलमकेदेष असैदोषविनासहीजोमिरचितिमर
विसेष १८३ लहुदोषगुरनासही दसोअंस भ्रगुघट तातेद
सयोअंस बुधसुभप्रअसुभनिमिट १८४ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
६६

काव्यछंद। अस्तभयेतेभानुतहांगोधूलिकहावे सुभकाजकोजहांमहास
वसिद्धिवदावे लगनहितेससिलाभदूजवातीजेसोई शंभूतोगोधूलिसेवधू
लीमुघहोई १८५ इति शंभुमतेन गुभोदाहा छंद। चंद्रषष्ठअष्टमलगन
साम्यकुलिकयुनिलेष दोषपंचगोधूलितजियशंभुजो
रसुभसेष १८६ आठप्रगुरकुजबुद्धभृगशंभुनलीजेभूलि
लगनषष्ठआठेससीपरिहरिअसगोधूलि १८७ इतिगो
धूलिलग्नं। शंभुक
सहोऊकरीवेनुधूलि
कालग्न अरुभहि
कोपरित्यागियेसु
भकोलीजेमग्र १८८
इतिगोधूलिकाल
लग्नसमाप्तं।

ज्यो०सिं०
६६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

री छंद ॥ धर्मकर्मरिपुलाभस्थान ॥ सुभषेचरविवाहसुभदान ॥ अष्टमलाभस
अरुतीज ॥ इनिकेपापकरग्रहकीज ॥ १२९ ॥ इतिसभासुभग्रहस्थानविवाह
सुभा ॥ धनअरुलाभतृतियकेचंद ॥ करपीडनदानासषकेद ॥ छठयेसुक्रअलभ

केदानि ॥ अठयेभोमभृगुनिहानि ॥ १३० ॥ इतिसभासुभग्रहस्वराग ॥ अरधवि
भागभानकरहोइ ॥ सासकपाचतीनगुरसोइ ॥ दोभृगकेदोबुधकेसाध ॥ कुज
सनिराहुभागइकआध ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ छभूग्रहवलजुतावरविस्वागर
CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामं०
६७

सोलीन विस्वावलपुरस मानग्रस्कमतेरहस्निहीन १९२ इतितिस्थानयन चौ
पई। कर। थानञ्चानिस्थहिकेग्रहलेष बुधगुरसुक्रमित्रहगरेह पुनिपापीघेचु
रवलिवान रहितहोरजोसुभस्थान १९३ होइलगनसुभऊनिनहोइ ससिरवि
गुरएसुभनहिकोर इनितीननिमेसुभनहियेक लगननदीजेशंभविवेक १९४
कन्यामिथुनतुलाधन्नलग्न त्रियसोभरताकसुधमग्न ओरसबेसकरिपुजवेचाउ
होइदरिद्रिनिगनिकाराउ १९५ ततननवासजोछेत्रप्रकास लषेनप्रसनाथ
सुतनास पुत्रहोइतोवरुमरिजाइ यामेकछूनामिथ्याचार १९६ दोहा ल
गनासकशंभूतहाहोइसातकेग्रेस स्वामीजुतरेषेनही मरेत्रियानहिसंस १९७
इतिविवाहलगनविचार। चौपई। एवनिकेचलिआयोकुलआचार है
सधर्मपुनिजानोकरिनिस्तार वेदसास्त्रमरजादापेजगमाहि शंभुविदुषजनभाष
नउलघनाहि १९८ वेदसास्त्रतिनहीकोजोहैमूल सोमिथ्यानहिजानोलजि
यनभूल। जोमरजादकौपरिहरिकीजेधर्म होषतेनसिधिपावेजानोमर्म १९९
इतिमरजादमनस्थाचार। हीनवरनअरुगोलककहेनिदान परवदासिकेमातुपसु जो०सिं०
६७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रुउनिजान । एतेगोरजमाहीकेरेविवाह । शंभूयहमतभाष्योग्रंथनिमाह ॥ २०० ॥
इति पंचमत ॥ पुरसुरभीकोलागेधरनीमाहि । तातेरजउ रिछाचेदायनसाहि । सा
असमयतिरहिलीजेभावरिपारि । शंभूवरकंन्यावोरहेसुभकारि ॥ २०१ ॥ इति गोरज
लग्नमत ॥ गोचरमारगभानुवलमाउरीकरेविवाह ॥ इति गोचरमत ॥ गुरवल
हीनेनरेसपुनिदेसदेसनिरवाह ॥ २०२ ॥ इति नरेसमत ॥ लालदेसमहात्यपुनि
ग्रहस्याम्रवतिजान ॥ लालमह्यातेरमत ॥ गोचरमानअवंतिकाकरेविवाह
प्रमान ॥ २०३ ॥ इति अवंतिकादेसमत ॥ सात्वसरूपनजानवहुतासुगिराहितना
हि । एकआषिवैकेनरहहिजिमिएकारहिओरहिवाहि ॥ २०४ ॥ इति न्यपुवचित्त ॥ गेना
मेर ॥ प्राजापत्यविवाहतोपिजोवरकेदीजे । पुनिआसदेवविवाहसुनाव
रआराधिकीजे । ब्रह्मव्याहइहिभातिवरहिजोलेनमगीजे । शंभूआरिषव्या
हदामलेकंन्यादीजे ॥ २०५ ॥ इति चतुर्विधविवाह ॥ पुरगंधर्वविवाहजोस्व
यंवरकरिहोई । असुरपीउनूअसुरकरेहरिकंन्यासोई । सोराक्षसोविवा
हकरहिलेसुताचुराइ । जानुपिसाचविवाहकालसवशंभुकहाई ॥ २०६ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तम०
६८

लै

इतिद्विनियचतुर्थभिविवाहनेनाम ॥ छंद ॥ शंभूकहीविवाहविधिवहुग्रंथनि
मतल्याइ ॥ सोतेंभाषाकरीलघुपंडितननिसहाइ ॥ २० ॥ इतिश्रीमत्पंडितमिश्र
मनश्रीशंभूविरचितेज्योतिषसिंधुग्रंथामचे
द्वावविवाहप्रकरनषोडसतरंगः ॥ १६ ॥ चौपई ॥ छंद ॥
अगहनफागुनअरुवैसाष ॥ विषमवरषलीजेविधिलाष ॥
सुद्धसमयससिकौवललेहु ॥ द्विरागमनसुभकाजकरेहु ॥ १ ॥
वरषआठहीमारेसासु ॥ दसईंवरषससुकरनासु ॥ वारहिव
रषहरेपतिप्रान ॥ द्विरागमननहिकरेनिदान ॥ २ ॥ सौम्यवा
रगाम्वरसुभहोइ ॥ सुकलपक्षफलदाइकसोइ ॥ नेवेचो
थचोथसितजिदेहु ॥ शंभूवधूगमनकरिलेहु ॥ ३ ॥ इति
द्विरागमनमासादिकथन ॥ वारशुद्धि ॥ छंद ॥ मृगमूलरोहिनीअसुनिरेव
॥ स्वातित्वष्ट्रहरिवासवैलेव ॥ करअदितिपुष्यअनुराधपाव ॥ पुनितीनउत्तरा
वषल्याव ॥ ४ ॥ इतिद्विरागमननक्षत्र ॥ तिथिअमावस्यषष्टीसुजान ॥ द्वादसी

जो०सिं०
६८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चौथेनममीवखान । आठैचतुरदसिदिगधानहोइ । छानेजोगवदिफावसोइ ५
नाहिजुगमव छिवेथौन छत्र । नहिकूरवारमौननेत्र । नहिदिरागमनशनिमाभकौज
॥ शंभूअफलएसागिरीज ६ ॥ इतिदिरागमनचक्री ॥ घटकंन्याभगामिथुनमी
न एलग्नपावलीजे प्रवीन । सुमजुक्तघटवाह
स्टिहोइ कहियेचलावफलदाता सोइ ७ ॥ इतिदि
रागमनलग्नसुभ ॥ तृतियग्यारहोवरयोग्यर
तहपापग्रहासुभफलारेहह । नवपाचवे ग्र
हहोइसोम्य । करद्विरागमनसुभतेमरोम्य ८
इतिद्विरागमनग्रहस्थानसुभ । हाहीहकर । स
नमुखदाहिनअस्तभृगुजीवअस्तमासंन । वध
नश्निमैचालदीवालहिअसुभपरंत ९ ॥ इति
ग्रहचालनसुभा । चोपहीहंदर । सनमुखलो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होइ सुक्र सुखदायक वाम। पीठि
चनको हरि लेहि। दहिन स्वामी हनिइ घेरेहि।
॥ इति सुक्र फला फल॥ साढे आठ मास लागे जा
पुष्टि फल देहि प्रनाम॥१०॥ सुक्र मास नो पछिम सो र॥११॥
न। रहे सुक्र पूरव अस्थान। मास अढाई उत्तर जोर।
॥इति सुक्र रिसावा सा॥ पूरव अस्त अढाई मास। दिवस
आठ पुनि पछिम अवास। अस्त सुक्र को पयगानि लीवि
दिसि प्रति रकर कमरहि ना जीव॥१२॥ इति सुक्र उदै
मा अस्त प्रमान॥ तीरथ जात विवाहन आहि। विप्र
तप करका दूषन नाहि। एक गाउ पुर जो वस वास। दूषन सुक्र के रसव नास॥१३॥ इति
सुक्र दोष नाम॥ गोतम अत्रि सु भारद्वाज। अरु वसिष्ठ कस्यप मुनिराज। शंभु
कहे पारव गात। ना सहि भृगु सुत की भय छोत॥१४॥ इति सुक्र गोत्र दोष
नाम॥ रवति ते कृतिका पर जंत। चारि नषत तो लोस सिगंत। जो लो चं
घर है भृगु नाथ। सनमुख दाहिन गमन सुभ हाथ॥१५॥ इति सुक्र नक्षत्र दो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बनास।। वाजिसेनअरुवस्त्रासेन। कानिकतारमोतीतितिहिंहेत। धांसबासनैदीजे
हान।। तौभ्रगुकेसववसेवपरान।१६।। इति नक्षत्रदोषवनास।। फागुनमाघजेठ
वैसाख।। अगहनसावनपुनिसुभभाष। धनअरुभोगपुत्रकारिसार। प्रथमरसलु
ताजोतियधार।१७।। इति रजस्वलामासफल।। दिवसलग्नस्वामीसुभराष
सुभसितपक्षअसुभबदिपाष। सुक्लक्षस्पदसमीपरजंत। प्रथमारतवसुम
धमगंत।१८।। इति रजस्वलापक्षफल।। रोटस्तुवृतगानिकासौभाग।। श्रीमतिसु
भअरुवंध्यादाग।। सूरजवासरतेक्रमनारि।। प्रथमहिपुष्पवतीसोनारि।।१९।। इ
ति श्रुकोर वाररजस्वलाफल।। प्रथवनधनिष्ठासतभिषरेव। अस्वनिपुष्यपुन
र्वसलेव।। त्रिष्टस्वातिकरउत्तरातीन। मैत्रब्राह्मयम्रगसुभरजलीन।।२०।। इति नक्ष
त्ररजस्वलासुभ।। मघामूलएमध्यमजान। पुष्पवतीतियप्रथमनिदान।। इ
ति मध्यमनक्षत्र।। इनिपरऔरनषतजेलेष। हानिदुष्पदाताविसेष।।२१
इति असुभनक्षत्ररजस्वलाअसुभफल।। षष्टीरिक्ताअष्टमसौद। मरिमादरस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

द्वादसी होइ ॥ संक्रांति कुजोग भद्रा सांझ ॥ इनि मैं असुभ प्रथम रजदांझ ॥ २२ ॥ इ
ति रजस्वला असुभ ॥ वैधृति रुज सासिर विउपराग ॥ निद्र पराए मंदिर जाग
अरुन स्याम अरु रुद्र वस्त्र पुरान रोग दृष्टि लटा अस्थान ॥ २३ ॥ पात महापाते
व्यतिपात ॥ आदि रज स्वल सुभ न हि वात ॥ वर्ग अरु सोम्य नारि रज आदि ॥ हो
इ विरूप निमहा विवादि ॥ २४ ॥ इति रजस्वला असुभ ॥ सोम्य वारे तैसा सोभा
ग ॥ जोतिष प्रफुल प्रथम रही लाग ॥ स्वेत वस्त्र पहिरे रज होइ ॥ सुभ दाइक धोभ्र व
हि साइ ॥ २५ ॥ इति रजस्वला सुभ ॥ गनि ये जु दैज देगुन होष ॥ देस दोउ निवो
वल पोष ॥ अधिक अधिक फल कैरो विसेष ॥ थभ कैरे समुझि विकि निरदेष ॥ २६ ॥
इति रजस्वला गनना अधिक फल ॥ वार नषत्र तिथि निंद्य विसेष ॥ निंद्य
जोग जो रज को देष ॥ कीजे सांति ग्रेथ मत सार ॥ सोध असुभ ते सुभ उच्चार ॥ २७ ॥
इति रजस्वला असुभ सांति सुभ ॥ प्रथम दिवस नारी चंडाल ॥ ब्रह्मघनी दि
न दूसर वाल ॥ वारतीसरे धोवि निरूप ॥ चोथे वासर सुद्ध अनूप ॥ २८ ॥ इति र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जस्वलादिनप्रमान॥ जेष्टमैत्रमृग अस्विनिलीन॥ रेवैवासवउत्तरातीन॥ तीनपू
र्वारोहिनिज्ञान॥ सुभप्रदपुष्यवताअस्नान॥ २९॥ इति जरस्मन स्नान सुभा॥
रिकतामिक्ठदेहसलिहिसस्य॥ सेटिअरुहादसितिथिसा॥ मंगलअतवारसनि या
हि॥ इनिमेह्नानपुष्यवतिनारि॥ ३०॥ अग्निर जररसन स्नान सुभ॥ सततारा
न्हन धस्नान॥ फूलवतीजोकरेनिसान॥ राउडुरभग॥ वंध्याहोइ॥ सातजनमके
रिनिस्त्रयसोइ॥ ३१॥ इतिसतभिषरज स्वला स्नानसुभ॥ होइसरुजस्वामीव
तहीन॥ पुनिनिषुत्रभागिनीलीन॥ पतिव्रताअरुजानकलेस॥ रविवारादिक
परहकमलेस॥ ३२॥ इतिरजस्वला स्नान वार फलाफ
ला॥ लगननखतातीथिविविधिगडंत॥ जनमनषत
वधतारतजंत॥ गहनदिवसवैधत्यविचारि॥ व्यतीपातमहपातडारि॥ ३३॥ पि
त्रसाधदिनपरिघाआधं॥ वहरिविविधउतपातेसाधु॥ जनमलगनतेवादियप्र
नाम॥ पापजुतकरिआठोधाम॥ ३४॥ संध्याजुगलघटिपुनिविष्टि॥ रिकतमा

रामु०

मभानुसनिहि। भरनिउत्तराजेष्टपष। मघामूल अरु अस्वनिदष॥ ३५॥ एनछ
त्र अरुपाचहूपर्व। कहोविचारपरखकरसर्व। चतुरदसीआठैवदिराषि। करिहैजम
मावसिपत्नोभाषि। रविसंक्रांतिजानिपुनिसोइ। एतेपर्वनामकरिहोइ॥ करियै
नहि इनिगरभारंभु। संतग्रंथमतभाषिउशंभु॥ ३६॥ इतिगर्भधारनवर्जी। आ
द्राश्रवनपुष्यमृगहस्त। स्वातिअरुरोहिनिवसुसस्त। अनुराधउशभूवरिहीन
॥ग्रंथांतरमउत्तरतीन॥ ३८॥ इतिगर्भधारनमनसुभ॥ केंद्रत्रिकोनलगनसु
भशुर्ने। चंद्रजोगसुभत्रियरतिउक्त। सप्तस्थानग्यारहोतीज। पापषेचराइनिके
लीज॥ ३९॥ पुंग्रहदृष्टिकहियगुरभोम। इत्याधमकेरसुघरोम॥ ऊनीतासैनर्वो
सगसाज। समनिसिगरभाधारनकाज॥ ४०॥ इतिगर्भधारनसुभ॥ ग्रंथांतरमत॥
अस्वनिपुष्यचित्राहस्तनछत्र॥ नषतपुनर्वसकहियेनत्र। मध्यमगरभधारनआ
धान। रिषिभाषनमतशंभुवषान॥ ४१॥ इतिगर्भधारनमध्यमनछत्र। शीलाछंद॥
रविदिनपरहिवस्त्रवेगितोजीरनहोई। चंद्ररहैउजलभीजसोकमयमंगलसोइ

जोधसिं
७१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धुनधनधापतिरो इ ग्यानसुगुरउपजाई ॥ पियमिलापअगुहारै मालिनसनिशोभक
हाई ॥ ८२ ॥ इति वस्त्रधारनवारफलाफल ॥ लेपंञोरगजद्दतकनिककासेकेभूषन
॥ कुसमञोरमाजिएवहुरिविइमछविपूवन ॥ सुरूजीवरञारवारशनधारनकीज
नातेशोभकरेंपाहिरिसुखकसुपली ॥ ८३ ॥ इति
धारनवारसुभ ॥ अदितपुष्यविधिपोस्नअस्वनी
उत्तरतीनो ॥ चित्रास्वातिविसाषहस्तअनुराधालीनो ॥ अषवृषकंन्या ॥ मिथुनल
ग्नसुभञुलसुभदेषै ॥ चंद्रसुद्धपुनिहारशांनुपटपहिरिविसेष ॥ ८४ ॥ इति सुभ
पनधारनननक्षत्र ॥ नष्याभूषांतरमन ॥ अस्वनीरेवधनिष्टयाकेरपाचहस्तादि
नानालंकृतवस्त्रपुनिपहिरैमिटैविषार ॥ ८५ ॥ इति नमनालंकारधारननक्ष
त्र ॥ पुष्यत्रिउत्तररोहिनीपुनिकरिअदितविचारि ॥ कर्मकांदिकभूषनवस्त्रप
तिसुषहितनजिनारि ॥ ८६ ॥ इति वस्त्रालंकारञमीधारनवज्या ॥ मासदूसर
तीसरेआदिचौथ्यघटआनि ॥ कीजेकारजपुंसवनगर्भवंततियजानि ॥ ८७ ॥ इति
पुंसवनकर्म ॥ आठयनवएमासपुनिकरियकाजसीमंत ॥ पुत्रहारसवगुनम्मिय

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शु०मं०
७२

शंभुभजियभगवंत ॥४८॥ इतिसीमंतकर्ममास ॥ अथपाप्तिवलिशनिमासकरचं
दसवलसंसर्ग ॥ सुभदेषत्तुभलगनजुतपुरुषलगनषडवर्ग ॥४९॥ सरसीछंद ॥
सक्षिताराबलनारिपुरुषकोहोरनरबलमय ॥ कंन्यामीनचापबलसंजुत ॥ स्थि
रवाञ्चास्थिरलग्न ॥ केंद्रत्रिकोनहोरसुभषेचररिकतानरिबलजोग ॥ लाभस्था
नसत्रग्रहतीसरपापग्रहसंजोग ॥५०॥ पूरवषाढउत्तराषाढापुष्यअरितमृग
मूलं हस्त ॥ पूर्वभाद्रपदउत्तरभाद्रपदश्रवनासिवसत्त ॥ तेरसितीजद्वादसीसातैछठि
हरिपाचैदोज ॥ काजपुंसवनअरुसीमंतककरियेसोइनिषोज ॥५१॥ हैगनेसं
स्कारसीमंतककर्मकह्योसुभवार ॥ विषमरासिवालग्नननवासककौसुभको
जविचार ॥ लगनवारतिथिनषतषेचरा अस्तुभ अस्तुभतजिजोग ॥ शंभूकुहे
करोआगलोनसेसकलभयरोग ॥५२॥ इतिपुंसवनसीमंतकर्मसुभम् ॥ इहि
पुत्रभगवानकृपाकरिकरेसुजातककर्म ॥ नारीमुषसुसराधकीजियेकरैवे
रक्रुलधर्म ॥ धेनुकनिकभूषनदेविप्रनिजौलोंनालनछीन ॥ सूतकहोइनाल
केछीनेशंभुजातकहिदीन ॥५३॥ इतिजातकर्म ॥ दोहाछंद ॥ लीजेसंकुघरी

सो०शिं०
७२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सम्मुखि कैवारिया घरी। साधि लगन सुख्या पहोइ इष्टकाल करि लीज्ये ॥ ५४ ॥ इति ग्री
ष्म घरी घरि यार घरी ग्यान ॥ छाया पग निद्दि गुनिये चौदह मिलि बोलेष दासंवा
दन भागे पैल लब्ध घरी पल सेष ॥ ५५ ॥ इति इष्टकाल घरी ग्यान ॥ तथान्यच्च ॥ पाप
ईश्वर छाया पग गनसी लस्ड धारि ॥ जामे जो राषट गनि तारि ॥ एक सत इक इस भाग हरे
ह लब्ध घरी पल सेष करे ॥ ५६ ॥ इति इष्टकाल घरी ग्यान ॥ तथान्यच्च ॥ लैह्रु सीक
गनि अंगुल तीन ॥ तिहि छाया अंगुर नि वारि लीन ॥ कोर इक हरै सा ठिका भाग लब
ध घरी पल सेष सुलाग ॥ ५७ ॥ इति इष्टकाल घरी ग्यान ॥ तथान्यच्च ॥ तीन सवुदी
कहे सुमान ॥ भाग तीन सो इक करि जान ॥ शंभू घरी लब्ध उनमान ॥ दिवस निसा गनि मा
न प्रमान ॥ ५८ ॥ इति इष्टकाल घरी ग्यान ॥ उदय प्रारिते घरी सु लेहि ॥ आधी ले अ
धी तजि देहि ॥ रवि नक्षत्र ते दिवस नक्षत्र ॥ लगन स्थूल जानिये तत्र ॥ ५९ ॥ इति स्थू
ल लग्न प्राप्ति ॥ तथान्यच्च ॥ जो रो लगन घरी पल होइ ॥ गत दिन घरी जु आवे
सोइ ॥ सूरज लगन हि तें गनि आनि ॥ होइ जे सरी नाम वषानि ॥ ६० ॥ इति सूक्ष्म लग
न प्राप्ति ॥ तथान्यच्च ॥ गई घरी षट गुनि कारि लेहि ॥ दिन संक्राति जो रिनि हि देहि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

शुभ०
३२

हैलवधांवसुभाजेतंस लगनउदयतेगरलगनेस ६१ इति लगनउदयप्रमाणानि
मीनमेषकीएकेकला तीनदंडइकतालिस पला वृषकुंभहिकीएकेकला
चारिदंडतेरह पला मकरमिथुनकीएकेकला पाचदंडअठचारी पला
धनकरकटकीएकेकला पाचदंडब्यालीस पला ६३ सिंहब्रसिकएकेकला
पाचदंडपेंतालिस पला कंन्यातुलाकिएकेकला पाचदंडपेंतीस प
ला ६४ अथान्यत घरिति वेद पुनिपुनिसर तीन मेषआदिउलटादिक्रमी
न इकतालिस तेरह चारीसु ब्यालिस पेंतालिस पेंतीस ६५ इ
ति लगनप्रमान दोहा भुक्तिसात कीमीनअजआठ कुंभवृषलेष मि
थुनमकरदस पुनिगनोएकादस फलसेष ६६ इति भुक्ताभुक्तिसाधनं
लगनदूनि घरिहोइपलपलतें विपलवहोर शेभूइहिविधिलगनप्रतिभुगतें
रविकरिभोर ६७ इति भुक्ताभुक्तिसाधनं कवित्त कालअंगसबअहैमेष
आदिक जेरासी सीसवदनपुनिवाहुहृदयअरुजठरप्रकासी कटिवस्ति कडु
रुजुहिजऊरु जानहूजंघपद इहिप्रकारक्रमदेखशंभुदाससमोसमुझिवद ६८

जो०लि०
३२

इति मेषादि राशि कालरूप ॥ रक्त स्वेत हरि वरन सु पाटल पांडु कजानौ ॥ विचित्र ह स्याव रनापि संगापिंगल छानौ ॥ कर्बुर वभ्रु क मलिन वरन मेषादिक राशिय ॥ इहि विधि भावि उ शंभु सिंधु जो तिषप्रकाशिय ॥ ६९ ॥ अतिरक्तवरन ॥ कहियं लालस

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
रक्त	स्वेत	हरित	पाटल	पांडु	विचि	कृष्ण	पिसंग	[illegible]	कर्बुर	वभ्रु	मलिन	वरन
			लाल सेत				पीत [illegible]					रंगभेद

पीत रंग इंदु पाटल जानिये ॥ पिय शैलालपि संग रंग दोई करि ठानिय ॥ पिंगल रंग पिसंग एक कद्रु भेद बखानिये ॥ बीछौ रंग पिसंग पिंगल चित्रवाल बिमानिये ॥ ७० ॥ अतिरंगभेद ॥ अथ छंद ॥ मीन मकरी दोउ कुंभ कुंभ मकर हि कोल लीना ॥ मिथुन मनुज जे हैं जुगल गदा रकलि यह के बीना ॥ धनु धनुधरै धनु राशि जो धरै रक सिंह होवै ॥ कंन्या अमिस नक्र नाउ चाहि थानहि

राशयः	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
संज्ञा	मेढा	वृषभ	मानुष	केंकरा	केहरि	अग्नि जुत	तुलाधर	अलि	धनुधर	मगरमुख	घट	मछरी
भोग	०	०	गदा बीन	०	०	नौका दंड	०	०	हय [illegible]	०	[illegible]	-

होवै ॥ जानो सु नक्र मुख हि रनक सतु ला तुलाधर जानिये ॥ शंभु सु सेघ रासि ॥ निक

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामु०
७४

मनामसइस्पवषानियै॥ ७१॥ इतिरासिआकार॥ पूरवधनकोअरुखमिथुनअ
रु तो तिनकन्या॥ द्विपदंरासियेजानसमुझिपंडितगुनेधंन्या॥ मकरपरारधलहा
ध कुंभअजलचरराशी॥ पंनगरासिवृसीककर्कपुनिकीटप्रकासी॥ अजसिंहधनुष
वृष चतुषपदमकरसुपूरवभागहे॥ शंभुसुसमुझि
करिलीजियेवरकन्याजिहिरागहे॥ ७२॥ इतिरासिजा
तिभेरूपा॥ द्विपदचतुषपदकीटरासिएतीनविचा
रो॥ पूरवतेक्रमजानिमानिकरिवलीसम्हारो॥ राति
समयपसुवलीसेषसवभानिवषानो॥ संध्यासम
येकीटवलीनारिनिभेजानौ॥ प्रष्टोदयधनुमकरमेषवृषकीटनिसावलपावहे॥ सी
र्षोदयासुहसेष दिनशंभुमीनदोभांवहे॥ ७३॥ इतिरासिउदयवलिष्टादोहा
ध्रुव॥ क्रूरसौम्यपुनिपुरुषतियवक्रमविषमेसमठानि॥ चरंअरुथिरद्विसुभा
वपुनिमेषहितेंक्रमजानि॥ ७४॥ इतिगानक्रमतिचार॥ उदयरासिभाछेजग
हेरहिलगनएनाम॥ मेषआदिगनिलीजियेशंभूदासवनाम॥ ७५॥ इतिरासिना जो०लि०
७४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मालिनी ॥ मालिनी छंद ॥ तनधनतरतिबोधा पुत्रसत्रा दुजाया ॥ मरनधरमकर्मालाभव्ययोजलाया ॥ ग्रहलनसारिमाझे होइजेतनहाई ॥ नरष्टुनिविघजेती नारि वयानी लघाई ॥ १६ ॥ इति द्वादसभावनाम ॥ अथ केंद्रमाह ॥

लगन
सप्तक
मातुजे
केंद्रक
हाई ॥

समुझि इनि मिलीजे केंद्रसंग्याहि सोई ॥ रिफतह पुनि जानो वारहीहे तजोई ॥ समुझि हृदय शोभ भावहीवि यसोई ॥ १७ ॥ अंगा छंद ॥ लगनतेसुहृतघटत्तिग्यारे उपचयसुनामवधमो ॥ होइलगनतेनवपपाचयेमो त्रिकोनकाहिठानो ॥ वंधवेस्मपातालहिवुकसु

केंद्रसंग्या
रिफसंग्या
दुस्वसंग्या
त्रिकसंग्या
सुहृदसंग्या
दुश्चिक्यसंग्या
...तसंग्या
...लसंग्या
...संग्या
पणफरसंग्या
आपोक्लिमसंग्या
...रसंग्या

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रत्न०
७५

घसंगपासुहृद्रपमानो॥ चौथभाववृ॥ त्त्रि कचकसवेत्त्तितिप्रातपुनिजानो॥ ७८॥ स्त्र
राधूनद्युनपुनिजामित्रहृछेत्रसपतकेनामा॥ सुतत्र्यस्थानपांचयेहोईधीत्र्य
स्थानपेनामा॥ पुनिपंचाष्टजुग्मगपारहोपनफरवुधजनभाषे॥ नवघटत्तृति
यधामत्र्यापालीकेंहेशेसुलावत्ताषे॥ ७९॥ चौथो त्र्याठोधामसमुत्र्यकेचतु
रस्त्रहिगनिलीजे॥ रिपुत्र्यस्थानषष्ठमोजानोछिद्रत्र्यष्टकहिदीजे॥ दसमस्थान
कर्मत्र्याध्यानिरिपांचेउरनवषानो॥ करियेधर्मनमेमंदिरसोसंग्पासवयार
जानो॥ ८०॥ [illegible]॥ कुजभृगुवुधससिभानुवुधभृगु
जगुरसनित्र्यर्कि॥ जीवशंभुमेषादिग्रहहएरासीस्वरतर्कि॥ ८१॥ इतिरासिपति
॥ [illegible]॥ मेषभौमवृषसुक्रमिथुनकेपतिवुधजानो॥
कर्कचंद्ररविसिंहवुद्धपुनिकंन्याआनो॥ भृगुघटकुजत्र्यलिचापजीवसनि
मकरकुंभधीसा॥ पुनिसनिघटगुरमीनशंभुएकहिरासीसा॥ ८२॥ [illegible]
[illegible]॥ भौममेषत्र्यालिईससुक्रनायकवृषघटका॥ वुधपतिकंन्यामिथुनकं

ज्यो०ति०
७५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कंपसिंमसिंसीख्रक्का ॥ चापमीनपातेजीवमकरघटपतिसनिवक्का ॥ एरासि
निवेईसशम्भुकहिरिक्षमतनयक्का ॥८३॥ इतिरासिपति ॥ होरारासिद्विभागतीन

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रासय:
मं	सु	बु	चं	र	बु	सु	मं	गु	श	श	गु	रासीस
र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	होरेस
र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	र १५	चं १५	होरेस
मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	१०
र	बु	सु	मं	गु	स	स	गु	मं	सु	बु	चं	२०
गु	स	स	ग	मं	सु	बु	चं	र	बु	सु	मं	३०
मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	नवांसास [illegible]
मे	वृ	मि	क	तु	वृ	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	द्वादसांस [illegible]

हो	२१५ वंश	१	५	८	र ५	चं ६	मं १	बु ६	गु १२	सु [illegible]
२	वंश २१५	१०	२०	३०	०	०	८	३	९	३
०	विष म	सम	द्रेष्क		रा	रा	रा	रा	रा	रा

द्रिष्कानविचारा ॥ पु
निनकभागनवासहार
सासकपुनिवारा ॥ पाच
त्रिंसासयभागविषमसे
सागनिकीजे ॥ शम्भूएव
इवरगसप्तअग्नीकी

षड	वर्ग	चक्र
राशि	पति	१
होरा	भाग	२
द्रेष्क	भा	३
नवांश	भाग	९
त्रिंशांश	भाग	५
द्वादशांश	भाग	१२

विधिलीजे ॥८४॥ इतिषटवर्गभाग ॥ ससिहोरासमरासिविषमरासि
हिरविहोरा ॥ पहिलौसखिपुनिभानुभानुपहिलौससिजोरा ॥ इतिहोरेस ॥ खरासि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
२८

अंससहससतगेवीसतैपाचइरासी। नवैगसिगनितीसशंभुद्धिघकान्यका
सी। ८५। इति द्रेकाण। चौपाई। मेषमकरअरतौलिनकर्क। नीनअ
ढ़ैमेसगनितर्क। लगनअंसकरिपावैभाग। सोरासीसनवांसकलाग। ८६।

मेष १	मकर १०	तुला ७	कर्क ४	इति नवांसा
मेष १	वृष २	मिथुन ३	कर्क ४	चक्र।
सिंह ५	कन्या ६	तुला ७	वृश्चिक ८	
धन ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२	

अंश जोरि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	०	०
लिप्तक नवांस	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	०	०	०
विअंस	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०	०	०

मेष
धनुषअरुसिंहनवांस
मेषतेहोई वृषकन्या
अरुमकर
नवांसमकर
तेहोई

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मेष सिंह धन	मेष	वृष	[illegible]	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	[illegible]
वृष कन्या मकर	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	[illegible]	[illegible]
मिथुन तुला कुंभ	[illegible]	[illegible]	धन	मकर	कुंभ	मन	मघ	[illegible]	[illegible]
कर्क वृश्चि मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्ची	धन	मक	कुंभ	मीन

नवभागअंसभुक्तिचक्र।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	भाग ९
३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंस
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	विअंस
२६	२३	२०	१६	१३	१०	६	३		अंसभुक्ति
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०		विअंसभुक्ति

तुलामिथुनअरुकुंभनवांसतुलातेजानो
अघवरासीकर्कअरुमीनकर्कनवांसकर्कतेठानो

जो०व०सिं०
२८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥८०॥ [illegible] तीस अंसनो हीसामेषविचारि म
थउ वृषजुगकरकटकेहरिनारि तुलावृसीककारमुकएनवशसि एनवनवासशंभु
कहिनिप्रकासि ॥८८॥ [illegible] तीस अंसहेमृगकेनी पुनि
भाग मकरकुंभअघ अजहे वृषजुगला
ग पुनिकुलीररविभवनाकन्यासार म
करारिरासिनवासकशंभु हार
[illegible] तीस अंसनो वाल
हकालीन घट अचापमकरहेघटपुनि रि
मीन अजगोमिथुनलगनएसोऊजान
भावेनवासशंभु रिषिमतमान ॥९०॥
[illegible] तीस [illegible] अंसप्रकार
[illegible] चंद्रभवनरविभवनाकन्या
[illegible] मीन रासिनवासन[illegible]

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भाग
२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	अंस
३०	०	२	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	विअंस

द्वादशांसलगनना चक्र

१	२	३	४	५	भाग
सुक्र	बुध	गुर	सनि	मंगल	त्रिंसांसेसा
५ सम स्थान	७ सम स्थान	८ सम स्थान	५ सम स्थान	५ सम स्थान	सम
मंगल	सनि	गुर	बुध	सुक्र	त्रिंसांसेसा
५ विषम स्थान	५ विषम स्थान	८ विषम स्थान	७ विषम स्थान	५ विषम स्थान	विषम

त्रिंसांसलगनचक्र

१७

नैमांसु प्रवीन ॥ ९१ ॥ अथ नवांसभागगननाचक्र ॥ दोहा छंद ॥ गननाकरो नवांस
को ताको ऊ अस्तु निलेह ॥ कहो चक्र नो भाग करि समुझि मिटै संदेह ॥ ९२ ॥ कवित्त
छंद ॥ तीन बीस ३ भाग भाग दो छठे ६ चौलीसा ८ दस पूरन १ भाग चौथे तेरह
१३ अरु चौसा सोरह १६ अरु चौलीस भाग पाचें पूनि ताते छठ्यो पूरनवीस २०
तेरस १३ नष साते छब्बीस अस चालिस विलव १७ आठे भाग समानिये ॥ घां
म सुतीस पूरन नवें मेष आदि गन कि जानिये ॥ ९३ ॥ अथ नवांस भाग गननाम
॥ दोहा छंद ॥ नवम भाग ते भोगि सब भोगि चुके न वयेव ॥ और लगन त्व भोग वेशांभू
की नु विवेच ॥ ९४ ॥ अथ लग्नांस भाग कथन ॥ चौपही छंद ॥ द्वादसांस स्वरासि ते हो
इ ॥ अस अढाइ भाग गनि सोइ ॥ ऐसे प्रमान पाइये भाग ॥ द्वादसांस रासी स्वर लाग
॥ ९५ ॥ अथ द्वादसांस ॥ अथ अन्यच्च ॥ आस्थित लंगन जे जाहि ॥ भाग अढाई
सो करवाहि ॥ लगन भाग प्रति संसव चाहि ॥ द्वादसांस रासी पति आहि ॥ ९६ ॥
अथ त्रिंसांस ॥ पाच पाच व सु मुनि पुनि अथ ॥ विषम स्थान सुजानि सम
ये ॥ भोम सौर गुरु बुध भृगु पाइ उलटो गनिये सम होजाइ ॥ ९७ ॥ अथ त्रि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

[illegible] पाप्रचक्रमिंत्राकेर। तीस पंसस लगन ही कि जानो पाव भाग रेखा के। पाचपाचपुनि अाठ सातपुनि वृइ पाच कारि फावे। कुज सनि गुरु बुध सु क्र विषम पुनि सम उलटे करि ताके। वरत लगन गत अंस भाग पति [illegible] त्रिसांस सु थाके।

९८। [illegible] ॥ सोरठा कैरा। तीस [illegible] अंस हैं लगनके हहि वि घिभूतनसे ३ मित्र रासि निज रासि के ब डवरगावलि सोर ॥ ९९॥ [illegible] सोरठा कैरा। भानु मेष वृष चंद भौम मगर के बुध कन्या। जीव कर्क भृगु मीन तुला वे मंद पश्च्या। रवि रासि निज ग्रह तुंग रवि आदि कि जानो। दस तीन अठाईस सासि थां [illegible] नी चव घानो ॥ १००॥ इति उच्चग्रह। दस अंस सहि लोभानु चंद्रमा तीन अठाईस। अष्टादस लो भौम बुध [illegible] वलसा। [illegible] सथा दलो जीव सपतावे [illegible] ग्यारी। परम उसनि वीस भानु रवि

नाम	१	२	३	४	५	अंस	अंस	१	२	३	४	५	नाम
अंस	५	५	८	७	५	विषम सिंस	समसि अंस	५	७	८	५	५	अंस
ग्रह	मं	श	गु	बु	शु	तमेस	अंस	शु	बु	गु	श	मं	ग्रह

मे	वृ	म	क	क	मी	तु	राशि
१	चं	मं	बु	गु	सु	म	उच्चराशि
तु	कुं	मे	मी	म	कुं	मे	नीचराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	उच्चअंस
१	चं	मं	बु	गु	सु	स	ग्रहनाम

ची

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

केरर

रा०म०
३८

जवनकहारी॥ १०१॥ इति परमउच्चग्रह॥ होरसिंहकेभानुचंद्रमावृषकोहोर॥ मेषरा
सिकेभोमकंन्याबुधसोर॥ गुरधनभृगतुलामंदकुंभहिकेलीने॥ मूलत्रिकोनीग्रह
जानिशंभुकहीने॥ १०२॥ इति मूलत्रिकोनीग्रह॥ सूरजकेगनिबीसभोमकेवार

र	चं	मं	बु	गु	सु	श	ग्रहउच्चस्थान
मे	वृष	म	कं	कं	मी	तु	राशि
स	३चं	२८	१५	५	२७	२०	नीचभाग

हथाए॥ सुराचार्जदसहोरसुक्रसने
पंदरहपाए॥ बुद्धचंद्रमाकेजुतहाग
निबीसबताए॥ तुंगत्रिकोनसुभा
गशंभुभाषाकरिगाए॥ १०३॥ इति
उच्चत्रिकोनभाग॥ पूरबकेरवि
ईसअग्निकेसुक्रबखानो॥ दछिन
दिसिकेभोमराहुनैरितकेजानो॥
मेरपछिमाधीसचंद्रवायव्यकेठानो॥ उत्तरबुधगुरईशंभुएदिसिपति
जानो॥ १०४॥ इतिदिसाधिप॥ चंद्रपुत्रअरुजीवदिसापाचीबलदा
॥ रविदिनरविसिवलभोमओरसूरजहिनराद॥ छायासुतकोतसहोर
बलदिसाप्रतीची॥ शंभूइहिपरकारचंद्रभृगुबलीउदीची॥ १०५॥ इतिदिसा

शु	र	बु
रा	दिसा	मं
चं	स	गु

जोलसिं०
३२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्रहबलिष्ट ॥ काल प्रात्तमा भानु चंद मन कहें वषानी ॥ मंगल ता को [illegible]
पुनि ता को वानी ॥ प्यान तासु को जीव सुक्र सु पत तासु कहावे ॥ दुघत ता को स[illegible]
काल रवि शंभु बतावै ॥ १०६ ॥ इति ग्रहकाल [illegible] ॥ भानु चंद भौम पमृ [illegible]

र	च	मं	बु	गु	सु	स	ग्रह
[illegible]	भ	स	बा	प्या	सु	दु	बालस्था

सेनानाइक ॥ बालक ससि सुत [illegible] गुरु मं[illegible]
इक ॥ बहुरि सनीचर तासु जानिये प्यादे सार ॥ शं[illegible]
ति वा सिषु कह्यो भाषा कारि जोई ॥ १०७ ॥ इति ग्रहसमाज ॥

०	पूर्व बुध गुरु दल	०
उत्तर [illegible]	दिसा व ली ग्रह	दक्षिण [illegible]
०	शनि दल पश्चिम	०

रक्त स्याम रवि अंग गोर
चंद्रा पुनि हो है ॥ ऊ बे नी
न बुज गो [illegible]
बैसो है ॥ [illegible]

ग्रह	र	चं	म	बु	गु	सु	श
ग्रहसमाज	राजा	राजा	सेनानी	प्यादे	मंत्री	मंत्री	प्यादे
ग्रहतनबरन	रक्त स्याम	गौर	गौर [illegible]	[illegible]	दूर्वा स्याम	गौर	[illegible]
ग्रहजातिबर्न	[illegible]	वैश्य	[illegible]	शूद्र	ब्राह्मन	ब्राह्मन	[illegible]
[illegible]ग्रह	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०
[illegible] ग्रह	पुंस	नारि	पुंस	[illegible]	पुंस	नारि	[illegible]
[illegible]	सत	सत	तम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

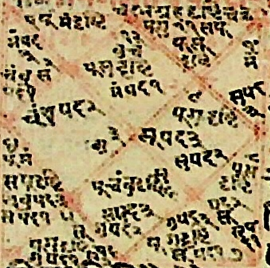
दिवल्यानल बंध

धूम्य गोरतन है भ्रगु नेहा ॥ [illegible] ससदेह सनि वा
रि शंभु यह कहे वारिद देहा ॥ १०८ ॥ इति ग्रह[illegible]
अंगवर्ना ॥ ब्राह्मन तरन सु पर है जीव [illegible]

[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नं हनरोनं छत्री वरनविसेषभूमि सुतसूजहोई वेस्यवरनचंद्रमा वेइस्तुतसूद्र
कहो अत्यजकरियेमंदशंभुएसमुझिवताए १०९ इतिजातिवर्नगुरा जजु
वेद के अधिपत्तरभृगुवो सुतआही रिगवेदरिके अधिपदेवप्रोहितरिकहाही
सामवेदकेभौमबुद्धअथवर्वनजानो शंभूवहविचारिचारिवेदाधिपमानो ११०
पुंसबुद्धसपतिभानुवुजेचंदसुक्रपुनिनारि अ
पतनिपुंसककेतुइसानियरकमतीनप्रकारि १११
ससिरविगुरुबुधसुक्रपुनिभौमसनीच
रसोइ भतरजतनमगुनतीजएक्रमकरियहासुहोइ ११२



तीसर दसम त्रिकोन पुनि
चतुरसयअरु अस्त इक दो तीनसु चा
रिपदशंभुलषेग्रहसत्त ११३ आपनघर धन छ
टय पुनिलाभ बारहो और षचरराषिनहिइ
निधरोनिरिवेओरसवठौर ११४ ग्रासधाम सनिपरनदे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दे औ रग्रहाद्दकपाद धामत्रिकौनहृदिपरनगुरदोपओरग्रहा[illegible] कुजदेषचतुरल
धाम पुनिओरषेटपर्त्तान् शंभूसवग्रहञ्त्तविलोकचारचरनकालीन
इतिग्रहदृष्टि तयान्यना दृतियदसमसनिवीसविसलषपाचविसयर आन
विसवीसगुरलषनवपाचेदसविसओरग्र
हान सवविसचोथआठकुजदेषपंद्रविस
ग्रहओर वीसविसेषांभग्रहसवदेषसोने
होर ११६ इतिनिमंग्रहदृष्टि मंगलचंद
बृहस्पतिरविकेचंदाचं

सूर्ज	चंद	मंगल	बुध	गुर	सुक्र	सनि	ग्रह
मं चंद	बुस	सचु	ससु	सूचं मं	सबु	सुबु	ग्रहमित्र
ससु	०	बु	चं	बसु	सचं	सचं मं	ग्रहसत्र
बु	सुमं बुस	सुस	नंबु स	स	मंबु	चं	ग्रहसम

मित्रसत्रुसमग्रहचक्र

दिस्वाग्रेहदृष्टि चक्र

बुधआन कुजकेमित्रजीवरविचंदाबुधकेभ्रगुरविजान गुरु
केमित्रचंदसूरजकुजसुक्रहरिकेसनिबुद्ध सनिकेमित्रसुक्रच
दासुतशंभुमित्र चितसुद्ध ११७ सूरजकेपु
सुक्रसनोचरचंदाकोनहिकोइ बुद्धसत्रमंगलकेजानोचंदा
केमोर सुक्रबुद्धगुरकेहवैरीभ्रगुकरविसुरसित्र सनिकेओरिसुधानसातिमंगल

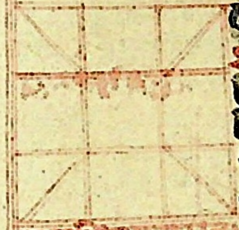
CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गहै सो भुरुअत्र ॥११८॥ अतिग्रहसत्र ॥ सूरजसो बुधसमिताराषैकुजसनिभृगचंदरा॥
सुक्रसनीचरमंगलकेसम बुधकेकुजगुरमंदरा॥ गुरकेनहासनीचरसमहैजीवभौमभृगुकेरा॥ केहैसंभु गुरसमहैसनिकेनहिमयत्रिनहिवेरा॥११९॥ इतिग्रहसमं॥ इस

१०	४	३	११	१२	२	स्थानमित्र
१	५	६	७	८	९	अध्यासत्र

मो औरचतुर्थतीसरोग्निपारोस्थान॥ पुनिस्थानवाहोदूसरपरसपरेक्रमजान॥ इनिस्थान होरग्रहजोपेतातकालिकेमित्र॥ शंभू औरस्थानसे इग्रहकहेसत्रतोनित्र॥१२०॥ दोहा छंद॥ ततका
लीकस्वभाउतेहे निसर्गस्थीर॥ सत्रमित्रशोभातिजानोबुधजनधीर॥१२१॥ इ
तितातकालिसत्रमित्र॥ तथा ग्रथांतरमत॥ सूरजचंदाभौमगुरतमबुधस
निभृगुचारि॥ आपसचारोमित्रहैसत्रपरसपरतारि॥१२२॥
इतिसत्रमित्र॥ चापईछंद॥ उच्चराहुकन्याकेहोइ॥ मूल
त्रिकोनकुंभकेसोइ॥ परमउच्चविंसानमचांस॥ मिथुनहिके
शंभूसवनास॥१२३॥ इतिराहुमूलत्रिकोनपरमउच्च॥ मित्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राहुकेअरुसुतमंद॥ हेसमानगुरअरुससिनंद॥ धरनीपुत्रचंद्रअरुभान॥ शंभुकेत्त
मकेरिपुजान॥ १२४॥ इतिराहुसत्रुमित्रसमग्रह॥ मालिनीछंद॥ सुतनवमुनि
वारीराहुसपूर्नदेषे॥ द्वितियरसमरासिहिचरनएकविसेषे॥ सहजछठ्यंचौथेआ
ठ्मेहृष्टिआधी॥ तिन्हिघरपुनिग्यारोराहुनादृष्टिलाधी॥ १२५

इतिराहुदृष्टि॥ दोधकछंद॥ केतुउतंगसुमीनप्रकासी॥ मूल
त्रिकोनसिंहकेरासी॥ हेषटअंससुपरमउतंगा॥ औंधनरासि
हिकेतप्रसंगा॥ १२६॥ इतिमूलत्रिकोनपरमउचकेत॥
सूरजमंगलहेससिवेरी॥ सुक्रसनीचरमित्रवडेरी॥ देवगुरु
रजवुद्धसमानो॥ केतहिकेगुनशंभुवषानो॥ १२७॥ इतिकेतु
सत्रुमित्रसमग्रह॥ मैनाछंद॥ पूछेलग्नविचारिसुलीजेइहिप्रकारकरिसोइ
विषमलग्नकेविषमनवांसरविससिगुरुवाहोइ॥ पुत्रजनमतासोकहिदीजै
जनमेपुत्रविसेषो॥ समनवांससमरविससिगुरुवाशंभुसुताकहिदेषो॥ १२८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इति पचकंल्पानजनमअगागळध्यान ॥ दिसिपति षेट केंद्र ॥ ११८ ॥ जो होवै ति हि
दिसि ग्रेह दुवारा ॥ दिसानाथ केचर लगन हि को ति हि दिसि भवन विचारा ॥ वली हो
न जो लगन चंद्रमा तुं सो तेल वषानो ॥ सरजन ते सुजानि लैदीप के समुझि शंभु उर आ
नो ॥ ११९ ॥ इति भवनकारदीपनतेलष्पान ॥ अष्ट गेह वि
लगन हि देषन यो चंद्र केदेषे ॥ वरो ग्रेह मंगल के देषे चित्तन वु
धइ पेषे ॥ द्रव्यसहित गुरु भ्रगु सुंदर घस्नी रनस निजोहेरे ॥ सनि
की क्रिया राहु की जानो शंभु बुधनि निवेरे ॥ १२० ॥ इति ग्रेहरूप
ष्पान ॥ सुरयर तुंगभाग दसमास्थित वा
रिभ्र सलयग्रह जानो ॥ वली देवगुर हे पद्वा
पके ग्रसले तीन वषानो ॥ कन्यामिथुन
मीन के आस्थिन हो इजो ववलिवंतो ॥
तो दोसाल ग्रेह की जानो कहे शंभु बुध
संता ॥ १२१ ॥ इति गुरास्थित ग्रहस्थान
॥ पुनसन केरा ॥ थिंरलग्र हार सुयेकहो ॥ द्विस्वभाव सुहेक

दिसा	पति	केंद	दिस	ग्रेहद्वार
दिस	पति	लग्न	दिस	ग्रेहस्य द्वार
वली	हीन	चंद्र	कन्या	तेल
दिस	तृप्ति	सर्ज	दिस	दीपत
रवि	देष	लग्न	ग्रेह	चंदई
चंद	देषे	लग्न	ग्रेह	नवीन
मंगल	देषे	लग्न	ग्रेह	नदी
बुध	देषे	लग्न	ग्रेह	चित्तन
गुर	देषे	लग्न	ग्रेह	द्रव्यसहि
भ्रगु	देष	लग्न	ग्रे	सेदर
सनि राहु	देषे	लग्न	ग्रेह	नीरन

गुरास्थित	तुंगभाग	१०	ग्रेह	सुंदर
गुरास्थित	वली	चाय	ग्रेह	ग्रसले
गुरास्थित	वली	कन्या मी	ग्रेह	ग्रसले २
थिरस्थिर	लग्न	ग्रेह	द्वार	१
द्विस्वभाव	लग्न	ग्रेह	द्वार	२
चर	लग्न	ग्रेह	द्वार	बहुत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चरलग्नतेवहद्वारहै। थिरलग्नतेकोउचारहै॥ १२२॥ इतिद्वारविचार। पाछलिप
कंध॥ घटमेववर्ककेपूरवहिलीन। उत्तरतुलाकूंधनमिथुनमीन। कंन्यासुलगनवृष
पछिमधाम। मृग सिंहलग्नदछिनकनाम॥ १२३॥ इतिद्वारदिसाधर॥ थिरलगनना
नाथिरदीपथान॥ चरलग्नसूरकरदीपजान॥ द्विसभावल
गनग्रथधरहिदीय॥ ससिवीर्यग्रधरेप्रसवदीय॥ १२४॥
इतिदीपप्रकार॥ तहचंद्रअंसरविभागहोइ। रविग्रहजुन
घरहिवुकसोइ। ससिजन्मलगनवापरराव। जौसांतरी
पातहथांनुभाव॥ १२५॥ इतिप्रदीपप्रमान॥ जोसीतादिर नि
लगनहिनिवास॥ केन्द्रतुभावमेकरवास॥ ऐसेविधेमृ
जन्ममेनवाल। पूरनसुदीपानिहिकालहाल॥ १२६॥ इति
दीपनैदीप। धनलगनकेपि कंन्याहूमीन। पुनिलग
नमिथुनतिहिसमपलीन॥ सुतचंद्रतारद्वैमेजननलेख
धरतीसुतनमजोलगनसेख॥ १२७॥ इतिघतारलनमिथ
जनम॥ व्रषमेघातिरकुजमंदश्चारहि॥ ग्रहजोनहोइजा

रवि	लग्न ११		१ ४	गेह पूर्वदिसा
रवि	लग्न ३।१९		८ ३	गेह उत्तरदिसा
रवि	लग्न ७		६०	गेह पछिमदिस
रवि	लग्न १०		५०	गेह दछिनदिसा
रविथि	लग्न थिर		दीपथिरस्थान	
रविद्वि	लग्न चर		दीपकरस्थान	
रविद्वि	लग्न द्विस्वभ		दीपकेन्द्रस्थान	
चंद्र	धाम ४		प्रसवग्रधेरमांहि	
चंद्र	सुदि		[illegible]	
चंद्र	लग्न मृत्यु		दीपकपरननैल	
लग्न	९	६	११ ३	पुत्रजन्म[illegible]
लग्न	१२	४।५	[illegible]	[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्रं० ८२

लगनमाहि ग्रहतेतिनअंसग्रहवनेतोन ॥ तिहिनरालिपटसुतवनेजोन ॥ १२८ ॥ इति
ग्रन्थसवनेपुत्र ॥ सुतधाम चंदकेसिंहलग्र ॥ पुनिराहुहोइव्ययधाममग्र ॥ सिसु
जनमनालवेष्टितसरीर ॥ कविशंभुकेहेसुनविप्रधीर ॥ १२९ ॥ इतिनरालिपट ॥ व
लिवंतलगनकेहोइमंद ॥ लगनतेसातयेभूमिनंद ॥ मग्रवुद्धवीचमेचंदहोइ ॥ पितु
पाछेंसोसुसुतजनमसोइ ॥ १३० ॥ इतिपाछेंसुतजन्म ॥ सनिलगनभौमवाअस्त
धाम ॥ रविभौमग्रेहमेससिअनाम ॥ सुतजनमहोइजोसमयएस ॥ पितुपुत्रकोसु
नाजो विदेस ॥ १३१ ॥ पितुविदेससुतजन्म ॥ रविपुत्रलग्नलोचनकराहि ॥ पुनिसो
म्यकोसुहृदहष्टिनाहि ॥ गुरअस्तधाममेजोपराहि ॥ सुतओरकेरजोवीजआहि ॥ १३२ ॥
दिनअंतहोइकेलगनअंत ॥ पुनिवारअंततिथिअंतगंत ॥ ऐसेविषसुअवता
रजात ॥ परअंसपुत्रनहिअंससात ॥ १३३ ॥ देषेनलगनकोचंदजोइ ॥ वाजीवभा
नुविधुकहोसोइ ॥ तहषकानगुरवर्गजान ॥ सुतजनमहोइपरवीजवान ॥ १३४ ॥
इतिपरवीजसुतजन्म ॥ गुरचंदभोमकरद्रेषकान ॥ तनगोरवरनसुतकोसुजान
सनिभानहम्मताकोसरीर ॥ पुनिसुन.वुद्धमिश्रितसुधीर ॥ १३५ ॥ इतिग्रन्थका

जो० सं०
८२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नक्षत्रवर्ने॥ दोहा छंद॥ लगनचंद्ररविचजितनक्षत्रहतितनीत्रियतिरिहिगेह॥ जितने
ग्रहवारिरघरेशंभुपुरुषतितनेर॥१३६॥ इतिनक्षत्रचंद्रमध्यवारिग्रहनारिनर
विचार॥ चौपई छंद॥ रवितनतबेतांबातिरिहिगेह॥ व्याउरिघरमनिचंद्ररविह

रवि	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	तांबा
चंद्र	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	मनि
मंगल	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	कनिक
बुध	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	सुन्नि
गुर	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	रूपो
सुक्र	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	मोती
सनि	दृष्टि	लग्न	स्थिति	घर	लोहो

मंगलहेमसुन्निबुधरेष रूपोमोतीभृगुबेष॥१३७॥
सनिलोहोवलदेषेलग्न तेसोवनगन्नोवुधमग्न स
स्त्रिअरुलगननदेषेजीव तेसहिरविससिकोगनिलो
व॥१३८॥ इतिमानकायुदरवसावलदृष्टिवर्ने॥ पाचव
घररविसुतअपयान॥ चंद्रासुक्रकेमैत्रअस्थान॥ त्रैसके
गकंनिकाहोइ॥ शंभुनयामेमिथ्याकोइ॥१३९॥ इति
कन्याजन्मजोग॥ सिसुद्विजनावनहारीनारि॥ समलगनहिकारिराउविचा
रि॥ तिरिहिअवसाजोऊनीलग्न॥ प्रसवकारिकोपतिनहिमग्न॥१४०॥ इति
प्रसवकारिनिविधवासधवाविचार॥ जितनेघटलगनससिमद्धि तित
[illegible]सूतिघरवियाप्रसिद्धि॥ चोथचंद्रअथवाबुधहोइ॥ बेगिछीवरीवोल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
८३

कसो॥१४१॥ एकोपापघरजोलग्न॥ पुनिचौथेसुपापग्रहमग्न॥ सहितकरा
रीलहसुनअंग॥ होइपुत्रजोइहिपरसंग॥१४२॥ मिथुनतुलाकोमृंकवृषमेष॥ वा
लकपूरनसवरविसेष॥ आधसवरकंन्याघटपेष॥ सवरविहीनलग्नजोसेष॥१४३॥
मीनलग्नमेतरत्रियपाच॥ चारिकुंभवृषलहियेसाच॥ मकरमिथुनगनिलेत्रिय
तीन॥ लग्नसेषत्रियसातकली॥१४४॥ द्विस्वभावलगन
हिग्रहहोइ॥ सेषवलीजुततेसहिसोइ॥ भानुचन्दुसपद
रासिपाइ॥ तौजुरैवालकउपजाइ॥१४५॥ सीसकुषाली ३
धौदयहोइ॥ चरनकोअचरलगनहिसोइ॥ द्विस्वभावरा
धानिउपजाइ॥ सुभसुभदृष्टिअसुभअसुभाइ॥१४६॥
इतिलग्नविचार॥ मंगलपरेसातयेथान॥ होइलगन
तेपाचैभान॥ वालकवृत्ताग्नयुउपजान॥ जानसूति
सोवनउद्यान॥१४७॥ परनचंदवलीनिजरासि॥ चौथेगुरवुधलग्नप्रकासि॥
जलस्त्रातमकलगनवाहोइ॥ तौत्रियसूतिनाउमेसोइ॥१४८॥ वुधकेकेन्द्रहोइजो जो०ति०
८३

लग्न	मे	वृ	ध	मि	तु	पूर्नसवर
लग्न	कं	कुं	०	०	०	आधसवर
लग्न	क	सिं	व	म	मी	हीनसवर
लग्न	मी	स.ति	घर			अस्त्रीतीन
लग्न	कुं	वृ	स.ति	घर		अस्त्रीचारि
लग्न	म	मि	स.ति	घर		अस्त्रीतीन
लग्न	मे	ध	तु	क		स.ति घर
लग्न	सिं	कं	व			अस्त्रीसात

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चंद। ससिके छेत्र होइ ससिनंद। वातव्याधि छइ रोगी कोढ। वासव होइ कहे मतपी
ढ। १४९ कर्कराशि अस्थित जो भान। दृष्टि सनीचर की पुनि जान। होइ कुगल निरद
लुवाल। कुष्टरोग तावे तन घाल। १५० अष्ट स्थान परे जो जीव। नवये धाम रवि वाव
रसीव। चौथे मंदिर सुक्र पराइ। तौ बालक निपुंसक होजाइ। १५१ राहु सनीचर ए
क होइ। लगन भवन जो पेकटु होइ। कुवज कान तिहि सिसुके जान। पांगु होल ग्र
स चिंह बखान। १५२ भौमि पुत्र ग्रह नवये धाम। पुनि गुर बुध संजोग प्रनाम। केंद्र ये
हमें जो हिन्नाय। तौ षट अंगुल सिसुके हाथ। १५३ धन अस्थान अर्क सुत परे।
पुनि सुरगुर साले घर करे। तौ जातक के तन में होइ। तिलक्यारही चिंह गनि सोर। १५४
दोहा छंद। चंद पुत्र धन भाव में द्वादस मंदिर चंद। पांगुर बालक होइ जो होइ लग्न
ओ मंद। १५५ द्वितिय सुक्र वा भौम ग्रह करे दोष नो कान। दृष्टि दोष पुनि ससि करे
दाहिन वाम निदान। १५६ सुलहन छंद। जौ लगन मंदिर केतु रहे। ससि द्वादस घर
रल तहे। घो भूत हा अस्उ धरे। तौ सिसु नेत्र पीड़ा को करे। १५७ रवि द्वादस छठये
परे। दुग हाहि पीड़ा करे। सुभ दृष्टि जुत जो संग रहे। तौ जानसु नद्रग भंग रहे। १५८ जो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
८७

केतनतनतें आठयें ॥ रविपुत्रलगनसुंछठयें ॥ सिसुचोरहोरवभानियें ॥ वंधनपरेसु
गुजानियें ॥ १५९ ॥ सुरपूज्यकुंठयें थानहे ॥ पुनिवंधुमंदिरभानहे ॥ तोलेहिसिसुसन्या
सकों ॥ नहिकोरतपपरकासकों ॥ १६० ॥ इतिअष्टस्थानस्थितग्रहसुतजन्मफलं ॥ छप्प
यछंद ॥ पुत्रजनमकोमासमासचोथोगनिलीजे ॥ तिथि
तेतिथिसुविचारितीसरीसोकहिदीजे ॥ वारहितेपुनिवा
रतीसरोतह्यांविचारो ॥ गनिनछत्रतेतहांन्नषत्रसयोसु
सम्हारो ॥ पांचेसुलगनगनिलगनतेसुभमासादिकल
हो ॥ भाषाप्रकारकेरिशंभुकविजोतिषसागरमेकहो ॥ १६१

इतिगर्भमासादिदोलाछंद ॥ उदितसुच्चअपनीरासिपुनित्रयथवामित्रकीरासि
मित्रवर्गवामित्रदिषसोग्रहसवलप्रकासि ॥ १६१ ॥ सुभग्रहकोंनोलगनको
ताकोपतिजोदेष ॥ पापजुक्तनहिदृष्टिपुनितोग्रहसवलविसेष ॥ १६२ ॥ स्वरा
सिमूलतिसातयेंग्रहपूरनवललीन ॥ मित्रकरासित्रिकोनपुनिग्रहासवलप
दीन ॥ १६३ ॥ आधोससिकुजभानसनिइनिकेसंगवुधपेष ॥ राहुकेतकूपापग्रह ज्यो०सिं०
८७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ह शंभूसुभग्रहसेव ॥ १६ ॥ इति ग्रहफलवर्नन सुभासुभ ॥ इति श्रीमत्पंडितसिंहात्म
जश्रीशंभु विरचितायां जोतिषसिंधुपञ्चमचंदाय जातकमध्याय वर्ननं नामतदस्त
रंगः ॥ १७ ॥ दोहा छंद ॥ वरतमानसोके विवेबारस २ ओरनलागचतसरश्रम
दादिकगनोवंचेसाढि ५ केभाग १ ॥ इति सेनतसरफलभवादि पायति ॥ जोतिका
छंद ॥ अवसिंधुजोतिषकोकहोंमेजातकसुद्धितिपंचदाव सुतजनमकोफल
अफलकारनसोसमुझिपै समुझाव ॥ घटिकासुतोधिनहुजोगहुपुनिवर्न
ग्रहसंजोग ॥ सुतजनमपंचविचारिशंभूकहिफलअफलवोसंभोग ॥ २ ॥ इतिज
नमहेत ॥ सववस्तकोसंग्रहकरेसुपानखाइनिभागवान हेत्वामिधमप्रवीन
सोइसंतानवहुतवखान ॥ पुनिसुवुद्धीदीरजीवीसुसीलवुद्धिनिदानज्ञान जो
प्रमवसेवलसरजनैकहुतोशंभुएफलमान ३ ॥ इतिप्रभवसंवतसरफल ॥
जितनीकुमाईकोकरेपुनितितनीसुपावलेह पियरसनीकवलीवलासवस्त्र
तिधरवतिनमैतोहि सिरहारनिजकुलमारिसोसखभाउपुनिधारमिकोह ॥ पर

ज्यो०
२५

माध्युतीरथवासिद्धधर्मभ विभवके फल जो ४॥ इति विभवसंवतसरफल॥ रोला
सुभनारि सुत आनंद भवि द्यावंत सजन ऊदार ॥ नृपनि राजनीति सुमंत्रि चातुर्य नेय
५२ नलहु उपकार ॥ धनवंत बघती जानिये निश्चय मानिये गुनये न ॥ शोभ सुकरिस
रूहि विध अस अवतार जो न लेत ॥ ५ ॥ इति शुक्लसंवतसरफल॥ अथ प्रमोदनी
॥ दोहा ॥ प्रवीनो प्रियो दान हे वंस चंद्र ॥ महासंचती सत्यवादी अनंद ॥ कोऊ धूरता
ई भलो रूपधारी ॥ हिनो मति हो यं प्रमोद विचारी ॥ ६ ॥ इति प्रमोदसंवतसरफल
॥ सवैया ॥ सवें पीयभोगी सुधी गर्भमानी ॥ चलें वंसधर्मो दया दानदानी ॥ वहु नपुत्र
जो करहे सी लवंता ॥ महीदेव पाले दीन सो भनंता ॥ ७ ॥ दोहा ॥ प्रजाकरा सु
धेनुको गर्भमान मतिवान ॥ जनें प्रजापति काल में एफल शंखुचपान ॥ ८ ॥ इ
ति प्रजापतिसंवतसरफल ॥ अथ अंगिरा ॥ दोहा ॥ सबको प्रिय हे सुभ भोगि सु
धी ॥ अभिमानि नहीं सुनकरहु मो मति को गरुवो वकना प्रियहे ॥ परतापप
राक्रमको लिये है ॥ ९ ॥ सबसास्त्र प्रवीन सुभा ति भली ॥ बुधिमंत सुग्यान निधान

ज्यो०सिं०
२५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बली। धनमंतनमा आगिरहिजनै। कविशं शुनहाफलग्रनभनै।१०। इति चंगेरासं
वतसरफलं।६।दोहा छंद। हुमतनवरनकीरातिवतानतिङ्दरारबुनभूप। शंभूशांमु
सजोजनै ताकेसहनरूप।११। इतिश्रीमुखसंवतसरफलं।७। सुभचितदानीनेम
जसिसीलव्रानरहिपाव। जानेसबकुलधर्मकोसाहसीकपलाभाव।१२। इतिभावसं
वतसरफलं।।८।। तोमरछंद। लघुताहियेगुनवाल। छिनक्रोधछिनहिकृपाल। यु
निवुद्धियावलवोध। शंभूजुवाफलसोध।१३। इतियुवासंवतसरफलं।९। गुनवि
हितताकोजन्म। गुरभक्तिकामिनिभक्त। मह्लातिकरनप्रवीन। इतिधातृफलकरि
हीन।१४। इतिधातासंवतसरफलं।१०। नागसरूपिनीछंद। प्रसनक्रोधआन
ही। छिनै छिनै प्रमानही। गुनी प्रताप हि महा। प्रवीनविद्यचोदहा।१५। सबै
जपेलुनापुही। सर्वग्रसी सु आपुही। तहीसुएफलैधरा। जनेसईश्वरनरा।१६
इति ईश्वरसंवतसरफलं।११। [illegible] धनी
सुगर्भमानि। जनैसुवहुधानिह।१७। इतिबहुधान्यसंवतसरफलं।१२। धुजा
कुंडलनरध्यायो। गयंदवाजिकध्यायो। पुरानवेदकोसुनै। प्रभाउचित्तमेंगुनै।१८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामू०
८८

मरौ पञ्चआपवेसहै। सुमंत्रियावतेसहै। प्रमाथिमेनराजनै। सुशंभुएफलेभनै॥१८॥
इति प्रमाथिसंवतसरफलं॥ ९३॥ मरहठाछंद॥ रिपुनिकरैदहवहै। भलउपरेहलहि
लनिमै। करैओहाहनिघहै। सरवीरअतिधीरहै। पालेसवपरिवार। दातादीननि
कौभलो। शंभुफलउच्चार। विक्रमसंवतजोजनै॥२०॥ इतिविक्रमसंवतसरफलं॥ ९४॥
मुक्तदामछंद॥ सोविदितमसलतिकोकरै। सवकौरनिंद्राउरधरै। परविघनतेसं
तोषहै। सत्रुरिमिलेतजिरोषहै॥२१॥ पुनिमलिननीरनिसारहै। वहुत्रियनिकौ
भरतारहै। संवतवृषभवषानियै। शंभुसुएफलजानियै॥२२॥ इतिवृषभसंवत्
सरफलं॥ ९५॥ चरनकुलकछंद॥ पचरंगवसनपहिरिअभिलाषै। अनतगंधमे
मनुप्रतिराषै॥ मुषप्रसंनसीलहू पुनिलीनौ॥ चित्रभानफलसुषपनतीनौ॥२३॥
इतिचित्रभानसंवतसरफलं॥ ९६॥ सुभगसुफलदोरधकचवारे। हसतवदन
लघुताहियधारे। रिपुदलजितसह जिलमतिवंता। धर्मकर्मपरवीनलसंता॥२४॥
शंभवरेसुदानकोजोसुभानमेहोइ॥ जोतिषसागरमैकह्यौभाषाकरिफलसार
॥२५॥ इतिसुभानसंवतसरफलं॥ ९७॥ कंगालमूर्खअनितिविफलनिंडु। पुनिस्वर जो०ति०
८६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चपलहैधनरिंदु। फिरहीविसालनिदवैसुषार। तारनविसेनरजनमपार॥२६॥इ
ति॥तारनसंवतनसरफल॥२५॥ निजधर्मसाधकसुहैनिदान। परवारपालसवसाव
ज्पान। गावैसुसोरी॥विलासि। कुलमपजनमयारथिप्रकासि॥२७॥इतिपारथिसं
वंतसरफल॥श्रुभरछंद॥ भोगी। सुषविसनीय॥ चित्तास्थिरआरिनीय। पुनिवार्चे
लसततकर्म॥ एवमयकेगुनमलौ॥२८॥इतिव्ययसंवतनसरफल॥२६॥इतिसर्व
सनिसमाप्त॥ पथनिमविंसतिवरनन॥दोवाछंद॥ ऊनतवबीरसुभाउजावंगार
वईदरवारतें॥ पुदियारतनआचारियोनांउरसदिसिसारतें॥ बुद्धिमानसरितो
रैनिजतीरसोराघहीं॥ सर्वजिनसमयहोहिवालकशंभुलहनभाषहीं॥२९॥इ
तिसर्वजिनसंवतनसरफल॥२॥दोहाछंद॥ चाकरवहुवरुपुत्रजुततुंदरामीतो
षार॥ धीरंतनिगुनकोधरैसर्वधारिनसुभार॥३०॥इतिसर्वधारिनसंवतनसरफल
॥२॥हरसीछंद॥ वसेत्रपदरवारमनोहरहोवेवेदप्रवीन॥ सवपरवारहिंदहुम
हासुषषुतगुनन्विरिलान॥ सवकेरामनुलेरहाथमेमनमेसहितविरोध॥ धान
केहविरोधजोजनमेमिलननताजियसोध॥३१॥इतिविरोधसंवतनसरफल॥२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बरवै छंद। स्यामम लिनतननिरधनिहोंवैनाठि॥ कुरमकुदारसुदीरघ अंगुरि
निगाठि स्यावाजपुनिगनिंद्य विक्रतहोइ होइनमिंथ्यान शंभू ऐसोलोइ ॥ ३२॥
इतिनिवृतसंवतसरफल॥ ॥ हैअसस्थूलकलेवर कामीहोइ सेरजकठोरीवानी
निलज्जसोइ अन्खोलाइदुखदीडकियाचार घरसंवतसरजनमेचिंहनश्चार ॥ ३३॥
इति घरसंवतसरफल॥ ॥ रचहिकूपसरमंदिरसतव्रतदेइ भोगीमहाविला
सीमहाहरिलइ सुषकारिहोइसुधारीनंदनहोइ शंभूताकेभाषेलहूनसोइ ३४
इतिनंदनसंवतसरफल॥ ॥ धीरवीररनमाहीगजअसवार दयावंतसुघरा
नीसीलविचार महीपालकोप्रघासुअरूरिपुमार अरिदलविजैशंभूवि
जयमझार ३५ विजयसंवतसरफल॥ ॥ दृढपदछंद। पंडितसोचरचा
करैसवसास्त्रनिग्पाना रानीरिपुकोमारहीभूपसभामाना विजयवादहर
वारमेमतिकरिजगज्ञाना विषयविसनअनुरागहैजोजयउपजाना ३६॥
इतिजयसंवतसरफल॥ श्रावणनवहूनारिकोवनेपहिरावे चातुरभोग
विलासियाअमिवचनकहावे गीतनृत्यमेचितुअधिकसुंदरजसकामा म

जो०सिं०
८७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नमथ्यसंवतनरननेएफलपरिनामा॥ ५७॥ इतिमनमथसंवतसरफलं॥ २९॥ ल
क्षीधर छंद॥ उद्धतो कूर निंदक मति वेद्या नियें॥ वक्र रहे वदन मांटे चवसन जानि
ये॥ पापिष्ट हेजरुवा सो रुगी परा॥ लोभी दुरमुष माही सु भ्रेसो नरा॥ ५८॥ इति
दुर्मुषसंवतसरफलं॥ ३०॥ हेम धीरे करी रनवरषाफल॥ पुत्र नीरी सुष पावप
रेमले॥ भूरि वस्त गुनै सर्व को संग्रहे॥ धी विलासी महा रेमलंवे रहे॥ ५९॥ इति हे
मलंवसंवतसरफलं॥ ३१॥ चंद्र छंद॥ आलसी क्रूस लेवम परकत्य धूरतलो
परिच भिया॥ सिद्धि काज न होवहीं के हे सु प्रकोभिया॥ वोलही सु विलंव सो सवन है
को त्रतिचाउ है॥ शंभुओ नर श्रीनरे सु विलंव लहे न भाउ रे॥ ६०॥ इति विलंव
संवतसरफलं॥ ३२॥ ह्रकाल प्रवीन रहे भुन चार धी वदया नियें॥ संग्रहेनु विका
र को त्रतिहीन धूरत जानियें॥ गुहेत्ता द्रग वाज चंचल नी विषन प्रतीति है॥ नेह
रै उर मे न हाजन मे विकार सुनीति है॥ ६१॥ इति विकारसंवतसरफलं॥ ३३॥ वि नमानविनृं
उपार हाजिह्व प्रवीन कला मांनियें॥ चेन जो मदु तासु नही कहु सांजनियें॥ मद्

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

औरनिलीनपटैअतिविषयनिये। द्विगसज्जनवैठहिसर्वरिचिंहनिये। ६२। इ
तिनवैरीसंवतसरफल॥ ३॥ दोहा छंद॥ अतिउद्दारकामीधनीप्रवलबुद्धिगंभी
र। चपलगयेधनुहइरहीसुनोयलवगुनधीर। ६३॥ इतिपत्रवसंवतसरफल॥ ३४॥
चौपाई छंद॥ विद्यागुनवानावपतीजानापुंन्यपुरुषपरमाऊ। आदरसनमा
नेवहुविधिआनेलषुतारियेसुभाऊ। धनसंपतिजोईवहुसुतहोईग्रहइसुवच
विलासी। एलछनआहीसुकृतमाहीभानिशंभुप्रगासी। ६४। इतिसुकृतनव
संवतसरफल॥ ३५॥ अनिहरछंद॥ उद्धतसवजनदायाधर्मन। हरिभलीलभहे
सुभकर्मन। पढ्वरैवहुभातिनिजोभन। रंकमहाभलधर्मिकसोभन। ६५। इ
तिप्रभवनवफल॥ कूरनजरिपरात्रियकोभित्रह। कूरमतीअभिमानिहिचित्तह
सुषसोकाजपरावविगारहि। क्रोधिनत्रिभयपरधनहारहि। ६६। इति
क्रोधीनवसंवतसरफल॥ ३७॥ छंद॥ दुर्विलदानकरैसुतनारिय। भोजनमीठहवेश्या
चारिय। गुनकारवीरमहारनधीरह। वहुवधविस्वावसुफलगीरह। ६७। इ
तिविस्वावसुसंवतसरफल॥ ३८॥ दोहा छंद॥ धनमातिचित्तनधरममे धरत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गुनकारिवाल। छीनकलेवरसोरहेसोइपराभवकाल ॥ ७८ ॥ इतिपराभवमेवनसरफ
लं ॥ ४० ॥ इतिविभ्रमतिभ्रमतिसमाप्तः ॥ अथ नष्टकतिसंतिवेननासंनेनाष्टकाः
वालनियमसुजकठोररे। अनचारसठमतिचोरहे। संग्रहे धनधानहीं। फलवंगप्रति
फलसुवचानहीं ॥ ७९ ॥ इतिपलवंगसंवत्सरफलं ॥ ४१ ॥ संवतकीलकफलं॥ हेकुट
पशुपापासतानिहा॥ मोटगाडसीसहूवडाकहा। सोवहीसुमारडीलभारहे॥ की
नातीमनुहा पेटवारहे ॥ ८० ॥ इतिकीलकमेवनसरफलं ॥ ४२ ॥ इतिकीलक ॥ प्रीति
यदेवकीमनिहेंसतावकदुवेलहे॥ पंडितधनिसुचिभोगियसौम्यसमयफलये
॥ ८१ ॥ इतिसौम्यमेवनसरफलं ॥ सौम्यमाजाष्टकः ॥ चंचलबुद्धिचंचलवसी
लेचकियापवीनविसाली॥ हेअविवेकीवातनबुद्धि॥ हेनरसाधारनबुद्धि ॥ ८२ ॥
इतिसाधारनमेवनसरफलं ॥ ४३ ॥ पलवंगमष्टक। महादेवकीभक्ति।महाचि
तपनेहे। मनवचमाउकठोरनिर्ईश्वछेनेहे। सबसोकरेविरोधवेरु॥ मनमान
हो। वापरिसोडुरवचनकहेसेमनरानहीं ॥ ८३ ॥ काष्टाष्टक। मिलनपदोसी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामः
८८

घ क्रोधीउरतिरिजानियै जनमैसमयविरोध करतजोतिधीथोभुमुष ५४ इतिविरोधसंवतसरफलं ॥ ७५ ॥ संवृत्ताउत्ता सवकलाचातुरपंडिता न
पमानलोनपतिष्ठित्ता मतिकोसुसीलवषानियै क्योपारसामुझिजानि
यै ५५ वैठसुष्षक्तनिपासरी जनुमतहिकरतविलासरी परिधाविसं
वतकालको एपारहिलकृनवालको ५६ इतिपरिधाविसंवतसरफलं
॥७६॥ अभिमानिकलही लोभिया कुटंवकुहारसदोविया गर्विलकुमति
मतवारहे प्रमाथिजोग्रवतारहे ५७ इतिप्रमाथिसंवतसरफलं ॥७७॥
वडुनारिपतिवहूपूतहे नांश्वबुद्धिकरतूतहे नवासनिमेंसालीनहे पुनि
कलाकामप्रवीनहे ५८ अरुहायबजुगलफुलाहियै आनंदमनकोरहदियै
आनंदसंवतसरविषे नरहेदताकोफललिषे ५९ इतिआनंदसंवतसर
फलं ॥७८॥ राक्षसउत्ता क्रूरकरमकलहनिठुरकहित्ता साहसिनिसिदिनचत्

ज्यो०सि०
८८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गुनसहित॥ संगतिभलितजरिहिरहितदया॥ रत्नसमरसुनरजनमलया॥ ६०॥ इति
रत्नमनंतमफलं॥ ७०॥ मोरठा छंद॥ सतमतिसीलप्रवीन मंत्रिनिकेव्योपा
रकरै नैनलछनएलीन॥ धनमापिकुलरतनं॥ ६१॥ इतिरत्नमनंतमफल॥ ७१॥
मारवतीछंद॥ निरकेसोसवकमेकरै उद्धतकरहनैनधरै॥ चंचलमृदनिकोसुरि
वै॥ वैनकठोरसुनासुलिवै॥ ६२॥ लछनयेरसुहोइनरै कोउप्रमाननतोसुवरै॥ पिं
गलसुवतकेफलए॥ जोतिषसिंधुविलोकिलए॥ ६३॥ इतिपिंगलमंतनफल
॥ ७२॥ हैवकताकुरुसाधमती॥ सोसवभांतिनिहीनअती॥ कालस्वरूपसुकाल
विषै छौनकलेवरकालनिषै॥ ६४॥ इतिकालमंतनमफलं॥ ७३॥ चित्रउ
दारप्रसंनमुहै॥ जुद्धतिनेकरहेसमुहै॥ संग्रपदानसुसांजदिनै॥ नृपतिमंत्रिप
जावतिनै॥ ७४॥ सिद्धिस्वरच्युतवेजुरहे॥ होइसिधारघकालमरै॥ शंनुसुल
छनएतहठए॥ जोतिषसागरमैजनए॥ ६५॥ इतिसिद्धाचमंतनमफलं॥ ७५॥ इंद्र
वज्राछंद॥ दुष्टीसुभाऊसुमनंदरूपा॥ जाकोउराही चितमध्यभूपा॥ टेटौसुवा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रीपसुपालहोई॥ रोडै सुभाऊ स्वपजरपसोरई॥ ६७॥ इतिगृहमंत्रनमफलं॥ ५७॥
स्वावै करैजोकरतातिरायै॥ दुबुद्धिकामीकुटिलीसुकोपै॥ दुर्मत्तिमेहारकुनही
भिमानी॥ धर्मसुभाछिजनमैसुप्रानी॥ ६८॥ इतिदुर्मतिमंत्रनमफलं॥ ५८॥ हा
थीतुरंगेरतनाधिपत्नी॥ जोग्रामभूपालसमानसत्ती॥ वंधूबइंदुम्यनुरैरिपीथो
कोजैधुजारूफलइंदुमीपै॥ ६९॥ इदुर्मतमंत्रनमफलं॥ ५९॥ केकुमामंदे॥
लोच्चनकावरिलालिहिरोगी छीनसुतनतिहिजानोज॥ रुधिरप्रमेही प्रीडकेको
धीक्रूनपीपाउवषानोज॥ रकतविनारितासुपुनिलांगेटरैववैसियरोगाजू॥ स
मयसुनाठसुरत्नउगारीभोषनजोतिघलोगाजू॥ ७०॥ इतिरत्नउगारीमंत्रनमर
फलं॥ ६०॥ नीलकंठकमंदे॥ धर्मसुहीनेअचारसचारी॥ कामप्रकोपर
गी अहकारी॥ उद्धतवातजुनाहिसहाइ॥ रत्नडूगेरकतातिहसुभाई॥ ७१॥ इतिरका
तमंत्रनमफलं॥ ६१॥ काजपरावसुकर्तमिटावै॥ क्रोधमतीलविजनतेप
रावै॥ मंत्रफिलारप्रचात्मभयंका॥ क्रोधनकेरसुएनकलंका॥ ७२॥ इतिक्रोधमन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥ धनकौ कमाइ धरै जो पुरषा निये सुकुल
भनिहेत षेव हीन रु जानिये लघु बुद्धि देत निव जेही प्रवरा निये क्रिय भव है
मन छुकृती गुनहा निये ११ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] हे प्रसंन सो छिन छिन हिये सिली सुबुद्धि तासु जान जानियै सु चारि को
पवित्र जी विषै सुदा हतो घवान कामिनी व हूत है व हूत पुत्र दान को करै है सु र
उत्र सु जेक रचि हूये हैं शंभु जानि ले है धीर भूर १ ॥ [illegible] ॥ १ ॥
हार घन को करै सुदो रसयहै सुराव चित्त गर्व मद हारे होइ सो जरै लमान हीन को
न रूसु पवै हाइ चित्त को कठोर जानि ले रु वीर कर्म को चराय शंभु एफल करै सु
पुत्र जन्म हीन सुजेद विनाय २ ॥ [illegible] ॥ नी व जो मनोज
तै सुबुद्धिमान है प्रवीन रु वषान सास्त्र संगिता विषै प्रवीन है भला प्रताप वान जा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

न॥ जोतिषागनिन्नमध्यभ्यासताहिसुलक्षअंबरसिहाइ॥ फूलहूपुलेलहूसुगंध
प्रीतियोवसंतकोसुभाइ॥ २॥ [illegible] ग्रताधिसं
ग्रहेसवैसुधनधानकोआनहे॥ सुलंचकेसस्पामचीकनसुधापवक्रानहे॥ सु
भाउसीलभोगियाहहृदयनीरक्षीडारहे॥ सुधीवमैविषेनराउपजचिंहहरतेलहें॥
४॥ [illegible] ॥ सुजारमानहोइधीरसुरवीरसंग्राममही॥ प्रताप
रूपचित्रमेतुरंगप्रीयपनोमही॥ सुहाइसाधकेलघाप्रकृतिसौषमावाइको
त्रियानिमेविलासियासुगतिशंभुवधाइको॥ ५॥ [illegible]
नहोसुहेइरागसोत्रपितवातुलाग्यानिया॥ धनीसुचारुचीसुधर्मभ्रातिगर्वि
लोजानिया॥ तहासुताहिप्रीयमंगलतुरंगहूपालको॥ उरैनसत्रपासदुंदु
गतिसदैहूकालको॥ ६॥ [illegible] ॥ आनदे
मनस्वनीवकर्महै॥ पुत्रतासुकेवहूतधर्महै॥ भ्रमंत्रिलोचनेउदारहे॥ हेम
वंतमेपवित्रधारहै॥ ७॥ [illegible] ॥ धानयानमीमभावको

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

महा॥ भूषवाननीलकमेनीकरा॥ क्रोधिजोरूप्रत्रयोकलिके॥ सोइमोसिसोरिमपति
कै॥ ८॥ इतिसितिरिगितुफलं॥ ८॥ अथमासफलवर्नन॥ [illegible] दोहा॥ सतवर
मीत्रक्षविद्यादिरे॥ सुहरखुसज्जनभागगिने॥ असनसुमीठरूचेहिमरा॥ चिन
रतिपूजकमैत्रिकहा॥ ९॥ दोहा॥ शंभूवालकजोदङ्केचैत्रमासमेराः॥ रतेल
हूंनतारिश्रेगविदितजानियेसोइ॥ १०॥ इतिचैत्रमासफलं॥ ॥ उपेंद्रवज्रा॥
सुसीलकामीहूनदेवभक्ता॥ चिरायुषीदानसुधर्मसक्ता॥ सुपुत्रयनीकामुपजोरु
वंता॥ [illegible] सिंधु चैसाषफलेलसंता॥ ११॥ इतिवैसाषमासफलं॥ दोहा॥
प्रीतिविदेसहिवासमेंठेनीचचलाचित्त॥ हानीपुनिमलबुद्धिजुतजेठजनम
फलमित्र॥ १२॥ इतिजेठमासफलं॥ [illegible] तोटक छंद॥ वहुषर्चसुप्योरिकबोल
हिवाला॥ अभिमानधरेसुविलासिकलोला॥ पुनिमंदहुअग्निहियेगुरभक्ती॥
सुषसाढरिमासजनेधनसक्ती॥ १३॥ इतिअसाढमासफलं॥ दो॥ सुषपुत्रक
लित्रनिकेपुनिनाती॥ पितुमातहिसेववरेसुभभाती॥ कफकीपरकोपसजाहि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामप्र०
८२

रलोका॥ हज्जदेवगऊभनिपज्जकवोका॥ १४॥ रो॥ ठं॥ नीरथजपतपवृत्त॥ स्रछा
परनवरनई॥ साइनमेजननमत्त॥ रविलषिगनजानिये॥ १५॥ इतिसावनमासफल॥ भा॥
रो॥ ठं॥ दानिमनोहरपुत्रसुधीमनि॥ गर्विलहेतनछीनतिहीगनि॥ मानहिमाहिग
लानिसुषदुष॥ धीरहियेविपतीपरमानुष॥ १६॥ रो॥ ठं॥ इहिविधिलज्ञनहोइ
तिहिउपजभाइपदमास॥ जोतिषसागरतेलिषभाषाशंभूदास॥ १७॥ इतिभादो
मासफलं॥ ६॥ रो॥ ठं॥ भपसघाधनिपंडितजानो॥ काव्यकरीकप्रवीनवषानो॥
दानिगुनीवहुसेवकहोई॥ भिज्ञकरीननिपालकसोई॥ १८॥ रो॥ ठं॥ अस्वबुद्धि
अस्वनिविषजातकजोजनमाहि॥ शंभूभाषाकरिकहैजातकफलअवगाहि
॥ इतिकुवारमासफलं॥ ७॥ मनहंसछंद॥ सुविलासिवेननिवारयोधुधरारहै
धनवाननेवहिरेरुचातुरवारहे॥ वकनासुदेसविदेसमेतिहिजानिये॥ सत
कर्ममेरुचिस्वाचेतरूसमानिये॥ २०॥ रो॥ ठं॥ एलह्ननसिसुकोपंरहिहो
इसुऊरजमास॥ शंभूदासजनाइलिषजोतिषसिंधुप्रकास॥ २१॥ इतिकातिं

जो० सिं०
८२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रागछंद

कमासफलं ॥ ॥ मुनित रहे चितती रघुवे केरिसुजान ॥ सुसीलप्रवीनसुबोलहियान वि
लासकरेउपकारिविचार ॥ कहेपुनिधाभृगयेंद्रियार ॥ २२ ॥ सोरठो ॥ सज्जनधारदी
पाउ ॥ प्रभोविभोलिहिहरैचलि ॥ माधाकेरसुभाउ ॥ पलटनहाराकोनहै ॥ २३ ॥ इति
श्रीमद्नमासफलं ॥ ॥ विजराछंद ॥ कहुजोरधरे ॥ वर्चकालेकरे ॥ वापुरीना
धने ॥ मंत्रिछीनोतने ॥ २४ ॥ हुपरोकाजिया ॥ चित्तकोराजिया ॥ पूसहीकेविषे
चिहूएतेलिषे ॥ २५ ॥ इति पाष्मासफलं ॥ ॥ नीलचरपकछंद ॥ नागुनि
या परवीनवडीमती मंत्रिमने ॥ विद्यारसाइनिमेरुचि आपनसचहृने ॥ गाः
कवाधसुराग हि संगानिसंलिषिदो ॥ भूपतिनीतिप्रवीनमहातपचिहृलिये
॥ २६ ॥ इतिमाघमासफलं ॥ श्रीरमहापरकोउपकारिहृयासुमने ॥ वालनिथो
रिहिसिद्दनकोमलसीलतनै ॥ चातुरहोरविलासिविलासनिजोरभला ॥ भ
रफलमाघरिमासस्तुहारनला ॥ २७ ॥ इतिफाल्गुनमासफलं ॥ ॥ इतिद्वादसमा
सफलं ॥ ॥ अथ पपहेवर्णनं ॥ दोहाछंद ॥ वंचलकुमलसुलक्ष्मीकोमलछवि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामं०
२२

चिरंजीवि । भाग्य होंइ गुन धरि जो जानि पाप बसि तुलीवि ॥ २८ ॥ इति सुलक्षण पद्म प
ल ॥ १ ॥ सुरीछंद ॥ चपल निर्बल यो परतापरे ॥ कलह प्रीय कुटवसु घाय
रे ॥ मद निंद हृत चिंह पत ह्रहे ॥ अवतेन र स्यामल पद्म हे ॥ २९ ॥ इति ह्रस्व प
द्म फल ॥ २ ॥ अथ तिथि फल वर्ननं ॥ वहु मनुष्य नि ठकुर भाषियै । जटित राव
विभुषन ता प्रिये ॥ अधिक सुंदर दीपति दीपती ॥ पुनि सुदेइ विभूति मही पती
३० ॥ सोरठा छंद ॥ विद्या ज्ञान विवेष ॥ अरु सुसील मति तन कति हि ॥ ए सिसु
लछन लेष ॥ त्रिय प्रसूति पड़ा दि तिथि ॥ ३१ ॥ इति परिमा तिथि फल ॥ १ ॥ दो
ना गुनी चपल संपति चित्त दाया ॥ ईस्वर जंत सुप्रसंन मुष गाया ॥ आचारि
या अति तरहा न रंग्यान षोजे ॥ विस्तार ता सुरसह हदिसि चिंह दीजे ॥ ३२ ॥ इति
द्वितीया तिथि फल ॥ ३ ॥ मरालसम छंद ॥ कामिनि दोबि यासा रतै पाद
ही हू व्यसदवारते ॥ और विद्या पढे पावली ॥ हैगुनी लो प्रदसो थली ॥ ऐसे
चातुरा रै विलासी भनो ॥ जानके देषिके सो गनौ ॥ होइ मानुष्य जो तीज ई विं

जो०सि०
९३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हुएतेसुतेदोजसे॥२४॥इतिद्वितीयातिथिफलं॥२॥हेरिनीसुमधीमाहसी॥पथं
मैहैनमाभावसी॥होइकंन्यासुताकेगुनी॥होरवंध्यासुजानोपुनी॥२५॥दोहा
स्वसमदगुलमद्बचनकहजोरवादिलोलोभि॥जनमचतुरथीतिथिविषए
लहनातिहिसोभि॥२६॥इतिचतुर्थीतिथिफलं॥४॥चामरछंद॥सर्वजुगपरमिउ
सनयोकलित्रके॥दानिभयमानसोनदेवताचरित्रके॥दीनदेषिकेदयालपाल
हीसुसज्जने॥पंचमीविषेजनैसुचिंहताहिज्जने॥२७॥इतिपंचमीतिथिफलं
॥५॥सत्वताकरैप्रसंगसंपतीकजानहे॥जंघपिंडरीसथूलअंगजोरवानहे॥की
रतीप्रसिद्धिसबकोउभावहीजसे॥सिष्टबुद्धिधारुषन्नचिह्नषष्ठमीलसे॥२८॥
इतिषष्ठीतिथिफलं॥६॥इर्विलोगनगपनेनलालनीवरुणानिहे॥केनिकाचाबि
दादेवभानिमालपानिहे॥सज्जनानिरानियाप्रवीनपथंनोहरे॥सप्तमीजनेसु
जुंडछीनसत्रकोंवरे॥२९॥इतिसप्तमीतिथिफलं॥७॥मालाधारछंद॥लसत
सुमसंपतीसुत्तवालित्रसोसुष्यरे॥सुजसदरबारवादहिहरेसबेदुष्यहे॥स्यात

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्रियनिसो करै रितकृपालसो दाढहै। चलचितकवित्रगावतरहै जनै आहहै
॥४०॥इति अष्टमी तिथिफलं॥८॥कुमारललितनाकंद॥ कठोरवचनैकरै
निरादरकरेरहै विरोधछिन ही हूनै सुबुद्धिछनमैभनै॥४१॥दोहाछंद॥ वै
प्रवारपरिवारमैनिरआचारअघोर॥ अभिमानीसुतअलपहै एफलनौमी
जोर॥४२॥इतिनवमीतिथिफलं॥९॥कुसमाकुंद॥ धर्मीमतिजोमैसुइतहै
कैठेसुउदारउइतहै नैनानरहिरैषेलहृषनै कामीकुलवंसोताहिभनै॥४३॥दो
हाछंद॥ गुनरमनीकोनिदपेलघुपारसासुपढिहोर॥ एगुनशंभलिषनतिहिर
से सुजनमैकोर॥४४॥इतिदसमीतिथिफलं॥१०॥कवकंद॥ वृत्तीहानीसोपु
सो जैनरहुजरेवा॥ अंतराकनीहेऊजरजानिसुलेवा॥ जानौस्यानौधमनिआसी
लसुसीला॥ धर्मीलोसाहेवअरुचित्तरसीला॥४५॥दोहाछंद॥ उत्तमकरम
निको करैदुरवलरैहप्रकासि लद्दनएतावहेबितिरि जोनरभवतिथिग्यासि
॥४६॥इतिएकादसीतिथिफलं॥११॥हाकलिछंद॥ चातुरसो विवहारविवे
॥ नीरविहाररहियेसलिये प्रीतितिहीरहिवौघरको हैपतिसोवहुनारिनको

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥४७॥ आनंदित बुद्धि विलासि भले॥ इव्यति ही द्रवार फले॥ लेगु रमा नि अति प्र
तस॥ जो तिथि भाग समयान मस॥४८॥ दोहा छंद॥ अनज दान करता नैया रो भुचर
निश्चिंहि भाति॥ द्वादसि तिथि नर प्रवतेर अरु सगुन गनपाति॥४९॥ इति द्वादसी
तिथि फलं॥१२॥ जनमे चरननिको धन रासु मति सुभ गगुन धाम॥ दीह कंठ सूर
चतुर अरु रसिगन पारे नाम॥५०॥ इति तेरसि फलं॥१३॥ गीत छंद॥ चलचित
कामिनि काम वस्य भय के रूप सुजानिये॥ वरवी नकुं चित सूरको धिक सारसि
क वषानिये॥ सब कूस ही परिवार मध्या विरोध भाषत वानिये॥ नहि सोधु तासु मि
ले भरे यह चौदसी फल जानिये॥५१॥ इति चतुर्दसी तिथि फलं॥१४॥ तन कोम
ली कसुनो क जोधनु सुकुल हृकमाइके॥ बहु नारि को पति जानिये अरु आनु दीर्घ
स्थाइके॥ सुमति द्रहा मा विलास हे पुनि आगरा गुन लाइके॥ करुना सुधर्म निवा
स धाम्म सुवर्न चिंह प्रजनाइये॥५२॥ इति पूर्निमा तिथि फलं॥१५॥ पितु मात भ
ति करे सु साहस सोलि भाउं सुता हि है धन को कमाइ महा सुक घने लोभि दान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

न आहिहै। तनदुबेले कुटमी जनेधरनी विषेमातिवारिहै। अहन्यानदीप
लछो। नतिष्यनिसाकोरेअवगाहिहै॥ ५३॥ इति अमावस्यातिथिफल॥ ०॥
इति षोडशतिथिफल॥ १॥ अथवारफलवर्नन॥ कुंडलिया॥ संजुग
विजईस्यामतनसुरअरुनपासिरकेस॥ वधायो॥ दाताओछेप्रहरको गोरूवन
सुवेस॥ सुजानो॥ पित्रप्रकृतिउनसारअति विक्रमसवपरिवार॥ सुपाले॥ दि
नपतिवासरा विंकूरएपामूढामहउचार॥ सुवाले॥ ५४॥ इतिरविवारफल॥ ०॥
दोहा॥ बुद्धिवानप्रियवचनकहिचातुरलोकाचार॥ नरेंद्रवृत्तिवआसरे
उद्यमसमससिवार॥ ५५॥ इतिसोमवारफल॥ ०॥ कुंडलिया॥ परधनकुमो
गसुमंत्रिनपकलहप्रियसवलो वचनतीछनकहिजाना॥ आवकरिन
हूचरलहूपटधरतपद कमकरअहूपटसववखानो॥ करतहेसांतरउग्
अस्तुतिहुनिंदयाभा॥ तिइहिजानितहिलीजे॥ छितिपुत्रकेदिवसजोहे
रकहूपनसोपाभुपहसमुझिभाविदीजे॥ ५६॥ इतिमंगलवारफल॥ ०॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गंधानाछंद॥ सज्जनसुभरूपछवि पवोलाहिवैनविलासा॥ हैसुढिलचतु॥सद्गुन
विसदासुघहासा॥ दुख्यदनिनकोजोरजिगारहियेसुतसालो॥ ऐसलग्नसुनचंद्र
स्वेवरशमुवहाला॥५७॥ इतिबुधवारफल॥४॥ पंडितगुनगपानासवंमसमुझेवन
जोरा॥ पावैपालिसाहिसनमुनिवधेगजहारा॥ धीरसुकविआचारजहेप्रियपमसुगा
ला॥ जानोनरहिसुशीलअभरणरएफलदाता॥५८॥ इतिगुरवारफल॥५॥ रूसुहि
तनहोईअतिचीकनरूपअतिवाना॥ पेधेसुभगसुवस्तरहसनमुधेनिताहजाना॥ उत्तम
मभगकीराहचलैमितअंवरप्रीता॥ दोनघ्रहरदिनाचिह्नगनिधुघरवारपुनीता॥५९॥
इतिशुक्रवारफल॥६॥ ढकमनुजहोवैविनसमयेकुचितकुद॥ जानोदुरवजनारि
सुखवलसरिरकुवुधी॥ लग्नइतिभाषेजनमेनरजोसुतछाया॥ शंभूसमुझेव
धानिककीरअतिसूक्षजतायी॥६०॥ इतिशनिवारफल॥७॥ इतिसप्तवारफल
समाप्तः॥७॥ अथनक्षत्रफलवनैना॥ चौपाईछंद॥ सदासुरदप्रसंनरहाई॥ स
धुतासत्यसुभनुभनो॥ संपतिसकलतालुदेआई॥ परिहरिहिसहारसोगरसो
॥६१॥ विपसुतसोजुपरमसुखपावे॥ प्रीतिप्रसंनानितासिकरा॥ नवलन्यसनो॥

CC-0.Courtesy Shri K.S Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सा०म०
९६

मेउपजोनै॥ वचनवलीगनिताहिमेरा॥६२॥ इतिश्रवननक्षत्रफलं॥१॥ सदाप्र
तितिअपजकीसोई॥ इसतहिलौपुनिवाहकरै॥ग॥ श्रवणवंतानिसिदिवसोई॥ पाछ
डोअरुनादधरै॥६३॥ दोहाछंद॥ पानीउपजतभयचपलएगुनकहेबषान॥ दुष्ट
जनमजनमेभरनिशंभुपंडितजान॥६४॥ इतिभरनीनक्षत्रफलं॥२॥ काव्यछंद॥
सत्यकर्मकरिहीनमत्तगुबहासठकोमति॥ दीननिसेदुखवेनपाविपहुलाधरि
सोरति॥ कृत्तिकामिकलहशत्रुपरहैपरविघनवनाइय॥ शंभुदासबषानकृत्तिका
केसुभाइय॥६५॥ इतिकृत्तिकानक्षत्रफलं॥३॥ अथशिखाछंद॥ धर्मकर्मवानरीय
॥ वोलहीसवेसुधीय॥ घातहारनीकशील॥ रोहिनीतरासफोल॥६६॥ रोहिनीनक्ष
त्रफलं॥४॥ चापविद्याप्रवीन॥ नायकासुरंगलीन॥ चालहीसुवाटसाध॥ भो
गीमित्रभूमिनाथ॥६७॥ नेहप्रेमजुक्तजान॥ वाकजोरबुद्धिवान॥ शंभुभाववि
कृतत्र॥ इम्रगसिरेनछत्र॥६८॥ इतिम्रगसिरनक्षत्रफलं॥५॥ अगरूवभषआई॥
गहवचनावनाइ॥ निर्दईसरीनकाहिगवेठासनाकराहि॥६९॥ दोहाछंद॥ तवे
विघनपरकाजकोनसगरकुटलीकोधि॥ कृतहीनाजरजोजनेआड़ाकरइफ

जो०सिं०
९६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लसोधि॥७०॥इति आर्द्रा नक्षत्रफलं॥६॥अगग नंगा छंद॥ सज्जन सरस मधुर वियक
रहि सब साल सुगधान है॥ भवन जटित रतन विविध पत्रपति मित्र वषान है॥ दानि
सबसु बहान करन रति हि जानि कुली जिये॥ शंभु धनिक पूना विफल नघेन पुनर्व
सही जिये॥७१॥इति पुनर्वसु नक्षत्रफलं॥७॥ आर्य्यारिल छंद॥ धीर वीर पर पीर हर
चर छवीन मति॥ मात मातकार सुभ तन नेम सधर्म न्याति॥ धनवान करल ग्रह कर
ना पवकता॥ पुष्य चिहूं एति जगत वादया नुसवत्त॥७२॥इति पुष्य नक्षत्रफलं॥८॥
प्रे रंसजन व्य थामटक ब्रष्या वि धनपर॥ इष्ट जीव पर वित्त हर मद्य चकार चकर
मिथ्या लाइक लंक सुलु टावत श्रवरनर॥ धीर वीमद्द निकुल मफल असलेषव
र॥७३॥इति अश्लेषा नक्षत्रफलं॥९॥ पितर मानि करा है चित चंचल वषानिये
तीछन नजरि निरदो षवित अतुतजानिये निर्मल विद्या सपुरात सब रिप्रकासिये
नषतमघा जनमसु हसन वदन विलासिये ७४॥इति मघा नक्षत्रफलं॥१०॥
छंद॥ नपुनीत पवीना धूरत लीनी सूरसा हसी रानिच्याति गर्वि न्नरि
हीना क्रोधी चीना पूर्वफालगुन क्रूरमति ७५॥इति पूर्वफाल्गुनी नक्षत्रफलं॥११॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
८७

सीलसुमतिरासी ॥ जसी विलासी ॥ दातान्नपतिकृपालगुनि ॥ कुरमाग्रतिपाला
॥ वचनविसाला ॥ धीरसुउत्तरफालगुनि ॥ ७६ ॥ इतिउत्तराफालगुनीनक्षत्रफल
॥ १२ ॥ मनरुचिदानजसी ॥ तिहिबुद्धितसी ॥ रेवहुजनिकारदासमनि ॥ तोकरहिवा
सच्चाति ॥ सुंदरसपति ॥ रेहिवद्धिदिनैनिगनि ॥ ७७ ॥ सोरठाछंद ॥ जनमभरेलागि
रिद्धि ॥ होमजगपपूजननिपुन ॥ एकरलहत्तनासिद्धि ॥ जोतिषलषिवहजो ॥ तिथी ॥ ७८ ॥
इतिहस्तनक्षत्रफल ॥ १३ ॥ जजनजापसिधिचारु ॥ वैरीडरेप्रतापसनि ॥ रहहिस
वपरिवारु ॥ सनिवोलेहरवारमे ॥ ७९ ॥ दोहाछंद ॥ वसनविचित्रनराउकेसंयरस्त्र
द्धिकराहि ॥ बुद्धिविचित्रसुतासुकी ॥ जोचित्राजनमाहि ॥ ८० ॥ इतिचित्रानक्ष
त्रफलं ॥ १४ ॥ घनानरछंद ॥ त्रपसुधमाउप्रवीन ॥ रहतछीन मदनरूपसुंद
रसुमति ॥ परकामिनीप्रसंन ॥ गुनावितपंन ॥ निपुनरागरागिनिनिचुति ॥ ८१ ॥
सोरठाछंद ॥ नाइकगुनपरगास ॥ जनमेस्वातिनछत्रजो ॥ वरनिउशंभुदास
॥ भाषासंच्याकावितिहि ॥ ८२ ॥ इतिस्वातिनक्षत्रफलं ॥ १५ ॥ विशाखाछं
द ॥ त्रप्रियहिकेरितहाई ॥ वंदनताहिसुहाई ॥ धातुछद्दिपासुप्रवीनो ॥ त्विहुवि

जो०सिं०
८७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सेषहिलीनो॥ ८३॥ इति विशेषानक्षत्रफलं॥ १०॥ गाथा छंद॥ भुजसरसुभगदु
तसारी॥ संपति ताकें पकुतस्वरूगारी॥ संग्रधारिपुजिन आरी॥ हेस्वनुराधा विधि
अरधारी॥ ८४॥ इति अनुराधानक्षत्रफलं॥ ११॥ दोपानि हिपतिसुदेह॥ भूपस
मानहिं भोग्रा भोस्तुतेरी॥ धनिपता पिंगनिलरी॥ पतिहासचरूपसुनरवेह॥ ८५॥
वकता सभा प्रवीना॥ जेठनिमध्येसुजेटतिहिलीना॥ जेष्टाकरयपरचीना॥ वषनवं
तपेठिफलकीना॥ ८६॥ इति जेष्टानक्षत्रफलं॥ १२॥ दोहरा छंद॥ गजरथचापदं
धनिकसुखि [illegible] सुसल॥ रिपुदलहंता॥ ब्रूरूवलीजनमञ्चग्रण्डसमूल॥ ८७॥
इति [illegible] नक्षत्रफलं॥ [illegible] प्रथम [illegible] चारवनेनो॥ [illegible]॥ म
लवद्दमूलमध्यजनमेंकरतकुलनासुवषानिये॥ औरअंगसकलसुभभावपु
निशरपाल जोप्रमानिये॥ जेष्ठघरिअंतरच॥ मूलधरिदो॥ प्रथमअभुक्तमूलह
देवरिषियोपिपलभाषयहवालकरहिसूलहे॥ ८८॥ इति अभुक्तमूल॥ आठ
कूवरवलगिवापुमुषदेषनहिसुपूतजानिये॥ त्यागिपपुत्रकेरासदहिभानिव

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम॰
९८

चनमुनिप्रमानियै॥ आपुसुभचेहेकुटमरिकुसलसांतिमलविधिसो आनियै
शोषनसिपरहिंकुसलशंभवदहिंवसतासुवषानियै॥ ८९॥ इति विनायकी॥
पद्मावतीछंद॥ सत १०० आ प्रथिलनारंतनसमेतामाटिमगावैसान ७ तहां
॥ तीरथसुपाचजलपांचधान्यमलब्रासनमंत्रीमंत्रकहा॥ सो १०० छि दुनिक
रवा आवधिमरवामात पितासुतकोअहूवै॥ जपुहोमकरारहानदिवारैआरि
मूलगंउसांतितवे॥ ९०॥ इति नाराच छंद॥ अभुक्तायमूला॥ करैयेहसूला॥ न
हायेहूं॥ प्रयागेकरही॥ ९१ मुनीसावषानै सुवेनासुहानै॥ जथाजोगसंती
॥ करैसांतिजन्की॥ ९२॥ इति अभुक्तमूलको निविधि॥ तोटिकाछंद॥ अस
लेषाअरुमूलपरैलटेआदिअरुअंत पूरनसांतिहिजबकरैकुसलसुष परे
वंत॥ कुसलपरैसुषवंत प्रथमपर जननकहिनासहि॥ जननीदूसरपाउतीसरा
इव्यविनासहि॥ सतयंथउच्चारकहाशंभुसुविसषा॥ भलौचौथपद जानि
गनितउलटाअसलेषा॥ ९३॥ इतिमलनवासनविचारफल॥ भानिआषियारी

शौधसि॰
९८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

श्रीअकुसमहुनिसामीरिषमंद। सुक्लपाषचोदसिविषकर अनिदसुतचंद। करस
निद्दसुतवंदहाररनिदिननिथिमला। कुलक्षदिषतवनानुहोइसोतनयकु
मला। दिवसहिजनमनलोलअप्यवतसुदिनदसमीसनि॥ चोदसिबुधअ
धरातिभानिशोभनहासमनि।९४॥ इतितिथिदिनमूलकालसंजोगादोहा०
२॥ दिवसविनालरिजनमकुलजननिमुषरेन॥ अरधछपापसुपुनिसघानास
करैरिविनैन॥९५॥ इतिमूलवेलाफलं॥ अथमूलपुरुषविचारवनेनं॥ मूलपु
रुषविस्तारसोलेषियघरीप्रमान॥ अंगअंगकेसकलसुभमूकीनवखान॥९६॥ छ
प्पै॥ छंद॥ माथेपांच५घरिपांच५मुषअरु२घरी। २कांधनिगलो॥ भुज
आठ८घरीदो२दो२करनिहृदयआठ८घटिकाभनो॥९७॥ नाभिगुह्यदो२जांघ
निसुष्ट६चरनविषैअरुषट६घरी॥ इमिघटिकालाहि२०विचारियेमूलपु
रुषअंगनितिधरी॥९८॥ इतिमूलपुरुषअंगघटिका॥ सिरछत्रनाभमु
वधालपितुकंधगानहुरवलकरै। पानिहिकुकरमिराजाहृदयअंगअलप

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
९९

पुनि वाढ़ै धरै ॥ ९९ ॥ महेहाछंद ॥ सुनि जि अरभ नत गात ॥ गुह्य कहत जो घनि अ
म निस्व भाउ घरि चरन नि ढरा ॥ जियैसु धारा नर त्रिय होइ तेहि हाउ ॥ फल अंग इती
ति लिषमूल घरी रिष सुभ घटिका सुभ कंत ॥ है असुभ असुभ ॥ तिश भु वर निमात
साठि ६ घरी फल धर्त ॥ १०० ॥ सुत फल अस्लेषा कहि हिउ विसेषा मूल वरा वरि अ
म घरि मूल वषानी सुधि गनाना गाति अस्लेष विलोम ॥ असलेष विचार इ भेदि
स्तारा लिषा सुभ तमु निश्चैर ॥ तिहि कर अस्लेषा शंभु विसेषा वर निउ तावनि चो
र ॥ १०१ ॥ इति मूल अस्लेषा नक्षत्र विचार ॥ अथ मूलषा मलगुरषा कार वर्नन ॥
रोला छंद ॥ पंच ५ सीस दे राज मृत्यु छौ नामुष माता ॥ मातनास दो २ घरी जेसु ता
चन विष्याता ॥ तीन ३ घरी पुनि कंठ नारि पस्लेपट जानो ॥ कंधै घटिका चारि भि
ऋयु रगाइ प्रमानो ॥ १०२ ॥ हस्तनि घटिका आठ वली गुह्य कपुनि ग्पारा ॥ आत
मघाती होइ नाभि वढु नि पुभ रतारा ॥ पुटनि भ्रमं घरि षट ६ नवो गुदत नपासि
विसेषा ॥ पंच ५ चरन धन नहा रशंभु इहि विधि अ सलेषा ॥ १०३ ॥ इति अस्लेषा मू
लगुरुषाकार फल ॥ मोरठा छंद ॥ मूल मझर तन ॥ तीस ॥ सुर इजु रहै तिन नाम कहि

ज्यो० सि०
९९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नासुफलाफलदीस ॥ तेहीमनकहघोमुकावे ॥ २०४ ॥ पैतीसान रकेरा ॥ प्रथम
देत्य १ पुंम्यजनन दूजे २ चंदतीजे ३ सुनचौथ ४ पान्चपन्नीस ५ नागछट ६ मानसा
ते ७ जानहे ॥ आठकाल ८ नुवोवि
स्वदेव ९ शंभुदस १० सर्वग्यारो ११ बी
रहोकुवेर १२ इंद्रतेरा १३ चौदमेघ १४
मानहे ॥ पंद्रारवि १५ सोरोगंधर्व १६
जमसत्रो १७ अठारोब्रह्म १८ उनेस
योविस्नु १९ बीसयोजमोदर २० सो
वधानहे ॥ ईस्वररकईसयो २१ बाई

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सयो विसु २२ वहुरि रंध्र गनि तेईसयो २३ चौवीसयो पूर्वन २४ उनमान है ॥ पच्चीस
यो रिषी स्वरतूहा २५ छव्वीसयो बष्स्वरन २६ वहुरि सत्ताईसयो म्रगराज २७ उ
चार है ॥ अठ्ठाईसयो सुपारवती २८ उतीसयो सारस्वती २९ वहुरि तीसयो सुना
म प्रजापति विचार है ॥ तीस हू ३० महूरत मूल एते नाम है कवल पर असलेषा
असलेष उलटा गतार है ॥ इहि प्रकार आगे मुनि कह्यो विचारि के तस सोऊ मत
शंभुदास समुझि भाषा विस्तार है ॥ १०६ ॥ इति मूल असलेषा घात म्रजा ॥ रसिक छंद ॥ मूल
रति प्रथम १ दुरतिय २ ॥ घट ६ वसु ८ नव कुह ९ पुरतिय ॥ वसुरस १६ ति
तनय २ पुनि कुइहि विधि सपत सुगुनिहु करहि सकल कर छय एउ ॥ कुल नपु
सगाति लपउ ॥ १०७ ॥ दोहा छंद ॥ मूल वरस अंगनि विषै जो कहु सुत जनमाहि ॥
अंग असलेष विसेष पर अपन अपन आहि ॥ १०८ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ जरै है
घरी चारि की ४ पेड साता ७ ॥ तुचा आठ ८ साषा दसो १० नाउ पाता ॥ घरी पांच
फूले ५ फले षष्ट ६ लेषो ॥ भने शंभु इग्यारहा मूल ११ पेषो ॥ दोहा छंद ॥ मूल

इति मूलनक्षत्र भरनफलं ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मही रह अंगनि मैं दलफल मंगल देत। अवार अंग सब असुभ ए पान कुटव दारि ले
न॥ ११० ॥ इति मलत्र फल॥ लटा पाउ वेला लटी व्रह्म पुरुष तन लहे॥ जे नेम दा
न मै भंग त्रव हो इ हनि निरक गहे॥ १११ ॥ दोहा छंद॥ वा
पु जनन निकेरु नधन पुत्र जन भ्रम होवही॥ जे ठ हन हिंसा
त कराहि सील सुभग जो वही॥ मूल नहह वि चारि घरि सु जा
ति बिनि वघान है॥ हेम रतन धान्य धन प्रथी दे वदन दिहा
न है॥ ११२ ॥ दोहा छंद॥ कर हिंसा निज परान को जो नि
ज चहे सुभ भाग॥ मूल सार पस रवे लगनि अहिंसमान
विघदाग॥ ११३ ॥ इति चितीरन मूल फल॥ नगा छंद॥
महुर महुर पानी॥ पिव सिस गति ठानी॥ भुगत हिसु वि
लासा॥ मार हिल हरा दिवासा॥ ११४ ॥ नाराछंद॥ हास रास कच चल सुमति ए वाल
क गुन लेषि॥ भाजे पूरव घाट के जोति घसा गर देषि॥ ११५ ॥ इति पूर्वाषाढ नक्षत्र
फल॥ २०॥ नराच छंद॥ ७७॥ कृपाल दान वान छोट सत्त का मिजानिये॥ पति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

छहोइसुष्यनारिपुत्रतैवषानियै॥ धनीपुसाघरष्टवुद्धिवानसोइमानियै ॥ ने है
मुनीस शंभुसोउउत्रचाहमानियै॥११६॥इतिउत्राषाढनक्षत्रफलं॥२०॥ स्वकों
मर्ले। प्रभालसेस्त्रुवभक्त॥ तिहै॥ स्ववंसभूपहोइसज्जनाग्निवुद्धिपीतिहै॥ जसी
लरूपवामसत्यवैनवन्नीतिहै॥ भनैसुन्त्रवतारिहैहोइरिद्धसुष्यजोतिहै॥११७॥
इतिश्रभिजितनक्षत्रफलं॥२१॥ त्वसाबसवसाहिग्यानपुत्रमित्रश्रीतिहै॥ नरो
सुसत्रपहूकौजितैसदाचरातिहै॥ पुरानवेदजातहासजानारिहावुलातिहै॥
स्ववंसवमनीपुनीतधातारिवत्रतिहै॥११८॥इतिश्रवणनक्षत्रफलं॥२२॥ रोस
छंद॥ श्रारीविश्रावारमतिधनिकरूपानवालिष्ट॥ चलरिपुचंद्रिसुषपालन
रउतपतिनवतमनिष्ट॥११९॥इतिधनिष्ठानक्षत्रफलं॥२३॥ पंचालछंद॥
नग्नोर॥ कठोर॥ धीकेर॥ पामेर॥१२०॥ रत्यस्प॥ साहस्य॥ पवीन॥ सोलीन॥१२१॥
धारीछंद॥ सर्ववैरि॥ उन्नहरि॥ सत्रभिष्य॥ चिंहलिष्य॥१२२॥ इतिसतभिषा
नक्षत्रफलं॥२४॥ हारीतछंद॥ इंडीनिजीतै॥ वैरीसुनीतै॥ सर्वेकलाही॥ भिषा
सजाही॥१२३॥ धीमछंद॥ श्रापूपजोवर्त॥ सोचातुरासत्त॥ सैपूर्वभाद्रि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

या सेयुनै लेरिसे ॥ २४ ॥ इतिपर्वभाद्रपदनक्षत्रफलं ॥ २५ ॥ वेचलाकराणं ॥ २५ ॥ वेस
आपनै विपेसुहारसोभवानधर्म ॥ २६ ॥ माफिकेसरीरलाकराह सर्वकर्म हेउदार
और पीरको हरेवडाइ दीन ॥ जाहिरासवेजहानउत्रभाद्रचवनेचीन ॥ २५ ॥ इतिउत्त
भाद्रपदफलं ॥ २७ ॥ दविलीकहैसुसीलवुद्धिताखुबोचधान ॥ थ्रहर डेपाश्रथी
न है नवीनवुद्धिवान ॥ रेवतीनछत्रकेरचिह्नसवयाउधहै ॥ बीसआठहरिहनेर
मासधाम्रुनेफ्रगाहे ॥ २८ ॥ इतिरेवतीनक्षत्रफलं ॥ २८ ॥ इतिश्रीमत्परितसिराम
जश्रीप्रभुविरचितायांजातिपरिसिधुहिंतीयचंद्रादवश्रप्टविंशतिनक्षत्रफलवर्ण
नमेकोनविंशतितरंगः ॥ २९ ॥ मतिकाछंद ॥ हैसुसीलपुत्रमित्रतेमरा ॥ नी
केस्वादनीकतासुकोकहा ॥ चंचलाकहुहिमेकरानरा ॥ चिह्नयोविकुंभजोग
कोधरा ॥ १ ॥ इतिविकुंभजोगफलं ॥ १ ॥ वैनचंचलाकरूपवानिधी ॥ वानिचि
तकोप्रसंनवोविधी ॥ आनदीहहवलुधर्मनीतहै ॥ विप्रपंनहोइजोगधीतिहै
॥ २ ॥ इतिप्रीतिजोगफलं ॥ २ ॥ साहसीकहुहिमानिकेविषै वागवावरी नि
श्रीतियोलिषै ॥ हैविरापुहानिलालवुद्धिया ॥ ९ आयुष्मानभेदबुद्धिपा ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
१०२

॥ ३ ॥ इति मृत्युभवनजोगफलं ॥ ३ ॥ मालती छंद ॥ आचारी गुनी रघुवीसा चौजान ॥ गोरी लौं भागी लौ सौं ताकौ मानौ ॥ गंभीरो जस्वी लौ सौ भोगी है ॥ ४ ॥ भा ग्यशंभु जाए नाचि भूहै सो ई ॥ ४ ॥ इति भाग्यजोगफलं ॥ ५ ॥ दोहा छंद ॥ बाहुर उत्तर देनमें मनमति दोह पक्काति ॥ गहनप हिरपो साधवडु सोनवानि ताकन आ ति ॥ ५ ॥
धीरा तिरहि शुनि जा निये उपजे सो मनजोग ॥ भोषा शंभू कृत विषै इनिल हनु तनो ग ॥ ६ ॥ इति भौमनजोगफलं ॥ ५ ॥ चामर छंद ॥ राम हो सर्व अंग मध्यमा स्वकेन प केंद रोग वृद्धि रूप दीह मुख्य वेनये ॥ धूत कर्क चाप्य यांग दीह डाडि देतये ॥ हे प धडिनैनपन्न अत्रि गड गंतये ॥ ७ ॥ इति शत्रि गंजोगफलं ॥ ६ ॥ दोहा छंद ॥ सा रनसु पउनसा हमय पचातु रकलास्व पमे ॥ परउपकारी धर्मधियजन महि लोग लुक में ॥ ८ ॥ इति सदमजोगफलं ॥ ७ ॥ तोमर छंद ॥ मतियंत हानि प्रवीन इरवार सिध्दसुलीन ॥ परपीर हारि हि होइ ॥ धृति धारन म्रलुलोइ ॥ ९ ॥ इति धृति जोगफ लं ॥ ८ ॥ सतकामि विघ्न विनौहि ॥ तनरोग पंड वनौहि ॥ इमि भाग्यजो तिषलोग ॥ जन्म जौ०र०
१०२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मेसुसलहिजोग ॥ ११ ॥ इति कलजोगफलं ॥ ८ ॥ परकाजषद्धरनग्यान कुटिलीकले
सिवधाने ॥ पुनि हाइलोभिलकोधि ॥ गतिगंडजोगप्रसौधि ॥ ११ ॥ इति गंडजोगफलं
॥ १० ॥ परवीनउ द्रिमरदं ॥ पुनिवल्लसग्रहसवं ॥ परलेनदेनप्रवीन ॥ फलवृद्धिजोगसु
लीन १२ ॥ इति वृद्धिजोगफलं ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ लक्ष्मीधिरतारुग्यह वासुगेरा
कौतुकमे ॥ धुवा जोगगुनयह ॥ इसहद्दिसाकीरतिप्रगट १३ ॥ इति ध्रुवजोगफलं ॥ १२ ॥
हाइनिरदइगात ॥ क्रूरनजरिसयाराहत ॥ जन्ममरीनवैघात ॥ मिथ्यापसियापातकी
॥ १४ ॥ इति व्याघातजोगफलं ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ रत्नकोपरख्य १६ ॥ हाइलोभनो
वसिद ॥ रागसासमेसुलीन ॥ हर्षनाहुजोगचीन ॥ १५ ॥ इति हर्षनजोगफलं ॥ १४ ॥
[illegible] ॥ कुलमे परदवहुहेसुमती ॥ रतनजननेत्रभियासच्यती ॥ गनहूपार
व्यासननौभनिधे ॥ फलवज्रसजोगसिजानिय ॥ १६ ॥ इति वज्रजोगफलं ॥ १५ ॥
परवीनसुसीलसुदारमती ॥ वंतुराग्रातिग्रधनिसासुवती ॥ इसहदिसासिद्धिसु
जोगिगनो ॥ सिधिजोगाहिकाफलहेइतनो ॥ १७ ॥ इति सिद्धिजोगफलं ॥ १६ ॥ वि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लुमातहि कीनहि मानकही ॥ अतिबोलतवैनकठोरसही ॥ विघनैपरकाजउपा
इकरी ॥ अतिचोरजनैव्यतिपातधरी ॥ १८ ॥ इतिव्यतिपातजोगफलं ॥ १७ ॥ दोहा
छंद ॥ मंदिरवरचववैडोनिधनविटघाइनितमान ॥ नीकिरहेनिसिष्टसुकरमिन
नैजोगवरीयान ॥ १९ ॥ इतिवरीयानजोगफलं ॥ १८ ॥ छमाक्रमावरिरहितनरमू
डोसाषिपियारि ॥ अलपञ्चकलिञ्चछीनवुधिजेनेसुपरिघमझारि ॥ २० ॥ इति
परिघजोगफलं ॥ १९ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ अतिमंत्रसास्त्रप्रवीनहे ॥ अरुइंद्रियाजित
लीनहे ॥ सोरहतइवेलगातहे ॥ सिवजोगयागुनमात्रहे ॥ २१ ॥ इतिसिवजोगफलं
॥ २० ॥ छ विगोरतासुसरीरहे ॥ जितइंद्रिकातगंभीरहे ॥ नरहोरलछनजानिये ॥ सि
धिजोगचिंहवषानिये ॥ २२ ॥ इतिसिद्धिजोगफलं ॥ २१ ॥ चरनकुलकछंद ॥ अप
नेकारजचतुरवनाई ॥ हासविनोदजुताहिसुहाई ॥ मंत्रहिकेवलसत्रनिजीते ॥ सा
ध्यजोगकेफलइरीते ॥ २३ ॥ इतिसाध्यजोगफलं ॥ २२ ॥ हे सुभलछनसुरूपसुभ
रूपा ॥ होइआपनेकुलकोभूपा ॥ हेसुभचलनताहसुभवोले ॥ सुभजोगहिकेएफ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लहीले॥ २४॥ इति मृगजोगफलं॥ ३॥ दोहा छंद॥ संगरवालतज्ञजीत नरसतवक्राव
लम्बंग॥ सितरुंग्रवा महह्यचेसदासुलाचिंकूमरतंग २५॥ इति मृगकजोगफलं॥ ४॥
मुक्तिकदाम छंद॥ मुक्ताहारीकहियेलछुताइ सवैसुसुष्वनिकोसुगताइ सुहोरलोति
लहानिललोइ सुद्रस्तजोगविषेनरहोइ॥ २६॥ इति छत्रजोगफलं॥ ५॥ सजुताछ
ं॥ प्रतिमानसंगमहावली॥ कपिप्रकृतिकोवुधिनिर्मली॥ कुलन्यायईइसमान
हे॥ फलईइजोगवखानहे॥ २७॥ इति ईइजोगफलं॥ ६॥ मंदिकाछंद॥ चेचलीक
हेढिनीति॥ नासनीकमूढप्रीति॥ नीचमित्रजीचधीर॥ वेष्टतीईनसुगीर॥ २८॥ इ
ति वधनिजोगफलं॥ ७॥ इति सर्वेनजोगफलसमाप्त॥ अथवकानफलवर्णनाम
मानिकाछंद॥ कामिलोकपावती॥ चातुरीवलीव्रती॥ सीघ्रचालिकोहवे॥ सालचि
ह धोववे॥ २९॥ इति ववकर्णफलं॥ १॥ सोरठा छंद॥ वलीविलासीसूर॥ कविमतिल
घुतासानिधी॥ वालवएगुनपूर॥ वुधिनिर्मलकोहोइनर॥ ३०॥ इति वालववर्णफलं
॥ २॥ कोमलवचनविलासि॥ वहुतमित्रस्वाधीनसूर॥ कौलवचतुरप्रकासि मर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रास०
१०५

निदीठसवमिलिचले २१ इतिकोनवकर्नफलं ॥ ४ ॥ दोधकछंद ॥ सुंदर नाजुकवु
द्धि प्रवीनो । निर्मलधी श्रुति तासुवषानो । वैनसुचातुरसीलसुबुद्धी ॥ कर्मसुतै
तिलकी गतिसुद्धी ॥ २२ ॥ इतितैतिलकर्नफलं ॥ ५ ॥ सूर सुधी रुपराउपकारी ॥ आद
रिसर्वविचारिजितारी । ह्वानिभलोसुघरानरहोई ॥ चिह्न कहैसुफलेगरसोई ॥ २३ ॥
इतिगरकर्नफलं ॥ ६ ॥ सर्वकलापरवीनवनाई । वानिजकर्मविषेसमुआई ॥ हैसुधि
साहसिलोसनमानी । वानिजकर्नहिकीगतिजानी ॥ २४ ॥ इतिवनिजकर्नफलं ॥ ७ ॥
हीरथलोचननीकमुषेही । बुद्धिकठोरसुनिंद्यरुचेरी ॥ मच्छसुनासकोरसरजा
ई । एफलविष्टिकर्नकराई ॥ २५ ॥ इतिभद्राकर्नफलं ॥ ७ ॥ मारवतीछंद ॥ बुद्धि
मयप्रियमही । सोपरवीनसुरै रनही ॥ सर्वगुनानिप्रवीनकला । जन्मप्रधीन
सकुनिफला ॥ २६ ॥ इतिसकुनिकर्नफलं ॥ ८ ॥ चौपईछंद ॥ अनाचारतनछीन
सुहैमति । चतुष्पदनिमहनेहकहाअति । होररोगपरमेहवषानो ॥ करनचतु
षपरकेगुनजानो ॥ २७ ॥ इतिचतुष्पदकर्नफलं ॥ ९ ॥ चंचललोचनजडमतिथा

जो०सिं०
१०५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ई दगाबाजअरुदुष्टसुभाई॥ मिथ्याप्रियकलहीअरुद्रोही॥ नागकरनमेंजोनरहोही॥
॥३८॥इतिनागकर्नफलं॥ ॥ अथकिंस्तुघ्नकरणं॥ धर्मअधर्मसुदोइ॥ एकैकरिगनिहोइ
॥ नामतीकसनहेत॥ कित्तुघ्नेफलयेत॥ ३९॥ इतिकिंस्तुघ्नकर्नफलं॥ ॥ इति
एकादसकर्नफलसमाप्तं॥ अथगंडांतफलवर्ननं॥ देवतिन्त्रयस्वानिमर्नि॥ गंडांतविवि
धिवर्नि॥ नामहिक्रमसोलीन॥ बापुथानस्वरलीन॥ ४०॥ इतिविविधिगंडांतफलं॥ ॥
अथगणफलवर्ननं॥ बोलनिसुंदरजाहि॥ विमलमतिकुलनिताहि॥ भोजनअल्प
करेइ॥ एफलहैगनदेव॥ ४१॥ इतिदेवगणफलं॥ ॥ परजुनिपठंदा॥ दुर्जदवमन
बलिवंतगर्वि॥ सुक्षदानीकक्रपालदर्वि॥ सुंदरासुमतिप्रतिपालजान॥ एचिंहमनु
षगनकेप्रमान॥ ४२॥ इतिमनुषगणफलं॥ ॥ गुदिलाकुटिलचितकठोरक्रोधि॥
अरुदीह साहसीकरिसोधि॥ कलहीसुपातकीइ६नीच॥ जनममेसुवीरगनकेजुवी
च॥ ४३॥ इतिराक्षसगणफलं॥ ॥ इतिगणफलसमाप्तं॥ अथ[illegible]वर्ननं॥ अभि
मानिहुविंपरचंडपुष्ट॥ क्रोधिसुहृदविरोधमित्रदुष्ट॥ परद्रव्यहरनहारोविसेष

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

फलएतेहोइजोलग्नमेष॥ ८४ ॥ इतिमेषलग्नफलं॥१॥ हैगुनीधनीसूरअभिमानीहो
य॥ अरुधीरसुरप्रियवानलीय॥ सज्जनसुभाउतिहिकरनिवेर॥ सुतहोइजोमनवृषल
ग्नकेर॥ ८५॥ इतिवृषलग्नफलं॥२॥ चंपकमालाछंद॥ भोगिलरालापुत्रबहुता॥
मित्रसुमैत्रैरीरघसूता॥ वीरहरैओरैमतिसीला॥ जुग्मविषैहोवैरसीला॥ ८६॥
इतिमिथुनलग्नफलं॥ भोजनपीयेमाधुरासी॥ चंचलमंत्रीधीपविलासी॥
शंभुभनैकर्कैगनयेते॥ जोजनमैजेजेनरलैते॥ ८७॥ इतिकर्कलग्नफलं॥४॥ सा
हसिभोगीअल्पसुहोई॥ संचतिछीनोपैकटिसोई॥ गर्वेलमंराज्यप्रियघानो
॥ सिंहविषैएतेफलजानो॥ ८८॥ इतिसिंहलग्नफलं॥५॥ दोहा॥ सुषइसेन
सुषकरिमानमदनकलापरवीन॥ जनमैकन्यालगननरएगुनतिहिलीनली
न॥ ८९॥ इतिकन्यालग्नफलं॥६॥ गुनीधनीविउपारमैपरवीनोधनिसोभि॥
संग्रहसबधनधान्यनरजूकलग्नफलसोभि॥ ९०॥ इतितुलालग्नफलं॥७॥ सु
भेछंद॥ छनक्षसंनमहाछनेराबिषा॥ ग्रहहिंग्पानिलसराज्यदोषिया॥ सु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

समुझै सबरे सु विचारै॥ फल सुख सिके वे अवतारै॥ ५०॥ इति तुलीनलग्नफलं
॥ ६॥ सोरठा छंद॥ नृपति सभा मति वंत॥ साची पैज सुलीन पुनि॥ चापलग्न जन्म
ते॥ धन विद्या मे चतुर अति॥ ५१॥ इति धनलग्नफलं॥ ९॥ दोहा छंद॥ तन कठोर मन चा
रसा बहु सुत निद्रा क्रीड़॥ लोभी निरदय नीर प्रिय मकर लग्न फल लीय॥ ५२॥ इ
ति मकरलग्नफलं॥ १०॥ मोदक छंद॥ कुंभ लग्न का मिल मो हित लक्षन॥ दंभिल सर्वभ
चै ति हिमत्तन॥ है चित्त राग नो फल कुंभ हि॥ जातक रे बिधि रे क बिशंभ हि॥ ५३॥
इति कुंभलग्नफलं॥ ११॥ दोहा छंद॥ प्यार भ्रातु है छोट मन बहु तन बिचरा लीन
॥ रमन जतन चल चित्त है होइ मनुज जो मीन॥ ५४॥ इति मीनलग्नफलं॥ १२॥ इति
द्वादश लग्नफलम्॥ अथ नक्षत्र फलाकार नक्षत्र फल वर्नन॥ सूरज पुरु वन
छत्र करि बहुत जानिये तत्र॥ नर आकृति रविचक्र लिख पुनि लखिये रावन क्ष
त्र॥ ५५॥ दिनकर के नक्षत्र को जन्म महि लो गनि लेहु॥ अंग अंग मे ता सु फल
सो परि क्रम कहि देहु॥ ५६॥ सुघट छंद॥ सिर तीन ३ नक्ष न सु है सुघनी न रु ३ से ३ फि

रिकंधनिदो २ भुजमेमब्रत। विवहापुनि २ पंचहैदे ५ इदनामिहि १ लिंगविधेर
क। जाघनिछै २ धरू परदोडनिमेदक। एक १ नछत्रसुजाचितराफुनिधोसुक
हाकरू। कमपेहिलिघोयहचक्रहि अंगनिअंगनिकोफलजानिलहोवस॥ ५७॥
भनिकाछंद॥ छत्रचोरुद्दर्ततागुसीसरे। श्रीयमी
तआपुवंसशीतहे। सीसपेचकलगिरतनकोजरी।
सीसवेधसीतरिहकीधरी॥ ५८॥ इतिशिखानक्षत्रफ
लं॥ ११॥ भोजनमीठहथेरि। श्रामनमे
जसुदेसभनि॥ विहसतसुषगानिसेहि। भोगीधनी
नछत्रसुष॥ ५९॥ इतिमुखनक्षत्रफलं॥ १॥ दोहाछं
द॥ सुरचलरसतावंनीआभपनिजवंस। गजन्त्र
सवारसुहोइनरपरेनवतजोअंस॥ ६०॥ इतिकंधन
क्षत्रफलं॥ १॥ चित्रपदाछंद॥ सुरसनिहुरआरी रूच्यविदेसहितारी। गर्विल जोघसिं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

उऊलसेद ॥ वाऊनछत्रजुहोई ॥ ६१ ॥ इतिभुजनक्षत्रफलं ॥ ७ ॥ रत्नपरिछकजानो ॥
पेमतिहर्नवधामो ॥ साचमृषासननेह ॥ हाथनछत्रपरेह ॥ ६२ ॥ इतिहस्तनक्षत्रफलं
॥ ५ ॥ आपुकलेत्रपहोई ॥ कीर्तिसुसीलकलोई ॥ सावनिचातुरजुई ॥ रिक्षहृदंगति
सुद्धी ॥ ६३ ॥ इतिहृदयनक्षत्रफलं ॥ ८ ॥ दोहा छंद ॥ सकलकलनिपरचीननरसहरहे
इकपूत ॥ हानसुधर्मउदार ॥ चित्राभिनघतफलचूत ॥ ६४ ॥ इतिनाभिनक्षत्रफलं ॥ ९ ॥
हाकलिछंद ॥ कोविदकामकलानिविंध ॥ गीतसुन्त्रस्पनिगपात्रासिंध ॥ आत्तुनक्षत्र
गुहस्यपरे ॥ एफलघोभुजताइधरे ॥ ६५ ॥ इतिगुह्यनक्षत्रफलं ॥ १० ॥ हेसविदेसनिभ
समझे ॥ धूरतमिथ्यनिबुद्धिमझे ॥ हेमनसुद्धकचंचलए ॥ जेयपतंगहिकेफलए
॥ ६६ ॥ इतिजंघनक्षत्रफलं ॥ ११ ॥ सोनरअल्पकधर्मनिहै ॥ सोधिकरेक्रिषिकर्मनि
हे ॥ चाकरवा ॥ परिवत्रतिलरे ॥ हेजगक्रितिरिनेसपरे ॥ ६७ ॥ इतिचरननक्षत्रफ
लं ॥ १२ ॥ इतिरविनक्षत्रफलसमाप्त ॥ इतिश्रीमत्पंडितसिंगात्मजश्रीशंभुविरचि
तायांजातकाभिधानहिता ॥ चरदादिभवननरादिफलप्रकरने विंशतितमोध्यायः ॥ २० ॥ चर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नृपु नवछंद॥ लगनविचारकरौअवभाषी॥ जिहिंविधिग्रंथानमैरेसाषी॥ ति
नकद्वादसभाववीसेषी॥ पावहुभावसुजोतिषदेषी॥ १॥ चक्रतुहारहिंभांति व



नावै॥ द्वादसकोठाकोगानिल्यावै॥ षेचरवासैसार
गदेषै॥ ग्रंथकहेसोशोभपेषै॥ २॥ क्रमकरिधरियै
रासिदुवारा॥ ग्रहअवलोकिफलाफलसारा॥ दीजुचं
द्रमानवग्रहमाही॥ षेचरऔरपीछहीआरी॥ ३॥
दोहा छंद॥ रजनीकरअरुभासकरइनेसोवध्योसरी
र॥ होइसकलफलरनहितेकहैजोतिषीधीर॥ ४॥
सोरठा छंद॥ रूपवरनसवचीन॥ जसुसुभाउअरुरूपा
ननिधि॥ एलहुनसवलीन॥ सुषदुषसारहसतनसद
न॥ ५॥ चौपई छंद॥ सवग्रहजोलगोनहिकोरेष॥ होइजोनग्रहवलीविसेष
॥ आपनेकुलमेनरपातहोइ॥ वैरीमारनहैनरसोइ॥ ६॥ परेसौम्यग्रहलग
नहिमाही॥ कुलमेंतिहिकाभूपकराहि॥ दलिदकुरूपदुषारीसोर॥ क्रूरलग

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

केजोगुरुहोइ ॥७॥ हरिगीताछंद ॥ सुभषेटसप्तमलगनतेजो परेअष्टम जहां ॥
पापीग्रहासंगनपरेअरुपरेक्रूरनहूहां ॥ वहुविधिनिकरपातिदंडपतिअपवे
रसाचिंतवषानियै ॥ तनरोगिपापुनहोइनरइहिंभांतिलक्षनजानियै ॥८॥
दोहाछंद ॥ चिरजीवीनिरभयसुचितअरुसुसीलसुमतीय ॥ सुभग्रहतनमंदि
रपरेमनप्रसंनगुनलीय ॥९॥ इतितनभावविचारफलसमाप्त ॥ मंजुताछंद ॥ रवि
आदिदेग्रहजानियै ॥ फलभिंनभिंनवषानियै ॥ वहुप्रकतिअनाकृतिरूप
है ॥ लिषधन्विरजोतिषिनृपरै ॥१०॥ अथलग्नस्थितग्रहफलवर्ननं ॥ तनसा
मचातुरसूरहै ॥ सुभकेसकुंचितपरहै ॥ पुनिसोउछमकेअंगहै ॥ रविलगनगो
इगधिगहै ॥११॥ इति[illegible]फलं ॥ तिहिंअंगरहोविकारहै ॥ पुनिस्याम
कुंचितवारहै ॥ सुभनीवकवचनविलासिया ॥ ससिलगनकोफिरगासिया ॥
॥१२॥ इतितनोचंदफलं ॥ ॥ अग्निछंद ॥ तनकठोरगोरवरनचित्तप्रस
तिअहै ॥ हिंसकसुरउदारकलोचनअरुनहै ॥ भविलनिरअपारहैबुजत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नदे परैं। शंभु भाव हि मंगल मंगल कों करैं १३॥ इति तनो भौमफलं॥ ४॥ चौपही
छंद॥ कलनि विलासी अरु परवीन॥ कोमल गिरा राजसी लीन॥ सिर विलंद छु
विस्याम सरीर॥ एतं फल के तन बुध गीर॥ १४॥ इति तनो बुधफलं॥ ५॥ सुबरन
सवर्न है तन छोट॥ सुधी महीना हीं दुष चोट॥ कफ अधिक॥ उदार मति मान
॥ पिंग नयन जो गुर तन थान॥ १५॥ इति तनो गुरफलं॥ ६॥ चुलिआला छंद॥
प्रकृति वात अस लेष मा नील मेघ तन स्याम॥ वषाने॥ कामी अरु अज्ञा
न भुज कमल नयन अभिराम॥ सुहाने॥ हाथी ऊपर चाढि चलैं नैन वक्र अ
रु वीर॥ सरीर॥ लगन स्यान सितो परै अगुन रन फल गीर॥ गंभीर॥ १६॥ इति
तनो सुक्र फलं॥ ७॥ चौवोला छंद॥ क्रम चपल अरु दुर्वल देही॥ वात प्रकृति
लोचन पियरे जटिल सीस कौ गनियें तेही॥ नील रंग सुन घलि यरे॥ ताके
दसन होइ अस्थूला॥ ऊंचे डील निहिकर अरहे॥ परे सनी चर जो तन मूला॥
शंभु दास फल एन कहे॥ १७॥ इति तनो सनिफलं॥ ८॥ इति तन भुवन ग्रह फ
जो ०फसे
१८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लसमाश्री ॥ चौपई छंद ॥ लागैनवांसनाथजसहोइ ॥ तेसीभरतिजानिये हौ
सोइ ॥ ससिनवांसपतिविरचसमान ॥ औरग्रहनिकेउनमान ॥ १८ ॥ सतोगु
नीहेगुररविचंद ॥ जानितमोगुनिसमनिछितिनंद ॥ बुधभृगुतेसुरजोगुनि

गुर	सूर्ज	नंद	सतगुनी
सनि	मंगल	०	तमगुनी
बुध	सुक्र	०	रजगुनी

होइ ॥ कहौत्रिसांसभाषिकरिसोइ ॥ १९ ॥ सूरजइंद
कानतेंअंग ॥ करतप्रथमसबचिंहप्रसंग ॥ सिरदृग
नासाश्रवनकपोल ॥ कैरिभिनमुषचिबुकगडोल ॥ २० ॥
मनमोहनछंद ॥ भुजरंउकंठसुकंधहिय ॥ उरुकुक्षिपेटसुनाभिलिय ॥ इष
कानदूसरजानिकरि ॥ कहिशेषचिंहविचारिधरि ॥ २१ ॥ सोरठाछंद ॥ टेडीलिं
गअंगगुदाजाघपिंडुरीपाउ ॥ इषकानतौसरगनोविश्वपरदहिनेवांउ ॥
तिलललहसनव्रनगरुरवतपापग्रहाकराइ ॥ सपनेअपनेअंगमेसोम्यग्रहा
नसाइ ॥ २२ ॥ सैनिकाछंद ॥ कुषघाउभानतौलगेमुष ॥ पस्वकरिलातकरत पत
गेतहा ॥ सींगघाउनीरजीवतेकहा ॥ बुद्धकैरतातजोकरेजहा ॥ २३ ॥ दिव्यस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
१०८

स्वोते किअ गिमेजौ भमिपुत्र अंग त्यि चिंहू कौ कुरे बुध भौम मंद पौनते अरे जौ
पद्यान भूमिमिं नद्धे रहे २४ होर क्रूर षट सत्र के घरे लास आदि यो निलेत हाके
रे आपु आपु अंग धातु यो षता चिंहू एक रसु जानि यो मता २५ बुध तीन के
चार समंत हू जो पराइ संत्र के निकेत हू आपन स्व अंगे अंग अंग महि हो लैकर वुनो
निकेरि वुद्धि हो २६ मेष रासि कर होइ चंद हू केर कुंभ केर होइ जा कहू ताष मा
न सुक्रम कवि भनै सो कमाइ पाइ ना पिता धनै २७ चारि केंद्र मा अपादि षेच
रा और यो पराइ धाम दूसरा तीन हू पनै इलिद्रि है नरा होइ अंग तासु को अपंक
रा २८ जौ कहू पिमूर्ति केसु पाच ये चंद जीव षेट होइ साच ये इंद्रि पाजि
ती कवु द्धि तापसी तासु के रियो प्रकांति राजसी २९ तोमरछंद गुरु केन्या तु
ल रासि मेष वृष के भाजु जानो चंद रासि वृसी कहु ष्टि सुभ ग्रह को जानो सुंदर
वौर उदार द विलोक रमस समेता चारी क आनंद गनित चातुरेता ३० तो
टकछंद छठे हिमाकर भौम सुता केवु ध कुज रिपु ढौर न तत पर चोरी करन मे जा०सि०
१०९

फल२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चाहु रहरन धन औरे ॥ ३१ ॥ अरिल्ल छंद ॥ कर्क हि के सनि जन्म तहो इय ॥ मकरि
के मारहि नहिं न सोइय ॥ संगाति जो तानि केरि करै अरु ॥ रूवतरे दा वि के सुभ रैन तु ॥ ३२ ॥
कुंभ अरु मीन रु ज्युग्म वृषानहि ॥ पाचहु पाप ग्रह रहे निधानहि ॥ कर्म तु वृष मक
रै मन मानिहि ॥ गाज परै मरि जाइ सुप्रानिहि ॥ ३३ ॥ दोहा छंद ॥ जन्म लगन तें सो
म्य ग्रह होइ अष्ठ पे गेह ॥ तीरथ करै अनेक पुनि मुनि समान गनि लेह ॥ ३४ ॥ स
हज जनम चरु केंद्र मे होइ गुरु बलसि देष ॥ नृपति वंस मे होइ जनि करे कुकर्म वि
लेष ॥ ३५ ॥ तोटक छंद ॥ रवि मंद समेत नछिती पृधरे ॥ पुनि जो इस पै घर चं र प
रे ॥ महि नहिं न सुजनम वासव रा ॥ बुध छीन कलेवर होइ नरा ॥ ३६ ॥ ग्रह पापि
हि अंतर चंद्र रहै ॥ सनि सातम मंदिर मांझ अहै ॥ विकली तन कास य स्वास
चढे ॥ पुनि गुल्म प्लीह क रोग बढे ॥ ३७ ॥ ससि भूरज के नव मास गहै ॥ रवि चं
हारि के नव अंस चरै ॥ इक रासि परे जब होइ तरू ॥ नाल छिन वेस विहीन करा
॥ ३८ ॥ घर द्वादस घर मंद्र समहू ॥ पुनि हूर मंदिर आवित हू ॥ ससि भुत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मंदगनेोकमही॥ वलिवातुलितेजप्रतापनही॥ ३९॥ ग्रहपातादि पाचयुता
जोवेषे॥ पुनिग्पारहिमंदिरसोभादेषे॥ नरकर्नविनासकरैसुतेवे॥ पुनिसा
तयहंतत्रसोमहवे॥ ४०॥ धनवोरहिलयहिंतेजुकहा॥ भृगुनंदनासिह क
पुत्रतहा॥ पुनिजोरजनीकरहोहिपरै॥ नरवेअतिकाननिरोगकरै॥ ४०॥ दो
हा॥ लगनास्थितयहजोरहैवकै॥ रिपिनिजोग॥ जेहैयहताकेपरैतेसे
ईसंभोग॥ ४१॥ इतितनभावविचारफलसमाप्ता॥ ॥ जोतिषसागरसारदिके
होऋवधनभावविचार॥ सोभाषाकरिशंभुकहजथामतिअनुसार॥ ४२॥ के
कनिकधातुक्रयविक्रयारतनभडारभंडार॥ उहिमकोपुनिजानियेइविकारि
धनआगार॥ ४३॥ चौपईछंद॥ सूरजमंगलमंदरसमेता॥ परहिकहू
जोधनसंकेता॥ छीनचंद्रमाकेकहूदेषै॥ करैनिरधनीताहिविसेषै॥ ४४॥
होइभोमिसुतससिधनधामा॥ अरदपहिसनिनेनप्रनामा॥ कैरविसुतधन
मंदिरमाही॥ बुधग्रहदेषेंलहकाराही॥ ४५॥ सूरजधनघरजोरपराई॥ हाइभान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुतके रिरहाई ॥ सुभग्रह अतिधन वृद्धि विनासे ॥ इहि प्रकार फल शंभु प्रकासे ॥ ७६ ॥
हाइ वृहस्पति धनघर मांही ॥ सौम्य ग्रहनि की दृष्टि पराही ॥ हाइ वृद्धि धन अति
सासि इच्छा ॥ बुद्ध लषत हे धन नच्छा ॥ ७७ ॥ धनघर मा अछी नसा ति हाइ ॥ पुनि द
षे लोचन बुध सोई ॥ पुरिष निही कोइ च्यव विनासे ॥ औरवमा इसुन यो प्रकासे ॥ ७८ ॥
धन पंद्रि मे दुस्सापे षा ॥ बुधषे चर कहु लोचन देषा ॥ इनि घटनि हे धनी सु
होहि ॥ जो निक्ष सागर मै करहू सोई ॥ ७९ ॥ दोहा छंद ॥ धन अति दे इव हाइ के जे सु
भग्रह सानिहार ॥ यह धन भाव विचार हे शंभु कहा किचार ॥ ८० ॥ इति धनभाव वि
चार फल नमा ॥ मे या चौ का रज तन मन यत्र मारि कउपजी वि ॥ इनि वात मे ती
सारभव न वुधजन जानि सुलीवि ॥ ८१ ॥ हाकलि छंद ॥ एन्च्यां सहे सहज घरा
हृष्टि निसा पानि भा मकरा ॥ मे या विद्रि निकहे जिनने ॥ सुभग्रह डाइ हे करति
तने ॥ ८२ ॥ भौम द्रष्टि तन लग्न लिपे ॥ भ्राता को ऊन हि ति पे ॥ जीव लषे जो
सुक्र ग्रहे ॥ नीव करेव इचिहृ रहे ॥ ८३ ॥ दोहा छंद ॥ देषे मंगल वुद्ध कोर विलु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तह रिपु करहि धाम सहज ससि भान कुज लहुर जिये को नाहि ॥ ५५ ॥ सौम्य सो
म्य भेय निसहन करपया न नि जरासि ॥ सम यल हुर नि जिये जो जिय न्तप स के
मितासि ॥ ५६ ॥ मातापर पापी परे पुनि लवि पापी जो म्य ॥ भेया हो हूनते जि
ये सहज वृद्धि वे सौम्य ॥ ५७ ॥ पापी ग्रह को ससि दिषै तो जे भय नपरा हि ॥ जन
नी तु रत विनास कर घाति या जक सुभ कारि ॥ ५८ ॥ इति सहज भाव विचार फल
समाप्त ॥ इष्ट मित्र गृह्य मम्य कारु चौपर उहि मन्त्रि ष्य ॥ मह न पडा रिक इ ने
हि करि चौथ भवन विधि लिष्य ॥ ५९ ॥ सुलक्षन दोहा ॥ सुभ घेट तत सुम रि
द्धि है ॥ ग्रह सुभ सुभ कवि द्धि है ॥ तनभवन में गुर जो परा धन के सुधा
म सनीचरा ॥ ६० ॥ तन हा इसे पापी वसे ॥ धन धाम सौम्य कथ हलसे ॥ घरस
हज राहु पराइ या ॥ दिन दस जननी छाइया ॥ ६१ ॥ चित्रपदा छंदा ॥ स प्तम धा
म व घाना ॥ पाप ग्रहा तिहि थाना ॥ जो नर जन्म प्रकासे ॥ सो परिवार हि नासे ॥ ६२ ॥
इति चतुर्थ भाव विचार फल समाप्त ॥ ॥ दोहा छंद ॥ बुधि में त्री विद्या गरभ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लग्नतासवन्नपनीति ॥ शंभूहालवधानिवहपंचममेंहिरीति ॥ ६३ ॥ नाममहं
दा ॥ कहुजन्महूसरतीज ॥ पतिलग्नकेरसुलीज ॥ पहिलेसुवालकहोइ ॥ तुरजं
जहुरियासोइ ॥ ६४ ॥ सुभदृष्टिपंचमधाम ॥ सुभकेपरेपरनाम ॥ सुतसुभारिते
सुभहोइ ॥ चसुभकेसुसुभतौ ॥ ६५ ॥ नाराचछंद ॥ जोसुतस्वामिलग्नेसुत
६ भावे ॥ सोपुनिपुत्रनिकोविरधावे ॥ पापिविलोकतसंचतिनासे ॥ केसुतपति
घली ॥ सामिनासे ॥ ६६ ॥ लग्नद्वितीयपतीयसुपावो ॥ होइकहुसुभपेटकेसा
चो ॥ चोपरिजन्मद्वितीयगहाऊ ॥ तौसुतहूउपजेप्रथमाऊ ॥ ६७ ॥ रोलाछंद
हितभावधरहोइ ॥ भगुभूमिपुत्रअरुहोइर ॥ होइउत्लाहतसुतसुतशंभूभाव्यक
विंद ॥ ६८ ॥ सुमुखीछंद ॥ ग्रहजितनेसुतग्रेहपरे ॥ पुनिजितनेग्रहकेनजरे ॥ सुतति
तनेतहहोइरहे ॥ अवरतसाउसुताहूकहे ॥ ६९ ॥ रूपकछंद ॥ सुक्रकुपरेसुत
वामहोइतितनेसंताना ॥ सुभतेपुत्रवधानअरुसुतकेमाजाना ॥ संख्यानवांसस
महिदुगनजोसुभग्रहदेवे ॥ पापदृष्टिसुतनूनतउपमिन्नतसुतपवे ॥ दुष्टक

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रासिहै सुतभवनरोगीग्रहजुरहैजुकानि। जोसोम्यवेट रेमें नहीविनुसंचलितहो
वैमुक्ति ७० भृगुसातयहसचेदपरतज्ञरुचौथेपापी। एग्रहलेअक्षर होइ
वंध्यवासुतयापी। पाचैसासिभृगुदिषिवहूतसुतसंजुतहोई। सासिहिलहेजोभू
रपुत्रंदासीकरसोई। होचेसुसुक्रसासिरासिकेसुक्रसमिकेलासियहा। कन्यासुज
नमशंभुवरहसातपाचगनिलेतहा। ७१ जोसासिपंचमभावहोइरविसुतको
रासी। रविभृगुनजरैतातिजनममरनाकारवासी। सनिघरजोसुतभवनचुहलु
जरविकीदृष्टी। निजजायाकेपुत्रऔरपुरुषरितेनिसी। होईनवांसपाविद
करपुनिपापीकेरीनजरि। नासैसुगर्भजितनेतहाजोरप्रष्टिसुभघटकरि। ७२
मारठाइर सुतघरभोमविसेष। नासैसुतनिकरजोवरै गुरुभृगुकेजबवोरषपुत्र
निधनतोध्रुवमहो। ७३ इतिभवनभावविचारपंचमभावः। विलासंकाचार
वेरोगवुतासितकरम। मासनिकोविस्तार। षटमधामविचारिये। ७४ दोहा
रिपुकेघरपापीग्रहाकेरहारजोदिइष्टि। तोवरिनिकोनिधनहेहेइहिप्रकारकाशि

जोन्ली
११२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लि॥७५॥ झूलनाछंद॥ सत्रवेंभवनसुभवेजुतहोइ केपेनहाइहिसुभकोरि
सोइ॥ तोपेनहासनकीवुद्धिहीकोकरभांतिनिहिभांतिजोइ॥ सुनघरपुत्रनिरोग
हीकोकरेसुखनभवारिरोगहरेई॥ इहिभांतिभाषतहैंजोछठेधामरेवापु
सोजानिलेई॥७६॥ इतिषष्ठमभावविचारफलसमाप्त॥ दोहाछंद॥ रविवि
चारविस्तारत्रियजोचाहुअहोपार॥ सातहसुघरचनासरनसप्तमधामवि
चार॥७७॥ चंचलाछंद॥ तेउमासजाधवामहोइजेम्भवेसुकाल॥ होइहंसइ
धवानसोम्यघरजोविहाल॥ येहिजोगजोजनेसुहोइवगिरेविचार॥ शंभुवि
हूमाधजानिलेइजोतिषीनिवार॥७८॥ सोम्यरासिसोम्यजुतवोपिसोम्पह
हिहोइ॥ नारिभावमेपरेसुनारिसुंदरीकसोइ॥ जाधवामजोरपापतोइभ
गानियाउ॥ पापसोम्यजोसमानजानियेसुमिश्रभाउ॥७९॥ दोहाछंद॥ ल
गनवारहेसातयेपरेभानउराग॥ होइएकलुतएकानियशहिविधिचिंह
विराज॥८०॥ नीलचक्रपर्कछंद॥ सातयमेंरिसुकवरेसुगउजतसमे॥ लग्न

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम० ११२ परैसनिजोनरबंध्यकेहै नमै ॥ जौसुतभावहिकोअधवलोकहि सोअधग्रहा ॥ पू-
रनतोवंध्यवागानिलीजरहितहिमहा ॥ ८१ ॥ सातयद्वादसक्रूरजु यात्रयचंद्रप
रै ॥ कामिनिपुत्रविहीननताकहूजन्मधरै ॥ भौमसनीचरसोनदवोगसुतहि
ममै ॥ होइलषत्रियभावत्रियाविभिचाररमै ॥ ८२ ॥ हैभ्रगनंदनकेबुधसातयेँ
भावविषै ॥ तोपुनिछीनकरैसुत्रियानिजुचिन्हलिषै ॥ जोसुभवचवलोचनहै
ष्टिकरांइकहै ॥ तोकृत्तिवधिकीरोनियरानसमानतहू ॥ ८३ ॥ सुक्रससीगुरुसुद्ध
ग्रहा त्रियभावपरे ॥ केपुनिरंग्रहलोचनहीकरिहैहितकरे ॥ तोत्रियपावसग्नी
गुजियेसुकरैकलहा ॥ चिन्हविचारविचारितहाकविसंभुकहा ॥ ८४ ॥ लग्न
विषैग्रहपापियरैससिसप्तघरा ॥ तोत्रियजोहिजियैनहिहैसरिवर्षनरा ॥ लि-
त्रयरेभृगहोरसुस्वामिदिनेनदिषै ॥ तोवहुनारिनिकोपतिपूरअनेकलिषे
॥ ८५ ॥ भगतसातयजोत्रियसाहिवियोगकरै ॥ मंदहिदेनजियैसुअतंसुभवि-
षुधरै ॥ राहुपरैसत[illegible]सनिच्चाठयभौमछठै ॥ नारिजियैसपनेनहिहैतौवहुनारि
नठै ॥ ८६ ॥ इतिजातकाभावविचारपत्नममागा ॥ सारदाकृत ॥ रचनागिरिगढ ज्योतिः
११२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कोट। सत्तञ्चारनलज्जानिये। छनिवातनिञ्चाठोट। ञ्चोठेभावविचारिये। ८७॥
जैसनिवेञ्चेञ्चेन। देखलोचनचंद्रमा। लेषेनसुभग्रहनैन। मरनावेपदकजानि
ये। ८८। दोहा छंद। रिष्टाध्यायनिर्जानपुसप्रमपंचमधाम। जोतिवसागरदु
रिकहनुरोभसोपरिनाम। ८९। इति श्रीसुभभावविचारफलसमाप्त। ८। भूमि
क्रियामुनिञ्चानिपुनिभागयतीलञ्चस्जान। कथाश्रवनतीरथगावनएनमये
ञ्जस्थान। ९०। जोरसदनसवछाडिकेकेवलभागपसुहाव। ञ्चाअरवलजनको।
जनवसोञ्चनिनमयेभाव। ९१। चुलिञ्चाला छंद। हेकुलीनवधतीमसपंडि
तपुनिगुनधाम। लेलामा। दरसनीकवकनावदूरिलवेभागपरिनाम। प्रनामा
मूरतिकोसासिरो। जोस्वामीड्गञ्चरूरेष। विसेषी। अपनेसेसकुवेसमेध
निजगुनिकातिहितेष। ञ्चलेषी। ९२। दोहा छंद। फूनुसमसिरविभूतनय दो
भागपद्यजोर। अपनेकुलमेभानिपतितिहिसमाननहिञ्चार। ९३। परभागप
घाडेञ्चयगहसोभ्यग्रहनिवोदोठि। छिनिमेछुञ्चप्रवलञ्चजिरनेमेदहिपी। न

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
१२४

हि॥८४॥ तनतें अघवा चंद तें अहै सुनमयो धामु॥ भाग भाव सो जानिये शंभूक
ह परिनाम॥८५॥ तंदिका छंद॥ भाग्य भाव है सम न स्वामि के पिता सुवैरि है
हि होत जानिये सु आपने सुदेस माथ है। भाग्य को उदोत॥ हो सुउच्च वेर भा
ग्य नाथ भाग्य हो रजाइसो विदेस॥ निर्वली कस्वामि भाग्य केर तौ अनीप दुष्य है
कलेस॥८६॥ भाग्य ईस जो रभाग्य भाव माहि होइ आपनी सुवासि॥ भाग्यवंत जो
रवंत हैं नरा भलो सभा प्रकासि॥ याइ कारके सुचिंहु देषिदे भलेसु जो तिजोष्क
र॥ शंभु दास तेधरै सुग्रंथ माअस दुछंद के बनाइ॥८७॥ लग्नवे सुतीसरे हिपा
च ये ततरा ग्रहा सुहैं वलिष्ट॥ जानिये विलेषि के नमेसु भाग्य भाव वेतरा सुइ
ष्ट॥ सोमसील है विलास भाग्यवंत जो रदंत इव्यवंत॥ अच्छ्यवास आपने ग
हे विषे सुभाग्य पत्रियोलसंत॥८८॥ दोहा छंद॥ सुभ पंचर देषे नष्ट भाग्य
वान बहु वृद्धि॥ हंसावरा जनमान सर ज्यो कुलमध्य प्रसिद्धि॥८९॥ इति नवम
भावविचारफलम समाप्त॥ ९॥ राज मान्य पितु प्रेम पुनि छाप करन औपार व

ज्यो०लि०
१२४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लधन परवीरा नगुनदसयैनाविचार ॥ १०० ॥ मा॰ वती छंद ॥ धामदसैगुरु चं
दपरे ॥ स्वामितहा न्वसहापेंकरे उहिमवेनविलासिमल ॥ चातुरिपहविधस्नु
ला ॥ १०१ ॥ भावदसेकुवलिछगहा ॥ ओरवलीतनधामरहा ॥ जोवनमाछोहि
ब्रनिमहे पालनसाधगवुनिचहे ॥ १०२ ॥ बुकपरेककुवमेघरे ॥ लग्घरानू
हवंदपरे उहिमियोवलिपुलतने ॥ ओरकरैनरनाथजने ॥ १०३ ॥ होइनिसाप
तिलयमहे ॥ मंगलवैठहिमध्यतहे कुहिलसाहसिचारकला ॥ हेमनमध्यनि
लिहिमहा ॥ १०४ ॥ कमधरासलिजागवने ॥ कैपानराहिनिकोलगने ॥ नारिव
कानिकोपातिरे ॥ सिल्वसुसारदिवेमतिहे ॥ १०५ ॥ चंदपरेकहुलमकली
परनहहिब्रहस्पती इंद्रसघागनितहिनेरे दानहिकी चलिहिकरे ॥ १०६ ॥
हाहिलेपुनिकेसमिते सुकघरापचयेवलिते ॥ हेमतिचातुरसर्वकला ॥ स
क्षनुकेसम होइनला ॥ १०७ ॥ केसलिलेपुनिकेतनते ॥ मंदहसैघरमेजनते
दुर्वलग्रासब्रतिविना ओरजनेशरिआतिगिना ॥ १०८ ॥ जोरविन्याद

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रम०
११६

कषेरपरै। हैनिसिनायककर्मधरै। उहि मिसा हालि इब्यलहै। सन निमै आतिरि
उअहै। १०९। मारग छंद। ननघर रविससिदोर। तोपरब्राहि रिवोकरै। औ
षविसेवीहोइ। सूरजलेष नअषि दहै। ११०। जायाधर ससिरेघ। षतीष्वा
हिमै चतुर। धातुसासुभलपेष। कविताहे बुधपटतो। १११। दोहा छंद। सुतम
रैमहिहीरतनजीवकरैदुजवर्म। नीचकमरविसुतमहाकुरवैकर्म। ११२। चं
द्रमाना छंद। जोअपनेनोच्चसहिमाही। कर्मधराकोस्वामियआही। क
र्मनितसोकर्तेपुनामी। उत्तमहूयोमध्यगुलामी। ११३। नीपाहिवहेमंरि
रसाइ। जोसुभषेटउत्तमहोई। अर्धपवदावैयोवलवाहू। कर्तसवैसाउच्चगु
नाहू। ११४। लग्नधरातेग्यारहहोई। नीकयहानीकोफलसोई। रैधनसमसौ
ष्यकरारी। भाषतशंभलइननताही। ११५। अनिदमम भावविचारवलसमाप्त
१०। मंगलवाजीरानेपेटाहू। हसविकायोगहहविवाहू। मंदरिग्पारोमाहि
वषानो। लग्नमधंनहासप्रमानो। ११६। लाभधरानैसूरजहोई। लोचनस्वा

जोअसें
११६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भोरहरिसोई॥ केनृपतोदे चौर निंतही॥ नौवकुचौपाए मिलजेही॥११७॥दोहा
छंद॥ संदगुन जौ लाभघरकेससिरषिनकीन॥ जल वलहय गजेवहुवे लघु
नाकरमासीन॥११८॥ लाभसदनमंगलस्वकरेवाढ्यनागरेम॥ सारहसिर
सनिरसने होइविजेरनषेम॥११९॥चौपाईछंद॥ लाभकेतमेसुभग्रहसारे॥
हैछैअरधुनिमुस्थितहोरे॥ नानासास्त्रकलापरवी॥ सिलपसुविद्यामेमनिली
ना॥१२०॥ हयगजनगधनवस्तजान॥ केचनकोवधिकरानिदान॥ लाभधामको
जोगुरुदेव॥ सकलगुननिकरिरिद्धिविसेष॥१२१॥ लाभधाममेसुक्रपराइ केपुनि
पूरनहरिविराइ॥ वनिजीकरिधनउपजनहोइ॥ आयुकमाइवराकेसोइ॥१२२॥
लाभसदनकोमंदहिदेई॥ अरुहेअपनेधामविदेई॥ महिषीअरुउनरहचियार
हयहिउदजावहिसोआविकार॥१२३॥दोहाछंद॥ आयुधाममेसुभअसुभसव
रैग्रहसुवलोक॥ सकलधननिबुद्धिकोकरेषटतिहिवोक॥१२४॥इतिलाभ
भावविचारफलसमाप्तं॥ हानिदानव्ययपदंडपुनिवंधनिविविविषका

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०मं०
१२८

र शंभु इनि वा नि विदित अप अल पै विचार १२५ ॥ पंकावली ॥ ॥ पूरन
जरि ग्रहा करि होय हि पूरन गुननि करैं तिहि जावहि ॥ तारि कारहि पुनि षीन सु
षीन हि हे पुनि ग्रहनि सुभासुभ लीनहि १२६ ॥ द्वादस सदन इती फल भाषि
उ जोतिष जलनिधि मै यह साषिउ भाषहि यह फल शंभु बषानिउ ॥ लोकनि
दित इहि भाति प्रमानिउ १२७ ॥ [illegible] ॥ अथ
[illegible] ॥ स्वामि सहित सुभ षेटनि देषहि ॥ तौ बहुत सुत कलित वि
सेषहि लग्न परहि ससि तौ सुत हैं बहु ॥ शंभु कहहि नर होइ जसा कहु १२८ ॥
[illegible] ॥ वै लग्न धाम रवि केर विपुत्र होई ॥ जै टानि की बहुत प्रापति ना
न सोई ॥ कंन्या सुरासि रवि लग्न निकेत माही ॥ जाया कुमार सुनि पै पुनि केऊ
नाही १२९ जो मीन रासि वृज वा मावि नास होई ॥ पा चौ कु भौम सुत लुप्त
लषे न सोई ॥ ऐही प्रकार करि लग्न नभा षि दीजे ॥ जो पंच नैम [illegible] सा कुमा
नि लीजै १३० ॥ [illegible] ॥ पादि [illegible] यह निके है मझार ॥ है के उन्नर
चौथे अगार सुभ यह निके रिद्रुग हदि नहि ॥ तौ भ्रगु विनास करग सन्धा जो०
११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हि ॥ १३१ ॥ दोहा छंद ॥ इनिधामनिकौ नहिं लषे जायाघर भृगवास ॥ के पावक
त्रियजरिमरै कै सुमरै गलपास ॥ १३२ ॥ नाग स्वरूपिनी छंद ॥ रवीससीजुरी
घरै ॥ किधौं व्ययेघरै परै ॥ त्रियाइकै इगेधरै ॥ सुपनिबंधकेकरै ॥ १३३ ॥ नवैसु
सप्तपंचमै ॥ दिनेससुक्रजौरमै ॥ त्रियानतासुजीवहीं ॥ यहे प्रभावलीवही ॥ १३४ ॥
सोरठा छंद ॥ रासिसंधिभृगुहोइ ॥ सातेसानतनमंदिरा ॥ वंध्यापतिमरसोइ ॥ सुभ
नपरैजौ पाचयै ॥ १३५ ॥ क्रूरषेटकीलग्न ॥ जौरसातयेवारहे ॥ होइ पुत्रसवभग्न
पाचैघरजौछीनससि ॥ १३६ ॥ दोहा छंद ॥ तनतेसातयसुक्रसनिचंद्र कैभौमकी
रासि ॥ मरीनरइगदेषही तौ विभिचारिप्रकासि ॥ १३७ ॥ सनिकुजजौ वंदामहि
तजनरैसपतमधाम ॥ तौ विभिचारिनिपतिगनौ यामैनहिकछु घाम ॥ १३८ ॥ तोम
रा छंद ॥ सनिकौजुहोवै सातयै ॥ भृगुचंद देषहितालयै ॥ सुततासुकैजीवहि
नरी ॥ जौ पावरै पातसुततहीं ॥ १३९ ॥ घासन्ने होइ रवीससी ॥ त्रिहएकरासिहि
देषसी ॥ नरसोवजुतन्द्र ॥ रोगहू ॥ पुनिहं गुनी इनिजोगहू ॥ सनिभौमभानचंद्र री

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

थयै॥ घरदूसरेजनरीहयै॥ वहरोगीयातोजानियै॥ ए सिखु चिंह प्रमानियै॥१४१॥
ग्रलि मक्र कर्क वखानियै॥ जौपाचयैअस्थानियै॥ कै नैन करिवादैघरी॥ तौको
ढियानरलेघरी॥१४२॥ सनिभानचंदापाचयै॥ पुनिसौम्यद्वष्टिनराचयै॥ वरि
रासुवहहोजातहै॥ अरुगीरतताकेदातहै॥१४३॥ सोरठा॥ पापघचूरनव
पंच॥ होइगीलोमसिलगनको॥ कहतसुयथप्रपंच॥ प्रेतजनमनरजानियै॥१४४॥
मानगहनउपजाहि॥ पापीलगनत्रिकोनघर॥ सोनरव्याधरत्राहि॥ कहेसिखुफ
लगहनके॥१४५॥ दोहा॥ जीवहोइजौसपतघर॥ औरलगनसनिजान॥ वातव्या
धितिहिउपजही॥ भाषियथप्रमान॥१४६॥ चौपई॥ जीवहोइजौलगनस्था
न॥ भूमिपुत्रसातेघरजान॥ अतिप्रचंडउजउमूरिवहोइ॥ जनमेइहिप्रकारनर
सोइ॥१४७॥ सातयअरुनवपाचयथान॥ भूमिपुत्रसनिलगनवखान॥ होइ
छीनचंद्रव्ययभाव॥ वातरोगताकोउपजाव॥१४८॥ चंदसुक्रवेसहिकरछी
न॥ तातैचौथकूरग्रहलीन॥ सिलपरुजिकचातुरआहि॥ रविवुधहोइकेंद्रघ
रमाहि॥१४९॥ लखैत्रिसासहिवुधफलयेह॥ मीनरासिकेगुरगानिसेह॥ रवि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दैषैंदासीपूत॥तानैसनिसखितैहैधूत॥१५०॥इतिश्रीनराध्याय॥दोहा॥द्वाद
सभावविचारअवसकलकहौंसमुझाइ॥जातैयहफलजानियेंसंसयकछुनरहाइ
॥१॥अथभौरछंद॥भानुलगनअस्थान॥छोटकेसतिहिजान॥संकलक्रियनि
मैगुपान॥आलसिक्रोधमहान॥२॥नैनरोगअभिमान॥निरदइनिठुराजानं
कर्कसतनअरुसूर॥अमिषकुलितडगक्रूर॥३॥मेषकर्कजोभान॥होइअखूनर
थान॥सिंहरासिरविगैन॥रोगरतेउधनैन॥४॥भानतुलाकीरासि॥सिंभवकहौंप्र
कासि॥दालिदरिनीवहूत॥अरुसुहोइविनपूत॥५॥जौधनघररविलीन॥द्रव्य
विनामतिहीन॥हृदयसुहृदतानाहि॥एचिह्ननिनरयाहि॥६॥धनवारनअघि
धर्म॥प्रियवादीसतकर्म॥सेवकपालनहार॥जौरविसहजअगार॥७॥सोरठाछंद॥
सुषवाहनधनछीन॥अटकैदेसविदेसमें॥साहसीकसुषलीन॥जौदिनेसचौथे
भवन॥८॥पौरेसुतनभ्रमचित्त॥पर्वतगढनिरहाइसी॥सुकृतअरुन्नतमित्त॥
सुतमेदिरजौदिवसपति॥९॥दोहा॥ताकैनिस्चलहोइसुषवलीसत्रुकौमा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

र॥ अपने रस कौ भोगता जो रवि छठय अगार ॥१०॥ रहित लक्ष्मी जानियें विचारो
गिली अंग ॥ छीन सरीर सुक कसा नासै सपत पतंग ॥११॥ सनिका छंद ॥ छोटे नैन
को वह्न तहै अरी ॥ कोध मान बुद्धि अष्टता धरी ॥ क्रूस्य रेह चंचली कहै मनै सर्वसो
विरोध भान अष्टनै ॥१२॥ हे प्रवीन धर्म कर्म मे महा ॥ पुत्र मित्र कौ सुषी करे तहा
भक्त होइ तात मात केर ह्न ॥ भान जौन वै फले निवेर ह्न ॥१३॥ सुमती सुबुद्धि वाह
नी धनी ॥ भूप मित्र के समान लेगनी ॥ साधु चालि भूषना निचुक्त रे ॥ भानु जो दसै
नि केत भुक्त हे ॥१४॥ गीत यो कवित्त कर्म रुचती ॥ इव्यपीन चंचली कहै मती
है वह्न तला भदार वारनै ॥ लाभ भाव भान जो सिधारतै ॥१५॥ सोरठा छंद ॥ कोम
ल होइ सरीर ॥ अखिल रमता की अहे ॥ सूरज व्यय यव स्थीर ॥ बुद्धि विरोधी आलपि
तु ॥१६॥ इति रवि भाव फलं ॥ दोहा छंद ॥ चतुर गुनी भोगी धनी चातुरी कवुधिसा
ज ॥ अलप गिरा उनमत्त मति होइ लगन उडराज ॥१॥ दोधक छंद ॥ द्वि विल कर्म सु
पुत्र सुधारी ॥ पस्न होइ तहा निसिकारी ॥ छी नुमती वलुहीन निवेरी ॥ छीन हिमा
कर ज्यो केरी ॥२॥ गर्विल घूम कठोर सुषीको ॥ हिंसक निंदक वधु सुरी को ॥ हे कुम जो०
११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तौ विसुदान सहाया॥ है मद अंध सुतौ सरभाया॥ ३॥ नीरहि तीर मिलें धनु केहू॥ बैति
य वास नबुद्धि हितेहू॥ देवमही सुख भरू वषानौ॥ चंद करै घर चौथ पियानौ॥ ४॥ हेसु
षपुत्र नि संजुत सोई॥ इंद्रनि कौ जिल वै पर होई॥ संग्रहि बुद्धि सुसील कृपाला॥ है स
नवतू पंचै उइपाला॥ ५॥ कुरिल निरंइ अंकालासि सोई॥ मरा अश्मि कहारिल होइ॥ दुष
रिपु पुमति दारुन क्रोधी॥ चौर छठै विधु की गति सोधी॥ ६॥ कामि अधिक चढ़े अभि
मानी॥ छीन सरीर रहे वह षानी॥ दो[illegible] विहीन सु इव्य सदाई॥ सप्तम हि मा करभा निज जा
ई॥ पुत्र कलित्र पुरान सु जाना॥ तौर[illegible]म प्रवीन वषाना॥ एतिन वैस सि की प्रभुताई॥
जोति प्रभा घन नौ सम ताई॥ ८॥ भूपति तें धन पावहि सोई॥ कीरतिवंत विलासि क होई॥ १०
है चपली बुधि कौ सन तोषी॥ चंद दसै घर कुंटम पोषी॥ हे वह धर्म निमे मन मानी॥
भोगिल है सु गुनी वह षानी॥ लाभ निकेत प्रकास हि चंदा॥ लिंभु हइ अति जानि अ
नंदा॥ ११॥ सील विहीन अरी वहवारी॥ तारग वाज प्रकृत्य विचारी॥ लेइ नहा हरि
व्रत्ति पराई॥ बारहि मंदिर जो ससि जाई॥ १२॥ इति चंद्रभाव फलं॥ सोरठा छंद॥ सर
भ्रमाति रहि बुद्धि॥ धाउ कलें वर लागही॥ भौमल ग्न गानि सुद्धि॥ उपरै हलव हु सारस॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मु०

१ आखिलदुरजनकेर निर्धनरूपनकठोरउर सवसनिराधेवेर चोरचुगिल
सलिदूसरे २ दासासुखीउदाररता हिय प्रसंननरपाल पराक्रमीकुज
सहजघरअरुकुटंवप्रतिपाल ३ सुखीसुहृदवाहनविन
होई रोगिलरहैविदेसासोई जनमकालमेंभौमप्रकासा चौथेमंदिरकोरेविवा
सा ४ कपकरिव्याकुलवाहलआही पुत्रकलित्रामित्रसुखनासी चंचलमति
पवित्रपुनिसोई जोभूपुत्रपाचयेंहोई ५ प्रवलभूपअरुवलअधिकाई
सज्जनकीसंगतिसुकराई सदासुकर्मरहेरिपुद्रावी छठयेमंगलकीगतिभावी
६ धनसंग्रहहिवहुभातिनिसोई पुनिसत्रनिर्भारनहोई नारिनितेघटिहोइसु को
धारी सपतभूनेदनफलकारी ७ कुटलीपीडारकतविकारा दृगावाजउभेग
अनुसारा स८मानिनिंदकसज्जनिसोई मंगलजोआठेघरहोई ८ हिंसामन
वरतेसुसदाई भूमिपालतेमानहिपाई छीनपुन्यधनछीनगनेहू नवयेभौ
मचिंहगानिलेहू ९ होइरोसिलौरुद्रसमाना साहसछनपरसंनववाना रंचे
नियानिकहभूछनसोई दसयेंमंगलएफलहोई १० रनप्रवालतामोप्रियते जोऽसिं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ही॥ रक्तवसनसोनेहकरैही॥ धनवाहनबुधिअधिकवषानो॥ ग्यारहिमंगलकौफल
जानौ॥ ११॥ दोहाअंक॥ मित्रनिसोमारैकुचितकुछी विकलहुअंग॥ दानधर्मक
रिजीन्चमाति द्वादसकुसुनप्रसंग॥ १२॥ अनिकुजभावफलं॥ दानीसांतिसुसीलमति
धीरसुदारप्रनाम॥ सकलकलापरवीनगुनचवैपुत्रतनधाम॥ १॥ सुंदरीछंद॥ भग
तदेवमहीस्वरकौवृहै॥ निपुनद्रव्यसतोषिलजोअहै॥ सुभगवुद्धिसुहसरवुद्धके
करहि सिंभुफलेगनिसुद्धके॥ २॥ वहुतसेवकसाहसलीनहै॥ विकलचित्तमरासु
घहीनहै॥ मनसुवांछितकारजकोकरै॥ सहजवुद्धपवित्रफलेधरै॥ ३॥ उत्तिमवा
हनधान्यधनेलहै॥ चतुरगीनतनिरत्यनिमेरहै॥ सकलसुष्पअभवनमेरुची
॥ वुधसुवंधुघरैफलएसुची॥ ४॥ सुतनितेसुषियावहुमित्रहै॥ सकलवसनि
हैनपवित्रहै॥ सवहिसोहितकर्तप्रनामही॥ परहिवुद्धसुपंचमधामही॥ ५॥
रिपुकुचीलसुवारिलकुछिया॥ निठरतापुनआकुलवुद्धिया॥ असितनेहछर
थेगातियालसी॥ भनतसिंभुमहानितआलसी॥ ६॥ सोरठाछंद॥ सत्यवचन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामु०
१२०

॥१॥ अखिल दुरजन केर ॥ निर्धन कृपन कठोर उर ॥ सब सनि राखे बेर ॥ चोर चुगिल
ससि दूसरे २ ॥ [illegible] ॥ दाता सुषी उदारता हिय प्रसंनन रपाल ॥ पराक्रमी कुल
सहज घर अरु कुटंब प्रतिपाल ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ सुषी सुहृद वाहन विन
होई रोगिल रहे विदेसा सोई ॥ जनम काल मे भौम प्रकासा ॥ चौथे मंदिर करे निवा
सा ॥ ४ ॥ कपट करि व्याकुल वातुल आही ॥ पुत्र कलित्र मित्र सुष नाही ॥ चंचल मति
पवित्र पुनि सोई ॥ जो भू पुत्र पाचये होई ॥ ५ ॥ प्रबल भूष अरु बल अधिकाई ॥
सज्जन की संगति सुकराई ॥ सदा सुकर्म रहे रिपु दावी ॥ छठये मंगल की गति छावी
॥ ६ ॥ धन संग्रह हि बहु भांति निसोई ॥ पुनि सत्र नि मारन होई ॥ नारि निते घटि होइ सु कौ
षारी ॥ सपत भू नंदन फलकारी ॥ ७ ॥ कुटली पीडा रकत विकारा ॥ दगा वाज दुर्भग
अनुसारा ॥ सठ मति निंदक सज्जन सोई ॥ मंगल जो आठे घर होई ॥ ८ ॥ हिंसा मन
वरते सु सदाई ॥ भूमि पालते मान हि पाई ॥ छीन पुंन्य धन छीन गनेहू ॥ नवये भौ
म चिंह गनि लेहू ॥ ९ ॥ होइ रोसिलो रुद्र समाना ॥ साहस छुन पर सेन बषाना ॥ दसे
नि यानि कहू भूधन सोई ॥ दस ये मंगल ए फल होई ॥ १० ॥ रन प्रचाल ता मो प्रिय ते जो०सिं०
१२०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ही ॥ रक्त वसन सोने हु करें ही ॥ धन वाहन अधिकाधिक वषानो ॥ ग्यारहैं मंगल को फल
जानो ॥ ११ ॥ दोहा छंद ॥ मित्रनि सों मारै घु चित्त कुछी विकल सु अंग ॥ दान धर्म क
रि नीच मति हार सकु सुत प्रसंग ॥ १२ ॥ अथ निकुल भाव फलं ॥ दानी सांति सुसील मति
धी र सुदार प्रनाम ॥ सकल कला परवीन गुन चंद पुत्र तन धाम ॥ १ ॥ मुरल्ली छंद ॥ भग
न देव मरी स्वर को वहै ॥ निपुन द्रव्य सतोषिल जो ग्रहै ॥ सुभग वुद्धि सुदरसर वुद्ध क
र हिं सिंधु फले गनि सुद्ध के ॥ २ ॥ वहुत सेवक साहस लीन है ॥ विकल चित्त महा सु
षहीन है ॥ मन सु वंछित कारज को करै ॥ सहज वुद्ध पवित्र फले धरै ॥ ३ ॥ उत्तिम वा
हन धान्य धने लहै ॥ चतुर गीत निरत्य निमें रहै ॥ सकल सुष्ष ग्रभवन में रुची
वुधसु वंधु घरे फल एसु ची ॥ ४ ॥ सुत नित्ते सुषिया वहु मित्र है ॥ सकल वंसनि
है न पवित्र है ॥ सव हि सों हित कर्त प्रनाम ही ॥ परहि वुद्ध सु पंचम धाम ही ॥ ५ ॥
रिपुकु चील सुवारि लकु द्वियां ॥ नि ठर ता गुन मा कुल वुद्धियां ॥ ससि नने छ
ठे गति या लसी ॥ मनत सिंधु महा नित्ते चालसी ॥ ६ ॥ सोरठा छंद ॥ सत्य वचन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तिहिप्रीय़॥ विभोसीलकरिसोभिंजे॥ सपनमबुधगुनलीय॥ कुनकंचभूषन
सहितत्रिय॥ ७॥ गर्भविरोधीचित्र॥ परवीअपनैपावही॥ हरैधरै परावित्त
॥ बुधसोधंनमिलआद्द बुध॥ ८॥ दोहा॥ आदरीकविंद्यासहितवड्डशाताउप
कारि॥ ग्यानीगुनीसुचारुमति नमयेबुधगुनतारि॥ ९॥ धनभावरू॥ मतिवं
तहैअतिग्यानविधि॥ मतिसुद्धहोइविलासनिधि॥ लीलासुकीड़तासुमति
॥ दसयेघरैयहसोमगति॥ १०॥ मतिकोसुसीलपवित्रतन॥ वलिवंतभोगिलनं
ग्रमन॥ सवसुघनिपूरसहासुनल॥ वुधग्पारहैफलसंतभल॥ ११॥ अपनेसुस्वा
रथमेचतुर॥ अरुदयाधर्मनिहीनउर॥ अपकोरजीअरुधूतआलि॥ घरद्वादसै
यहसोमगति॥ १२॥ इतिवुधभावफलं॥ सवविद्यावितपंननर॥ मतिवानदानि
स्वभाउकर॥ सुभसर्वकाहिपियारलग॥ तनधामजीवप्रसिद्धजग॥ १॥ साधिताक
रैमहिपालसन॥ गुनवंतकीरतिवंतमन॥ सतवादियागरिहैसुचित्त॥ निरवै
२ रिसंनसुजीवगति॥ कुटलीककंपनीकत्पधनि॥ तननिर्वलीमंदाआगनि
करहीविरोधजुसर्वसनि॥ तातिदेववंदनचित्रभनि॥ २॥ सुभवाहनीधनसोस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हित ॥ सनमान सुभाइसौं कुहित ॥ नृपकी इर्षा करि चित्र कथ ॥ फल एतजो विरिफे
चवंध ॥ ४ ॥ **दोहा छंद** ॥ उत्तिम मित्र निसुत सहित सुत सहेत परवीन ॥ नाना वाह
नधनसहित गुरपंचयेफललीन ॥ ५ ॥ गीत नृत्य मे हो रुचि कीरति वान अनेर ॥
उहि मे मे आलस करे सत्र भवन सुर वेर ॥ ६ ॥ **चउपाई छंद** ॥ विद्या [illegible] स गुनत निसो सुभ्या
॥ सोलै सहानारि सुत निसो ॥ जानै मंत्री अरु कविता ॥ आयाग्रे गुरफ विता ॥ ७ ॥ होवे
दासी पति मलिना ॥ ताके विवेक सुन रहिना ॥ ताको जो आलसइ छठये ॥ देही छीनो
गुरअष्ठये ॥ ८ ॥ राजा मंत्री सुकृति गनो ॥ पवीनो अहूर रहि मनो ॥ भक्ता होवे इज सुर
कौ ॥ एतेन्चीझीन द्युगुरको ॥ ९ ॥ पवित्री वाहन धन है ॥ दाराके जो सुष नित है ॥ हो
वैजो राजसिंजासिया ॥ कर्मस्थाने गुरलासिया ॥ १० ॥ वस्त्रा रतनानि वहन है ॥ संग्रे है
अर्थधनलहै ॥ राजा मंत्री तमर घये ॥ लाभस्थाने गुरुकधये ॥ ११ ॥ क्रोधी ऊदास चि
तसरी ॥ पापी कूरा निरवलही ॥ सरौं हीनो मति हि गनो ॥ जो जीवे द्वादसय भनो ॥ १२ ॥
इति गुरभाव ॥ दोहा छंद ॥ विहसत मुष सरवग पुनि मत्ति सवकला प्रवीन कुल
नारक मारक प्रवल तन में रिरवगलीन ॥ १ ॥ भूषन रतन निपारही भोगी माधुरवैन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ बुद्धिवान पर पंच सुत हूसर अगुपर छंन ॥ २ ॥ चौपरी छंद ॥ कृपनी होइ अध
धनहीन ॥ कामी क्रोधि निठुर पुनि लीन ॥ है सरीर दुर्बल चित दुष्ट ॥ धामती सरे जो
अगु पुष्ट ॥ ३ ॥ जाउ नगर वाहन सब होइ ॥ भोग सुष निके भुगते सोइ ॥ रोगि लकेरे
विलास अनेर ॥ चौथे मेरि जो भृगु नेर ॥ ४ ॥ सुभग वचन सब हासे बोल ॥ नि
र्मल मति चपशीतिल अमोल ॥ होइ वीर पुनि गुन गंभीर ॥ होइ सुक पंचम अस्थी
र ॥ ५ ॥ सदा विकल है ताको चित्त ॥ बुद्धि हीन अरु हीनो वित्त ॥ कुटली अभि
मान करु दान ॥ असुर वंद छठये स्थान ॥ ६ ॥ नीर विहारहि मे हाव जान ॥ रति
विलासमे चतुर निदान ॥ राग त्रित्य नट आति प्रियताहि ॥ जो भृगु कहूं सप्तम
र जाहि ॥ ७ ॥ सुष परसंन भूमि पति होइ ॥ संक्रूर जाति मूढ मति सोइ ॥ सुत कलि
त्र चिंता दिन रैन ॥ रहे जो र भृगु अष्टम सेन ॥ ८ ॥ दोहा छंद ॥ पजक तीर
वि प्रगुरु करहि सरैवा विधान ॥ नवये घर जो असुर गुर सो पुनि सत्य वषान
॥ ९ ॥ [illegible] दान पूजन चतुर सुत नारी सजि पीति ॥ संध्या धर्म सुसील नर दस

ह्रान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

थेभ्रगु सुनरीलि ॥ १० ॥ तारकछंद ॥ मनिन्वा तुर संगे लनाचत सोई ॥ अति राग र
रंग हि सो हित होई ॥ सब ही सन सो पिक राहि सनेहा ॥ घर उच्च परा इज्जु गवा रहि ये स
॥ ११ ॥ सुभ कर्म निके रसु त्याग कराई ॥ मदनी अरु को मिलधीर सुभाई ॥ प्रिय अष्ट उच्च
हे तिहि निर्दइ होई ॥ भ्रगु द्वादसे नरवीर कसोई ॥ १२ ॥ इतिसूक्रभाव ॥ पर उच्च स
नीचर लग्न हि केरो ॥ अरु मूल त्रिकोनि परा इव हेरो ॥ पुरनाथ रहालि इसु रोगिल
होई ॥ फल भोघत शास्त्र जथा विधि सोई ॥ १ ॥ रिनि रोगिल त्यान विना वह होई ॥ ध
न वंतसु होइ विदेस हि सोई ॥ दिसि और पति छ वंदे ति हि केरी ॥ कह हूं जस नीचर
चिंहू नि वेरी ॥ २ ॥ अमनी पसपा गन गेह सुजानो ॥ वहु ग्राम नि को पति ता हि व
खानो ॥ जन पाल कहे परीवार हि केरो ॥ त्रितिये घर जो कहू मंद वसेरो ॥ ३ ॥ नर छीन
सुवंस विछि न पितारे ॥ कुलभंग करे अरु दुर्वल तारे ॥ अहरोगिल हे पुनि
वस्त्र मलीनो ॥ रवि पुत्र सु वंधघरा कस्वीनो ॥ ४ ॥ तोटकछंद ॥ ही नरी न तन ज्ञा
न ॥ धाह न धन दारि हानि हे ॥ पंचम सनि फल लीन ॥ चिंता अति संतान की ॥ ५ ॥ स

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कैसो कार सुभ प्रीति ॥ गुन कल्यान समेतनर ॥ सत्र भवन्न स निरीति ॥ सकल दान कर
दानिया ॥ ६ ॥ दोहा छंद ॥ हीन रति आधीन अरु निर्बल देहो रोग ॥ त्रियसुतन
रसे अनजको सपतमें सनि जोग ॥ ७ ॥ तोमर छंद ॥ तिहि राहु बाजु हितै हि ॥ तन
को ढरुजउपजै हि ॥ मन चंचली चलनस्य ॥ [redacted] ॥ ८ ॥
तन विकलइ मति होइ ॥ अरु धर्म विनगानि सोइ ॥ नवयेसु मंदिरमाहि स
निरत है गुन ताहि ॥ ९ ॥ लरि कोट गढ को तोर ॥ पुनि छवि निर्भय जोर ॥ रन मध्य
अति सबूत ॥ दसयेसु सुरज पूत ॥ १० ॥ छि ति कृष्ण कर्म लेहि ॥ अरु लोह
पर्व भले हि ॥ वरु नील रतन निधार ॥ तन नील लाभ अगार ॥ ११ ॥ वहु दयाध
मैनिलस्य ॥ तनभंग अरु आलस्य ॥ अरु होइ निर्ध निग्रेह ॥ सनि वार है फ
लयेह ॥ १२ ॥ सनि होइ जो कहुं उच्च ॥ अपने सु ग्रेपहु उच्च ॥ स निराहु केतव धान
इनि केरइक फल जान ॥ १३ ॥ इति राहु केतु भाव फल ॥ इति द्वादस भाव फल
समाप्तः ॥ इति श्रीमत्परिहतसिंहात्मज श्री ... विरचितायां ज्योतिषसिंधु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

द्वितीयपंचदशवसुनांद्रियस्भावफलअंकनेएकविंशतितरंग ॥२१॥ सो
रठा छंद ॥ होइ परसपर दिष्टि ॥ सूरज अरु द्विकपहनकी ॥ सो अरु वव वरनव इव ॥
जो तेजानिय सुभ असुभ ॥१॥ दोहा छंद ॥ जो ग्रह जाके देस रन जाग्र रइ दिप्र
कास ॥ लहै भलै फल सो कहत समुझो समुझ निवास ॥२॥ चौपई छंद ॥
दान धर्म वहु जन निसमेता ॥ कोमल तन अरु प्रीति निकेता ॥ भान हो रहु जमं
दिर मांही ॥ लषे चंद्रमा एफल आही ॥३॥ समर धीर धी कूर सुभाउ ॥ लाल नै
न वलवंत प्रभाउ ॥ जो मंगल घर भान पयान ॥ मंगल लषै होइ गुनवान ॥४॥
सुष वल धन करि हीनो सोइ ॥ सो नर अरु रवि देसी होइ ॥ जो इभान जो भौम निकेत
॥ देषे वुद्ध लहै फल येत ॥५॥ भूप सचिव दानी धन वार ॥ उत्तम कुलता को अ
वतार ॥ वासर पति जो भौम अगार ॥ सुर गुर देषे होइ उदार ॥६॥ दुष्ट मित्र त्रिय
सुष करि हीन ॥ तन रोगिलो निरधनी दीन ॥ मंगल मंदिर भान रहाइ ॥ जो अग
लो चन्नडादि कराइ ॥७॥ दीनकु वुधि वहु दुष करि होइ ॥ अनउतसा हो हे वहुलो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०सु०
१२४

३॥ भानभूमिसुतग्येहपराइ॥ जोरुसनीवरइहिकराइ॥ ७॥ इतिकुजग्रहेरवोफ
ह्इहिफलंसंपूर्नतछंदः॥ अतिप्रीतिसुभत्रियमेरहै॥ वहुनारिकोपतिवै
ह्यहै॥ भृगुग्येहराविअवरेषसी॥ जलजीवजोसासिदेषसी॥ १॥ धनिसूरवि
क्रमलीनहै॥ वहुराजसोतनछीनहै॥ भृगुधामसूरजजोपरै॥ अरुभूमिसु
तहइहिकरै॥ २॥ कवितासुगीतकलानिहै॥ परवीनताहिवपानिहै॥ भृगुधी
मरविपोथीलिषै॥ जोवुद्धनेननिकरिदिषै॥ ३॥ हैरतनभूषनसोधनी॥ कुल
माधिकेनृपलेगनी॥ घरसुक्रभानविसेषही॥ नरसभयजोगुरदेषही॥ ४॥
अतिचतुरहीनसुनिर्धनी॥ वियाचित्तभिंनकरेघनी॥ रुजिनासवुधि
जियमेधरै॥ भृगुरासिरविसनिइगकरै॥ ५॥ सोरठाछंदः॥ सुभइगग्रासह
प॥ सत्रमित्रसमचितरहै॥ भृगुघरमेहिनभूप॥ भृगुदेषैफलएतनहै॥ ६॥ इ
तिसूर्यग्रहरविफलं॥ सत्रुमित्रकोपीर॥ करैतहानिस्वरहतनिर्धनी
॥ वुधघररविअस्थीर॥ परदेसीसतिकैलषो॥ १॥ दोहाछंदः॥ हीनहीनज

जो०सिं०
१२४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सचित्तसभयरिपुकलहमानितारि॥ बुधमेरिरविजोपरै कुजदेषै फलचारि
॥२॥ चंपकमालाछंद॥ होइवडाईभूपतितेरी॥ सोरिपुमित्रअधीनरहेरी॥
वृद्धघरामेसूरजलीना॥ वृद्धविलोकेहैपरनं॥ ३॥ मछआमीरोसोपुनिहोई॥ पुत्र
नारीसंजुतसोई॥ वृद्धघरामेभानरहाई॥ भक्तसुहोइजीवलुधारे॥ ४॥ हाल्यधी
लोवेचलजानो॥ भूपतिमंत्रीहैगुनवानो॥ घाउप्रदेसीजनताविभंत्री॥ भानुचु
धेरासीचगमत्री॥ ५॥ चाकरताकेहैअधिकारा॥ सहेचितेसग्यानउदारा॥ ५॥
तहादेषेसनिनैना॥ सूरजवैठेजोवुधथैना॥ ६॥ इतिवुधगृहरविफलसिंह
॥ भूपतिमंत्रीतीछसुभाउ॥ लेरइजारैनाउतहाउ॥ कर्करासीकेरविहो
इ॥ देषहिचंदाएफलसोई॥ १॥ दोहाछंद॥ रहेकसोपरिवारकोसोकरोगसुषचि
त॥ होइभगंधरदेषकुजचंरभामरविनित्त॥ २॥ नीलसरूपकछंद॥ पंडित
॥मे हैजनसरूपछतीके॥ होइसुमानतभूपतीके॥ सत्रनिमारनहारविसेषै॥ सूरज
कर्करजोवुधदेषै॥ ३॥ डहितहैअपनेपरिवारा॥ भूपतितेधनहैअधिकारा॥
॥ सोमगरिछेत्रपतंगविराजे॥ देषहिजीवसुएफलछाजे॥ ४॥ वस्तरद्रव्यत्रिया

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम० १२५ उथिवादा॥ पावहिं एधुनि हेउनमाहा॥ भानकुलीरहिकेसुपराई॥ जोभ्रगुनंदनउदि
कराई॥५॥ काजविरानकोरैअतिघासी॥ चेचलकेरिप्रहत्यनजासी॥ वृद्धपिताघर
जोदिनरायो॥ राजनहासुलषेसुतछायो॥६॥ इति चंद्रग्रहे रविग्रहदृष्टिफलं॥
भूपतिमाननतूदयसजूता॥ दीरघधीरसुसंजुगधूता॥ सिंहहिरासिपराइसुसूरो
चंदलषेयहहेफलपूरो॥१॥ [illegible]केरपतीहै॥ क्रूरसुसूरप्रहत्यकपी
है॥ उहिमिदेसविदेसनिनाऊ॥ लग्रहरीरविभोमादिवाऊ॥२॥ भूपतिसेवकूधू
तवलीहै॥ लेषकनागरपंडितधीहै॥ हीननहीरविसिंहहिकोरे॥ चंदकुमारजुलोच
नहेरे॥३॥ वागदिवालहूवैरहरीतासा॥ एतनवावसहीजनपाला॥ लग्नहरीदिन
नाउकहोई॥ देवपुरोधलषेफलसोई॥४॥ हेदिनमत्तवेउतसाऊ॥ कोषज्जजस्प रूपा
रोगिलहऊ॥ कुटवछाउरहिजोभ्रगुहेरो॥ सूरजजोनिजरासिवसेरो॥५॥ दोहा
छंद॥ करैनेहम्रिगनिसोइषपरवारहिदेहि॥ सिंहलग्नरविसनिदिषेरतेफ
लगनिलेहि॥६॥ इति सिंहराशिस्थितनौग्रहदृष्टिफलं॥ वक्ताकुलीहोस्वर
रूपपुत्रसुषवान॥ लोचनकरिचंदालषेजीवधाममेभान॥१॥ संगतिसाधनिके
रिप्रियजसीवीरसंग्राम॥ भोमविलोकेनेनकरिभानहहसपानिधाम॥२॥ [illegible] जो०सि १२५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कवित्त ॥ परवीनकलाकविताइकरै ॥ लिपिवैनप्रवीनसुधर्मधरै ॥ कवितेगुर
साइनबुद्धलषै ॥ गुरकेघरसूरजजाइनषै ॥ ३ ॥ परवीनकलाअरुधंनी ॥ हो१८
अपनेकुलमैअपलेहुगनी ॥ पुनिभक्तिगनोतिरिजीवलषै ॥ दिननाइकजौ
कहुचापअषै ॥ ४ ॥ पटभूषनऔरसुगंधलहै ॥ सुभकामिनिकौरहिसुवरहै ॥ पति
दिननाथकहरासिपरै ॥ सुषवंतनतनाभ्रगुइछिकरै ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ परधन
भुगतेई ॥ पुनि[illegible]सुनिवहुलेई ॥ रविजुगुरुघरवीचा ॥ लषहिसनिअतिनीचा
॥ ६ ॥ इतिगुरुग्रहरवीग्रहदृष्टिफल ॥ चपलअतिउत्तमाभा ॥ त्रियरामेधन
लुटाया ॥ सासिलषरिसूरछवी ॥ रहहिसनिधामरवी ॥ १ ॥ परजुलियाछंद ॥
धपरौसिपरपंचवाइ ॥ अरुजौसरैवअरितैडराइ ॥ तिसिविकलव्याधिचिंतासु
चित्त ॥ सनिधामभानकुजहैप्रनित्त ॥ २ ॥ संगानिसधाप्पुकरित्यागिदेइ ॥ चौरी
सुकरीपरद्रव्यलेइ ॥ सनिधाममध्यरविकरनिवास ॥ बुधदेषशंभुयहफलप्र
कास ॥ ३ ॥ जसवानहोइसुमनसुजान ॥ अतिबुद्धिउत्तमसुकर्मवान ॥ रविहोइग्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

२ रविउत्रधाम रविजौपराइ भ्रगुपुत्रतसौ जरौकराइ ५

रवंड
त्रकीरासिकेर ॥ पुवं भानकौनैनहेर ॥ ७ ॥ म्रगाङ्कसंबरतननिसमेत ॥ धनका
मिनीसुपुनितारिदेत ॥ रिपुवंसनासकरिहैपवित्र ॥ पुनिहमतमूर्तिनृपकेरमि
त्र ॥ छायाकुमाररविकौविलोक ॥ छायाकुमारकेहोइशोक ॥ ८ ॥ इतिश्रीमेषा
दिराशिस्थितरविफलं ॥ चंद्रफलं ॥ ऊपरेहलीमतीकधीरधर्त
भूमिराइ ॥ नाइकौवहूतकेरपूजईसुविप्रगाइ ॥ जुद्धमौरसंगरामभौमधामराति
नाथ ॥ होइइष्टिभानकीनरालहैसुचिह्नगाथ ॥ १ ॥ वातत्राग्निविष्यसत्त्रभीत
रोगचीन ॥ डाढत्राषिपीरत्रत्तिभपसेववानलीन ॥ देषहीजुभूमिपुत्रजौरवं
द्रमेषरासि ॥ एफलानिशंभुदासभाषहीधरैप्रकासि ॥ २ ॥ निर्मलीकविद्यजुक्त
हैगुनीलभाउसंत ॥ भूपपंचसैन्यनाथवेसमाअइष्यवंत ॥ जीवदेषहीजुभौम
रासिकेससीपरंत ॥ सोधिग्रंथशंभुदासचिह्नदेषिकैकहंत ॥ ३ ॥ कामिनीत्र
भर्नपुत्रद्रव्यसुष्वभोगलीन ॥ जौरवंतहैनरासुरेसवंतवैनकौप्रवीन ॥
भूमिसूनधाममैनिसेसइष्टिसुक्रकेरि ॥ दैषिग्रंथशंभुदासचिह्नभाषहीनि
वेरि ॥ ४ ॥ वृषराशौ ॥ कुमतीलोसंतानसठद्यूतरोगीरेह ॥ मंदलषैपरिमानसौ

जो०सिं० १२६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चंद्र परैं कुज येह ॥ ४ ॥ इति रासिथिते चंद्र ग्रहदृष्टि फलं ॥ मनहरछंद ॥ प्रवीन
अघहार लेइ वाहनै विसाल ही ॥ प्रवीन आपु काज धान्य सैंन साल साल ही ॥ निके
त सुन्न चंद्रमा पलंग दृष्टि घाल ही ॥ करे सुचित्त हू प्रभु दास सो इर्षे सु वाल ही ॥ १
दोहाछंद ॥ साधु सुमित्र पवित्र नर त्रिय चित आतुर काम ॥ हसत मूर्ति कुज देषई
जो ससांक भृगु धाम ॥ २ ॥ गुनी सुबुधि उतंक षि पुनि भ जै सुदाया वंत ॥ भृगु घर ससि
मैं हेरत षसा सि सुतइ ष्टि करंत ॥ ३ ॥ भतें जसी लोध मैं डर सुत कलित्र आनंद
भृगु घर ल्वहै सील हैं देषे जो सुरवंद ॥ ४ ॥ वस्त्र विभूषन सेज सुभ कोमलता के पाउ
भृगु नंदन अवलोक ही जो ससि भृगु के भाउ ॥ ५ ॥ सोरठाछंद ॥ प्रथम भाग व्रष रा
स ॥ हो इ चंद्रमा सनि लषै ॥ सुत सो मान विनास ॥ पर रल पित हि अनिष्ट है ॥ ६ ॥ इ
ति वृषरासिस्थितेचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ मनिवरामछंद ॥ गुनै धनै मति हीन
सु आहि ॥ रुलै ससि या अति जानिय ताहि ॥ द्वितीय रासि हि के ससि लीन ॥ विलोक
हीर विलोकन चीन ॥ १ ॥ प्रवीन वाहन होइ धनीक ॥ सुभद्र चित्त सुहै मति नीक
परा इजु ग्म हि लग्न जु चंद्र ॥ लषै तहा पुनि मेदिनि नंद ॥ २ ॥ महीप पंच अचारि प्रा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मु० ३ ॥ उदार चातुर धीर सदाइ ॥ परै निसापति मिथुन रासि ॥ धनी अजीत लषे बुधजी
सि ॥ ३ ॥ करै निसा फुरै बुलवाइ ॥ मदा सु अर्थ लवि ध्यरि पाइ ॥ समिथुनै लग
नै ससि जाइ ॥ विलोकु जो वसु लोलक साइ ॥ ४ ॥ अनाज चीर विभूषन नारि ॥ सुधा
हनी सुष सो अवतारि ॥ निसेस मिथुन लग्न पराइ ॥ तहा लषे भगु तेसुत आइ
॥ ५ ॥ सोरठा ॥ देइ छाडि अनियास ॥ धन बाहन सुष कामिनी ॥ रवि सुत इष्टप्र
कास ॥ जमल रासि के चंद जो ॥ ६ ॥ इति मिथुनरासिस्थित चंद्र ग्रह दृष्टि फलानि ॥ सो
रठा ॥ नृप सेवक गढ पति अजस ॥ अर्थहीन कुसंग ॥ कर्क रासि कर चंद्रमा
लषे भान के संग ॥ १ ॥ मातु विरोधी सु घर भट है प्रनिछीन सरीर ॥ इफल मंगल के
ति लषे जो ससि राकुलीर ॥ २ ॥ सोरठा ॥ नारि पुत्र जुत अर्थ नाथ सेन्याकर आर
नीत सुष निके मान उपरे हलकार जमारी ॥ देषे ससि सुत नैन चंद जो कर्कटरा
सी ॥ येफल जोतिष सोधि सेभु कवि करै प्रकास ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ सुष सोभागुन
वंत नर पराक्रमी नृप पंच ॥ लषे व्रहसपति नैन जो ससि कुलीर के संच ॥ ४ ॥ सो
रठा ॥ भूषन वस्त्र हेम जवा हिर ॥ सुंदर कामिनि सुष्प निजा हिर ॥ कर्कट रासि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्रि केरजनीपति ॥ लोचन इहिकरा हि वृहस्पति ॥ ५ ॥ साचदया विन सोभटकत्रु
ति ॥ मात विरोधिलपापानिसौरति ॥ डारहि मोहि संवैधन सोनर ॥ चंद्रकुलीरलव
त्रु सनीचर ॥ ६ ॥ इति कर्के रासि स्थिते चंद्रय इहिफलं ॥ भूपति मित्र गुनी
भ्रति छा हिये ॥ पुत्र सु अेलह्ली सो उपजा हिय ॥ केहरिरासि परौ निसिनाइक ॥ भी
न विलो वहि ए फलदाइक ॥ १ ॥ है नरनारकके रसधाधुनि ॥ पुत्रकलित्र पियारसु
वाहनि ॥ सिंह हि लग्न निसापति जाइव ॥ कामेल जो पिलधे छितिजा इव ॥ २ ॥
चित्र परा क्रम ॥ पुत्रकलित्र सुवारी ॥ वाहन इव्य सुपूरितभारी ॥ सिंह हिलग्न
परे ससि जाई ॥ देषहि वुइसु ए फल पाई ॥ ३ ॥ भूपति कौ नरु है अधिकारी ॥ होरव
रु सुति वियहि धारी ॥ चंद परे कहु केहरि रासी ॥ जीव विलोकहि भाति प्रका
सी ॥ ४ ॥ तंत्रु तं ग्यान सु वुद्धि गुनी है ॥ रूप हि वंत सुनारि मिली है ॥ सिंह हि लग्न
परे कहु चंदा ॥ देषहि नैन नहा भ्रगुनंदा ॥ ५ ॥ नारि विरोधिल है कु विकारी ॥ पा
व किलेक रिसो किलदारी ॥ केहरि रासि निसेस पराई ॥ इष्टि सनीचर के फल

रा॰मं॰
१२७

३। उदार चातुर धीर सदाइ॥ परैनिसापति मिथुन रासि॥ धनी अजीत लखै बुधजा
सि॥२॥ करै निसाफ फुरै बुलवाइ॥ मरा सुअर्थ लवि थरि पाइ॥ सुमिथुने लग
ने ससि जाइ॥ विलोकु जो वसुलोलकै सा॥ ६॥ अनाज चीर विभूषन नारि॥ सुवा
हनी सुष सो अवतारि॥ निसेस मिथुन लग्न पराइ॥ लहा लषै अगुते सुत आइ
॥५॥ सोरठा॥ देह छाडि अनियास॥ धन वाहन सुष कामिनी॥ रवि सुत इह प्र
कास॥ जमलरासि के चंद जौ॥ ६॥ इति मिथुनरासिस्थितचंद्रग्रहदृष्टिफलानि॥ दो
हा॥ नृपसे वकगाद पाति अज सि अर्थ हीन कसअंग॥ कर्करासिकरचंद्रमा
लषै भानकै संग॥ १॥ मातु विरोधी सु घरा भट है पुनि छीन सरीर॥ ए फल मंगल वे
लि लषै जो ससि रा कुलीर॥२॥ सोरठा॥ नारि पुत्र जुत अर्थ नाथ सेन्या करआर्
नी तसुषनि के मान्य उपरे हल कार जमारी॥ देषै ससि सुत नैन चंद जो कर्कटरा
सी॥ ये फल जोतिष सो धि शंभु कवि कहै प्रकासी॥ ३॥ सोरठा॥ सुष सो भागुन
वंत नर पराक्रमी नृप पंच॥ लषै वरहस पाति नैन जो ससि कुलीर के संच॥ ४॥ सो
रठा॥ भूषन वस्त्र हेम जवा हिर॥ सुंदर कामिनि सुष्ख निजा हिर॥ कर्कटरासि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्रिके रजनीपति ॥ लोचन इष्टि करा रवि बृहस्पति ॥ ५ ॥ सा च दया विन सोभ टकहु
ति ॥ मात विरोधिल पाप निसो रति । डारहि बोड़ि सनेह धन सो नर ॥ चंद्र कुली रलव
ज्ञु सनीचर ॥ ६ ॥ इति कर्क राशि स्थिते ग्रह दृष्टिफल ॥ भूपति मित्र गुनी
श्रुति श्रारिय ॥ पुत्र सु अेल हि सो उपजारिय ॥ केहरि रासि परे निसि नाइक ॥ भा
न विलोकहि एफल दाइक ॥ १ ॥ है नर नारि कके रस बाधु नि ॥ पुत्र कलित्र पियार सु
बाहनि ॥ सिंहहि लग्न निसापति जाइव ॥ कामल जो पिल षे छिति जाइव ॥ २ ॥
चित्रपदाछंद ॥ पुत्र कलित्र सुधारी ॥ बाहन इव्य सपूरित भारी ॥ सिंहहि लग्न
परे ससि जाई ॥ देषहि बुद्ध सुफल पाई ॥ ३ ॥ भूपति कौ नरु है अधिकारी ॥ होइव
रु श्रुति विद्यहि धारी ॥ चंद्र परे कहु केहरि रासी ॥ जीव विलोकहि भाति प्रका
सी ॥ ४ ॥ संस्तुत ग्यानु सुबुद्धि गुनी है ॥ रूप हि वंत सुनारि मिली है ॥ सिंहहि लग्न
परे कहु चंदा ॥ देषहि नैन नता भृगुनंदा ॥ ५ ॥ नारि विरोधिल है अधिकारी ॥ पा
वक लेकरि सो किलदारी ॥ केहरि रासि निसेस पराई ॥ इष्टि सनीचर के फल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
१२८

पाई ॥ ६ ॥ इति सिंहरासिस्थिते चंद्रग्रहादिफलं ॥ दोहाछंद ॥ गुरकौ भक्त भडा
रपति नारि सहितपति ग्राम ॥ कंन्यारासि नछत्रपति जौ रवि देष प्रनाम ॥ १ ॥ सिंह हिं
क्रोधी स्त्रिमा रनविजई नृपमित्र ॥ हिमकर कंन्यालगन के भूसुतलषे पवित्र ॥ २ ॥
नलनंदछंद ॥ प्रियराग रंगकवीस्वरा ॥ मतिवंत जोतिषमें नरा ॥ रनविजई बुध
जौ देषही ॥ ससि नारिरासि विसेषही ॥ २ ॥ वहु तासु के परिवार है ॥ त्रियछापनी
कौ यार है ॥ अरु होस सुरहे जसी ॥ गुरदेष कंन्याके ससी ॥ ३ ॥ त्रियकरविलास
सुचित्त रहै ॥ नृपतै विदै धनकौ लहै ॥ निसिनाथ कंन्यारासि के ॥ भृगुदेषनै न
प्रकासिके ॥ ४ ॥ त्रियधनभषै बुधमती हियै ॥ अरु मातु ताकी नरिजियै ॥ जौ रासि
चत्रसिससिपरे ॥ दे षैसनी चरफलकरै ॥ ५ ॥ इति कंन्यारासिस्थिते चंद्रग्रहद्र
ष्टिफलं ॥ चाकरसु पुत्रकलित्र है ॥ धनसुषन दव अरि मित्र है ॥ मन होवि यो
है गावि देसिया ॥ घट होइ ससि रवि देषिया ॥ १ ॥ दोहाछंद ॥ मायावी अनुरत्त नर
परधन हरन प्रवीन ॥ तुलारासि के रैनिपति नजरि सूत कीन ॥ २ ॥ मनमोहनछं भूमि
द ॥ वक्ता विभौ विद्यासहित ॥ चतुरो कलामाअे कहित ॥ सासि होइ तौ लैं रासि जो०सिं०
ने
१२९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मरु॥ ससिदृष्टिलोचनइव्यलह॥ ३॥ पटभ्रवनानिप्रवीननरु॥ कयविक्रैकरकरन
अरु॥ विशुद्धकारासिरहिकेपरहि॥ सुरवंदनरहिकोकरहि॥ ४॥ बुधिमंतउदिमिसे
व्रहहि॥ पुनिभूपकेरियालहाहि॥ जोतुलाकेससिभृगुदिषहि॥ शंभूसुएतंफल
लिषहि॥ ५॥ मानीलवाहनहोइधन॥ पुनिहोइविषयाअधिकमन॥ औरोहिनीधव
तोलिनहि॥ रविपुत्रदेषहिलोचनहि॥ ६॥ इतितुलाराशिस्थितचंद्रग्रहदृष्टि॥
॥ सोरठा॥ बहुतसुषाइअनाज॥ अमतधनीजनघातकी॥ अलिरासिउउ
राज॥ सूअदेषेनेनकरि॥ १॥ चौपई॥ त्रियसुषसहितसाधगोपाल॥ जियग
रवोन्रपदेइरसाल॥ रनविजईसुहीरजसवंत॥ ससिबुधीकउजइइकरंत॥ २॥ सी
लवानवकतापरवीन॥ गीतनृत्यमेग्यानसुलीना॥ कूटकसोनरहोइनिदान॥ अ
लिकेचंदलषेबुधज्ञान॥ ३॥ सुंदरभूषनइव्यसमेत॥ नीकेकर्मनिकोकरिलेत॥
अलिकीरासिहोइजोचंद॥ देषेलोचनकरिसुरवंद॥ ४॥ मनउदारअतिहोइअ
सील॥ त्रियधनलेइसुहेतरकील॥ हसतमूर्तिवाहनजुतसोइ॥ विषबुधीकअग

देषतहोइ ॥५॥ मंजुतामछंद ॥ सुतरोगअरुथान्नरहे ॥ चितअलप निधानिम
षा कहे ॥ अरु नीचजो सनि देषही ॥ अलिरासिचंद्रविसेषही ॥६॥ इतिवृश्चिक
रासिस्थितचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ नृप मित्र हेरन विज्ञई ॥ परताप इयल लिज्ज
ई ॥ अरु वाहनीजसवानहे ॥ धनचंद्रजो दिषभानहे ॥१॥ अतिके प्रतापवषाने
यै ॥ पतिसेन श्रीजुतजानियै ॥ अरु कानकुंडिललसनहे ॥ कुजदेषधनसासिच
संतहे ॥२॥ जोतिषीसिल्पप्रवीनहे ॥ तिहिजंघघोटकलीनहे ॥ वहुअल्पवक
तासुभअहे ॥ बुधदेषजोससिधनरहे ॥३॥ नन्नहीनसतसंगतिकरे ॥ धनवंतपर
तापेधरे ॥ अरु सुभगगुरुकेदेषही ॥ विधुचापलग्रविसेषही ॥४॥ दोहाछंद ॥
पुत्र हेन वहु धमका सकलसुषनिकरि होइ ॥ धनुषरासिके होइ ससि भृगुसुतदे
षेजो होइ ॥५॥ मधुभारछंद ॥ वकता अधेन ॥ चंडसत्यवेन ॥ धनरासिचंद्र ॥ दिषभा
ननंद ॥६॥ इतिधनरासिस्थितचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ अभीरछंद ॥ कुमतीदुषी
मलीन ॥ अतिकेहेधनहीन ॥ रनसपूतपुनिजान ॥ मकरचंद्रतविभान ॥१॥ अहि
कमंद्रवषान ॥ त्रियसुतसषा निजान ॥ वाहनद्रव्यसमेत ॥ भृगसासिकुजलाषिले

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त॥२॥ मतिधनग्रहकरिहीन ॥ त्रियसौंविछुरनलीन ॥ मकरलग्नससिहोइ ॥ बुधदेषेफ
लजोइ॥३॥ गुनीधनीवलमान ॥ सुतनारीजुतजान ॥ भूपसचिवगुरदेष ॥ सनिमृगरासि
विसेष ॥४॥ दोधकछंद ॥ धनवाहनजुहोइ सुतनारिगहनोइ ॥ पटनीकअगुहेर ॥
ससिरासिमृगकेर ॥५॥ निवलीसुविसनीय ॥ तनकोमलिनलीय ॥ उचलालमदले
ष ससिनक्रसुनिदेष ॥६॥ इतिमकरासिस्थितेचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ दगवाजनृप
मान ॥ कृषिवमेकरिजान ॥ घटलग्नससि ॥ नरसुगपरिघमान ॥१॥ कडाचनुं
द॥ अहेवस्तफूरोसीमहाग्रहमातेयितत्यागिदेई ॥ त्रियाअगमनाकीसरामीढषेवो
रुचेधृतभेई ॥ मरा आदरीकामको है विलासीसुवेनादिप्यारे ॥ मलीनोपवित्रीसुनी
नीघटेचंदखुद्धानिहारे ॥२॥ तोटकछंद ॥ साधुवृत्यछितपालहैग्रहसुषभोगविला
स ॥ देवाचारजदेषहीहोइचंदघटरास ॥३॥ सुतकलित्रअरुमित्रग्रहहीनोहैचर
हीन ॥ कुंभरासिकेहोइससिभृगुदेषेलघुलीन ॥४॥ मुक्तिकदामछंद ॥ नषीजना
वाकूटहुद्योर ॥ तहासुषवर्षरलेइसुश्रोर ॥ अहेअधर्मियभोगिललेष ॥ निसेसकुं
भहिजौससिनिदेष ॥५॥ इतिकुंभरासिस्थितेचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ सुषीसुभकालोम

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तिहिसिद्धि ॥ चमूपतिकामिलहोवरिरिद्धि ॥ निसेसपरैकहूमीनहिरासि ॥ लषैरिने
स्वरचिंहप्रकासि ॥१॥ ग्रहैवहूसत्रुकुटिलकसंग ॥ नहीसुषदीनसुपावैलअंग ॥
परैकहूजौसफरीकरचंद ॥ लषैकरितहामहिनंद ॥२॥ हैधनपुत्रकलित्रसुमान
॥ धरापतिकरिदयाअतिजान ॥ निसापतिवैठहिरासिसुमीन ॥ हिमाकरपुत्रवि
लोकप्रवीन ॥३॥ उदारसुकाममनोहरअंग ॥ महासुषद्रव्यसुभूरिप्रसंग ॥ हिमा
करमीननिकेतहिसोध ॥ लषैभरिपूरनईइप्रबोध ॥४॥ रतीसुभवत्यसुगीतरु
वाद्य ॥ त्रियासुविलासियसीलमजाद्य ॥ निसाकरजौसफरीकरिरासि ॥ विलोक
हितंक्रसुनैनप्रकासि ॥५॥ त्रियासुतहीनसुकामिलहोइ ॥ करैत्रियनीचनि
सोहितसोइ ॥ परैअघलमहिकोग्रहचंद ॥ विलोकहितानहितहायहमंद ॥६॥ इति
मीनरासिस्थितचंद्रग्रहदृष्टिफलं ॥ सोरठाछंद ॥ जौउदारबुधिवान मनमा
तापितुकोधनी ॥ जौदेषैइगभान ॥ मेषरासिमंगलपरै ॥१॥ परत्रियभोगीवीर ॥ त
सगरमारैघेरिकै ॥ अपनिरासिकुजधीर ॥ जौरचंद्रमदेषहीं ॥२॥ दोहाछंद ॥ पर
धनलेइचुराइकै गनिकारतिसोकाम ॥ वुधदेषैतेचिंहएजौकुजअपनैधाम ॥३॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वपमेंत्री श्रष्ठिपालनौ क्रोधी तसगर मित्र ॥ इद्य वैनकुज आपु घर देषहि जीवपवि
त्र ॥ ४ ॥ चलवंगम छंद ॥ भोजनवार हि वार रुचे मनजानिये ॥ कामिनि वरन सुधीर
संजुत प्रमानिये ॥ फिकिरि चित्र न तिहि रहे धर्म विक्रम रहे ॥ भोम आपनी रासि सु
कल विफल लहे ॥ ५ ॥ मित्र विरोधी मान और क्रोधी अहै ॥ इ वैलऊ चो होइ ताहि
गुन एरहे ॥ अपने कुटमाहि साहिर्इ र घामानही ॥ भोम होइ निजरासि लषे सुन भान
ही ॥ ८ ॥ इति निजरासि स्थितेभोम ग्रह द्रिपलं ॥ गद अरु वाग पहार अधिक
रुचि जानिये ॥ पति नीमें मनु रहे सरासु वषानिये उग्र क्रोध करि होइ भोम भृगुरा
सि के ॥ सुख देषेश भुक है सु प्रकासि के ॥ २ ॥ सोरठ छंद ॥ मान विरोधी भीर बहु
त्रियनाइक जानिये ॥ कुज भृगु में डिफ थीर जो रचे इमा देषही ॥ २ ॥ सोरठा छंद ॥ जे
लपैवैन धन पुत्र लहै पंडितन कलह सुहाइ ॥ मंगल जो भृगुरासि के बुध देषे फल
पाइ ॥ ३ ॥ सारवती छंद ॥ ताहि दिया रुकुटवलगो ॥ स्वामि सुधर्म विसालपगे
सुक्र [illegible] ॥ जीवावि लोकहि ही समये ॥ ७ ॥ अस्तुति लाइक सेन्यप

धरेकुजगावमेला ह्रिहाइनला

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ती ॥ भूपसभा सब जुक्त अती ॥ सुक्र घरे कुज लेषत है ॥ भक्त नरा लित देषत है ॥ ५ ॥
इच्य सुमित्र सदा सुचि है ॥ नंमत पाइ पदे रुचि है ॥ होइ मही सुत सुक्र घरे ॥ चिंह
सु ए सनि दृष्टि करे ॥ ६ ॥ इति कुजराशिस्थिते भौमस्य दृष्टिफलं ॥ पालनरा धनि
विद्य सुची ॥ सेल वनें गढ कोलि रुची ॥ बुद्ध घरे कुज भाति भली ॥ भानल षेति हि
होइ वली ॥ १ ॥ भूपति रक्षक कामि अती ॥ जोर सनो छिल होइ मती ॥ भौम परे बुध
रासि विषे ॥ रिद्धि लहे तति हि चंद दिषे ॥ २ ॥ वक्तल है कवि दोह अती ॥ दूत कृअ छिल
नी किगती ॥ मंगल होइ जु बुद्ध घरे ॥ बुद्ध कुता पुनि दृष्टि करे ॥ ३ ॥ कृस सरीर हि
केरनरा ॥ चिंत चिंते परदेसि धरा ॥ मंगल है बुध रासि मही ॥ जीव लषे इति चि
ह्न सही ॥ ४ ॥ [illegible] नरु कूल सु धारि छनी ॥ सो पति नीव सलेष गनी ॥ बुद्ध घरा कु
ज नार दिते ॥ सुक्र लषे नरु संतत चिंते ॥ ५ ॥ वाग वनें रुचि नाहि कही ॥ सेलग
दानि निवास सही ॥ बुद्ध घरे कुज मंद दिषे ॥ भूरमहा कवि चिंह लिषे ॥ ६ ॥ इ
ति बुधगृहस्थे भौमस्य दृष्टिफलं ॥ अथ [illegible] ॥ धीर नगर कृतवाल ॥ चिंत प्र
कृति करिवाल ॥ राहित पराक्रम लेष ॥ भौम कर्क रवि देष ॥ १ ॥ वसत गए पछि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ताइ॥ रोगिलसंतसुभाइ॥ कर्कलग्नकुजहोइ॥ चंदलखैफलसोइ॥ २॥ थोरकुटमबिन
चिन्त॥ पापीमतिछलचिंत॥ मंगलकर्कटरासि॥ बुद्धनजरिपरकासि॥ ३॥ भृगुतधा
गुविद्यानि॥ हैगरबीजगजानि॥ भौमपुत्रसासिवोक॥ देवपुरोधविलोक॥ ४॥ चिंताचु
तधनहीन॥ कर्मध्रुनहितिलीन॥ भौमपुत्रकुलीर॥ सुक्रलग्नहिगुनगीर॥ ५॥ धनपंता
चपमान॥ भोजनमिष्टसुहान॥ भोमकर्कसनिदेष॥ होइछबीजविसेष॥ ६॥ इतिकर्क
रासिभौमग्रहदृष्टिफलं॥ सवैयाछंद॥ गिरिवागतालरुचैहिये॥ चोरिकोलुटी
लियोकिये॥ मसलतिमिचैहिकोहिये॥ कुजसिंहभावलखैतिवे॥ १॥ जननीवि
रोधिसुभूरती॥ निजकाजचातुरहैअती॥ मतिनीकचित्तकठोरहै॥ कुजसिंहव
स्नलखैरहे॥ २॥ परवीनसिल्पकलानिहै॥ कविचित्तचंचलवानिहै॥ मनलक्ष्यख्वा
रथचातुरा॥ कुजसिंहबुद्धइगेजुरा॥ ३॥ गरवीलसुंदरताअती॥ बहुकामिनीकि
रहेपती॥ कुजरासिकेहरिकीतहा॥ भृगुदृष्टितेफलहोरहा॥ ४॥ पतिसेनविद्य
सत्ताहै॥ सुमतीवडीअपदूतहै॥ गुरदेवमंगलसिंहके॥ कहिचिंहदइहिरिंहके
॥ ५॥ दोहाछंद॥ वसहितविरानैधरनिमैंचिंतावढिसुलीन॥ केहरिलगनरिसोरकुज

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

र०मं०
१२२

उपरेहलसाहसधैरैकुलरिपुहोइअसाध॥भौमसदनससिसुतपरैसनि
अतिलषैअगाध॥८॥इतिकुजग्रहेबुधग्रहदृष्टिफलं॥उपकारीचि
तसीलपुनिदुषीदलिद्रतनरोग॥होइवीरजोरविलषैभृगुमंदिरबुधजो
ग॥१॥चित्रमित्रनृपदूतबलीपरपंचीधनधान॥एतैफलससिकैलषै
जोबुधसुक्रस्थान॥२॥तजैनारिअरुमित्रकोरोगीहोइसरीर॥मंगलअ
वलोकनकरैभृगुघरबुधअस्थीर॥३॥होइबड़ोअतिभूमिपतिबुद्धिवंत
गुनवंत॥होइबुधभृगुरिष्यकेजोगुरुदृष्टिकरंत॥४॥नीलस्वरूपकछ
सुंदरकोमलअंगअभंगसुनैननियां॥आरसुनारिनिकेजुचलेहित
मानिहियां॥रत्नविलासिकचातुरहानिलहोइनरा॥एकविलोकि
हिलोचनजोबुधसुक्रघरा॥५॥वाहनलनकालित्रविनातियकौज
निये॥तप्तचित्तधनहीनदयाबिनसोगतनैये॥मानलवजितदीनस
रीरमहाभनिये॥सुक्रघराबुधमंदलषैफलएगनिये॥८॥इतिसुक्र
ग्रहेबुधग्रहदृष्टि

जो०सिं०
१२२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दोहा छंद ॥ वंसमभूपगुनरूपकौ भयसभासतवान ॥ कामी चंचलर
विलषैजौबुधनिजअस्थान ॥१॥ राजधरीइसपूतरनवचनसुधास
मधोल ॥ निजघरसुभगुनग्यानजुतससिरवेइगबोल ॥२॥ तारकछं
दा ॥ जनपालकधूरतहैअतिसोई परवीनकलासवचोसठिहोई ॥ नर
पाधिपदैनृपमित्रअनंदा ॥ निजरासिहिबुधलषैछिनंदा ॥३॥ धन
वंतछबीलषुसंग्रघजानौ ॥ नृपमंदिरमैअधिकारवषानौ ॥ सुतचंदगरा
निजगेहविवेरी ॥ फलसंभुभनैइतिजोवदिषेरी ॥४॥ नृपमंत्रिमहारि
पुकौकुलनासै ॥ वकताचतुरोअभिलाषसुपासै ॥ पुनिनीचित्रिया
निविषेन्चितदैना ॥ बुधआपनिरासिलषैभ्रगुनैना ॥५॥ अतिनमंत्र
रंभकीसिद्धिसुपावै ॥ परभूषनताहिअनेकमिलावै ॥ मननेकभला
बुधजौनिजरासी ॥ कविसंभुकहैसनिदृष्टिप्रकासी ॥६॥ इतिनिज
रासिस्थितबुधग्रहइष्टफलं ॥ बहुभांतिनिकैवह्रगेहबनावै ॥ परवीन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुवलत रसु रु रहावै ॥ पुनि संग्रहि रत्न सु फूलन वीनै ॥ बुध कर्क लग्न रावैल
हन चीनै ॥ १ ॥ दोहा छंद ॥ दुर्बल ऊंच सरीर ॥ पतिनी वस मानु तन भल
॥ ससि सुत होइ कुलीन ॥ ससि देषे धन पावही ॥ २ ॥ दोहा छंद ॥ चौराचानु
र अलप मति सूरग्यान अति तर्क ॥ भूनै रंन अवलोकइ ग होइ बुध जो कर्क
॥ ३ ॥ मनहिंका छंद ॥ रंम्य वक्ता ग्यानवान ॥ इम्य लोइ सुबुद्धि जान ॥ भूप मित्र
है गुनी व ॥ बुद्ध कर्क देषि जीव ॥ ४ ॥ वैल दीप चोट अंग ॥ ग्यान नासु रा
ग रंग ॥ कर्क लग्न बुद्ध जान ॥ देषि सुक्र है सयान ॥ ५ ॥ है कुटंव को वियोग
॥ है मित्र स्यहीन लोग ॥ कर्क रासि बुद्ध लोय ॥ मंद देषि निर्गुनी य ॥ ६ ॥ इति
कर्क रासि बुध ग्रह दृष्टि फल ॥ चंचलीक नारि हीन ॥ हिंस कोज्ञ छुद्र ली
न ॥ डोहि हार अर्क हेर ॥ बुद्ध सिंह रासि केर ॥ १ ॥ नीकि वुद्धि रूप जान ॥ गीत
ग्रस सन्नवान ॥ सिंह लग्न बुद्ध होइ ॥ सिंधु पुत्र देषि सोइ ॥ २ ॥ पाउ पत्र अंग
नीक ॥ नाविचित्र धीइ धीक ॥ वृत्त हीन सत्य लिंह ॥ भौम दृष्टि वुद्ध सिंह

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ ३ ॥ चर्चरी छंद ॥ वंस उद्दतन ग्रहे सु सदा कुं जैन विसाल हे ॥ उत्तम
वस्तु वाहनी कषनीकु निर्मल भाल हे ॥ होइ सो समरथ्थ मान व संभु
निंद्रु वषान ही ॥ देव वंद विलोक हीं इग वुद्ध जो धर भान ही ॥ ४ ॥ सारंग
छंद ॥ वक्त्रा पियारो महीनाथ मित्रा हि ॥ ताके भले वाहने ह्वै विचित्रा हि
॥ हेइ ग्र वंसा महा रूप वंता हि ॥ जो सिंह के वुद्ध उ श्याल घेता हि ॥ ५ ॥ जो स्व
र्वांगे धृती छी चले ताहि ॥ देही महा दीर्घ ही नो सुषेन्या हि ॥ होवे कुरूपा
महा चिंह्नु ए जान ॥ देवे सनी वुद्ध जो सिंह स्थान ॥ ६ ॥ इति गज प्रक
रण ॥ द्विफल ॥ दोहा छंद ॥ परे धातु पधरी जमें मरन सन्नि नहि तास
॥ सूरज देषे जैन करि जो वुध जीव श्रवास ॥ १ ॥ प्रमानिका छंद ॥ सुपानि
ताहु भिन्न हे ॥ सुलेष का विचित्र हे ॥ परे वुधा गुरा घरे ॥ सुषी ससी लषी
करे ॥ ॥ प्रवेस चोरनी मही ॥ अनाज द्रव्य है नही ॥ परे सु वुद्ध मान के
॥ लषे सु भौम चीन के ॥ २ ॥ कंदक छंद ॥ महीनाथ को है भद्रा सुग्प

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नीय॥ महावंस अौतंसजौऊजरीलीय॥ सुवाहु हि नारीनिकौनाथजो
जानं॥ लखैसुकजौवुद्धहैजीवअस्थानं ४॥ धनीचोरजौपुत्रहोवैसु
को कुमार॥ ग्रहैभूपमंत्रियामंत्रनिस्तार॥ भलाकंनवारीत्रपापत्रहोकैर
परैवुद्धजौजीवकेसुक्रजोहेर ५॥ वहुभक्षोसुभत्रतमालिन
गढपहारकौवासि॥ नैनसनीचजौलखैवुद्धहोरगुरगासि ६॥
पहिलवानकुरमीवहुतसवसोकहिकरकाज
छायासुत घरचंदसुतजोदेषैहिनराज॥ १॥ नीरजी
वीधनीआन्निके॥ कंदकौउहिमीसन्निके॥ मंदकेधामहेमानिये॥ चंददेषै
जानिये॥ २॥ लाजहीनोकठोराअनी॥ भूरिवक्राअहैसपती॥ वुद्धजोमंद
ग्रहेपरै॥ भौमदेषैफलएकरै ३॥ सुखियावाहनैसंपती॥ धीमलीपहने
कोपती॥ मंदकेसलखैजीवहू॥ संमुएचिंहूकेदीवहू ४॥ वुद्धिकोहीन
कामीकहैहै कुरूपासुसंतानहै॥ नेहरावैसुनीचसनै॥ मंदकेसलखा
सुक्रने ५॥ पीनपापीदुषीदीनहै॥ नेहनीचेसनैलीनहै॥ वुद्धजोपुत्रछ जोभसं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

याधरै ॥ मंद देखै फल एकरै ॥६॥ [illegible] ॥ कर्म
कारी सबै धर्म कौ ॥ सो डरै झूठ कै मर्म कौ ॥ जीव जो भौम के थान ही ॥ त्रिंह्न
एनै लखै भा नही ॥१॥ [illegible] ॥ वील सील नित्य हाथ ॥ साधु नेम धर्मात
मा ॥ देखै जो निसिनाथ ॥ मही पुत्र घर देव गुर ॥२॥ त्रिय पति क्रोधकृत ॥ त्र
प सेवक पर गर्भ हर ॥ देखै धरनी पूत ॥ कुज के गुर जो ता सुजस ॥३॥ [illegible]
सत्य हीन डोही कुटिल वक्र काल रो व घान ॥ अंगारक ग्रह गुर परै बुध देखै
फल जान ॥४॥ [illegible] ॥ आसन लीनो गंध भ्रमनो ॥ मंदिर नारी
वह्म सु वर्नो ॥ जीव परैं जौ भौम घरा ही ॥ भक्र भलो जो सुक्र लघा ही ॥५॥ सा
हास लोभा हे निठुराऊ ॥ हेसु नता को रोद्र सुभाऊ ॥ मित्र पिया रो सुख्य नि
हीनो ॥ मंद लखै भौमे गुर लीनो ॥६॥ [illegible]
[illegible] ॥ गाहना विजय प्रकास ॥ घाई संग रत पत अरु ॥ है वक्र ता के रास ॥ भृगु
मंदिर गुरु रवि लखै ॥१॥ [illegible] ॥ परउपकारी वैन सति रुचिर भाग चित्त

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१२५ नर्मे ॥ वागीजोभृगरासिगुरलषेचंद्रमाकर्मे ॥ २ ॥ नराचछंद ॥ सूषीसुपुत्रभा
गवंतवत्कहापियारहे ॥ महीसदेइद्रव्यजो वहूतकेअचारहे ॥ पूरेसुख
के धामजीवभौममैनेरेषही ॥ विलोकिसाखसंभुभाषचिंद्रविसषही
॥ ३ ॥ तोतछंद ॥ मंत्रीविद्यावानधनिकलाचातुरत्रपमान ॥ सुरगुरजोभृ
गुरासिकेवुधदेषैफलजान ॥ ४ ॥ तोटकछंद ॥ धनवंतविभूषनजुक्तअहै
छविवंतविभोकरितान्हिकरै ॥ सुरमंत्रियजोभृगुरिक्षपरै ॥ असुरागुरलो
चनदृष्टिकरै ॥ ५ ॥ सुतकामिनिकेसुषियागनिये ॥ पुरग्राममहिन्तउतमाहु
हिये ॥ परवीनसुधर्मिलवुद्धिभलै ॥ भृगुकेसुरमंरविलोकिफलै ॥ ६ ॥ इति
भृगुरगुरुदृष्टिफलं ॥ पतिनीसुतसुष्षसषाधनमें ॥ अतिहोरपाति
रूमहातनमें वुधमंदिरदेवपचीरपरै ॥ दिननाथलषेफलएतकरै ॥ १ ॥
गुनवंतमहापुरग्रामपती ॥ छविसंजुतगौरववंतअती ॥ सुरपूज्यकहूवु
धग्रेहवसै ॥ वुधतानलषेफलएतलसै ॥ २ ॥ रनमध्यविजेकरिलेइभली

ज्यो० रि
१२५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धनवंत सरीर विशेष छत्र होइ वली॥ बुध आलय मध्य ब्रहस्पति पली॥ मरि
पुत्र लेष होहि य सज्जि छ्यती॥३॥ दोहा चौपाई॥ पुत्र मित्र द्रव्य सुष पावै नारि
रूपवान॥ सिल्प कर्म को करै सुद्दढ जोतिषी वषान॥ नीके सत्य कहाव डोलु
कामिया निदान होइ॥ वृद्धधाम देव वंद वृद्ध नेन देष सोइ॥४॥ नारि सुष
विलास हार पुत्र द्रव्यवान जन्म॥ रूपवान अनेक भाति की वु होइ मन्न॥ जु
विशेष प्रसंन वाल को उजन्म लेहि॥ वृद्धथान जीव सुक्र देष चिंह ये
हि भाषि देहि॥५॥ आन रीक नित्य संग नाल सर्वभाति गंभीर॥ धाम नय्न ना ही
बाल
छ होइ भूमिपाल ज्ञान धीर॥ भान पुत्र देष देव मंत्रि वृद्धधाम होइ॥
के सुचिंह संभ दास भा वियो वनाम॥६॥ इति बुध मंगल गुरु ग्रह दृष्टिफलं॥
दोहा छंद॥ पहिल दुषित तन नारि॥ पाछै सुष पावै अमित॥ दिनकर नैन
निहारि॥ जौ गुरपा हि कुलीर॥१॥ भंडारी नृप केर॥ वाहन सुष धन रूप जुत॥ नै
न चंद्रमा हेर॥ सुरगुर पाहि कुलीर के॥२॥ वसंततिलका छंद॥ ताकै कलित्र

सुत वस्त्र विभूषन नौ ई॥ वाकु रूप होइ पुनि सुरमसा सु होई॥ ताके सरीर ख्रम औ
अति के सु जानौ॥ जो जीव कर्क लगनै बुध इष्टि यानो॥ ३॥ सो मित्र काज धन को
तजि है हि सोई॥ नी की सु वुद्धि तिहि के रिपु रतापि होई॥ औ रिद्धि है वहुत कर्क
ट रासि जीवा॥ देषै सु चंद्र कर पुत्र फल जानि लीवा॥ ४॥ दोहा छंद॥ वहु तिय भो
ग विलासिया त्रिय गहनै वनवाव॥ रासि कुलीर शुक्र पर भृगु देषै फल पाव॥ ५॥
मरहट्टा छंद॥ छवि सील सुभाऊ सेना राऊ होइ वहु रिगुनवंत॥ आभूषन सो
ई वक्ता होई पुरवा गाउ मिलंत॥ ससि के घर माही सुरगुर जा ही देषै नील सरूप
यह साधि उजागर जोतिष सागर कहा संभु अनूप॥ ६॥ इति कर्क रासि गत गु
रु दृष्टि फलं॥ दोहा छंद॥ अति जा हि धन पर्व वड प्रापति नृपति तें जान
॥ होइ व्रहसपति सिंह के जो देषै इग भान॥ १॥ चानकुलक छंद॥ पतिनी औ
धन होइ वहूता॥ अरु प्रसंन स्वामी है धूता॥ के हाँ लगन देव गुर होई॥ देषै चं
द्र माये फल सोई॥ २॥ गुन गाहि रोग रमान न होई चातुरता सुभ कमीनेलो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१ सूरजधामपरेगुरदेवा। होइधनी कुज दृष्टि करेवा। ३। ऐनरमाननहिचिग
हुन्नेहा। मंत्री वचनविलासिकतेहा। भानरासिजो देवपुरोधा। वुद्धिविलो
के तिनके कोधा। ४। पृथ्वीनाथ वहुदेइ वडाई। पतिनौ विप्रगन वंनु प्रभा
ई। सिंहरासिकेजीवपराई। भार्गव देषैजो मनलाई। ५। ऊंचोतनई वलसु
मलीना। उतसवृज्ञरुसुषहीकरिहीना। सोनरदीनहोइ ऋतिकेरा। रविआ
लयगुर अतिमंदिषेही। ६। इति सिंहरासिस्थितगुरपरदृष्टिफलं। मित्रस
त्रअरुभूपतिवैरी। करहिनाससात्रहिकोहेरी। होइवृहसपतिजो निजये
हा। देषैसविलालचनयेहा। १। वषातिगर्भिसेवकवहूलाई। पतिनौविय
जाके अधिकाई। सुषसोजनमेजोससिदेषै। धनमीनहिकेजीवविसषे। २।
पुरविघना मतिकोसंतोषी। कूरसुभाउकहिंसिकरदोषी। संगरकर्मसु उ
हिवहीना। भौमलषैगृहनिजघरलीना। ३। धनसुषपूरो परउपकारी। अ
वलाभोगी महासुषारी। अरुराजाकोधरैषजाना। वुद्धलषैगुरअपनीधा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ना ॥ ४ ॥ सोरठा छंद ॥ बुधि लग्न निल छबि ग्यान ॥ अति प्रसिद्ध सुष इम कारि
गुरु निज रासि पयान ॥ उसना देषै नैन जो ॥ ५ ॥ है संग्राम कपूत पदवी सु
परै ष अरु भोग विन ॥ दीन लषै रवि पूत ॥ जीवै निज धाम मे ॥ ६ ॥ इति श्री छठे गु
रु अरु इति फल ॥ दोहा छंद ॥ कुल नृप आदरि रूप सुभ वचन कुसल उप
कारि ॥ मंद अलये होइ गुरु लोचन भान निहारि ॥ १ ॥ मालती छंद ॥ मात पि
त करि भक्ति करै ॥ गर्भिल दान निल सील भरै ॥ पंडित है कुल पाल विषै ॥ मंद घ
रै गुरु चंद दिषै ॥ २ ॥ अर्थ सु सिद्धि मिलै नृपतें ॥ सुष्ख जसै परिपूरन तें ॥ नी
ल सरूप धरै गुर है ॥ दुर्बिल जो कुज इष्ठि रहै ॥ ३ ॥ धर्म सुकर्म निरी ष्यवहा ॥ है
अभिमान त्रिपा सुष ही ॥ जीव परै सनि धाम मही ॥ चंद्र कुमार विलोक सहै
॥ ४ ॥ आरंभ पवहु तधरै ॥ सो मन वांछित दान करै ॥ पंडित विद्य गनी ध
न है ॥ सुक्र लषै गुरु मंद रहै ॥ ५ ॥ दोहा छंद ॥ धनिक धाम दाहन अधिक
म हनी अभिराम ॥ निसा जाम सनि देष ही होइ जीव सनि धाम ॥ ६ ॥ इति स

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

निधने गुरु भृगु फलं ॥ मंगल ठवें ॥ पंडित भूप कृपाल ॥ ३ ॥ उत्तजन्मपास्तंभ
है जो देषे दिनपाल ॥ सुक्र रोस कुजधाममें ॥ १ ॥ नवम् ठवें ॥ सो सव कामनि नि
दरली है ॥ हो इपति ष्टिकन्वित्र चली है ॥ सुक्रपरे कुजधाम विषेही ॥ सो मलवे
फलएत लिषेही ॥ २ ॥ दसम लुष्ष नम्यारहीनो ॥ सो पुनि हो इसुरी न मलीनो
मंगल पासि जहां भृगुपेषी ॥ देषहि जो छित उत्र विसेषी ॥ ३ ॥ कूरमहापाद्यवल
ही है ॥ कुस्हिलबुद्धि सुइ मनहीं है ॥ दास विनं तनरी नष्असाधू ॥ कुंडल बे कुजसु
कुसमाधू ॥ ४ ॥ लुष्कचित्रिया सुत है सत काजी ॥ सुंदर वंस उदार निवाजी ॥ सारस
मेनल घे गुरु नैना ॥ जो उंस नाग्रह मंगल श्रैना ॥ ५ ॥ है कुलपालक मान सुसी
ला ॥ सुनि मसख्यातिदी हधनीला ॥ हे सुमतीक सदा सनि देषे ॥ मंगल लग्यहिंके
कवि पेषे ॥ ६ ॥ इति कुजग्रह भवनद्व हफलं ॥ सुंदर कामिनि नायक रवी
वाहन सुष्ष समेत निश्रवी ॥ आपनि के ग्रह भृगु होई ॥ भानलंघे इति लच्छन
सोई ॥ १ ॥ नारि विलास विषे हि अस क्ता ॥ धीपसु भक्त जु सुंदर वक्ता ॥ सक्र

राशि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कहू घर आपु वसैतै ॥ वंसमहीपतिचंद्रलषैतै ॥ २ ॥ सोरठा छंद ॥ कलहकरै
दिनरैन ॥ रहितसकलदीनआति ॥ कुजदेषेभरिनैन ॥ भगुसुतनिजमंदिरपरै
॥ ३ ॥ गुनधनजोरनिवासि ॥ काजकरैधरिकैसुधरि ॥ जौभ्रगुतिथिनिजरासि
रहिनयदेषैनयन ॥ ४ ॥ दोहा छंद ॥ सुनसषावाहनत्रिया मंदिरधनसंजूत
गुरूदेषैफलहोतए अपनैघरभ्रगुपूत ॥ ५ ॥ निरधनिदीनअसाधआतिहो
इकलेवररोग ॥ सुक्रहोइनिजलगनकै मंदद्रष्टिसंजोग ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ चित्रपदा छंद ॥ भूपसषा मृदुसोई ॥ पंडितहर्वितहोई
सुक्रपरैवुधयेहै ॥ भानलषैफलयेहै ॥ १ ॥ दोही छंद ॥ सुभगकेसदृगअरसु
घधाम ॥ नीलकंजसुहरतनस्याम ॥ रुचिरितादिअतिभोजनमीठ वुधमंदि
रभ्रगु हिमकरडीठ ॥ २ ॥ ववनवलीकामीपरवीन ॥ नारिनिमित्रविनहोहि
न ॥ ससिसुतकेघरसुक्रपराइ लषैभौमफलजोजनमाइ ॥ ३ ॥ बुद्धिधनी
निजकुलअभिराम ॥ सोपुनिवाहनमहितसकाम ॥ सेनपतिमहिपालहिकेर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बुधकेघरकविजौबुधहैरा ॥ ४ ॥ बुद्धिहिकेरिमहाबुधिहोइ ॥ धनवंताप्रसंनचि
तसोइ ॥ चंदपुत्रमंदिरभृगुहोइ ॥ ग्यानवानसुभजीवलधार ॥ ५ ॥ होइदुचारीचं
चलवान ॥ ताकेवैरीहोइनिदान ॥ कुलजनसोंअतिरहचितरंक ॥ बुधकेभृगु
सनिहैपच्छसंक ॥ ६ ॥ इति बुधघर [illegible] ॥ कोधि
लच्छरिकेवस्यपुनित्रियकोसुखनहिपाव ॥ उसनातासिकुलीरकेजोरविनअ
रिचलाव ॥ १ ॥ [illegible] ॥ पहिलसुतासुलपुनिहै ॥ पतिनिहिगोरखु
गुनिहै ॥ करकेघरेभृगअनियै ॥ ससिनजरेफलजनियै ॥ २ ॥ चतुरकलासुवि
मतिलो ॥ पनिअरिवंसकहतिलो ॥ अस्कतहैपतिनिविषै ॥ भृगुकरकेकुसुन
हिषै ॥ ३ ॥ गुननियहैनिपुनालिया ॥ करहिउदासमसुतत्रिया ॥ हिमकरधामवगवि
रहै ॥ बुधनजरेफलसुपहै ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ अधिकविभोजियनेम्र संदरसो
अतिचतुरउदारा ॥ लुनजुगवचनविलासित्रियापतिसुखअधिकारा ॥ ससि
मंदिरभृगुपरैजीवजरहैपैअसदान संभुजनमसोवालहोइतिहिएनेलदान ॥ ५ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दोहा छंद॥ ध्यान भ्रगु छष्ट नपुत्र जुत होइ कामिनी जीत॥ लग्न कुलीरहि होइ
भ्रगु नैन लषे सनि मीत॥ ६॥ इति मासि ग्रहे भ्रगु ग्रह दृष्टि फलं॥ नीलम
पकछंद॥ ईश घरै ज्ञाति वृत्ति वढेई॥ कामिनि तै धन जो उपजेई॥ म्हारम स
वकला परपंची॥ भान लषे भ्रगु सिंह ज्ञ वंची॥ १॥ नारि विशेषि लरै विलसोई
॥ दूसरि मात तिहि पुनि होई॥ सुंदर देह लषे पुनि चंद्रा॥ केहरि रासि परै भ्रगु नंदा
॥ २॥ देह ज्ञान रति चिंत महाई॥ भूपति तैं धन लेर कमाई॥ सूरज मंदिर मे भ्रगु हो
ई॥ मंगल देषहि एफल सोई॥ ३॥ संग्रहि जो धन धान्यहि केरा॥ कामिल नाउर
लुब्ध वसेरा॥ सूरज मंदिर मे भ्रगु डेरा॥ एफल सोम्य विलोचन हेरा॥ ४॥ भ्रष्ट स
षा सुत द्रव्य सुधारी॥ जी वहु नायक वाहन भारी॥ कर्म प्रतज्ञ करै वहु दासा॥ जी
व लषे कवि भानु अवासा॥ ५॥ भोजन हार सवै सिधि हीको॥ ईड प्रदान प्रवीन
मतीको॥ भूपति तुल्य सुता पुर आनी॥ मंद लषे भ्रगु सिंह हि थानी॥ ६॥ इति
सिंहासित भ्रगु ग्रह दृष्टि फलं॥ हे सत वक्र धनी वुधि वाना॥ देसनि भो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग करै विधि नाना ॥ भाग महासुभ वाहन धेना ॥ जीव हि सुक्र लषै रवि नैं मा ॥ १ ॥
भ्रमरावलि छंद ॥ अतिसोभित राजनि मैं वकु भोगिलहै ॥ रनधीर प्रसिद्ध क
लोक सु औ पिल्ल है ॥ वल वीर महा मन नम्र भलो करि ये ॥ गुरु धाम परैं भृगु चंद्र
७ लषै लहिये ॥ २ ॥ अतिसत्व निवौं अ साध्य कहो इ धनी ॥ पुनि आनन होइ प्रस
सुधर्म मनी ॥ सुभ वाहन कामिनि के सुष सो मनियै ॥ कुजनैन लषे भृगुजो गुरु
के गनिये ॥ ३ ॥ धनभूषन हू करि वस्त्र वानमहा ॥ सुषसुंदर वाहन सज्जन जानि
कहा ॥ तिहि भोजन मी सत्वे सालि पत्र रिषै ॥ भृगु पुत्र परै वक्र जो धन मीन विषै
॥ ४ ॥ दोहा छंद ॥ भूषन अरु त्रिय सुष सहित वसन हेम गज वाजि ॥ सुरगुर मंदिर
भृगु परै गुर देषै फल साजि ॥ ५ ॥ मनहंस छंद ॥ करकर्म उन्नि मनी कभोग सुषी
कहा ॥ नित उत्सवी अरु कवि संजुत है महा ॥ धन धाम मैं अधिकार ता सुव धानि
पै ॥ भृगु जीव रासि सनालषै फल मानियै ॥ ६ ॥ इति गुरुपरस्थ भृगु फल
तोटक छंद ॥ रति विलास परवीन ॥ धीर चक्र तिर रविल वली ॥ भानलषे फल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

न॥ सुक्र होइ ससि रासिके॥ १॥ सील ऊंच तन नीक॥ धन वाहन बल विक्रमी॥
जो ससि दृग जन नीक॥ सुक्र सनीचर घर परे॥ २॥ दोहा छंद॥ कुचल तन लै धन नास व
ही आलस संज्ञुन रोग॥ असित धाम भृगु होइ जो भौम देष फल जोग॥ ३॥ चाम
र छंद॥ नीक वत्क हाथ पञ्चि सील इव्य वंत है॥ है विधि गप आनि कै सु विद्य या
लसंत है॥ चारु बुद्धि जोर वंत ऊंच डील जानिये॥ सुक्र होइ मंद धाम वृद्ध इ
मानिये॥ ४॥ काम तें सुनीक होइ रुच्चि वाय गीत है॥ लेइ बहु जो बहू तकै स
गंध प्रीत है॥ है पवित्र सोम हासु चिह्न एवि सेष ही॥ सुक्र मंद रासि कै सुजी
वनै न देष ही॥ ५॥ दोहा छंद॥ धन वाहन त्रिय सुत सुषी छीन प्रसंन छवि वंत
॥ लाभ वडो भृगु मंद कै जो दृग मेद लषंत॥ ६॥ इति मनि ग्रह सुक्र घर दृष्टि फ
ल॥ चोपई छंद॥ मैं दृग गाइम हि विचित्र रू छेरी॥ पालै एसव हित करि हेरी॥
सुभ कमी सु निरंतर है निरप्य॥ कुज मंदिर सनि सुर जद्दिष्य॥ १॥ धन सुष वर
जित नीच कुसील॥ होइ चपल अरु महा रुषील॥ भूमि पुत्र घर जो सनि हो

जो०सिं०
१५०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

६ जिलेव शईन्त्रपातितेन्त्रपमेत्रीधनवान ८न्विरहूपनोगुरलेघेमोतनेमग
थान ५

१ चंद्रलघेते एफललोर ॥ २ ॥ वहुवन्नानसान्चकेसाज ॥ धनविनविधनकरैप
रकाज ॥ कुजमंदिरमनिमंगलरेष ॥ एफलसभूदासाविसेष ॥ ३ ॥ कलहकरेनस
गरीवहूत ॥ नारिविलाससुषनसुजत ॥ कुजघरमध्यपरहिजोमर ॥ एफलद
षेनिसिकरनेर ॥ ६ ॥ दोहरा छंद ॥ पतिनीमेन्त्रासक्रमति न्प्रतिकुरूपसुभ
ग्यान ॥ कुजकेमंदिरन्त्रासितजोभ्रगुरेसोफलजान ॥ १ ॥ मालिनी छंद ॥ वक
तिलवहुविद्याजुक्तहेमानवंता ॥ मसलतिन्प्रतिजानेसीलतामेलसंता ॥ न्त्र
हूपरषनभोगीनैनदेषेरिनेसा ॥ भ्रगसुतघरमाहीभावकोपुत्रवेसा ॥ १ ॥ सरि
तवसननारीहोइन्प्राभर्नसोई ॥ पुनिन्प्रतिन्प्रधिकारीभूपकेधामहोई ॥ सु
तसरितसुघारीहेगुनीजोरवंता ॥ रविसुतभ्रगुरासीनेनचेरारिषंता ॥ २ ॥
दोहा छंद ॥ वहुवेन्नान्त्ररूकछजुतभलोसमरकेकाज ॥ मंदपरैभ्रगुरासि
मेकुजरेषेफलसाज ॥ ३ ॥ वरवै छंद ॥ नीचजननिसोप्रीतिवहुमदनीक
वेसघसेजुनिपुंसविनधनहीक ॥ गीतविनोदसुहासाबुद्धि दिषाहि हेयमं

[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भृगुराशियहफलदेहि ॥४॥ होइचित्तउपकारिसवहिपियार ॥ दुष्टीरोषिघ
छितारकरतजगार ॥ देतदानअधिकाइताहिसुभाव ॥ देषहितोधनजीव
सनिभृगुभाव ॥५॥ रतिविलासपरवीनधनवलवान ॥ गुरजअगहवोसोइपाइ
तजान ॥ सुक्रधामसनिहोइभृगुरिघअहा ॥ जोतिषसागरकहतसंभुसुतहा ॥६॥
इतिभृगु [illegible] ॥ सगतिनीचअधमजनतसु
घविनधारोक्रोधि ॥ होइमंदवुधग्रेहमैरविदेषहिफलसोधि ॥१॥ केतुभा
[illegible] ॥ भूपतिकेरहोइअधिकारीकोमलअतिसुलसंताहै ॥ अरुघरमाही
नारीचलघरछिनपसनगुनवंताहै ॥ हेवैवुद्धधामछायासुतपूरनचंद
दिषताहै ॥ इतनेगुनतिहितनमेहोईजानकजोजनमंताहै ॥२॥ सुंदरी
[illegible] ॥ विनघासिद्धिगभारवषानिये ॥ वुधिलकविधीकप्रमानिये ॥ समरधी
रसुजानभलोहिजो ॥ वुधघरेसनिभोमलषेहिजो ॥३॥ धनिकप्रेमविनासु
भहेमती ॥ समरकर्मप्रवीनसुनंमता ॥ गुनिकसिल्पकलावहुमानहै ॥ वु

मो०दि०
१७१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

घलषैसनिजौवुधथानहै ॥ ४ ॥ सुभग्रंगमहागुनग्यानहै ॥ वडमनस्विमहा
पतिमानहै ॥ प्रियसुगुन्नधनीनृभनहै ॥ गुरलषैवुधकेसनिरन्नहै ॥ ५ ॥ सिं
हावलोकनछंद ॥ करकर्मनिधर्मनिनीकवहै ॥ ग्रहभूपननारिन्नधीनग्रहै ॥
ग्रहसूरजकोसुतवुद्धघरै ॥ घरमध्यग्रहाधगजोमजरै ॥ ६ ॥ इतिवुधग्रहम
निग्रहदृष्टिफलं ॥ कुतमित्रसुभोगिकलेसलहा ॥ लहहीनत्रियाधनदीन
रहा ॥ रहमंदकुलीरघरैपरही ॥ परसूरजदृष्टिफलेकरही ॥ १ ॥ कुलपीडकु
मातहिकेरनरा ॥ नरसोधनवंतसुचिह्नपरा ॥ परकर्कटलग्नसुमंदग्रहा
ग्रहचंदलषेफलएतकहा ॥ २ ॥ धनउन्नमभूपतितैंमिलही ॥ मिलनारिक
ने लेवरछौसही ॥ सहिकर्कटरासिपराहिसनी ॥ सनिकौसुलषेकुजलेकुग
नी ॥ ३ ॥ कुरवुद्धिविलासिकवैनहुना ॥ हुनिवैरकुविद्यन्नरंभधनी ॥ धनि
सापरमंत्रिकक्रूरकहा ॥ कहकर्कसनीवुधदृष्टिरहा ॥ ४ ॥ सुतमंदिरग्रामस
रत्नधनी ॥ धनिवाहनपेषन्नभर्नतहा ॥ तहकर्कटकेसनिजीवरिषै

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रिषवेकेदिसंभुसुचिंह्रालिषे ॥५॥ छ॥ विमानसुदानगभीरनरा ॥ नरराप्रावेना
विनचैनघरा ॥ कमंदप्रयानसुकुलारघरा ॥ घरसुक्रलषेफलएनुधरा ॥६॥ इति
कर्कलग्नेसप्तमनिग्रहफलं ॥ मोतीदामछंद ॥ उत्तिमकुमनिछेउ ॥ धं
नवाहनसतिधानन्नत ॥ मंदभानघरमेउ ॥ रविदेषैफलजानिये ॥१॥ भुजंग
प्रयातछंद ॥ सुषीपुत्रकालित्रमित्राजुसीलो ॥ प्रतनीकसंगानताकोछ
वीलो ॥ सरत्नाच्युभनौनिकेजानितारी ॥ लषेचंदजोसिंहकेमंदच्यारी ॥२॥ दो
हाछंद ॥ संजुगकर्मप्रबीन ॥ क्रोधीअरुकरुनानही ॥ रविमंदिरसनिलीन
जौमंगलदेषैनयन ॥३॥ दोहाछंद ॥ इमनारिसुषसुतनहीअहाचिंता
संजूत ॥ छायासुतग्रहसिंहकरलषेचंद्रकरपूत ॥४॥ पंकावलीछंद ॥ ग्राम
नगरपतिपुंसरदविंक ॥ मित्रसुभागपनिजक्रप्रसिद्धिक ॥ संभुभनतातिहि
वंषसुवृत्तिक ॥ सूरजकरसनिजौगुरदृष्टिक ॥५॥ वास्वदरविसुषीभलञ्चन
हि ॥ कामिनिसनप्रनिहैअनवंनहि ॥ केहरिलग्नहिकेसनिहोइदृ देषहि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भृगुकुल षे बुध सो रव ॥ ६ ॥ इति मिनलग्नस्थित सनि ग्रह दृष्टि फलं ॥ मो
दक छंद ॥ नेह करै पर पुत्र निहू सनि ॥ गौरव हीर बलिष्ट महाधनि ॥ देव पुरोध
धरे सनि हो रव ॥ भानु लषै फल एत्तिक जोरव ॥ १ ॥ सुंदर कर्म हि नायक होवहि
॥ मात तनै सुष द्रव्य सुहावहि ॥ चापहि मीनहि केर सनीचर ॥ ए फल देवहि
नैनहि माकर ॥ २ ॥ वारुप्र कृत्य सुलोक विरोधिल ॥ सो वह होइ नरा परदेसिल
॥ नील सरूप व सै गुरु धामहि ॥ मंगल देषहि चिंह्न प्रनामहि ॥ ३ ॥ दर्वि गुनील
उचार समेत हि ॥ हे अधिकारि महीपनि केतहि ॥ सूरज पुत्र परे गुर रासिहि ॥
चिंह्न सु एबुध दृष्टि प्रकासिहि ॥ ४ ॥ भूपति ग्रेह अतिंत्य प्रधानह ॥ सेन सु
नाथ बली गुन ग्यानह ॥ सील सुकर्म सवै सम भारय ॥ जीव लषै सनि जी
व प्रतारय ॥ ५ ॥ संग्रथ है सब काज माहि य ॥ मात सुहै परदेसि हि जाहि य ॥
है जिय मानि लपावन चंगा हि ॥ सुक्र लषै सनि जीव प्रसंग हि ॥ ६ ॥ इति गुरु
ग्रहस्थ सनि ग्रह दृष्टि फलं ॥ कुत्सित भोगि ल रोगि ल है नर ॥ है परदेसिल दा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नि

लिकौघर॥ होइदुषीसु कुरूपामिलैतिय॥ मानलबैनिजयाकिसनोलिय॥१॥
हैवहुनारिकौभरताधनि॥ आतुरकामसुपापकरैवनि॥ मानविते षिणुरूक
लसुचंचल॥ वेरलषैसनिजौअपनैथल॥२॥सो०का छंद॥ सुरकूराद्वि
तंरूष॥ साहसीकगुनवाननर॥ कुजनजरेउतकष॥ अपनिगलिज्ञोसौरिपुह
॥३॥रविकौछर॥ काजअनेककरहिमतिधारसुउत्तिमवाहन॥ सविव
त निसाफिकग्पानिलअवलसाहगाहन॥ सूरजकौसुतगंहिरआपनमेंदु
धरैवहि॥ जानऊउतपतिसेभुकहैवरएफललैघहि॥४॥समानिकाछं
द॥ नरेसमेंविहेगनी॥ रुजीसुउच्चहेपुनी॥ सनीचरासुवरिसहे॥ लषेसु
जीवतिहैहे॥५॥ग्रंथानाछंद॥ साधेनियमकामनै [illegible] ईसनारि
कौज्ञाना॥ होइसुषी [illegible] भोगीलौवषतीअरूधनवाना॥ अनुसुतलैन
लषैहीजौसनिनिजअस्थाना॥ हैकटइ छिपरलपरभाषासेंसुवषाना॥

॥ इतिविजराभिश्रितसनिग्रहदोषः॥ ओं०लिं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इतिश्रीमत्पंडितनासिंहात्मजश्रीसंभुविरचितायांजोतिषसिंधुदिनी
प्रचन्द्रावचरसपरग्रहदृष्टिफलप्रकरनमेकोविंशतितरंगः॥२१॥सो
रठा छंद॥ मेषआदिसवरासि॥भानआदिदेहोग्रह॥भाषासंभुप्रकां
सि॥जुदेजुदेकोकिहतफल॥१॥परजुलिया छंद॥सहलीकहोइकर्मनिम
आर॥अतिसुबुद्धिननलोहूविकार॥नृपमित्रवधतिअतिकोपपित्त॥जौ
मेषरासिकेभानमित्र॥२॥वसतसंग्रहेजुपहिरेसुवास॥सुचिसुरूपगंधमे
हान्विप्रकास॥रिपुहरैहरैहतिक्रमपाल॥व्रवसूरजजौअलमीहवाल॥३॥
नृपनीतिमानसग्यानजान॥कोमलनिर्मलबहुसीलग्यान॥पढिगनितग्रं
थवक्तासुहोइ॥अतिनंदहोइरविमिथुनसोइ॥४॥नृपमित्रविनस्वजनकेर
आहि॥मानैनहीसुपितुकीरजाहि॥अरुकालग्यानमेग्याननाहि॥जौ
कर्कराशिकेभानआहि॥५॥मतिधीरअधिकविक्रमीहोइ॥भुवमंडलकी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तिवान होइ। परतोषमतिहि न्रपदासजान। कहि चिंह्न सँभु जो सिंह
भान ६। न्रप मधे हो है लेसु होवाहि धनी क। श्रुतिवान वक्ता सुनीक। प्र
रताप तेज है सत्रमार। दिननाथ है हो ईकन्या विचार ७। न्रप ते डरारि
जन सो विगार। कुलधर्म छाडि परकर्मकार। सब नर्क केर जो रचविधा
न। रवि तुलारासि निरधनि निदान ८। कर कंची लोभि रोस लीको
ध। माता पिता हि सो कर विरोध। अलिरासि उवे जो है सजाइ। जनमै
सुको उए चिंह्न पाइ ९। वासन समेत मतिवान सोइ। पुनि कुटंम को
पवहु तं म्रहोइ। संतोषमतिहि जनपाल चिन्ह। धनरासि केर जो भा
न मित्र १०। हे कुटंम हीन पुनि द्रव्य हीन। भटकै सुदेस परदेस लीन
विभ ताहु सुष उत सवन लेस। म्रगरासि जाइ ऊवे दिनेस ११। ग
न सु हेरम्ह ढऋ सुमलिनजान। पुनि रनसप्रतकहना निधान। जो कुं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रविजनमकाल। करिसंभु चिंहूए होरवाल। १२। धनिलेरदेरव्यौपार
ज्ञान। संतोषजीयजनपालजान। पुनिअरसरोगंभीरलीन। सुविक्रम
हन्दिरजौभानमीन। १३। इतिमघादिरासिस्थितसूरजफल। अथ
लिल छंद। सहजहीनसंदेवजितनारिहि। द्रव्यवंशसतप्रतिविचा
रिहि। जसपूरनविभुसहितविसेषहि। संभुकहैजौनिसिकरमेष
हि। १। सुमतिसुभगकुसलीउपजीवहि। धर्महितेकल्यानसुधावहि
चलनधीरपुनितासुप्रकासिय। संभुकहैजौससिवृषरासिय। २।
प्रियकरताकरूमीनसमेतहि। कामिनिकेसुषसुषीनिकेतहि। सुजैन
जनगौरवतुवषानिय। मिथुनरासिससिदेफलजानिय। ३। रुचि
सुगंधपंडितवलदानहु। सुमतिभोगआरोगवषानहु। हरषुनिसोअ
तिनीरविलासिय। संहरमतिसासिकर्कटरासिय। ४। पर्वतवागसुरु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अप्रमानहि। उदरपीरकरिगेरेनिरभनहि। घरकलहीकतेजतनहीनहि
कुमुदवंधसिंहहिकेलीनहि॥५॥ सीलसुभाउकुतूहलिसोइव। नारिवि
लासविधेरुचिहोइव। हेतिहिकोउतसावअनेहि। कन्याकेजौसागरनंद
हि॥६॥ वृषभअस्तकयाविक्रइजानिय। भकेदेवइजवहूविधिहानिय
अरुकामिनिकेसुखसमेतहि। वैरतुलाधनवंतनिकेतहि॥७॥ लघुम
नमनसिपापअधीनहि। नासकुवाधनकेपछीनहि। कलहिक
लषि निर्वलतनननसमीरहि। अलिरासिलत्तमीवीरहि॥८॥ प्रवलमहानिम
लधनमानव। सरलउक्तिव्ययरहितसुजानव। हैधनिसकलकला
प्रवीनव। उवनचंदजौधनभाकीनव॥९॥ मनमथआतुरसीतलभी
रहि। समअरांगमेरोससरीरहि। निजकुलमेंधनवंतप्रकासिहि। जौ
ससाकमकरहिकीरासिहि॥१०॥ उद्धतमहासुसत्तनिमारेहिप। आल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीकजानोतननतारिय प्रियप्रसूतिअरुकुसलविजत्तन॥ कुंभचंद्रमा
केफलकहन॥११॥ गोजिनबहुजनसेवकपालहि॥ स्रुतिसास्त्रनिमेग्यान
विसालहि॥ छिनवलि राछिन निर्वलहोइ॥ चंद्रमानसवबुद्धिनिसो
इ॥१२॥ इतिमघादिरासिस्थितेचंद्रफलं॥ मुक्तिकदामग्रंथ॥ मही
वंतभूपतिसुंदरवैन॥ सहजमसुसाहासिइव्यलचैन॥ महाप्रिय हैजगमे
गलमेष॥ कहैकविसंभुसचिंहूविसेष॥१॥ धनीग्रहथोरसुघी रिपुहो
इ॥ वसैपरधामनतैनदुखिसोइ॥ सरीरविषैरुजनंअविनास॥ वृषेकुजपत्र
अथाअनियास॥२॥ कलापरवीनसुउद्धतहोइ॥ भलीगतिप्रीतमम
दिरसोइ॥ तिहीसुपुत्रनिसंजुतजान॥ महीसुतजोमिथुनेफलमान
॥३॥ बलीमतिहीनवसेपरगेह॥ मितीकअहेरिपुत्रढिलवेह॥ तिहीर
नावैबलतातजुसरीर॥ कहैकविसंभुवभौमकुलीर॥४॥ सरीरपावितवके
हेसुतनारि॥ हनैरिपुउद्दिमसाहसधारि॥ अहैअवलीपुनिनंदनको

इ॥ करेहु जो मंगल सुए फल होइ॥२॥ करै जन वैध वराइ पनारि॥ नरा तिनिहि के
वहु हास रहारि॥ करै मघ जांप जजं नवता इ॥ मही सुत नारि सु भौम त्रियाइ
॥६॥ दुषी मुइ कामिनि तेज्ज्ञु तरोस॥ अहे पुनि गो रव नेहि विहोस॥ धनै व
रू षर्चं विहीन सरीर॥ तुलाकर मंगल ए फल गीर॥७॥ लहे भय पावक औ
रथियार॥ सुता त्रिय पुत्र सु षी अधिकार॥ मषान्न पकौ अति उत्स विज्ञान
॥ हनै रिपु वृश्चिक भौम पयान॥८॥ अहै रिपु तें छति दुष्य महान॥ तुरं
गम ज्ञान सु गौरव वान॥ मही भ्रम भीय महा हिय भौम॥ त्रिया सुभ नैइ
षजो धन भौम॥९॥ सपून सु ज्नुद्ध विषैं वह होइ॥ अहै धनवंत न ताहि व्रह
लोइ॥ त्रिया सुषसों कुल तें सु उदास॥ मृगै कुजजो करलें हि निवास॥१०॥
तहा अपनै जन तें प्रतिकूल॥ अहे सुष तें सु महादुष मूल॥ रुजी [illegible] दुष
मती कारे होइ॥ परै घर रोसि अगार कसोइ॥११॥ दपा विनु दुर्मति दुष्ट
सुभाइ॥ लहै दुराचिं तसु मानि न साइ॥ विदेस चलै बुधि व्याकुल होइ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मही सुत होइ रिमीन हि सोइ ॥ १२ ॥ इति मेषादि रासि अस्थिते भौमफ
ल ॥ अथ बुधगम ॥ चपल चित्त चलमती सदा सो जानियै ॥ रोगी कल
हावंत मनोरथ हानियै ॥ करूना जिन नस्होइ निरदई होइ ही ॥ मेषरासि
के होइ बुद्ध फल जो वही ॥ १ ॥ महा नेम्र नालीन वडुत विस्तार है ॥ अहेक
ला प्रवीन महा धनवार है ॥ रति विलास सुत वेध सुष्ष करि भाषियै ॥ वृ
१ षरासि ससि पुत्र सम्मुझि फल राषियै ॥ २ ॥ वक्रा लगे पिया रस्वना प्रवी
न है ॥ सदन सुधारी होइ प्रेन करि लीन है ॥ सुंदर काया होइ मान है जा
नियै ॥ मिथुन लगन बुध परै चिह्न सब घानियै ॥ ३ ॥ व्यसन चलन बरि सु होइ
झूठो बहु कहै ॥ परदेसी पुनि नरा होइ मातु पक्ष रहै ॥ होइ कामिनी पुत्र चंद
सुत कर्क कै ॥ ए फल संभ्रहास कहै विवितर्क के ॥ ४ ॥ सदन जनि को दुष देइ स
हु उरमति रहै ॥ अपने सजन नित तेज्ञु रहै दु चिंता वहै ॥ हाहि सुष्ष अन्य करि स
झूठ समे न रहै ॥ सिंह रासि के बुद्ध सु ए फल देत है ॥ ५ ॥ वचन विलासी हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होइ अधिकपरवीनहै॥ सवधर्मनिमैग्यान श्रेष्ट नरलीनहै॥ नवधनतैसु
ष पावनारि सुष ग्रेहला॥ ससिसुतके न्यारासि होइ उपरे हला॥६॥ अ
वतभांषेवेनजु नक्षत्र य यजानियै॥ सिलपकलापरवीन चितमन आनि
पै॥ चलकुचलनकी चालि अहै वहु वतकहा॥ तोलनि के वुधहोइ सं
भुए फलवहा॥७॥ रनमैहोइ कपूतवहुतलोभैधरै॥ सोभाहीकरिहीनमनि
फलकर्मनि करै॥ आलससहित सरीर सुताको जानियै॥ रोहिनेय अलि
होइ लछन वषानियै॥८॥ नारीतै वहु पुरुष सुषको पावही॥ वहु विभु
रनचित नं भभपकुलठावही॥ रिपुते लछाभहोइ कलापरवीनहै॥ वु
द्धकार मुकरासि चिहूहए लीनहै॥९॥ भयमानै रिपुतैसु मदनाविहीनहै
॥ उपकारीगुनवान सदुरमतिलीनहै॥ सवसौकरै प्रनाम चित्तचिंतार
रहै॥ मकरलगनके इंद्र सुसंभ फलकरै॥१०॥ कलहकरै घरसदा सुहमति

जो०सिं०
१६७

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लीनहै॥धनाविक्रमकरिनासधर्मकरिहीनहै॥उत्तमक्षत्रनैरहैं पुरुषरत
सिही॥जोजन्ममेंफलताहिसुप्रकासिही॥११॥द्रव्यपराएकैरिअप्रतुरता
करो॥देवब्राह्मनहिकेरिभाक्तिलेउरधरै॥अरुहीजनसोंसदासुआसक्त
करहै॥सफरिरासिबुधहोरवालसोफललहै॥१२॥इतिमेषादिरासिस्थि
तबुधफलं॥अथगुरुफलकेछंद॥सुभआचरनउदारा॥उपरेहलसनारि सचित्र
निमआरा॥विभौबुद्धिमतिजगहिसिधावै॥मेषजीवलग्नथरजनमा
वै॥१॥पूजैअजअरुदेवहिसोई॥गौरवविशुधनवाहनहोई॥रनविक्रमि
सत्रनिदुघरेई॥एफलवृषगुरकेगनिलेई॥२॥प्रियवकताकवितासु
करैई॥पावनगतिमिलसीलधरेई॥मित्रअमित्रहोइप्रनिताकै॥मिथुनरासि
ग्रंथ विहफलनाकै॥३॥पटैंवहुविधिधनवाना॥कुलाचतुरप्रियवक्ता
जाना॥हाथीघोरेवधैअपारा॥उह्तकामककर्कगुरसारा॥४॥फचिगद
कानवागपहारा॥हेसरीरइष्टअरुहातारा॥रिपुविभ्रातिहरिधाममध

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रेई॥ जो पिव्रहसपतिसिंहपरेई॥५॥ सुंदरगंधप्रसूनधरैई॥ धनीदानमोवि
विधिकरैई॥ रिपुहिंडरे तननिरमललीवा॥ लेरवुसनसुभकन्याजीवा॥६॥
चतुरधीरसत्रानेमेसोई॥ प्रज्ञाजपजापंहिमेहोई॥ दानीवडेजपहोमकरा
ई॥ सुरदुजभन्नवनिजगुरजाई॥७॥ नासेद्रव्यदोषकोकारी॥ काननमंदिर
रहेडुधारी॥ हंभी होरदुरवलेदेही॥ देवपुरोहितजोआलिग्रेही॥८॥ बहुवि
धुउछ्तसमरमआरा॥ द्रव्यवानवाहनअधिकारा॥ रुन्दिहमेससुभभूष
नमाही॥ मतिकोसारजीवधनजाही॥९॥ मदनहीनपरकर्मनिरासा॥ धरि
नदासमनसुनैनवासा॥ दोषीलोइरमानिनरसोई॥ मकररासिजोसुरगुर
होई॥१०॥ कुमतिहीनद्रपनसुभाऊ॥ पापकर्मकररोगतनाऊ॥ शाहपीर
अरूपेरविथाहे॥ दुराचारंतनिघरगरवाहे॥११॥ त्रपनैधनवहुरचय
रहाऊ॥ अनुसरसाधनकेमनभाऊ॥ दानाहरषीमदनकुभाऊ॥ मीनरासि
परजोगुरजाऊ॥१२॥ इतिमहादशासिथितगुरुफलं॥ चौपईछंद॥

ज्यो॰ हि॰
१५८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बहु वाहनपुरपतिअरिहीन। प्रियजनकरसनमाननलीन॥ सबकौभलौन्च
लेसुभचाल॥ मेषसुक्रजोजनमेंबाल॥ १॥ लाभैअधिकगरवौ॥ कैथिहार उ
लसवपुत्रकलित्रविचार॥ फूलगंधरुचिबिरलेसत्र॥ फलठ्ठेवसुषविदित
सरवत्र॥ २॥ जोसटिकलागेष्टसवपुष्ट॥ सरलमधुरमृदुवीनोकष्ट॥ मो
जनकरैमधुरनजकेर॥ सुक्रमिथुनकरानिवेर॥ ३॥ गुनसमेतनरवांसिल
३॥ विमलकर्मरतिजानोनेर॥ कलनिचतुरवाहनसुभहोर॥ जोकुलीरके
भ्रगुसुतसोइ॥ ४॥ नारिननितेसुसुष्वधनमान॥ निजजनसोखनवनजो
जान॥ सत्रहितेसोअतिसषपाव॥ सिंहरासिजोभ्रगसुतजाव॥ ५॥ सोभा
भूषितहेसोलोइ॥ थूलहूस्ववभीलिहिहोइ॥ तीरथरुच्यहोइधनुधार
अ सुरगुरोहितकेन्याहोर॥ ६॥ तिहिकरअवागवननसाइ॥ धनाविचि
त्र सोवेकविराइ॥ कुसम्हीवसनरुचिरिहिअतितारि॥ तुलारासिजोसुक्र
उवाहि॥ ७॥ विरलोभन होवेमातिघान॥ जननिंरकअरुरोगिलगात॥

फल

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कलही जो भृगु अति कोरासि ॥ ए फल सम्भ कहे प्रकासि ॥ ८ ॥ तुल ही सु
नत्रिया समेत ॥ नृप मंत्री सुभ सील निकेत ॥ कविता रुचि हिय नित द्विज
नमें तेरि ॥ होइ वीर भृगु जो धन केरि ॥ ९ ॥ त्रिकोन नो फल न हूजाइ ॥ जनसों
प्रीति नहीं करवाइ ॥ अरि छिनि तें धन होवे छीन ॥ वृद्ध रोग है भृगु अगली
न ॥ १० ॥ जो कमां र सोई पुनि घाइ ॥ है पुनि निरमल कर्म सुभाइ ॥ भूषन
वसन भोग करि हीन ॥ असु पुरोधर्म भृगु के लीन ॥ ११ ॥ विभो सुता के नृप
मैं होइ ॥ सत्रु निपारि लेहि कर सोइ ॥ नम्र होइ जनकों धन देइ ॥ जो भृगु
मीन पयानो देइ ॥ १२ ॥ इति मेघादिरासिस्थिते शुक्रफलं ॥ तोटक छंद ॥
धन हीन सरीर विरोध जने ॥ धमराज समान सु बोध गने ॥ समुझै पुनि
वा निज कर्म सवे ॥ अभिलाष न तैस निमेष गवे ॥ १ ॥ वनिता निकसु छवि
को हरई ॥ सत संगति लोभ निसो करई ॥ सुत सान रहै अन भंग तेहा ॥
वृष रासि उवे कुमे रय हा ॥ २ ॥ सुविभो सुख हीन कुचील तनै ॥ न जिमें

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

द्रि बागविलासिमनै ॥ सुभचालनिचालिसदासुभमैं ॥ सनिजोवक्र
सुग्माहि रासिरमैं ॥३॥ कमलासुघ्ड वेलच्चौगमहा ॥ रिपुकोउ घर्तेनसुचि
नरहा ॥ तिहिपे जननीवरुमोह करै ॥ सनिकर्कटलग्नहिजाइपरै ॥ चतुरा
श्रातिलेषकपुलकरै ॥ सुतकामिनितेंडुपरीनरहै ॥ कलहीविनसील
सहानरहै ॥ रविपुत्रसुकेहरिरासिरहै ॥५॥ कछुकर्मकरौतिनसुष्वनसी ॥ च
लसोइ हजोनासिजाइनही ॥ विनईपुनिमित्रहितेंतुसलै ॥ सनिकन्यहिकै ली
नरनाहिवली ॥६॥ पारिवारसुपालकभूपमनो ॥ वलवानसुआतुरकाम
गनो ॥ नृपकेरकरौजसवानमहा ॥ कहूआरहिजोधररासिरहा ॥७॥ वि
ग सपावकसस्त्रहितेंभयहै ॥ रिपुरौहिकोसुडरातुरहै ॥ सुतमित्रहितैसुव
हीनसही ॥ धनभूपनसेसनिबाच्चिकही ॥८॥ ब्रसदीरघसुंरखतिलही ॥
धनतेंश्रातिक्रोधिलविस्वमही ॥ पुनिपुत्रसमूहकहैवनिकै ॥ फलहोइ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुखपावगएसनिकै॥९॥ग्रगकोमरचंदनअगरहै॥पुनिफूलसुगंधविषेसु
षहै॥बहुभूपवडाइहिदेइतिरो॥मकरागनमंरफलपावलिरो॥१०॥रिपुना
हितहानितहिजीतलिवै॥सवकामनिकोवहपीठिदिवै॥चितचिंतितल
ष्ट्रपचौकसवा॥सनिकुंभपरैफलएतलवा॥११॥विवहारविषैवट
सीलभला॥उपकारकरीगुनवंतनला॥धनिनैत्रविभौवहुमानधरी॥फल
एरविपुत्रपरैसफरी॥१२॥इतिमेषादिरासिस्थितसनिफलं॥॥मेषं
द॥सवलरासिपतिहोइकैरनिजरासिपरहि॥एफलकहैविसेषिहोइतै
मिथ्यानाहि॥वलीहोइरासीसरासिकैवलीवहूरे॥अथवाग्रहमयसा
रहोइतेफलभरिपूरे॥अस्तगनीचऊचौग्रहाजेमोजाइजरापरैंस
भस्तुजोतिषिकहतहैघटिवढितैसोफलकरै॥१३॥इतिवलावलफलं॥ग्रह
गलाछंद॥अवभाषौसानिचक्रसुभासुभफलतिहिवातै॥जनमका
लकोनषतनषतसनिगनिलैतातै॥नराकारलिषचक्रनषतक्रमसो

जो०सि०
१५०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सवदीजे ॥ मंगलचक्रफलकौरै संभुसमुझीकरिलीजे ॥ १ ॥ एकनषत्रसिरदेउ
तीनिमुनिमुषमेरई ॥ चारिगुहिजमेधरौचारिनैननिगनिलेई पाचक्र
षत्रउरमाअहौ ॥ वायेकरहोई ॥ तीनिवामपरती
निदाहिनकरसाहिनदोई ॥ २ ॥ इहिप्रकारसनिचक्र
कहौमुनिकरिविस्तारा ॥ रोगलाभउरुहानिसुष
वंधनउरुपीरा ॥ गवनलाभक्रमसातवक्रमारगिस
निजौपे ॥ उलटफलसवकरै संभुगनिलीजेजोपे ॥ ३ ॥
गलाछंद ॥ मुषमेंदरिद्र ॥ १ ॥ हृदैगहैकरदाहिनो
॥ २ ॥ धनाविस्तरै ॥ पगतै ॥ ३ ॥ भ्रमैयुदेसजोकरवाम ॥ ४ ॥
कौ वंधनकोकरै ॥ उरैनछत्रु ॥ ५ ॥ लाभकोन्त्रपपूज्यसीस
॥ ६ ॥ नछत्रहै ॥ इगरिद्रा ॥ ७ ॥ जोसुभभागचतुगुरा ॥ ७ ॥
विघफलतनहै ॥ ७ ॥ रतिसनिवक्रफलं ॥ काव्यछंद ॥ चक्रसर्वतोभद्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

करौ संछेपवखाना॥ तीनलोककौरीपफलदेहैंइसमाना॥ जागपाछेमनद्व
कोरउदगदहिननवपूरा॥ बरनरासिनष
तसूरसंभुएफलमंजूरा॥ १॥ सर्वतोभद्र
दो॥ वेधनषतलभ्रमकराइ बरनहानिआरया
थितुरलैतिथि वेधआसुविघनवेधरासी॥
पंचवेधनासजान आविचलधुवसोवधा
नतातिघजलनिधानदेषिएफलप्रकासी
रोहिनीअकारवेध नंदातिथिवृषभरा
सितिथिभद्राओतकारश्रवनओतिसाथा
॥ कृतिकाअनूतुलारासिभद्रासोवेधवु ह
रिनिषेधषेटहोरसंभुलेखिचक्रभाषा॥
वेधअस्वनीउकारअरुवाऔकारजानवो
स्वामिधुनारकारवेधस्वातितारा॥ दुष्टरेकाररोहिनीअभिजीतवेधरेष

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	औ
भ	ऊ	अ	व	कं	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	ए	मि	क	लॄ	म	पू
रे	च	मे	औ	नंदा	अ	लिं	ट	उ
उ	द	मी	ह्रीं	पूर्णा	ह्रीं	क	प	ह
पू	स	कुं	अं	जया	अं	ठ	र	चि
स	ग	ए	म	ष	व	ए	त	स्वा
ध	अः	ख	ज	भा	य	न	अः	वि
ध	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नीवू केअ्रक ककारवेयु सिं२ ओपकारा॥ वेध चिहु रापकारवे सरे वनीसका॥
है॥ विधपूषा अ्रकारविच्चभ अ्रसभकारा॥ २हि विधिसव चक्रमा है ताम वेध
को प्रमान नीक वेध नीकफलसु अ्रसुभ ससुभधारा॥ ३॥ इतिसर्वतोभद्रचक्र॥
दोहा छंद॥ संमुक दृष्ट अ्रवसोधिकरि सूरजकालाचक्र॥ तेउसुभासुभ फल
लषु जिजैसे घुतमाथितक्र॥ १॥ सुंदर छंद॥ त्र३ऊरध रेषलिषेति रछीउ
नि सूलालिषेसिर ऊपर रेषा॥ विवयौविवकौनन एक त्रिसूल तरौलेहै ५
तिहि संगसुलेषा॥ मधिसूल सुमूल धरौ रवितारहि वाम चलेअ्रभिजित
विसेषा॥ उतपत्पन छत्रपरा२ जहा फलजैस सुभासुभ संधु विसेषा॥ २॥
मधिमूल हितेइडकु कोधिनिपे उसुतीन कहै सुविचारि विचारी॥ पिक
रीजु वढै पुनि वक्रकरै पुनितीजहि वेधनको अ्रनुसारी॥ कहुजन्मन छै
असु संगपरै पुनितौ वहमानुषरोगिलभारी॥ पितिहोर नछत्र निसूलवि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१५२ ष्ठोतिहिकीम्रतुपंडितभाषमिहारी॥३॥अहसेपवचैजुनछत्रतहागनुतेजु
महाअरुलाभमिलैरुभलेरै। तिहिंअष्टरुसिद्धिनवौनिधिकेफलभातीनि

केष्ठुनियासफलेश्री॥
हिननायककालष्ठव
क्रयहेपुनिकाराजचा
रिविषैसुमिलैरै॥रव
जुद्धसमेअरुरोगिल
वारप्रधानसुसंग्रय
हैगानिलेरै॥४॥अत
मरजकालाजलच
कौ॥कारकारकेसोक

रिकोरचहूरिसिरवनिकोसुवनारषचावे विवरेषतहाविदिसानिवचे जो०सिं० १५२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पुनिवर्तुलवाहिरसूलकहावै॥दिसिपूरवपश्चिमउत्तरदछिनरेषनिपेखुनि
सूलवनावै॥दिसिपूरवसूलमझारपरैसुधरोसतासिरिदछ्सुवामगनावै॥५॥सु
तजन्मनछत्रपरैकहुसूलविषैनरमृत्युतिहीगनिलीजे॥कहुं चंंनपरैव
हरित्तमहासुषदुःखआनरवाट्तहाइषछीजे॥ससिकालनलायहचक्रसुजु
ड्प्रयाणविचारनकीजे॥भावसंभुकहैयहग्रंथविचारविचारिसुअ्छन
हीयहसत्यगनीजे॥२॥अथ कालानलचक्र॥दोहरा॥गोचरयह
निजरासितैंद्वादसराशिप्रछिंन॥तिहूकेफलसंभूकहतभिंनभिंनकरिभि
न॥१॥सविकाछंद॥जोकहूदिनेसजन्मरासिही॥नाथनासइसरेजुत्रासि
ही॥तीसरैदिनेसइव्यकोकरै॥चोथधोसनाथमानकोहरे २ रीनताव
रैसुभानपांचयो॥षष्टभानसत्रनाससांचयो॥सातयेदिनेसपंथचिंतहै
पीरदाम आठयेअरिंत्रहै॥३॥सोभभंगभानजोनवोपरै॥काजसिद्दिहस
जोहसोकरै॥लाभवानग्यारहोपतंगहै॥वारहोदिनेसइव्यभंगहै॥४॥इति

वी॰न

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ चरणिफल ॥ जन्मचंद्र जो नले घरै भरै ॥ दूसरो निरोसद्र व्य लेकरै ॥ तीज
चंद्रमा सुइ अवहूवे ॥ चौथ चंद्र
कुषिरोगमहूवे ॥ ४ ॥ चंद्र पंचमो
सुकाजनासही ॥ चंद्रमा छठो व
लेप्रकासही ॥ इंदु सातयो विभो
वहूतहै ॥ आठये निसेसरोगज्
तहै ॥ ६ ॥ चंद्रमा नवौ सुराजदेइ
है ॥ इंद्र दस्य सुष्य जो सु षंडे है ॥
चंद्र लाभ अपार हो व षानिये ॥ बा
रहौ ससोक कार जानिये ॥ १ ॥
नासे धन सुत धर्मको
जो ससि छीन गरूर ॥ २ ॥ निकी व
दनी होइ जो कलावंत मासिपूर ॥ ८ ॥ इति गोचरचंद्रफल ॥ श्रीरस्तु ॥ के ओ० सिं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रैजनमकुजत्रास॥ छठतिहूसौ प्रकास॥ तीजेकुजधनहोर॥ चौथेरिपुवृधिसोर
॥ ८॥ पांचेकुज छठतिजान॥ भौमछठै धनवान॥ पुनिछातेमंगलसात॥ आठैमंग
लभयअभिकाल॥ १०॥ नवौरोगदुससोष॥ लाभग्यारहेदोष॥ वचेचारैवाम
लभयवभिकाल॥ ११॥ इतिगोचरभौमफल॥ पहिलचंद्रसुनवंध॥ दू
जामभूसुतवाराहिदाम॥ ११॥ चौथेइव्यप्रकास॥ १२॥ पीडापन्चप्रकारहि॥ चं
द्रदूसरेकेध॥ छुद्दतीसरेत्रास॥ चौथेइव्यप्रकास॥ १२॥ पीडापन्चप्रकारहि चं
दूसरेकेध छुद्दतीसरेत्रास॥ चौथेइव्यप्रकास॥ १२॥ पीडापन्चप्रकारहि
पुत्रछठयेधनआरि॥ कुडसातपैपीर॥ आठैबुधधनगीर॥ १३॥ नवयेपीड़
हपुत्रछठयेधनआरि॥ कुडसातपेपीर॥ आठैबुधधनगीर॥ १३॥ नवयेपीड़
होइ॥ दसयेंबुधसुषसोइ॥ ग्यारहिलाभवषान॥ वारहिबुधव्ययजा॥ १४॥ इ
तिगोचरबुधफल॥ जनमबृहसपतित्रास॥ दूजेइव्यप्रकास॥ तीजेपीरामनेहि
चौथेगुररिपुवृद्धि॥ १५॥ पांचेगुरुसुषवान॥ सोकछठयगुरुजान॥ सातेत्रपस
नमान॥ आठयरोगनिदान॥ १६॥ नवसोषप्रदजीव॥ दसयेदीनकरीव॥ ग्या
रहिगुरुवित्तमान॥ व्यथावारहेजान॥ १७॥ इतिगोचरगुरुफल॥ सुक्रजनम
रिपुनास॥ दूजेइव्यनिवास॥ सोष्यसुक्रकरतीज॥ वित्तचौथ्यभगलीज॥ १८॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१५७

॥पांचसोव्यसुतहेरि॥ छठयेंवृधिरिपुकेरि॥ सातेंअगुनेसोक॥ आठेंअगुधनखो
क॥१७॥ नवलाभनवमाहिं॥ दसयेंपीडाआहि॥ ग्याराहिंद्रव्यमिलाय॥ राहि वा
धनअधिकाव॥१८॥ इतिगोचरभृगुफलं॥ भेजनमसनिलेस॥ दूजेंमं
दकलेस॥ तीजेंसनिसुभवान॥ रिउभयचौथेजान॥१९॥ पांचेंसुतछनिज्ञान
छठयेंसुखनिदान॥ दोषसपतस्थान॥ आठेंपीडावान॥२०॥ निर्धननवमेंये
होइ॥ दसमदुखतासोइ॥ द्रव्यग्यारहेंमंद॥ बारहिंअनरथफंद॥२१॥ इतिगो
चरसनिफलं॥ जनमराहतेहानि॥ दूजेंनिर्धनिज्ञानि॥ तीजराहधनहेर
चौथेंतमतेंवेर॥२२॥ सोकपांचयेंराह॥ धनप्रदछठयेंमाह॥ बारसातयेंहो
इ॥ आठेंतमपीडाकरिसोइ॥२३॥ नवयेंतमतेंपाप॥ दसयेंवैरतथाप॥ ग्या
रहिंसौख्यप्रकास॥ द्वादसद्रव्यविनास॥२४॥ जसगोचरफलराह॥ तसकेत
हिंअवगाह॥ गोचरचक्रअरंभ॥ कहेंजथामतिसंभ॥२५॥ इतिगोचर
राहुकेतुफलं॥ अथ अंक॥ ॥राशि॥ ॥सिंगोचराघटनामेंफलभावे॥ अथ

जो॰सिं॰
१५७

नए कै दोरासिजोरऋुदृनुरफलराषे ॥ सूतिकालके समैचंद्रमाजोनहिरासी
जनमरासिनिहिकहै देषिजोतिषअभ्यासी ॥ एहीप्रकारलगनानिविषेग्रहान
हुसानहूपरे भाषाप्रवानकरिसंभुक ॥ क्रिजनमकालफलउचरे २६ ॥ इतिजान
चक्रफलं ॥ सूरजादिसवषेटकहोतिअष्टकवर्ग ॥ मतसमुझमथिरतन
कहाचाराजमुनिगर्ग ॥ रेषावसु ८ ग्रहदेउसुभासुभतिन्हफलदेषो ॥ लगन
सहितदेरेषवर्गअष्टकफललेषो ॥ एहीप्रकारकरिलेषही अरु १ रासिव
गनिविषे ॥ देषैसुरेषामिलितासुफलसंभूकृतपुस्तकलिषे ॥ १ ॥ चौबोली
२ ॥ सूरजहीकेअष्टवर्गमेरवितेहोजेप्रथमतहां ॥ वह्नरिसनीचांम
गलहीतेसुनजोवगानिस्तेजहां ॥ आठो ८ नव ९ ग्यारहे ११ ॥ दूतीयो २ रवितै
रेषासकुलिहा ॥ जनम १ चौ ४ सातो ७ अरुदसयो १० तीजे ३ चोथेव अजनम
से ॥ २ ॥ भानुपुत्रकुजजोवि ॥ येहीरेषासकुलिसभारिलेषे ॥ भृगुतेग्रह ८ वारे
सातो ७ कह्यो जानिइनभवननिविषे ॥ भृगुतेनव ९ ग्रह १२ पाचये ५ ग्यार एका

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्र० १५५

दस भवन कहौ ॥ सनि तें तीन ३ षट ६ पुनि ग्यारह ११ अरु दसमें १० सुष्थान स
हो ॥ ३ ॥ बुध तें पांच ५ चारि ४ नव ९ रस ६ व्यय १२ अरु दसयौ १० निरधारि ग्यार
रेषा ग्यारहि ॥ मंदिर मांहीं सब भाषै रेषा विस्तार विस्तार रेषा है लग्न तें त्रय
हिक ॥ षेट ६ षट ६ अरु ग्यारुघरा ॥ पुनि द्वादसमय
॥ भवन के मांही रेषा लिषि फल उच्चरा ॥ ७ ॥ इति सू. यो
स्त. वर्ग फल ॥ ससि के अष्टक वर्ग हि गाहि प्रथम भा ॥
प्रते गनि वक्रौ नव ९ सुत ५ धन २ तीसरु ३ रिपु मंदिर ६
सप्तऔ दस ७ ग्यारहौ ११ घरे ॥ छाया सुत ते रेषा लै षोल
म ३ सरस ६ सुत ५ रिपु भवना ६ तीन ३ षट ६ दस पुनि १०
एकादस ११ कहौ लग्न तें सप्त ७ मना ॥ १ ॥ सूर्य तें षा
ता ॥ सांतौ ७ रिपु ६ ग्यारह ११ दसौ १० भवन ॥ निधना ८ बुध
लें वान ५ तीन ३ पुनि चाहौ ४ केंद्र १।४।७।१० लाभ ११ मा रि गगना ॥ सुरगुरु हि लै
केंद्र भवन में १।४।७।१० रंध्र ८ लाभ ११ वारहै १२ ग्रहा ॥ ससि तें तीसर ३ घट यो ॥ सा



ज्यो०सिं० १५५

नय कर्म आयु व्ययभवनदश २ कुजतेपञ्चभवन चव चौथो आन
तीसरो भवनव्ययहै कर्मभवन दसवो पुनिसातो लाभ ग्यारहलग्नके ४
मेनवो मन्दिरसोकरिहै भृगुतेरेखाबनिधरो ग्रहचेष्टा अष्टकवर्गकरनेसंशुभा
शफलसुकरो ३ इति चंद्राष्टकवर्गफलं मन्दीपम कुजकेअष्टकवर्ग
हिमारि पुत्रभवन पुतेजान पीडा धन आयु लाभमन्दिररेखाचौदह व्यधा
न भृगुतेरेखाकरि लाभघर रिपु वारहो निरंतर आता आयु सत्रमन्दिरेम
सलिनेरेखाहैत १ भृगुतेघर लाभ गनिहै व्यय आठोघर लेप सह
ज आयुसुत वैरीमन्दिर बुधतेरीजेरेख केंद्रभवन आठो नव वा
रह सनितेरेखाहेड रविगनतीज ६२ ग्यारह दिव घरपाचो गनिले २
दश तनतेग्यारह बंधु रिपु पुनिगनिहरसाधाम रेखापहिले
सम्भूदेहष्टनाम ३ इति कुजाष्टकवर्गफलं बुधकेअष्टकवर्ग
को भृगुतेपहिलेसो तन धन त्रिति सुख पाचयो दस नव गनितेरे
रेखाहोजे लाभमे भृगुतेसुविचारी सनितेनव केंद्रमे चे
ज्ञ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा.म०
१५८

सु लाभ निहारी २ आपु सहज रिपु पांचयो घरधरचन मेह धर्म आ
यु घरज्ञानिधरेखाबुधतेइ सुत षट नव व्यय लाभहे रविलेगनिलेखा ला
भ आठ रिपु बारहे गुरुते रेखा २ धन सुख रिपु औसपारद सुत घरस
नोऊ ससितेरेखाशीजियेसंभूकहिसोऊ तन दूजो चौथो च्यारी लगनहि
तेरीजे कर्म लाभ अरु आठैयो मदिरानिलीजे २ [illegible]
गुरकेच्रकवगमेषुधमहिगुरातेरी लाभ रंध्र धन सहजहे केंद्रस्त्रले
क [illegible] देही भगुतेनव दस द्वितिय सिवहेरिपु सुत येहा केंद्र
[illegible] आयु सुत रिपु धना नव लगनतिमेहा [illegible] सुख दुनि दस ला
भहे वधु धन घरलेखा मंगलतेइनिधरानिमेगनिरांजेरेखा ससितेधन
जाया घर ग्यारहे त्रिकोना [illegible] संभूरेखारीजि गानैंइनिमोवा २ सो
वहु नव भाता ग्यारहा अरकेंद्रा [illegible] द्वितीये रवितेइनिभवन
निविधरेखागनिदीये धर्म चौथ लाभहे दसयो धन सो सप्तम व
न वहुरेकरहाबुधतेजोसोई ३ [illegible] तीन सुत मदिरवीरया बारहेह्यनि ज्यो०सि०
१५६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ आव॥ सनितेरेखाजोकहाजानोफलसप्रभाव ॥ ३ ॥ इति गुरु अष्टकवर्गफलं॥
प्र॥ अथ॥ भृगुकेअष्टकवर्गमेरेषाप्रथमलग्नतेलेवे॥ जाया॰ सत्र॰ घरच॰ २
समयो॰ धरे १२ सनितजिरेके॥ भृगुकेवर्गतेविअग हीनेकहिरेखामनमाना॥ सुत
॰कर्म॰ रिपु॰ ए घरवजेदेउ ओरअष्ट्यो॥ ॥ सासोधन॰ वारहो॰मदन रिपु॰
१ निधामनेतजिरीजे॥ओरठउसवदेउसमुभिके संभूफललाषिलीजे॥ लाभ
॥ दूसरो॰ अष्टमनुमदिर॰ रवितेरीजेरेषा॥ कुजतेलग्न॥ धन॰ अस्त॰ घरच॰
रिपु॥ १ भृगुकाहिनाविसथा॥ २ गुरतेउत्र॰ मदन॰ अपार है॥ धर्म॰ कर्म॰
अस्थाना॥ रेखाबुधतेपंच॰ बुध॰ आप॰ रव॰ ग्यारहो॥ वषाना॥ लाभ॰ पुत्र॰
व्यय॰ अस्त॰ रिपु॰ तीजो॰ धर्म॰ भोमतेलेषो॥ शनिभावषमेरेषारीजेसंभुगर्ग
मतरेषो॥ ३ ॥ इति भृगुकाष्टकवर्गफल॥ अवरोभाजो ताप्राप्तनको अष्टक
वर्गप्रमाना॥ रेखा॰ लग्न॰ जानिये संभुसनितेसदासमाना॥ सहज॰ सत्र॰ पांच
यो॰ ग्यारहो॰ रेखारे रवि ठउ॥ रेवि तेरेखा बेड॥ ॥ ४ ॥ लाभये॰ व्यय॰

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दूसरे। भाऊ। १। दुजे ते भ्राता। ३ पुत्र। ५ सत्रै ६ कर्म। लाभ। व्यय। ये हा। कर्म ला
भ। सुष। रिपु। भ्राता ३ तन १ लागना हि ते गनि ये हा। बुधं ते धर्म। सत्रु। आठो। व्य
य। दिक। भ्रात। पति। मेदेइ। रेषा। भ्रगु ते लाभ। बइयो। व्यय मेहि। सनि ले ई २
भ्राता। सत्र। धाम अरु प्रापति। सासि ते धरो विसेषा। पाचैो। सत्र। लाभ। व्यय।
१ मेहि गुरु ते ले षो रेषा। सनि को अष्ट वर्ग कहो हे इहि प्रकार करि लेषा। संभूय
सकयो विधि यो हो जसव कछु मुनि मत रेषा। २ इति सनि अष्टवर्ग कथ
नम्‌। होइ षेट जिहि रासि। रेषा तहगनि हो जे से। घारे घटि रे छ प्रकासि
तैसो ईसो फल करै १ अथ सनकंठ रे षाहू विसेष मान अंतालिस को
प्रमान चंडमाहू को प्रमित अंचास ५ रे वहू भूमि से तत हू को रेष उत्ताली
स हू विसेष चंड स तह को रेष चो व न विसेष हे देवता पुरो धरे सठ प्रमान प्रमा
न। लेघ वा कैन विसेष पुनि सु करे व लेष है रेषा उनचास पुनि। मंदहू की वि
चार गुनि अष्ट वर्ग को प्रमान संभय हमत रेष है २ गनोकरा हकरेषा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दुषहोइइमि रेषातेहावी ॥ चिंताअधिकावि रेष चौथि रेषासमजानौ पं
च रेषसुषकेरेषाहि रेषाधनलेषा मनवंछितफलसपतु दुअवइआठे रेषा
॥२॥ अष्टवर्गजे हैरासिहोउजेहिमा ॥ तिवि चौरे जेको जोतिषासमुझिमतम
मयुनिहारे रेषागनितयमानसाधि रेषुधिविस्तारे सवग्रहलगनसेमंसंभुसो
फलउचारे ४ रेषहोइजिहिलग्नअष्टविनसतिसवकेरी तोसमानफलजानि
केजोतिविचारहेरी जोघटिवढिकरूरेषअसुभसुभकारानिवेरी देषिग्रंथम
तसमुझकछुनहिं यामे पेरी ५ [illegible] ॥ भानभौमराशिया प्रवेसमेफले
सुनाहि जीवसुक्रआधिरासिभोगपूतेफलेनसाहि मंदचंद्रबुद्धजो फलेसुना
हिरासिअंत ६ विग्रंथसारसंभुसवंचिन्हमेनंत ७ [illegible] ॥ जानौ सिसु
षवासजो सूरजलदा प्रकास ॥ वङ्गस्थलमहंकंठमेवेराकरेनिवास ॥ चंदरा
इनिवासउदरपीठाहेकुजराजा ॥ चरनपानिकेनापतहाविससौराजा ॥ गुररा बुध
जाकटिजंघानिलवगुद्य गपानेथानो हृदयपृजासुकेस्वामिसंभुरविपुत्रहिजा
नौ ७ [illegible] ॥ फलघेरानिजप्रकास ॥ गोचरमेराजनमम ॥ भाष्योसंभुदास ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा.मं.
१५८

देखि जातका मसनपद्ध॥ ८॥ बालु होइ जिहि संग॥ मैं उग्रहनि विचारयह जो गुरु
होइ प्रसंग॥ अथ कलेवर होइ तिहि॥ ९॥ दोहा॥ सुनि समै सो पुत्र अपर जो बर प्रति
है॥ सभ भाषा भाविष्य रघुपति मनहु नकोचिंह॥ १०॥ इति श्रीमद्रामचरितमानसे
[illegible]
[illegible] ॥ २२॥ [illegible] ॥ दोहा॥ जंत्र रस मित्र
पवित्र ईगर भी मरनो संग॥ कूर त्रिया माहि चतुर जो रवि सहित सकसंग॥ १॥ च
सो विक्रमी सूद कारि उद्धतता है प्रकासे सुगध सारस जोरा हे जो रविजुत
स्कराति॥ २॥ त्रि पवकी मचौ सुनर खन सेवा तिथि आहि कसा चतुर पंडित भलो
रवि बुध जो स्कराति॥ ३॥ महि रहक से बकस विरक्षी न ना लेव ना होइ उपकारी
जौ प्रनि होइ राति सभा न गुर होइ॥ ४॥ तवाध चक्र मत्स्य खड़ताचे सहोस्तु कुट मल समाज
सुपात्रि पनवड़ गाज नवल जो भ्रुग रवाहि निराज॥ ५॥ धर्म यातु निपहे ग्रनी स
नवरी धनेधान हालउ हि पाठ प्रथ्वी रे जोए केसनिमान॥ ६॥ [illegible]

जौ
१५८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

परतापी अनचारवधानो रोगउ टिलकलह प्रियजानो उद्दिमकारन दैन्युरिनाके
मातर प्रियकुजससिककठाके ६ त्रि.या. त्रिनत्रियरुषसोजानो आमिकुसंदराक्रति
धनवाना नंम्रमहाअस्तचनविलासी जनमेवदतदुष्टवरासी ७ रतानजधमवि
चिठपकारी गृहमनइष्टद्यारस्वारी नेमुविनकोजानोप्रानी सलिगुरसोरनासि
स्वेन्यानी ८ वक्रनव रैबुलरव्योपारा चिंतामयपरन्वचुचारा उनिगोबविवे
सुधसेना चंद्रसुत्रइरासिगुनेना ९ परनारीसेवनचितमाही विस्तारनोसी
लतानाही क्रनीहैपरइयरिकेरो चंद्रसनी राजोकेमेरो १० वकृत त्रियान
कीसाललजारी विरामलप्रवीनतुचारी देवसने परवसीलोह वंधु
द्धकुजरकनाहा ११ तिहिरुचिमेत्रचयत्रसहारी सीलविवेकगुनेन्वनसारी
सेनापतिनपगुकुजन्यावे नगारग्रामजोकहुवधावे १२ च्यवलाभोगचावित
रुचिज्वारी अजारसिप्रपंचवचारी सवकोन्त्रीकुजन्ययइवरासी इफल
जातकजोगप्रकासी १३ मात्रा मरनीअचारो अहसह समरुचि
हेसुनिनिरकचोर सुव्यसनजनमेरद १४ दातधीरविराम मनधिराम
सुनव्रत गुधगुरजोइकधाम गीतसास्त्ररुचिचरुसुधी १५ ॥ दा॥ वलपानन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
१५९

वकतासुभगश्यानंदीसुभश्रेग॥ वक्रत्रियपतिउतकरवपुनिबुधभ्युजोइवसेग ९६
चतुरकलाचौसठिचपलवलइप्रियगनितास॥ ग्रभिकात्रियनिपातितायोगनिबुधस
निकाप्रकास ९७ ॥ रवनिसं०दो०॥ वियपदेवद्वप्रचर१ पंडितसोचरचाकार२ मित्र
निकेसुषहोइधनी जोभृगुजीवद्रवेभवनी ९८ सुरधनीसुजसभनि१ श्यामसुख
प्रपतीगनि२ वेदितजोत्रियपतेमितरई जोचसनीचसोदुकई ९९ सिल्पसुह
तहकर्मकरे यातत्तरोवरकीचरे जोवसनीचरएकघरे इफलजातकमन्मपरे १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	द्विग्रह
सू चं	सू मं	सू बु	सू बृ	सू शु	सू श	चं मं	चं बु	चं बृ	चं शु	चं स	मं बु	मं बृ	मं शु	मं स	बु बृ	बु शु	बु स	बृ शु	बृ स	शु स	चक्र

इतिद्विग्रहफल॥ पलबुधसं०दो०॥ जेतत्रतसविधिमारिमलोइवकमहे सुधी
रसालज्यत्रियामयनमहे सवकलाप्रवीनप्रमानप्रमानिये मानचंद्रकुजरासि
केफलजानिये १॥ सोरठा॥ वारैकाजनपकेर पंडितवलवकतासुभा रविबुधस
सिइकमेर एफलजातककोकते २ चालाकचचलधूत परदेसीसेवानिपुन
इनलहेनसजूत॥ रविससिगुरइकरासिजो २ दोहा॥ परधनहरैचचाइवेतजेम जो०सिं०
१५९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नो हरकमै रविइजपतिभगुलगानइकइधीनयामैभमै ३ चौपही परहिसक
रिजानैधनहीन करतधातयोपारखुलीन चरासोभटकैछैधाछनैक जोरविसास
सविरासिरियेक ४ निठाचिवनछाधीरजवान लजाधनप्रभहीनवधान सुतनि
परमिरखुधनिचतुरान विश्रामखबुइसासैभान ५ न्रपमैत्रीवदतधनवंत से
नापति गुनवानअनंत साचैवचनानिपफलीन भानमोमगुरइकधरतीन ६
नैमहोइवधंतीमतिवंत कुलसालोइविरानअवंत लघुवकताजोइकचअयन
२ भगुसुतचोरचारहैभान ७ इववहीनचरुकेरोग निरविवेकपितुकुटमवियो
ग एकरासिकुजमेरपतंग एफलहोइसतासुतअंग ८ होइसासविद्यासुप्रवी
न चातुरअतिधनसंग्रहिलीन वलीसुसीलरागहैनेन औरहैनेसबुधगुरइकचै
न ९ हैसिविदसीचारवैन नियमोमानिमहाहितलैन तपतहृदयनिरंकेव
वंत दोषीजोरविवुधअपूत १० अनचिरधीनिरधिविसोइ करेअन्यागि
तिहिज्ञाकतहोइ हेनपुंसनीचेहिसोप्रीति मानसोरिवुधकीयहरीत ११ दुह
रा भूमिपतिमैवकसुहीनधनहैलघुवकतावधानिये मारूइदजायपरकातम

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

है[illegible]नै दीठि अराजै अपूई अंगमीर जुत गुन निभ्रमानिये है।
सुत कलत्र सुख जो परिविजो विसनै घरु कन्यानिये १२ कवित्त केरुहै थंनरही
न कुचल नैम सत्य सुख अय के इतन करि लीन उसार विस विधान इक १३ दान ही
न धनन्वान च दविधिता अपमोनरघुनि कुंज विधसालि इक धान हीय गनम सहहे तप
ति १४ हे प्रन वाके तन आगमे विपरीत संवर कोविमोम चंद सुरराज गुरु क
हे सुख फल सोधि १५ दुरवुद्धी हत अपुंन रइ राग त्रि सुपाति साज मूनं रकविपति
पति एफल स्वसमाज १६ कलहा सदा खुहात वासुही मरै सुमा
त निरकी सुहोइवाल मोम सोम्य रिहु पाल १७ निर्मल बुद्धि गुसी
भनिये मित्र महा बलता गनिये हे वड आन भली बुतिजो पंडित वुद्ध गुरू ससिजो
१८ बात रविपहरि नीचरती हेरु विजो अघ सपर्थमती चंद मंगल सरिसकु गुरु
रासि इकै नरलेभिमुह १९ भूप समाप्ति ग्राम पती सर्व कला परवीन मती नम्र
हियै मति सुंदरिजो निर्मल बुद्ध समीसनिजो २० सुंदर कीर्ति सुबुद्धि मना हे सुख भाग
प्रमान मना पुत्र बृहस्पति चंद्र यसा एगन वास कमे सुनरा २१ विक्रम सिद्धी पद पे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुमहा। विद्यहिमंत्रप्रवीनतहा सुंदरहोइनहीनंनरा। वैंरगुरुसासिएकउरा २२
भूपतिकेकुलपूज्यकेहे विद्युनिमेसिरदारकहे पुन्यपराइयथकथ सुत्रासमास
तिरकरथ २३ रहिवकेहैनिजवंसभला काव्यहिगीतप्रवीनकला वाहनवजोजिय
साधकए सोमसुधेगुरएव।भए २४ चंचलवक्रहहीनतमे पुरनुहैधनवंतनने
हेउससाहिकविंपरे सोमवुधाग्रएकपरे २५ सोभासुतधम्याम
हासुतहैतनहीना परैविदेसहिमाहिबुद्रिलोचनछविहीना सरनसीलसु
परासिहोइमनरअचारी मंरवुडकुजरासिम्बजोसरावहारी २६ त्रि
पसुलसुखनिकेत भूपतिमंत्रीकुलनपाति सोमजीवभगुहेत एवरासिजोवसु
परे २७ रसाहीनतनपमान दुरवलहोइचास्वपति सनिकुजगुरुदेवध्यान मि
त्रहीननरवीरहि २८ परहेसोजननीनिरसनारहै दुवरंह एकरासि
तीनेग्रहासोमसुवचारमंद २९ सत्रप्रतीसुवहासवकवी
ला हैबातिगीमधुरंन्यजसोहा चित्रस्याक्षितिपालकरूपहुअरन्यगुसाथ
हिसाधामविशेषसुतवृत्तरजानो ओअतिमानमहाधनमानो वुधगुरसनिएव
हिरासी एकलस्मु[illegible]प्रकासी ३१ सरनअनिसाधजनाही हवकतास्म
कहेहै

निष्ठानिसा हा जातकजोजनमेजनचीमो हेवुधसुन्नासनीचरतीनो ३१
वीचघरैनरजोजाहहोई अंब्रेमकर्मकोरे वहसोई धार्मिकहोसि तिरत्वकरावे
सुनगुरूसामेवीतिमिलावे ३२ पापगृहनतिकेजुतजोई जन्मसमैरजनीपतिहो
ई तोमनमीकरनासकरावे जोतिछजातकचितहूवतावे ३३ पापियुकेसंगभान
परेई तोयिपिताकरनासकरेई श्रोयग्रहननिकेसबचीना जोहेरितेसवतेके

हिहीना ३४ होइजनसोजसहवकलीना हेकुलेसे गभीरसबीसा मपतितारि
पराइयुहैरी नीकजहसासौखहातिसमई ३५ पापियुतीनग्रहाइकरासी जानहु
एफलांचितहूप्रकासी चागकेहपदहालिद्रिहुघारी हेजरूवाहि यमैअतिभारी
३६ दोहा धिरहोरहेनग्रेहमेवकुलत्रमेजोतास एफलआगेग्रथमेवरने
सन्मरास ३७ इति श्रीग्रहजोगफलनां अष्टमजोगतरंगनी। प्रथमहिंडोदस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भावमेभावसमोभिंन ॥ भाग्यभावलतासोकरैनिहिंचलभाषितचिंत ॥ २ ॥ [illegible]
॥ गृहघरकर्मपराइ ॥ राजजोगगतत ॥ ३ ॥ भावनन्त्रवविस्तारे ॥ भूपतिलेखंविचा
रि ॥ ३ ॥ घरउच्चपतनरासि ॥ पाचोउच्चप्रकासि ॥ जोगजोतिषीभाष सकलप्रणी
पतिराष ॥ ३ ॥ रासिनिज्ज्वथहतीन ॥ वे [illegible] उच्चमुनीन ॥ जातचामराश होइ सुचे
वनीवधरजोइ ॥ ४ ॥ दा ॥ होइचारिस्य स्वउच्चजोवसुधमेंजासनाधि तेरासेसं
वत्सवंतजोगजसमूहसुलवान्धे ॥ ५ ॥ रविससिगुरुकुजउच्चकेजनमकालकेमध्य
राजजोगराजावडोजोतुअनितनमध्य ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ ग्रहचालमनहि
तहाई केपरेउच्चरजोककृतीन ताकोसारहजोगकोजानैजोगप्रवीन कहाई ७ इति
[illegible]चारिनिमेहोइजोपरमउच्चकेदोइ ग्रहाई अथवस्मकग्रहलगनकोपरमउच्च
मध्यिसोइ रहाई ८ चंद्रागतनिजरासिहीउच्चग्रहजोयेक तिसपी परेजोगए
गलगनकेहोइ सकहाविवेक विवेषी ९ वरोंतमसरसिहोइजोओरैलगन
प्रतिइ सुहोवे चारोग्रहहे लगनसीतकिरनिजुतरिइ विजोवे १० अथ
[illegible]सासिवराजितलगनउतपतिसमयेमाहि तहाई तोपुनिवधसजोगकोराजजोगसो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

आहि ॥ तहाई ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ जो जनमें उहि जोग ॥ होइ सुपति सब भूमि को ॥ भोग ज्ञ
सुख भोग ॥ सो विजात कावरन यह ॥ १२ ॥ चविकंट ॥ पूरवगुरउ वभ्रगु पालिपाछिम
ति छ ॥ होइ नत्र सत्यआस्ति उदग वसिष्ठ ॥ चवसमें जो भेम महि हिहोइ मही प जुनि
लछन सो परगट में रिलिदीप ॥ १३ ॥ दोहा ॥ अवर सरम नुकहत जो इहि विधि
पनिमाहि ॥ तिहि विधि करिसभू व होयो भाषा फल सेम ग्राहि ॥ १४ ॥ लगन हि तेगु
रु मत आहे राजजोग कहि ताहि ॥ सुषघर ते सुवसिष्ट कहि राजजोग सो आहि ॥ १५ ॥
सुक्र मते त्रिय भावे तेराजजोग सो होइ ॥ गनियत आग ॥ तेसुकमै तेराजजोग कहि सोइ
॥ १६ ॥ तीसरमतय स्थानिये भा षो सम्भ हास ॥ देषो हरय विचारि केजो तिषत्र पषक्का
स ॥ १७ ॥ दोधकंठ ॥ लगन छत्रहि जोगु रहो इ ॥ उड्ड पेरेखघमें रिरसोई ॥ सातय
या समयेसुत जो जनमाऊ ॥ नौनिधि अष्टसिद्धि निवालो ॥ भूमिहि है रा
रे पति पाता ॥ १९ ॥ तेहि निको सुतउच्च हि होई ॥ लेनहि जाइ पेरिकि निलोई ॥ मंद
मही सुतएमगहोवे ॥ सुक्रच हस्य तिचाप हि होवे ॥ २० ॥ चैरपञ्च हो जो घरपा

रे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चै॥ जातकजन्महिं एफलसाचै॥ होइ तहां मेरली कनरेस॥ जी तनिकौ बुध पान
निदेस॥ २१॥ धापति होइ तहां गजथोरे॥ एफलजानि सुलेमतमोरे॥ कोउ चंद्र ति
हिं मंगल मिलि काही॥ हिंगाज बाजनते सुख लाही॥ २२॥ वसंततिलक छंद॥ जो सिं
भानअरु गमंगल बुध मंदा॥ होवै [illegible] हा सुपुनिके हरि लग्न चंदा॥ भूमीस होइ नइ अ
सी जग त्राहि ताही॥ याभांति लेहु नसु जातक केर च्याही॥ २३॥ सोरठा॥ लगन
मेष कुज होइ॥ केन्द्र रतन उच्च हि पैरै॥ राजजोग जुग सोइ॥ नृपमारे नरिपु पक्ष को॥ २४॥
चामर छंद॥ होइ लग्न के ख उच्च जीव भानमेष हैं॥ लाभ भाव मंद सुक बुद्ध यों वि
मेष हैं॥ बाल जन्म ही इता सुयाहिं जोग मध्य जो॥ भूप लेस होइ अपचित ह्यां प्रम
ध्य जो॥ २५॥ मत्रो लग्न कोदिने सपूत्र जो परे तहां॥ सिंह जुक मेष कर्क तुंग लग्न
जो कहा॥ लग्न एति त्रु ध्यप नृलिहि इस्त्रापुरा सयो॥ राज्य सिंधु तीर लो वडो रच्यो
न तासयौ॥ २६॥ बुद्ध सुक्र के पिं तुंग के यि मूर्त्ति मालये॥ होइ ग्रहा गुरुच्च के सनी
कुजा मृगालये॥ मीनलग्न के सु चंद जीव जन्म जो नरा॥ सत्र वंद मार होइ भूमि ता
पउच्चरा॥ २७॥ सोरठा॥ मेष च चंद रवि सिंह॥ घट वे जो छाया तनय॥ भूप होइ इहि सिं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ह धनकेगुरभुजमन्द्रको ॥ २८ ॥ दोहा ॥ बुधमूरतिकेमेछगनम सपतभावगुरहोइ ॥
चौथेससिम्रगुकर्मथितिभूपजसीसुनसोइ ॥ २९ ॥ अथराजभंगद ॥ तिहिकालजौ
रतुहाकुलीरहिकपरा ॥ तासमन्तचौथहिसुक्रमेषमसनीचरा ॥ अतिहेनमाधूर
पमैनोवतिवाजही ॥ अवकपफौजचलेजवेसाजिसाजही ॥ ३० ॥ ग्रहहोदोकरके श्री
सुधौषष्ट्वर्गही ॥ घरअपुमित्रहिरासिके किमूडच्चही ॥ ग्रहहोइमोनानीचको
ननृन्म्रहिजोभए ॥ नृपधर्मचितुकोकरेमही करभोगाए ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ होइसुद्धष
डवर्गमेदोग्रहप्रथप्रभत ॥ मातादीपअधीसनरहोइप्रीतिसंजूत ॥ ३२ ॥ न
हिंत्रिकोननहिंचकोअधिकारीनरहिहोइ ॥ सचिवसुद्धषडवर्गमधिजौरती
नग्रहजोइ ॥ ३३ ॥ अथराजभूमीछंद ॥ सुद्धग्राहिचारीग्रहा भूमिकोपालसोहै
तहा सुद्धवर्गोषडापांचहै सर्वभूमीससोसाचहै ३४ जोषडावर्गमेजो
दये एकईसुद्धजोलीवये सर्वभूपालनामैकरै सम्बचेसेफलेसुचरै ३५
वालगोलग्नमेहोइजो औरचन्द्रावधजोइजो कर्मकोथेत्रियाकूदगैरे मंद
मानगुरुजोपरै ३६ देनदेंचलेफौजसो तेजसेजकसोचौजसो स्वांतरि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

होछठेधरिसो॥ रातिभेद्योसकीपरिसो॥ ३७ जीवचंदाबुधोसुकजो भातिपहो
तहाएकजो॥ षचैग्रोअस्तधमान्नूरी॥ सुतलचारोग्रहयाथरी ३८ मकेषके
रहत्याखानमे॥ मकरलग्नानिपेहोमने॥ भूपहोवेसुएको छिती ३९ मिलीजेसचि
हुमिती॥ ३९॥ दोहा॥ सुकबुद्धजोवक्षकेलगमनके छितिनेह॥ धनकेगुर
सासेजनममैसवछितिरूपक्योचंद॥ ४०॥ कंडुकछंद॥ रवीचंदकचीगुरसी
नरीभाव॥ वलीलग्नहोवेबुधाउच्चकेआव॥ मही पालकेरोमहाराजसोजान
॥ जोनसतुयाजोगसोचिंहमान॥ ४१॥ दोहा॥ गुरुउच्चवेकेंद्रमेकमभव
नेमगनेर॥ चलेछापसवदोपमेजनममेनपसुघकेर॥ ४२॥ मा ईलविकीर्ति
मोहर॥ होवेजीवुदिनेसमेबुकामहीपुत्रमकेपूरे होवेपन्यसभावसुनवुध
मनोसुछत्तीमैकरे सेनासाजिसमाभिपत्रमकिजेकोरिसाजाइजो सोचे
देवकुनजो छितिञकुलावेसुमेपाइजो ४३ होवेषदनमीचवरपुत
हाजोनाहीपरे संचुना॥ वलषटलवंतहेनसीहप्रमचेघरे नाहीसत्रसत्रुमहेर
जनमकेकालकोउरसा जोपेवेरुउदोतमवंभगुजाहाजोचपेकेकहो ४४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०प्र० १६३

दोहा ॥ मातभवनमैंहोइगुरसरसविक्रमीराघ करैभट्टस्त्रिधामैजेकोउ
धरनीसाघ ४५ परहिरविक्रजकरपुनिकरकगुरकाहिये ॥ बहुरिरविसुताहिमे
करघरहिकरलाहिये ॥ सुभगतननरजनमतन्त्रहहिपतिथरनो ॥ विरमलजसि
यत्रातिन्त्रसतिहिकेहियसुवसी ४६ ॥ सोरठा ॥ पूरनमासिजोमीन ॥ सकलग्रहा
तिहिरैघरी ॥ मदेहपतिसाहिप्रवीन ॥ होइविक्रमीसक्रेसम ४७ ॥ छंदहरिगीत ॥
दसरेसुहोइभानतैजुसकेजीवबुद्धसत नाहि ॥ पतिनेहिसबघेटनाकेलो
कसुनेहनसबत्याहि ॥ रहिजोगजन्मबालभूपहोइजो ॥ तिघाकेहेबघानि
सबघेरिमारिडारकीर्तिवहुतासुहस्यहूहिसाने ॥ ४८ ॥ हेबलीसुपरचंद्रमा
तहासबैग्रहालषेसुताहि ॥ होइबालसहिजोगभूराजसबबंसकोजिताहि ॥ भू
मिपेजबैचलेचढीगजेगयंदवारथ्यानिवाज ॥ साक्षलाहलाविलोकमेमहा
सुपूरिजाइओत्रवाज ४९ उच्चकेसुजीवभावदोउसुतेमरकोरिद्रहिहोइ
॥ सिंधुपत्रहूहसुउच्चकेरहोइराजजोगसोइ ॥ सेनसाजिकेचलेचंदाविदेसकेष
समसहीनरेस ॥ मरियोगरूरोब्रतितनत्रातिरिहमंडलोरुकोह्निवेस ५० ॥ चंद्रपुत्र ओ० १६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जौ वसुकको ग्रेहकेरअसतंगतानहोइ सरसत्रधौमैंनाहिहोइ भौमनत्रकोरसोइ धर्मभावको मध्य
विप्रेपरेहि मंदहोइ वालकुलनपावै सेनसाजिमांकरेप्रयान [illegible]रिपरदेशसपावै ५१
गुरससिरासहिंवाके भौनलगनकेसुत्रग्रह जोरमेघकुजअर्क नृपसुरसमभवंग्रहे ५२
कोनालगनसुहोइ चंदकोपुत्रसमेता गुरुजाया घरमाहिभानकुजमस्त
१२ निकेता अरिअंहिरसंनिघ्रकपरहसेपकुलीरह सकलभूमिपानेहोइलेइ अपनाल अभिरह
नी न्वैस्ववंसमेहोइ कहूतांनृपमेत्रीहोइनर सभनवजनमकेपकलविंधहोइसुरहकेभौम
कर ५३ मकरलगनजौहोइधपरहिं प्रनिष्टसनीचर लाभभावकुजपरैभृगुनंदनपरउ
च्चघर जनमलगनरविहसानकेरग्रहजोगविचारिय उपजैनरपतिवंसभूपगनिपै अधि
कारिय हौंहैं सुचिन्हनिहिवाल असजनमजोगजोमेलगन देवगुरुसमभ्रमकरनहो
इभूपजाहिजगत ५४ गुरुभृगुचौथेधाम [redacted] धनीहि
अनुपमोमहा कामसीरपतिनाम जोगुरुचंदकुलीरके ५५ गुरुभृगुचंदलघाइ उच्चमें
पुनजोहे तहा भूमिपालसोआइ जोनरउपजेजगतइहि ५६ जोगुरुसभृगअरकर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
२६४

वगरूनभौंरेपुरनचंद । मंडलीकाछितिहोइनपूरनइन्दुजोमासप्रबंद ॥ ५७ ॥ लोभउद्धौंजी
वपौतौनपवरधनवान । एकघेरनवदृअसमैतौमहिपालप्रमान ॥ ५८ ॥ मनमोहनचंद
रजनिकपीन्द्रविमित्रकर । अरुनवयज्ञैसपदाहिवर । भयुतनपुरैघनज्ञाहिकहन
भूपहोइप्रमानयह ॥ ५९ ॥ अथवाससीनिजअंसमह । अधिपतिअंसववानिकह । सु
रपूज्यतासमइषिवर । नपचेंसमैअस्तंसनर ॥ ६० ॥ रविसंग्रंसकोअधिमित्रकर । ससिकेरि
इषिपरास्वगृह । नरचोरकेरभूमिनन्दनपु । अस्तानसीलसुभाइवप्र ॥ ६१ ॥ हवउच्चजोबुधसी
लकर । नपहोइसमध्यहिदेसकर । बलवंतजोबलकेसहित । रवग्रहसुदरंजोबहित ॥ ६२ ॥
अधिपतिलग्नहिकेरबल । भूपकेइंद्रआलयमेंसुकह । अहफेहिजातकराशिपति । जहकें
द्रुमंदिरजानमति ॥ ६३ ॥ नपहोइजोकुलनीचजन । ग्रहनिकेउदारप्रमानगन । अवतार
जोग्रहभूमिपति । तिहिकेरजोविसनारग्रामि ॥ ६४ ॥ ससिउच्चकेसमराजमेंप्रबकर । इहिजोगम्
पातहोइनर । कहनाटकेवरदेसलह । इवउच्चअसदेसनरेसवह ॥ ६५ ॥ गहसुनहोवहि
उच्चकर । पुनितपराउहिकेइथा । माहिपालमतिग्रहोरनंह । पुनिहोइकेवहमपवस ॥ ६६ ॥

ज्यो०सिं०
२६४

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

धनवारहै त्रियस्यसुसह। ५ निषेरकाइपराइजेह। परछत्रजोभावनामयत। बटं छुंभ
तैग्रहथाइपत। ६९। कवित्त। ग्रहपापीजोलग्नविषुधगुरलोचनहैरह जनुमं
समेमत्युकर्त्तमकेजनरैवाकेरह रवहिनगारवावरीप्रगटैतेकछुतजलाथ्य। इनवि
न्हनिसोमपलंअप्रहजोगप्रकासयु। ६८। उच्चकेरघरकेंद्रपैरेग्रहसुंदरपेवरह वली
मानजोदेषजीवसत्तभावपरेकह नराजनमैइसिजोगहोइसोपैजानाप्रके रेषिये
छमतसारकहैपंडितगुनगापके। ६९। मकारासिकेजीसूलग्नयुजोगुरजानिकै
सिसुजनमेंइहिजोगहोइइनचिन्हप्रमानकै। पजककरमहिवैरतारिसकूआविषधा
नकै इहिसुत्रवासहिपालहोइसेजानितिरानकै। ७०। परवलसिंअवमध्यहोइगतसोहि
रकेंद्रह विनालग्नकोत्रपतताहिकोकैनरैंद्रह वडोविलासीहोइमारहीरिपुत्रने
थासह एफलधरैजताइसिसुजोतिषपरकासह। ७१। दोहा। जीवचंद्रजोकेंद्रमेंरे
षतअप्रसुसतानेन। नीचपेटजोकोउनहिभयजमीतिनिधेन। ७२। कवित्त। ...
केमतग्रगुरुधनघरकुजसुनिससिसातपे जनमजोइहिजोगनरपतिविष्यातपे। ...
हपरसोहैजोगजकेहरि जातककेपुनिजानो एफलदेहरि। ७३। ...

रा.म.० १६५ नवमेंसनिचंरजनमहेदोनपुराई ओंमसेघरकेपौजाहिंनेभागकराई गुरुकेस्वं
मानिवरसतजनमप्रमानो देवियांतमनसार बंचिनवघानो २४ छटकेपूंछहि सो
यमजोरजननीपतिहोई इसकेभागकुलीरकेरतागरसुतसोई गुरुधनकेनवमयमासे
हवेहुधपितुजानो मेमिथालनरहोजोगइहिविधिपहिचानो २५ अथि विसाष
आरतेस्वपुनरवसकहोई अनवारजलीवपुरवभाद्रपदसोई मतिरोजहार
मीवारलनवघानो जोगचित्रकस्माभहानिहविस्तोपहिचानो २६ पुष्य
हानिविकारहेपूरनऊराजा उनमधरमीहोइकरेसोजानवराजा जोगजिप
५. घरमध्यजनमहीजेपुनिकोउ सकलमहीपालहरेजानेलजेमरसोउ २७ जे
सनिमेसुइकेरभोमकेउच्चमुजैसी उनमवगाकेपिमपितालिउच्चकरेसी म
पवेसमेहोइ शोथिविपतिमाहिवघानो जोनवनमेकुलनीचनपतिकोमेचीजानो
२८ [illegible] पुंनयभवनमेपारस्थिगुकमेत्तुकसिपरलभभावमें जो ग्रहस्थ
पतिवर्गमेमर २९ [illegible] चंदते नयपछेगपारहिसमहस्थवयंह
कहिमो रविजीवसरिसभोमते नयपुजनवमपराहिजो जनमेस्थजातको
ज्योतिष १६५
CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

॥ ३ ॥ हिन रश्म मिंदु रवघाविये ॥ संदेह नाहि कछु याहि मे सति विचारि ये मन माहिये ॥ ८० ॥
वृषसुत्र है सुख भवन में प्राणि सुख मंगल सुख ईश मयो ॥ चुराई दुर्पाकोस सुन में नहाति
सखनकीचयौ ॥ महिमंडल नृपालसो जो उपज्यो ईश हि जोग वे ॥ पालेसनृपवडो
कोसदा सुकलिकुल सुख सो भोग वै ॥ ८१ ॥ सोरठा ॥ सिंह लग्न के भान ॥ चंद्रस्थ
मकुलीभके ॥ नरपति होइ सुमान ॥ जो गुरु देखै दृष्टि सौ ॥ ८२ ॥ करकलगनबुध योग
चापके रवि गुरु भपरे ॥ रवि कुज रैहिं धनेन ॥ क्षिति पाल कन न्याइ वर ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ मी
न रासि के रोहै ससि गुरु है कुलीर काराशि ॥ कुंभ लगन के सुक्र न पगाजहु पुत्रहि पका सि
॥ ८४ ॥ मनहंस छंद ॥ रवि सुक्र सुरगुरु कुंभ परे ॥ शुभ सुत नीच न इहिं विधि जन्म जामि
हि जो रससी ॥ क्षितिपति ताप्रभुतासलसी ॥ ८५ ॥ विगति विविषे चरनीचपरे ॥ ति हिंकर
नाथ सुत्र परे ॥ परहि दरिद्र वके इमती ॥ महिपति होइ सुजानसती ॥ ८६ ॥ करति
कुंचलित सुलचनियो ॥ न जभवसु तितिनिग्रह नियो ॥ जनमसमे च जर्वनजु महि
पति को पालिजात तऊ ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ लगननाथ कर मेस हे नन महस नर सेष ॥ न्वप

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०मु०
१६६

ऽवलजुतबेरकीजननमहमाननृपसोइ ८८ ॥ इतिश्रीमन्त्र...

...नोनामप्रकरणं ... ॥ २५ ॥ ... ॥ सोरठा ॥ नरपतिजो

गवलीय परैतहांउनपतिसमे चरनहाथमेलीय राजचिन्हलछनकहत प

षेतिमूलतेरेष पुन्यविधानकहास्वर अतिप्रसन्ननरलेष कीजानिकोआधि

कारनिहि २ ॥ दोहा ॥ मध्यअंगुलीमूलतेहोवेकोचारेष ऊरधरेषातासोंकहेंल

छनभूपविसेष ३ ॥ सोरठा ॥ अगरताबिछेनवहोइ परनामसलछनसोइ जासि

नभौमछनवान कुटमीनृपालवषान ४ गजछनजोहयमीन अरुवंजघकुम

दीन नरपानिमेकछुहोइ नरनाथताजाकहुसोइ ५ तरवारदर्पनमाल हलसैलहै

कस्वाल नृपमेइलीससुजान कुलराजकेरवषान ६ धनुचक्रवज्रध्वजाहू परपा

निपंकजताहू पृथिवीजनातिहिहोइ छितिपालहैवहसोइ ७ ॥ सोरठा ॥ हेलछमी

विलास एणगजजाकेहाथवंध असलछनउपजास सोनृपचंसोजानिये ८ चभुं

श्री०सि०
१६६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हयब्रह्म गहामरंगरूदंडधुनि करपरस्मप्रताप महिमंडलीखंडपे ॥९॥ छंद ॥
गोलमौलिसिरीरधनयनभालविसालप्रकास सुजानबाहजोहेइनरजानिचक्रवर्त
ता ॥१०॥ गंधानाछंद ॥ नासासुचिपोसालहरेटरिगहिरोजानो कोमलपदगोलान
अधिककेसेनयमानो ॥ मतिहसतसुदारन्हितकुटमौवेनविलासो ॥ त्रिविनभोरअगाते गुर
मृपलहेमप्रकासी ॥११॥ चरनमध्यतिलहोइजोनाहिकेवरमासो ॥ धनवाहनसं
मृतहोइनृपतिभाषततासो ॥ उपजेसुववरेवसमहकुलमपद्मानो ॥ तौकेसमूकरत
फलजेमेमुनीनिवषानो ॥१२॥ चिंन्हकहिउजोतिछविषेफलपरनसारे जैसास
इकहियेपमाग्रहिकरतानिरधारे ॥ रत्नकरपाइनिविषेनारलहसनभाव ॥ चिंन्ह
जोगवाछैचरनकरेनाहिरशोध ॥१३॥ इतिश्रीराजजोगगंभागदिनामदूसकाध्या
य ॥ दोहा ॥ वरगोतमतेभृगुग्रहपराहिसुचरिग्रेह ॥ हेद्रनीचदेघरवरराजजोग गुर
नसिहेह ॥१४॥ एकहूग्रहजौनाहिलखैचरालगनपसंग ॥ कहौपग्रासरसोषिय
हराजजोगतोभंग ॥१५॥ नीलग्रहरूपकछंद ॥ सूरजआपनिमेसराहिमाहि सुद

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रम०
१६२

पिता आरु आनन दाही॥ पुरनरे घरि हि पाव घ्रहाऊ॥ इहि विन ही सुभ घेत हाऊ॥ १६॥
आरि तहा अस्त्री पति होई॥ भपति भष्ट तहा फेरि केई॥ हे हस आ सहि मा प्रियता
ई॥ दुष्ट निशाकर संजुत आली॥ १७॥ केतउ रैश्य लि पातहि माही॥ जन्म हि पति निगज
हि कारी॥ और तहा पुनि दुख कतारा॥ दुष्ट समाज रलि इन्द्र घ्रपारा॥ १८॥ तौ लि निराशि
ल्लीकर होई॥ नीच महा आति वेग्यान जोई॥ भपति जोगहि का घ्रमि राही॥ तो नर कौ
चलि दुष्करा ही॥ १९॥ देव गुरु गत योमगगासी॥ परम सुनी चाहि केर भ्रकामी॥ भंग
न कै नृप जोगहि काही॥ वीर कौ नु दरि इवराही॥ २०॥ केउरावकछंद॥ गुरु होई
सुतु गतौ औ स्त्री च ग्रहा तीन काही॥ जनै कुंभ की लग्न जो एक कू जो ग्रहा उसमा
ही॥ दस दूर मध्य पापी जनै बाल कोउ न हाई॥ यहै राज जोग गोसे वैचिंत्र पजोगि
घी हकहोई॥ २१॥ दोहा॥ परम वीच के होभ ग्रजन नमे सि सुति हिकाल॥ भप
वशई मेटिके का हि सुदालि रज्ञाल॥ २२॥ नीलकंठ॥ राहु वसेत नृपा वहि वेर
लिही लघही॥ तोसरलाभ वरीघा मानस नीउजहो॥ केउ घरे सुभ नारहिं घ्रसत ज्यो०सि०
१६२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

जदास्तु ग्रहा ॥ भंगा घरै न पजोग सु ग्रंथ प्रसिद्ध कहा ॥ २३ ॥ स्पग्रहा नहिं केंद्रहि नीच
सुश्रु लपरे ॥ छै न पजोग करै ग्रह चारि कसत्र घरै ॥ पापग्रहा सब केंद्रहि नीच द्य ग
ह चारी ॥ चौ ग्रहि रै ग्ररहे नहि रै स्पग्रहा नजरी ॥ २४ ॥ दोहा ॥ इनि धाम मे होइ सुभ राजजो
ग उद्यराषि ॥ तं भूहा सज पाहु मत भा छाही करि भाषि ॥ २५ ॥ [illegible]
दोहा ॥ पूरब रिति जे कहि गए महापुरुष नृप याच ॥ ते सच सब ग्रगटिय न ग्रंथ
सुनिस्चि साच ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ अभिलाष हेतु चव री के न्द्र ग्रापनि गसि
सोइ है ग्र महतु च्च केइ फल धरै प्रकासि ॥ इफल धरै प्रकासि भोय च्यारि कियर पाचा ॥
जोग निज मसो लै छि रुचिक ॥ १ ॥ अरु भद्र सुसाचा ॥ हंस ॥ जोग मालव्य ॥ ५ ॥ पाच जोम
त्सव ॥ गुणा ॥ इहि विधि संभूहा सभा घमा पा अभिलाष ॥ २७ ॥ [illegible] ॥ नि
रमला अविशेष वरनव शेई है वालि पुरुष मान सिद्धि साह मि प्रसिद्धि कथन लस
मानापरह वरजाना गेह वरग च्यारि मद्र निहि स्मभ्मकुटि विधि केंद्र केंद्र तिता है
जरि स्नि च्यारी हे र विपगु रुमन्त्र स्पाति विकमि कुर ॥ ते धे अरु जान पितु रिपमा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नैपातरि नमु फल मे जूरग नियपरिपर ॥ २८ ॥ मेच पासि बहु पुनि सघन बहु चेके
वानपवि देहु होइ पुहि अति सोउ ॥ सबनि हृद्य वेहीत वली लेही चिन्ह बहुल तुपर
सेइ सुधि अगुरी जोइ ॥ दीरघ मुघ ताहीवा निकहाही भूपति होइ अभी रमुहा लषिये
छकहा ॥ सेसा विंध्याचल नृप उजे निमल सत्त्व अग्नि करचिन्हतें हाइ निचिन्हलहा
॥ २९ ॥ दोहा ॥ सत्तरि वरषै सो जियै मरन स्वि लैलीन ॥ हचिक जोग सेभ समुझिए
लच्छन फहिरीन ॥ ३० ॥ इति ... ॥ १ ॥ सारद लसमि सोइ सुख उरकठो
राज बाल ॥ प्रष्टि भुजा लामी सुसम देही उँचतवाल ॥ ३१ ॥ मारकंडे ॥ सिंह म
मानप राज्ञ मनानिय कामिय कोमलता हिय वानिय पंकज सेपुनि हेयरूपानि
य उडि विधि बमान बमनिय ३२ पातरो मसमूह सही उरु अति कपाल
सुजारु धीवरु हे वलच्छ डितान मही पति पषि हिं जोग सभाइ सहा अति ३३ ष
ङ गायागज चक्के अरु हेबुज अंकुस संघ सुहे मृग अंबुज पानि सुभ्रो ड़िकहै सव
मभुस्थल ज्ञान जोनि लहे अव ३४ ताबगर रंग हिके मर केजल तीति हिहे इस

तेवेषसु
जो०सिं०
१९८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

हासुमहीतल॥ केसरिबालसरीरवहै जुगति सुंदरसो अतिसंभुमहामति॥ ३५॥ सुंदर
बुद्धिकमौ रहसबेलि॥ पंडितस्वारहस्मानसुरेनि॥ धर्मविषेश्र॥ बिहैश्वरस्तरूपहि॥ मंत्र
सुगोपुरहे सबु अनुपहि॥ ३६॥ दो॰ हेरमालवित्तारवदुधीरजमहा अनूप नील
बेलसंचितसुघरहोरमहिनीनृप॥ ३७॥ बारहिकाजतिजमंत्रसोपरहितेथकुल
महि भोगे बिमोगअपरमोरिलरहि॥ पापुप्रसाहि॥ ३८॥ [illegible] नृपहोइ कंनोज
लो हिकेरतहा॥ मनिरत्नलैबहुभारमहा॥ नगर्भेनसबिस्तारतासुरहा॥ इहिभांति
सुचिन्हविचारिकहा॥ ३९॥ तिरकेपुनिपुत्रवल्लभकरै॥ तिहिवर्षश्मसभीरे
पुत्रहे॥ पदमद्दसनामकजोगधरा॥ इहिलक्ष्ननजोजनमैसुनत्ता॥ ४०॥ इतिनृ
पवर्नं॥ तिहिनावकसुउच्चश्रमेहे॥ परहंसहिकेउनमानसुहे॥ मनहोइप्र
संनधुरोगमते॥ सुहितपीनकपोलनिकोसुभते॥ ४१॥ सुरतेजरकोमनरंस

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
१९९

मनौ सारीपकलेवर ताहि मनो मछरी अरु कुसंपणी खमालसु मंवपरे मृगु
नी ४२ जारंतु भलमेनएसवरे निहिकेमरपानि विचै सुपरे सिरगोलदूगास्त्रनै है
निहि कै निरहि चोनं कोहे सावएकोहिकै ४३ मरनी स्तति नसोर त्रिपस्तुषसो
नाही त्रपत रहि लभाउ करिलोइ वापी कूपतरागनि चि ४४ ज्ञासी संगुलचो
ग जौलिग्रसागर मेक हौ हीहन पामै अंग त्रिपंड्यानवे वरषलौ ४५ वलवं २
हेषगं धुर्वे पनिमवृषो लेउ सुजान अंतर ज्ञ नागेंद्र को भोगे भोग निदान ४६
निधन हो र ध न षंडमे हे प्रोगप्रोहंस सप्रपरि घिव चनहै पामै नहि कुसंस
४७ ॥ इति [illegible] ॥७॥ सुभनावो सुकपोल करनि में लस बेरकि पि
गसुसान भुजअपजानो सुभनैन अलमल्लेस मउअलमसु र मअर वारद मनो रि
धु राज दानो ४८ कुजलसतेर रसुमुघरे मीम ज्ञहाचि तु कंपे व वाचे वरमनु

श्री
११

गुलहचौरो । संभलुरहिजोगमालखवे । चिंन्हरहिभांति औरो मन मा दिडौरो
॥४९॥ इति [illegible] मालव्य जोग फ. ले ॥४॥ जपाचौथभुजबौरलगुवदनदिन
रमसमहसर हन्विवनैसैलमारी ॥ गरप्रीधना चूवरूनरी चूपलसछोरहग
होरत्नगुभसिद्धिसोस्वामिमतउजस्वारी ॥५०॥ चंद्रकुं रेमगउ धोरास्यिरै शुभसलवानु
तिउपार स्वमवस्थतिनारिहोई ॥ पाइद्वासामान वोभन. विडुरीसुआकरिप
तरमतिसुविमदसोई ५१ ॥ छोरचोसमैद्वनमगुसम्कु सारमस्यकोचीरम्याना
३ दंगा हेसमि चिंरूपरपानिकसरजानासुकोरन्नमभेगजाभोग्रसंगा ५२
लग्न करहिमेरिनारान ॥ चतुसमेतसमवरिवरव ॥ सु कजोगफलभोग ॥ देरवि
गृपरैवगपुकरह ॥ ५३ ॥ पातशासति जहोय कैरछचकेहैप्यग्र पराद्रकैरपर
मोर मनविचेभीज्ञातेजो ॥ ५४ ॥ जोगजोवकाकनवेभोन्नप्रसंजोग रसोमे भग
लनवजोगफल । हो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम० ११०

भाए प्रभु कहँ तय प्रहृ जोग जो भिदि लोग ।।५६।। उद पति भूरति के रंगौ निज महा के परप्र
द्य ।। कुंज मनि रवि गुर पर सप रकाज जोग समुद्र ।।५७।। दोहा ।। रसेव
व यल ग्रै के सम महा नर जानि है ।। भ्रउ च्युय त्रिकोन गसि निज हे र जोग नियै
हिने सकरि इहि कोन सम हाक है जोग ।। भूमा न कहि श्र घरे हि को जो निधि
लोग है ।।५८।। दोहा ।। सौनाम नमें नीच कुल का र जो गप राइ नंद भैची मोहे
वही स्वप कुल नय भाति भाइ ।।५९।। चौपई ।। नाके सम भग्र हल य पराही के
र वैस अ स्था व भिमाही ।। के रहे धनि मक्ष सुविहेरी सतबंधार मो कंदू परेही
६० रनि के ल मधै जातक हो ही ।। एन कृफल मजु तनार सो अं ।। व सहि ल प्र मो मा के
धाम ओमा हिम स विलास मुनाम ।।६१।। गसि नाम शहल गन पती है के इंचा
म जो ग्रह स्पतो है वहे भाग विलार के हे ई मध्यम अपके दोर कहे है ।।६२

जो०सि० १५१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सीर्षोदय उछो स्थ रोई । सूर रगहै सो इनिके होई । जातक जन्म मनमें फल पा
वै मध्यम व्यय फानि सं भुगतावे ॥ ५३ ॥ अथ लग्न फल । दोहा । सकल द्रव
रधीर सज्ञान के द्विस्व भाग्य निप्र । [illegible]
भोग ॥ ५७ ॥ द्वे भौमादि । जो पृष्ठ तीसो सुभ केइ स्माही । सो पै नहीं माल सुजा
न जाही । पापी तहाँ तो मनुष्ट है होई । सो व्याल है जो निविचारै सोई ॥ ५८ ॥ पा
पी अरु पापी गृह केइ माही । सो तो नहीं पूरन जो गजाही । आयो परिविधि
पाइ रेइ । देव मध्य ताको सुखउ चारे इ ॥ ६१ ॥ केइ स्थ नै छाडि ग्रह ते रहे । सो छै
जो पैग रहे जो गुपृहे । जो लग्न इसा न अहोइ ज्ञानो । तो जो गसे कहिवे भोग माने
॥ ६२ ॥ चौथे रसे छन्द जो पाहि । या भांति पछि इ ए निजे भग्याही । पांचेन
तो है न हल्य कहे तो जोग पर्सी कहे ले निवारे ॥ ६३ ॥ दोहा । धन व्यारि रस बे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तीज ॥ भाग्याधिपत्य गृहे भाग्य दिनिसवमे शरलीन ॥ होय जो गृह तजा निर्पै
॥ ६९ ॥ दोहा ॥ लगनसात मे पापहि सुभ बलरस पेसुख भाव ॥ ज्यो जोग ग्रह
जानियो भाग्य भाव प्रभाव ॥ ७० ॥ अथ ॥ छंद ॥ उदरते लहा सु ग्रहा वो ज्यो जो
गसोरस उच्चरे ॥ ग्रहमित्र सोम्य सु सोम्य यो ॥ ग्रह जोग के सुसुसोम्य यो ॥ ७१
भगुजु सुभाव तिचोथये विधि भाति के बल सहोवये गनवक्र है जब जोग यै
इनसो कहे सुभ लोग यै ७२ ॥ दोहा छंद ॥ बुध भृगु श्रवण यसु लागन्न है
तेहो ॥ नन के गुरु ग्रह श्रीरघुवीर ॥ व्यजल दिग सासि सनिबुजजानो ॥ ऐसो जो
गा लिय मोरव बाने ॥ ७३ ॥ उलटे जो पेग्रह पापा ही ॥ जानो जोग लव शुभ हता
ही ॥ सम सो भाग्य भाव दिया हे ॥ घात म को दोपक करि गाये ॥ ७४ ॥ सब ग्रह जो
कैइ हि मा ही ॥ नाभस जोग जो तिषी कहा ही ॥ तीन वे इमे पाप सो म्य है ॥ ७५

ज्यो० सि०
३११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लमाल सोजोभोगोमधे ॥ ७५ ॥ मंदि रविकेंद्र कारिये सोई ॥ जोपे तहा चंद्र नग्रह
होई ॥ वायो जोग सुनाम कहावे ॥ ग्रंथ ग्रंथ ऐ स्वपवतावे ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ जन
मलग्न सप्तम दसमो जो सुभ ग्रह परतु ॥ नृप जोग जो ता पावे सो सामंत
ननमंतु ॥ ७७ ॥ मुक्ति कल मंद्र ॥ सुभोतिहि लग्न भाव ग्रह हाइ ॥ तलाउभ
मौसर जोग गनाइ ॥ इसे ग्रह सो समं गोति पजान ॥ भने कविस तिय पजोगति
हान ॥ ७८ ॥ सुकर्म घरे तो हि लग्न भजेत ॥ नहा लभषेरक वाय करतु ॥ विचा
रवि चारि ग्रह रस सुजोग ॥ कहे ग्रह नाम सुपे इतलोग ॥ ७९ ॥ सुहद्द धरत
तिलग्न रहि तै रहू ॥ तरा गुनि षेट कजा नि सुलेइ ॥ तिरी सग नो वरु जोग वरा
उसि द्विक जो तिखसा गर चाउ ॥ ८० ॥ सुभो तिहि सातय स ग्रहि तोय ॥ वोरेर स
कै सुन वे ग्रह लीय ॥ त्रवकर्म धरे तिहि लग्न रहि सोइ ॥ गनो नरवृत्र स्फुट चय्योइ ॥ ८१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पस्त्वनिपडंद॥ तिहिसोरिओ गरम जो करसाइ मोकाढनाम तिहि करा
नाइ तिहि मनमस्त करनेर स्त्राधचंर वाजे स्तानिकमनिपरे हो२ २२
के नहस्रु रिंपे रवभा वकाहि तन्नते सुघट्ठु मेजो परा हि तिहिलोजु कु
हे धुनिच कमैता नधिग्रधक रेजो निधीलोग २३ धनेते सुच्रंनाहर है
लोर श्रस्थानघरकोमब ठोर कहिलिं हनामवजो गमोइ हिस्रातिजा
निकाम निकेर ओर २४ दोहा के सहिनामसजो माने कहे जोगावद्दीस
ध्रतव जो तिघसिं ध्रुमहसनमहिजातिद्यतील २५ कहे भेगजो पध्यम
हाति कोहोर ध्रमाव घरसवतन्नुगलगानवगोलजो प्रतोगाव २६
गुनिबालांड॥ हतमानि पेघरसवक्तागसु जोगकोन्नाघ सुलघो सु
लनी सेरे होइसवञ्चुतकेसर विसोघ विसेघो २७ घटकेसव वपे नमस्यु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रै जससुलीगप्रमानप्रमानौ। होइ कुछ कैसव ग्रहहामिलिजोगस्वजनम्
स्वज्ञानी ॥ ८८ ॥ सबग्रहनाथपाभ्यमेवानजोभाजनाइजनाइ ॥ ओतिधनाम
षलक्षिमाधार्थेवनाश्वनाश ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ सूरमातिनितिसोजोतिविधिनिकरे
सोगपेलाइ होइजोगाजोरिषेतेफलदेहसानिमाइ ॥ ९० ॥ केवलकंडनमा
नेसोवीनेहोफलसवदेर जनमकुंडलीराषिकेसंभराससनिवेर ॥ ९१ ॥ कवित्त
छं० कोधिवरेसस्वा.पसुहेन्चति रेसनवेधनेपावजेहगाति इस्सुव
मेत्र नेरिनहोरय स्वग्रसुजोगविषेनराजोरय ॥ ९२ ॥ जंपानसवानवेरोस्व
मानह तेजमहीपतिकेसुसमानह हर्षसहानपतेउपरेहल ॥ सूसलजोगवि
षेजनमेनल ॥ ९३ ॥ पुरनरनसबनेसधमेनि ॥ भपसमान्नुमकोगतिपुमेनि
आनेकुताहिप्रमानप्रमावह ॥ जोनलमेउतपत्यप्रमानह ॥ ९४ ॥ पुनविधिच
निभूषनमेन्नुल ॥ सेरवाहनसमुनहेजनल ॥ कंठकेरेमतुलाचिपकाहिय मा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०मू०
७३

सुजोगबिषैजननमाहिप ९५ सोबहोरोइरलिइसमेतनि श्रेत्रदहूत
कथाइ श्रनेतनि रेश्रुरुसंमहोगरमानिय पोॐहिभइजनतबहुजानि
य ९६ ।सोरठा। श्रालसीकउपकारि इरहिपुनाजानिये सुइजोगफ
लंपारि जानतकजनभजोकहू ९७ गीतवाद्यमेग्यान सोलिमर्चेमेसम
यश्रुति नइजोगउनमान ऐतेफलनरजोजनम ९८ ।दोहा। श्रामष
नसंजुतमहिनोमसश्राइोह गसजोगनस्जनमहोइनलस्तकीजोह ९९
।चौपाई। रानहीनइ त्यमिनअपत्यारथीसुहोर गेगेमास्पीरहोइड
भुताकमीकसोर त्यागहोचिपाविचाहिनी चनारिसोसबैर जोगसंक
टेननेसुहोपबिंनस्ताहिमइ १०० मोमिलीजुउनपंनसोप्यहीनमोकहा
इ वाहनानिनुत प्रीतिसोश्रेसभेरलइ वत्तयापवीनकोरदुखताम्ह
ग्रेरस्वाहि पंडिजोगमअजनम्जानिनेकेरचिंनहतारि १०१ सोइसोवउ

सी०मि०
७३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नकछेमपरइस्तुइकार जेहिनारिसोनहामहामरदुहोरधार छोरिनारिनि
नुसुखमसुभाउनतुहिवान संगजोगामधाहोरएतचिंन्हतावपान १०२ ताड्ड
भिनत्पागिरेसुवि छिमी विकासुताहि होरसोइघातहायउनपनवेसुजारि
इव्यरूविनाचलेसहोइनासुभोकाम इलजोगजोजननेहिवाल चिन्हरूपु
नाम १०३ ॥ दोहरा ॥ रहिवालउद्गपनेभागवतार सुन्नानीपनेमागहोनो
गनेतार क्रोधीसुकामीजनेवजुजोगाहि वहेचिहूएतासुकेसंगजोगाहि
१०४ सुहनी सुवनंरीकवोधीनेकामीपु धनीधर्मेज्यानीपनेसुखनामी
पु ग्रवीनेमहासीलहेलासुभेगपान जनेजोगामेजोजनेचिन्हलेजान
१०५ ॥ चौपई ॥ जसीवलीसुनहेउतसारी भूमिपालउनवाधसुचारी
रीरघुनीवीसोनहरोई कमलजोगामेजननेसोई १०६ सुघसोवाघसोक
सोजीवे इहिविधिताकोजानेसाहे नुतप्रतापवकासुप्रवीने चपलघ

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म० मैं सुनवापी नाशौ ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ वरहिं जु अपने धर्म वकु होइ सुधी उदार सुम
७४ विचारि विद्या पदैं न कूल जो गुन उपकार ॥ १०८ ॥ एकावली छंद ॥ ताशु हस्य पूर्
घसे सुजनै रस्पुति ॥ अमने रवन समह पावन हा सानि [illegible] विद्याहि सर करि
जोनतसे भल ॥ जो गमसा हिम रहो इ हुधी फल ॥ १०९ ॥ श्री तिकंरा हि सुप्रीति
रहुनी च नि ॥ पंडित नसु मसरे सुंदसली नग ॥ आलमसु धनहीन रहे सुर
जो गाम कहि पह धीर धंन कहे ॥ ११० ॥ दोधक छंद ॥ एव ह पवे धंना हिदो छि
परीन देह कर कुल सम सुद्धिविहीन धन [illegible] सकाम्ह सेम
लीन रे रसे गजो जनमन नारिन हीन ॥ १११ ॥ सो ष्ष भोग क्रीहीन सो नर
जान ॥ चपल हृदय पकीहानि निताहि प्रमान ॥ अति लोभी अरुरो इनो वको जो ग
सो बहुतेचे रहे सो विषलोग ॥ ११२ ॥ मन्नु मसउपजे अनना सु सहा ॥ सो
पंज ॥ विकाश हैं सम अविचार को नग्नूडगी विधि हित रैवासु विद्या म सर्वी ॥ जोत्यसे
१३८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नष्टटकताल ॥११३॥ जोउभीलग्नसो अतिमहासजानतातो राम ॥ दूरवनेगोगहि कानन
दुःखनेमारे ॥ निग्रहकमंच हीनकहियतताहि ॥११४॥ दोहा ॥ अतिसुमतीनिजकालंगना
दि चंतसुखान ॥ छठ चजोगमे जोजनेहुनु चार [illegible] ॥११५॥ पुत्रलवंशमहेर ॥
चारि चंतकीवेसखधा आति जानिये ॥ [illegible] रदमागरचालरिपुनमकुलो नारदि
शाध गेप्रवीनधनुधजाचो नहै ॥११६॥ मिलपति राताहि न पाते मा ने ये [illegible]
जनकोरेश्वमलमन जानिये ॥ भाग्यपून बलवनसुखधानिये ॥ चंद्रजोगफल एन
सहा अनरजानिये ॥११७॥ जन्म मूलउपारवा रसलशतारे ॥ पुरुषारण श्रीतिहरमासु
चापहे ॥ चंद्रवंशनरपालजलसोजानिये ॥ चंद्रजोजोग [illegible] तारि फलमानिये ॥
सुंदरहोउहुभावमनोसोकामहे ॥ रानाधीमहदयालमतीकपनामहे ॥ भूपतिलेसवजो मन्दलहे
धनिवलमे सागरजोग एतकहे ग्वतमे ॥११८॥ निसावलनचारशतासमर जानारिने
सोनरकहसम्भेतमसदानिरवाहिने ॥ कोउनवसपांसकहे पलघोलवे ॥ सुरचनीतसुरा
जोगफूगोलवे ॥१२०॥ आघरजोतिपलेपुत्रवधनचाहे ॥ धनकर्मातेमाहेसुख [illegible]
गंतरे ॥ चंद्रानिलधान्ययभवालचारमाजानिये ॥ जोजनमेउ [illegible] जोग [illegible] फलमानिये ॥ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ता०म०
१७५

दोहा ॥ तनय जुडुविवार सार करू सुतनिहेस्तर सतजोगमसजार धवयराजितन्मर
नामिय ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ मायसलिते हैनजिपइ कमलजुनीतउपकार तनयपोषकोमोधिकार
यसो कालजोगकेसोर ॥ १२३ ॥ कुंडलिको छंद ॥ जानेवकतारइममयततापुरहीनस
हप वधेनपति रखवारमे कुतसितवमेश्चनप ॥ कुतसितवमेश्चनपश्चतुकोपारव
बो हेदे नच्या कमयश्चाधिक सदंमसुतहोनो ॥ कानन सुष सुहोइ श्चनरपकरेपसा
नो पामजोगसुतहोइ संसुपतेपलजानो ॥ १२४ ॥ मधुमालती छंद ॥ सुतनहेधिमरार
ह श्चानुराचेतमान ॥ सनच्या दिहेसुषमवलश्चातिसुमतिवधानो ॥ धीजानिश्चासहि
तनाचवलवसुभा ॥ सोइसुतधामेनिजोगासुतगतिसजता ॥ १२५ ॥ गीतसाइश्चमायु
गमानश्चतिपुत्तकपटनान ॥ कोधकवतानियानिकोचतिग्रहधनवाना ॥ योगावि
सुपवः आतिनीकलसुवरवीना ॥ वीनजोगाजनमभरचुसवहेहतसुचोना ॥ १२६ ॥
दोहा ॥ कहेश्चातिमसजोगफलचपरश्च एरबजोग ढूंढराजमतसेषकहि मोघाफल
संभोग ॥ १२७ ॥ इतिश्रीमत्पंडितसिंहात्मजश्रीमनुविरचितायां ज्योतिष
सर्वीतीयचटावनाममजोगफलवर्ननंनाम ब्रकने चतुर्विंशतितरंग ॥ २५ ॥ ज्यो०सिं०
१७५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अथ राशि जातकवर्णनं ॥ दोहा ॥ जातक जिन सुत लग्न के वलो कहु ग्रेष पत्ति
उतपाति जंत सुग्रंथ मे लक्ष मन यह ग्रह जाने ॥ १ ॥ रक्षा मे फल तो पाव ले जन्म मन काल
इओ रहति है सब था पापनी च यम वाल ॥ २ ॥ सारावली ॥ पाच ग्रह तेऽस तो जि
ते जातक जो जन्म मे वसे भाग ॥ वह तनसु रोन मे ॥ ३ ॥ जाइ तत पर है स ... ॥ २ ॥ राश
गनो इस पंद्रह लो ॥ बालक जो उ पुने जन्म हे ॥ ॥ जोर त्र पुरुष भनोग्रथा ॥ ६ ॥ रूप सव
सा लेषा ॥ ४ ॥ पंद्रह ते निवो सु लगो ॥ हे इ मयुष सु भा गजगो ॥ यो र जसे सु मु सा न्य
हे परवो नव ला मिल हो ॥ ५ ॥ वीस हितेसु पची सत ले ॥ जातक रूप सु पाव फल ॥ रो ह
रे गसु भाग वि लि ॥ हे स वस र सु हि इ ति लि ६ ॥ तो सम सु पनि ला सु जन्म ॥ पाच ग्र ओ
सु भने भूपति ते सुघपाव म हा ॥ संपा ॥ तो वु रस्ता सुग्र ॥ ७ ॥ जो इ कतो मय सु क
जातक जो सुव ता र लही ॥ कम सुन स पन चलो ॥ नाघ च म सुव वा न ने ले ॥ ८ ॥ ए
तो सफ चिन्ह रह सो ग्रहा ता तपरम पट ॥ ते सहित र पन हो ॥ सा धुर को नि
त्या मिका ॥ ९ ॥ ते तिस चो तिसरा स्थि विधे ॥ जात ॥ चन्द्र पे सालि ष ॥ ए क ज्ञा र
तो वके ह ग्रा उ इते इ कु ता सि ल है ॥ १० ॥ पतिस रा स्थि विहे नग ॥ अ ... ति मत लो के

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०मं०
१३६

घरा॥ निर्मलसीलसुजनत्वभला॥ देषिभङ्गा लिहरस्वनला॥ ११॥ छत्निसारथी लिसेलि
मे॥ बालकसुगुनसेजनमे॥ पातिसुरासिपरा जन्नु॥ हेइस्तुमतनन्दमता॥ १२॥ अम
रावनिछंद॥ उनतालिसरासि॥ वेधजनमेसुनरा॥ नूपहोइजसीवरप्रोढवनाप
रा॥ रिपुअपरासेसुपनगज्ये॥ गरंड॥ नरलनलउक्तताठेनरसुवज॥ १३॥ सुत
चालिसाकेनोमेहुजरजनमे॥ इसहरिसपतिजेकरभूपदेहमनामे॥ गजोलिह
दरदीहयसनावेध॥ नभसा मरेतिहिनामपतापालेष॥ १४॥ मनिकाछं
द॥ एकचालिसमयछा॥ जोभवेकइमनुष्य॥ जंबुदीपमपहीन॥ वेनताजुमी
समान॥ १५॥ रासंयोतिलालिसमान केवयालिसाहूजानि॥ होइवालएगातेन
॥ लेहूमानिभिंयभिंत॥ १६॥ जोराष्ट्रहुलाविलास॥ छोरिदैतसचाल॥ होइजोर
भूपपाल जारहीसुपापजाल॥ १७॥ गयसेनराछंद॥ चवालिसमयुधाई॥
बालकजनमसतीहि॥ नूपसवभमिरयाहि॥ चमसमहसवशाहि॥ मरहुजेगाजति
करसोजलाहि॥ टापुइंतिनिकोगयेहुउचसंउनमाहि॥ मकरी महिमातवा भेस
रथलिकलाहि॥ १८॥ सोरठा॥ पारसुप्रनवंद॥ सागरकोकिलोलजो॥ देषनपला
नेद॥ सनाचरातिविलासको॥ १९॥ जनमेवसमतोप॥ विरनसुपेमालीसमे॥ जसलोहिसा

श्री०सिं०
१३६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तो रोप ॥ संकारि तातौ रेवता ॥ २० ॥ इति नरपुष्पमालका व्यापा ॥ अथ पद्धडी छंद ॥ तो रोपति
ग्रस्तुव स्वस्थानगरा सिहिहोउ ॥ षेटरोट्यर मिनहर धमयजानै सोइ ॥ सुभग्रतह कुरसांत
सतो किस निवहन्या रहि ॥ दानष्षचरानौ घश्रतनो विकल वहाहि ॥ सेतु नपापतो घलगनो
ओति षमाहिक नासुनह ॥ जीतो सुहोव हीसुचका रग्रह पोतुत वै सागुनह ॥ २१ ॥ तोनाह
द ॥ हीपतिजो ग्रहनतु सुपरैवह रसनरहनो ॥ हे मरग जितुरा तेमहा घर परथनो ॥ जोग
तिहर समे तनुस्फु लितनग्रास्य सदा ॥ रइनलहनसो नरजो नोमिसपु वदा ॥ २२ ॥ होइहि वे
रकस्व स्थामभज ये सुतहि ॥ सहर मरि रैवहुवाह नरान्न सहो ॥ बिचमहा उवशे नुतिवाहि
नाप न्यहि ॥ सच सम्मूहानेनोति तिबेन न्यातिलेउ वहु ॥ २३ ॥ मोरछंद ॥ सोतिग्रहातिहि वस
नसी लहि ॥ पुनसमघा वेहमनि मदापुर ॥ सरस परे विधसे उपकारिय ॥ धार्मिकजानि मु
मन विचारिय ॥ २४ ॥ सनग्रहा तिहि हेनापावन ॥ मत मरापर सन्नचरी हनु ॥ गवघुचो
सरस्वति सदा रहि ॥ कोरतिहि उपकारि सरो हि ॥ २५ ॥ विहलषेर परे मवतनचानि ॥ निवल
मैल जिपड्डुर सचनि ॥ पातकि भिन सुहरह तिहीपुनि ॥ मानघर पटपरकाज मरमा ॥ २
दोहा ॥ दुनतमा तिकाहि हीनन रपातिधि मानि फलनाष ॥ मंगरसं नेहरा उपुयजा तपर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रामु०
१९७

फलभाष ॥ २७ ॥ सुंदरी छंद ॥ नृपति ते भय पाव हि सो महा ॥ पितु किरि रंत सु होनप्र
ता तहा ॥ तजतु नीत हि सो धावे हानहे ॥ गिरिसु जाति अशीसम कीन हे ॥ २८ ॥ फल मुल
कला हा धलसीन हे ॥ नृपत लहु महा धन हान हे ॥ तप्त नपा हो इनिपुणा चिंतचित
हे ॥ पुनि विरेसिय क्रोधि लगी तहा ॥ २९ ॥ तोमर छंद ॥ गृहपी डिहो भय का उ ॥ चिं
हे इ धजाल ॥ आनि पारतेस वय पाऊ ॥ असि चिंन्ह जान न कहा ऊ ॥ ३० ॥ कुट में भावे सा धे
कलो इ ॥ तजि यायु में अरि सो इ ॥ चलसि पिरे न रजान ॥ इन चिन्ह सभु चे भान ॥ ३१ ॥ इ
तिरी धत्ता रि गृह फलं ॥ निज राशि पाने ॥ यह तेर रे फन यहि ॥ ज्ञाति के विशे व
लवान ॥ सुमती कुदरि दिप मान ॥ ३२ ॥ धनि गर्भ कुसलले हय ॥ पर धान जो नरसो इ ॥ फ
लए तजो ति धरे षि ॥ यह भाव संभु विसेषि ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ रिगवल वंश महो इ
जो नर स्वतार धरे ॥ निजा रिसि में गर जो इ ॥ नमम ते ए फल जानिये ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रिग
वल में जो हो इ ग्रह रसा विन्ता हियजास ॥ हो इ र स उहि केरि जत तद से फल निज कास ॥ ३५ ॥
धा ने कु कमाई अपनि सा वडे धंवाई सुकृत ॥ हरि धका रे विपु धरे सब कलय पफलउ
ओ ॥ ॥ नराचजा छंद ॥ प्रचंड काल जो कलहा धंधला ॥ रात्र वस्त्रो धनी सुखा गमला ॥

श्रीरा०
१११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सन्नवौनासभूद्यरिवाजीवरी॥ हे विलासी विमाकोजसीनादूसी॥ ३७॥ गीत छंद॥ सन्मदे
श्रावणसुतने ओपरतोहुवैजनमाहेप॥ इजुरेवमनेम्नचा॥ संग्रहरोसदसंवतहाहेप॥ पर
मन्त्रअभिमवस्ससो॥ श्रीप्रक्रत्पवेन्नसुजानेवे॥ मिसन्पन्तनसो चतजासेफलनचे प
मानेवे॥ ३८॥ परणपछेटवलीनतरभ्रपुकारजो अतिकूरहे॥ जुगलीकेतत्पंच्यनोफलो
नरमेउम्भी अतिप्रहे॥ कलहीकुकेवियंलोमित्रो विलसुभिकोमानिसोजिये॥ फलपु
जोइहिमातितास्करआहिराकहि॥ छीमेप्र॥ ३९॥ दोहा॥ वलीहोररातीनिश्चद्र उत्तमफल
तार॥ तेअच्छवकमसोकरतो नेसगुंवफलसार॥ ४०॥ दोधक छंद॥ धानजभोमसुरजुवदर्य
सुदानवकेगुरुसोपै॥ जामिनिनाथ दिवापतिलषे॥ हेक्रमसोफलतानविसे
वे॥ ४१॥ राज्यसपूजपाइयजसीहे॥ देश्सुघटकेभावलता॥ हे॥ हवंदुचितवधानिव
धानो॥ चेवटवलीफलदेइसुजानो॥ ४२॥ घेटकुष्यधनिकोसुभरेषा॥ दुष्टसंवफल
नाहिविसेषा॥ क्रूरविलोकहिओसुभकालो॥ तोअतिपावतहेफलनासो॥ ४३॥ जोजन
मेनरश्रोसुरकेहू॥ जोरारिससवलजानिपलेहू॥ पा॥ प्रकोरवधानतसम॥ मावशत्न
निसेजोनजेर॥ ४४॥ इति श्रीस्या नावल गृहफलं॥ अथ [illegible] लवरनं

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ता॰प॰ १३८ सूरजेतेतहवाजिनचेरा ॥ औरसुवेकहिंघरकेरा ॥ वोसुयजोगसुनामदषानौ ॥
आछतयापरमानप्रमानौ ॥ ४५ ॥ जोमंदितेधनभावग्रहाई ॥ वोसियजोगसुताहिकहाई
॥ भोमंधनेचघपहोनिग्रहाहे ॥ नामदुमेचवारैताहिकहाहे ॥ ४६ ॥ मंदरकाढ़ाहीमंगल
तक्रग्रा ॥ नीचविलोकनियाफलप्रग्रा ॥ वेनसुनेमहिवलहुभावे ॥ एफलवोसियो
जोगसुराघे ॥ ४७ ॥ हेकादितेपुनिपादमिलाउ ॥ तोन्यतिपातरसातहिभाउ ॥ याविधि
जानवहकेफललेषे ॥ भाषहिसउवकानविसेषे ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ चितवौतिरछोद्रष्टि
ववतासुदरआलसो ॥ वेसजेफलपाछे ॥ रूपावंतअस्थूलअति ॥ ४९ ॥ साहिक
रूवउधनिधा ॥ सूरसुमतअमानियो ॥ उभैचरीफलगीर ॥ सरलनजो पदमासफल
॥ ५० ॥ दोहा ॥ रासिअसअसचारिपुनिजोविचारिवलमान ॥ वरनसुजोतिषग्रंथपर
सिधरिसमचदिफलजान ॥ ५१ ॥ इतिस्रीजोतिसाध्याय ॥ अथ सुनफादिजोग
वरनन ॥ चंद्रातेधनभावग्रहसुनफाजोगकहात ॥ रविवरजे न्यथ्यधनगुह्य
नफाजोगकेभाव ॥ ५२ ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ तहांधनेहूव्ययपंचमरोइ ॥ निसापती
तेग्रहसोरहाइ ॥ हेजोनिपेदुधेरजोगसोई ॥ विलोकिआषेंदयवगपलोइ ॥ ५३ ॥ त्रि॰जो॰ १३८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

निसेहतेते घेरा [illegible] काला ॥ धनेपदोमें दिहोइरल्ली ॥ किमदु म जेभा सुनामोट ॥ विरीन
सपारिसुजानि लहे ॥ ५४ ॥ सुदुवजोरभुज मातमाई ॥ जसीसुधारी सुमतीकरतें ॥ मरोपनु
गौघ्रुकेतीमहोरे ॥ सुजेभा त्रेसोसुनफाकरोरे ॥ ५५ ॥ जुसीलनसीला भ्रुदरनवेता ॥ गुनानि
पूरोनपसोम्नेता ॥ विलासदे [illegible] ॥ तुरक्का ॥ सुजोगनेसो त्रेन पाठवना ॥ ५६ ॥
वसेधगाइवगपरधोरे ॥ तहामहासचाहेषारितोर ॥ विलासप [illegible] धको सुवारी ॥ सदेव
रजोगए [illegible] विकारी ॥ ५७ ॥ [illegible] होवे आतिकमलीना ॥ मघत्रियाएत्रमइव्यहीना ॥ द
धीरालिइ परदेसिहोरे ॥ महावियोगी सुधकोमुसोर ॥ ५८ ॥ [illegible] ॥ नपकेकुल
महोउ केमदु मकेजेभामे ॥ फलताकाअसजोइ ॥ दुषदालिइ मिलोफिर ॥ ५९ ॥ स
सिकेद सिमेलीन ॥ [illegible] ॥ [illegible] निधानपवी ॥ [illegible] फलकोरे ॥ ६० ॥
[illegible] ॥ भवकालत [illegible] सर्व ग्रहा ॥ फलकमदु मान्नपमेतविहई ॥ पहल
दरभोगा [illegible] ॥ चिरजीव [illegible] ॥ ६१ ॥ [illegible] ॥ तीसेकुफर
वारा केंदुपापिष्टपाय जो ॥ सोकमदु महोय ॥ चिन्हआपनसुचित्रजो ॥ देवछेनम
मानदेइ जो फलेसुवखानिये ॥ देहिजातकमे [illegible] संग्रहमाविये ॥ ६२ ॥ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा॰मु॰ १२९

जातलग्नमें जलग्रह जो भये तो लिखन तासिंह्यौ ॥ सुक्रारि विनि सारि केहरि मैं अवे सुप्रकासिह्यौ ॥
और खेटसत्तौ नहें छत्तिमें भूमिको पति जानिये ॥ अंगको लिकै मड्डुम यह हार्चौ नृपसंयुक्त मा
निये ॥ ८६ ॥ रेणयोग्र हरूलग्न तें त्रय पंच नव भावहि सरहे ॥ जन्मलग्नस्वचं रहें तो सबखेट आ
पहें चमरहे ॥ जो सुभ आति रोवृष्णा नहिं तें पतीसुभ मानिये ॥ जो घटा वरहस्थ जो गुरु
सुनजा कुपती निये ॥ ८७ ॥ अनुभूत काद जोगकलोजो रठा ॥ लग्न यस्तुरी के
शुद्ध परा हैं नृपति के जोग जो ॥ नृपासि राज ताजे होइ ॥ मायि नि नीरहि निभ्रमा न संहहें ॥ ८८ ॥
ते अवरस्य च कहु हि ॥ किं चितम निताजता स्कार ॥ राहु सुकमी सुहि ॥ कादिनकारें नलिये
ग्रेष वक्र ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ चारि पाच्व है खेट छहजोर परे इकठाम ॥ राजजोगकोमेटि करि
नृपसी करे प्रनाम ॥ ९० ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ भवे रासि ईसे ग्रहा नाहि खेहौ ॥ पतीजन्म
मेसान है खेट इये हो ॥ नहीं मंद लग्नेक लोकोप्रकासी ॥ यहे जोग में होइ सोतो तप्यासी ॥ ९१ ॥
सनी को कुइ भाकानमें लग्न राई ॥ सनी भौम कन्नो उच्चंसा भैमाई ॥ सनी इस्टि हा देह सा वा
जनावलो ॥ हिये पाछुरी है जटा सीस वंशी ॥ ९२ ॥ सोरठा ॥ होराको मासि तारु जो चउं
नचस्थानमें ॥ रखे सनि गुरसोइ ॥ तोरध्यागम्भी जानिये ॥ ९३ ॥ भवकें समस्थे जे

जो॰सिं॰ १२९

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुभग्रहमलोकिेसनवे। भूमिपालसुभथंत। औरधेरहैंधिनतिहि। ७२। दोहा। संन्यासको
गकौवाहिलहीरवैते कमसाध्याहि। धरकेसवलोपेचारिकारेकहतपहलेनिश्चयगाहि। ७३।
तोटकछंद। वलसंजुगतजोहिन्नापधजहा। तिहिचानसुपस्थप्रलिद्धकहा। बुधनातिदनी
करकेनफरा। कुजधीमितिन्नामचघानधरा। ७४। गनिदेहिपुचकअधराजुधरा। नतीनातिपी
तिहिचिन्हनरा। लेगनेवाजोग्रहजिनजवे। पहेचानपहलानिफुलेकहत्वे। ७५। सवैग्य
हजैधरकासिपरे। अपनेसुपनेवलकोसुधरे। अनजादिकपतारत्यागजवे। नटनीतिल
खानिहोइतवे। ७६। तिहिकेइकमंदिरमध्यमहा। पुनिचारिकवेटपरेसुजहा। जनमंननाम
पतिवेमाहि। गिरकेहिसोपुनिजाइरहि। ७७। परस्त्रीतिसमंचितपंत्रथ्रहा। नरभूपतिकेसवेय
सुकहा। फलमूलसुकेहिनिमरकरे। चहुजोगफलानिहोविदेरे। ७८। पुनिकंद्विनिसेतिपुजा
पुजिते। परचात्पसुसोतिकसभ्यावेते। फलरुतवकनाथहिमातिकहा। परजोतिषसिंसुभ
ग्रथमहा। ७९। इकमंदिरवरथ्रहात्रपरे। तिहिकालतत्त्वनरजन्मधरे। पुनहोरसमरापतिवंत
विषै। गि.रिवासकरेइभमचिन्हलषै। ८०। नपजोगहिजानिप्रसुतपसुनै। जगमेनतिहिसा
यहोपुनै। जिहिकोन्मधिकारवलीगनिये। फलतासुइहीमतहागनिये। ८१। दोहा।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

[illegible]
१८०

॥ आयु॥ अथ चरित्र॥ [illegible] ॥ आयु कहे गनि जोतिष लोर्वे
॥ प्रगनता करि है पद रि सोई ॥ जो गन्त्र अरिष्ट है गुन कोला ॥ हो श्वहि आरव लेन रही मा
॥ ८३ ॥ त्याज अरिष्ट प्रकाश हिकाही ॥ भाय अरिष्ट पहि गुनि ताही ॥ सो इन्द्रारिष्ट अम
वने जोई ॥ प्रगन आयु विसेषि सुहोई ॥ ८० ॥ आलमाहि रहेरा विमोला ॥ रवि तहाँ रत्नु
सो प्रियु सोमा ॥ ३ ॥ रवि घरे महजो चपराही ॥ तु कहा इगारे चरहि नाही ॥ ८४ ॥ जोर कहू
हरिजो गहि माहो ॥ जो तव जो जन्म माहि धराही ॥ आयुर सूरन मत्ज जु तुजानो ॥ जो षत
हरिजो गहि माहो ॥ ८५ ॥ सूर मन्दि रन केन्द्र महीयो ॥ सुरज कोस्व ॥ रविकिवलो
जाते कहला गप्रमानो ॥ ८५ ॥ [illegible] ॥ तालनपुनी
यो ॥ भोमनि व तन रविव नरेष ॥ जो चर्हि वधि सुता नाविसेष ॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥ जन्म समय रवि सासिसह ॥ रि नपाते तन यपरहि जाह ॥ जिपहि हु वरव दन्न
वक्र दहि विधि फल तासि सुतन कहु ॥ ८८ ॥ व व्व आरे ॥ कहि चुस रहि अरु ॥ रैनपाने स नि
महि सुतय त ॥ मन्त्र कनेचु माहि ननभविकार ॥ तनसु नहत कफ लु नसह ॥ ८९ ॥ दोहा ॥
पापी ग्रह जो पकेन्द्र सम त्रयरासाल ॥ क्रूर ग्रहा जो रक्ष जो जिपेर नभ रिसाल ॥ ९० ॥
[illegible] ॥ भोनसमि महि विनु सरन जो भगसुत लोइही ॥ हा रसमव जैमर लगने तव सु
र जो अही ॥ जो जन्म ग्रह धर्घर नाने सबै ग्रहन रपहो ॥ तिवचारा आरव लता हि गाने

ज्यो० सिं०
१८०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

बिसेषही ॥८८॥ सोरठा ॥ नेतरुठवयेच र पुष्यकुली रके रूपजो ॥ और उरुमइ वर
उच्चारिलमोजिपतनर ॥८९॥ जनयाहितिरिन तहन उवकेतनि हारे सबमे भाषतजनि
तन आसुहोइ समासंबे ॥९०॥ दोहा ॥ सरजरसक्षेपवन ॥ कुजयरकुमनिपसं पापंहर
कुमसवलधे जिपुतसफकरोवसं ॥९१॥ इपकानमोलगनको निषाउपहिमाटा ॥ पापग्रसन
सजूतजोसानवरघचे जाउ ॥९२॥ मनमालनी छंद ॥ जहराहुराहि के इसक नननरेष
टकझूरतरू दसकोपधोइ सबधेल ॥ मनिताहि नासजुपेहिट ॥९३॥ वरचरम
हिरकेरवरू तनतेसुमो ग्रहपाजनक नचपापा पापहि केमनलेय लगनस्तोवसुवधो
पा ॥९४॥ जनमाहिकाल निपेसलेय ॥ छठवे सन्नाठा ॥ थानलेय लघसप्रपाताकिता
सुहि ॥ मननताहि नूरनजोकहिय ॥९५॥ दोहा ॥ उतपतिलगनाहि केतलयेसमयकारसु
मसुहपाव चारिवरषकरि आरवलघरिव ॥ ओठमाप ॥९६॥ चौपाई ॥ जनमलग्न
तेक्रूरगेह है ॥ धनव्ययप्रभोहिजोरपराई ॥ घरपापवसु छठमेंसाता ॥ घरघलुमासजि
येवहवाला ॥९७॥ रविभौमके ओरिबसुप्रयग्रह ॥ होफलजवकी देषपापनतरु पकीइरि
होरतहनारी ॥ नासहोइ इकमास नारी ॥९८॥ जनमसिसरासिपती पा ॥ चछपर
व्ययमंहिरनीको ॥ शुकहोइ नाहि रासिबिषेही ॥ तेदुसचारपचारवलतेही ॥९९॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रठा॥ मृतकमंदिरलागे सव॥ खजारपापकीहोरसौ॥ मायपुरिसापौ जेस कीरति पुरबसी ख्या
रवले॥१००॥ जेनमराासिकौस्वामि॥ सुरसजसंजुतरूपरे॥ मनुरहाहेपरिनामे॥ वरवेस
नतेलुगावरहू॥१०१॥ दोहा॥ होतनायमतकेसंजुतकरिपाप॥ नरकौउतपतिहोके
नासगुपसहूथाय॥१०२॥ [illegible]॥ उतपतिसासिकसीसपो॥ मृतुपरमेखव
लीसपो॥ रिपथरहपातकिजोपुरी॥ मारिनरिमावसुलीपुरी॥१०३॥ मसितुतहारवि
मोमपौ॥ सुम नहिरियाहिखोमपौ॥ च पवसलाकुंभगेरहरे॥ वारवनो लिपवेरहीं॥१०४॥
सपतसुचाउगुपरहू परतनेनेउरपालहू॥ जुतगरपापीहिजाने थे॥ सुमनाहिरे
कृपानिधे॥१०५॥ सुमणुरवर्जितकेजौ॥ जनमहिनुहरनमेहजो॥ सनेतरिवसुरले
पिके॥ जेम घरवासविसेतिके॥१०६॥ सारठा॥ केंदुहिकेवसुमाहि॥ पापछेटवासरेकुरे
सीधुवासमतचाहि॥ क्रीनरंदुजोलागनकौ॥१०७॥ पापीवेरकराव॥ पूर्वधामचालिके
केवे॥ जमकेघरनामाघ॥ सनयरहजोपरभाग॥१०८॥ दोहा॥ सुरूपरवधनधामसुभ
पापीकेंड्रवेकोन॥ दिचानापतनमउनमे वसे पुर नजमधोन॥१०९॥ सुलखनक
दे॥ गुरुहोरलगनहितेरहही॥ निधनभावहिसदिगरहही॥ जनमरनपापीरेखहू॥ जि
थवरमपारलेबहो॥११०॥ चवरथेसघतवसुजानिये॥ पारवेरकहजोठानिये॥ सुमपा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पद्के विचधर्मो सासिद्युपत्तुवेढोहिमनोजो ॥ ११ ॥ दस्पा[illegible] नुपतसुनतेसान
मैजननेननमोरा पापग्रहोल्लमकोबुधापेनुकोहेरा सासिनचारीकेइमेपरबैरदेवेन्
रा करोजातजान्मनेजोनाहिरानहन्न ॥ १२ ॥ [illegible] क्रूरग्रहविपराहितहनपापोर
षट्हिताल सुभग्रहेद्वा देनभाऊनोजनवोद्दुदेनास ॥ १३ ॥ [illegible] सासिगतन्नवे
पेरीसोहजनेहोसुभजुतसासितनधाम ज्ञ रप ग्रहसोरमेगानहईतोभुरंरपरनाम
श्रीनेष्टनवातकजन्मजोजानतनचासेठनसोधे मासहमेतामानस्त्रेतासत्यघातावि
चोधे ॥ १४ ॥ [illegible] मेरसोमसोलग्नमेघूजसपलम ग्रह तरी होरसुतासेजेसी ग्रुभानत
जेहेह ॥ १५ ॥ [illegible] लग्नोतिहिपातके रघरे घरहारभेसासि[illegible]
परे पररसयतलग्नाह्वैवेतसही जतिहिवरग्रनेसोलेसीही नकोहे ॥ १६ ॥ परपानतिवे
हरकोन्नतहा जहजोसुभकोसुनहेपतहा तह चंद्राहिवापरलग्न रहै वरभुन्नकोर
जिते सदनारे ॥ १७ ॥ रकराससोलोजस कहा ग्रहजीवनरेपाहिनेनकाहा जहचो
लोजेपनवबपसही सहिमानजोतषुस्थाही ॥ १८ ॥ तनकोपहोजानघुठन्वे
सुधौ ॥ कामोनकेनोसचाथवरे परताहहाविधिसोपरचे चंद्रराजेमो

नौ करब ११९ ॥ सोरठा ॥ जौ न ससी अपने ससै होइहि केपिउनिलयग्है देषोस्वि
श्मयेपृमनने पातकिषरसमोतिपने १२० उन्नकवलीगृहचंद्रदिवे भूनभवेउ हे उपमाले
षे वर्षा इकेमहसोपपरे जोतिअनेफलसउचरे १२१ धेतनको नसुसम घटे रेंध्रनिसा
पतिजो भगट पापउनुतासुमनुहि दिवे अल्पसजाउ रताहिलिष १२२ मानखुपा
गुरएककठिके मोमस्वमिग्यारासिइके करवीसनिभोमससी हमिलापइने अवसी
१२३ जौतक होइसजोगइहो जोवहिवषरवपाववलिही देषियुजातकमेघनको
सोसमुओग्रहउघनको १२४ लग्रपतीअरिभावमही जोवहिभावप्रमानसही
हेदिषकानवरैसजऊ तसमोससमानतऊ १२५ अंसपतीरिपुधाममहू जन्मति
थोसरहो इसही भावतजोतिविनारदस जीवहिसासलछैदिवसे १२६ लग्नहि
कोपरमेरग्रहू रहिकेरिपुदाईटरहू जोजन्ममेश्हिजोगमयी तादिनसोरहस्यामु
मधी १२७ पापजुतायहमासगनी होइनराइनजोगमयी नाहिदोगहिपापस
नी पाउसवषडमानहनी १२८ ॥ मारदा ॥ रविससिबुध ॥ तासि पलगृह देषन
हाय इग ग्यारहवा षप्रकास अपुरताहि तनके १२९ लग्नहरिरावि लजन
द अमावजो सनससि ताकोहपैनसेरह यहइस नदइ रछम १३० ॥ दोहरा ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

छीन्ह उर पितु मात मो कुल नि कुल [illegible] हेतु [illegible] नाहि लघु रघु स पतमेन
॥१२१॥ चेरं बुद्ध परकै इम धि [illegible] गत [illegible] भाव ॥ जनके [illegible] रे मोम [illegible] नि [illegible] सात
होराय ॥१२२॥ चौपाई ॥ [illegible] लगन [illegible] तेनासि पा [illegible] ॥ [illegible]
नो ॥ सुमव [illegible] त [illegible] पावेन [illegible] ॥ [illegible] जग [illegible] ॥१२३॥ [illegible] ग न प
ते पापी जोरे ॥ परे चेरं के [illegible] हे [illegible] ॥ [illegible] तैसो हरि [illegible] नेजाऊ ॥ पा [illegible] वे नो [illegible]
ऊ ॥१२४॥ हो [illegible] स्वामि [illegible] ॥ [illegible] पाति नाहि [illegible] लव [illegible] ॥ जि [illegible] वर [illegible]
रासिसमा [illegible] ॥ हरि [illegible] क [illegible] ॥१२५॥ [illegible] भाग [illegible] पाप [illegible]
गम [illegible] जोर [illegible] ॥ [illegible] जीवत न [illegible] हरि [illegible] ॥ सो [illegible] वर [illegible] नाहि [illegible] निवेरा ॥१२६॥ [illegible]
[illegible] करा ॥ [illegible] रि [illegible] बसेरा ॥ [illegible] नाको रेषे ॥ [illegible]
[illegible] लेषे ॥१२७॥ [illegible] सु [illegible] ॥ [illegible] नि गाज [illegible] ॥ [illegible] रानि
[illegible] ॥ [illegible] जन [illegible] ॥१२८॥ दोहा ॥ [illegible] नि पातन [illegible] हू परा [illegible]
[illegible] करे [illegible] सम [illegible] रन [illegible] ॥१२९॥ चौपाई ॥ [illegible] आ [illegible] नु हरि
[illegible] ॥ [illegible] कर [illegible] ॥ [illegible]
निमध्य न [illegible] नाहि चेरे ॥ तासु [illegible] कारे [illegible] माधव [illegible] ॥१३०॥ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ज्यो.सिं.
१८३

दो० जो ग्रहबके बल ग्रहसम सें उपजत चंद्र पराहि। चौ० ललित जो वरषकी साधक साधिपराहि। १४१
मनमोहनछंद। जुगकारक के हारे जेर ग्रह पातेरज निहोइ हि ग्रंसक कहु। तेऽ सवा इस पंच वस्तु
कममा हि ग्राग्रु विसेषियहु। १४२ दोहा। ते तनु लामहु ग्रसी कहियं बुधतान ग्रसवन च्यों लियु। रो
कचारि तेइस मांहे जहु तो ग्रल्प वाघ प्रमान कहु। १४३ धनमकर योगानि कुंभ वार विधुनी उ
ग्रसतौली नवरु दुपेश्व छठा वीस भर इकईस जीवेंस्नि जानन्नरे। १४४ ग्रवरासि केरहि ग्रंसम
ह इश राहु योग विसेषि वहु। दस वार वलोभ ति जी क्यहु जनमा हि जो इन जो गावहु। १४५ कुंड
लुंडरा जन्म विनाय्यपो करहाग्रीर रवपवास। तेरी स्कृत वारि स्कृत करो भाषा समूह रस। १४६। इति
श्रीमत्यां [illegible] ज्योतिषसिंधौ [illegible]
[illegible] २५ [illegible]
दोहा। लगन ग्रादि दै ग्रहनि के कहिव पथं भंग ग्रादि २ तिन ग्रादि पथं भंग कहत जो वजुधका
पिलप्र० १ [illegible] पूरन उडपालोउ तपतिकाला देषत होइ हिसवेग्रह। ग्रोर सुतोना
सयोह पका से भावसे भूसा सयह। २ नरि सुभग ग्रहाही ग्रंसहिमा रा उतपतिकाल हि हो
सि सुभता सुविसेष ग्रनिपस देखुता नस्हीन ग्रलकृलासि। ३ [illegible] छी नरह छरा तिन
थमो पउच्च धाम यु। रम्यपर ग्रोर सुकजोरताल छ पमान ये। ज्यों मृगलका विलोकेष

ज्यो.सिं.
१८३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लगनतै आधुतीसरठाइय रूपारहिमावाशिभि जन्मगरजरहि अरु तासितनमयुरा
धनासैजोउहाँकि २२ ॥सोरठा॥ सीर्पहिय नरहोइ सेवगहलो ननरे पठी नासधिर तोजोरु
नाछिडसमूरातयह २३ सबयहरुसन पाचीन बैरातेकेसाम्नदे मिर भारोपकीमाव जीवे
तेहरपरासैको २४ ॥दोहा॥ चौपेसुरगुरशालीनेनह अभि कालव रेहाहेतिनको
प्रासोलेतो अरिष्टकोटाल २५ कुंभजोनिरि कोउरपउपजे पारधुसंग जातनाते थो
ग्रेथलायेतो अरि रकोभा २६ ॥चौपाई॥ मकलगनतेपाहीतीनराते सेतैतल
हो अभनेगपाद्दे मातीनैसव घमतुपरा २७ निधनजोगावहुमेटकेजोरकुमार पत्ना
निपहै ॥मा छिंउतहानेदुलिखिपेरी जोकेहगभनीसमते २८ जोरपासपाछुघनसुजीवा
दरात्रकोनहिहासिवसै कहेजोतिजीनरयह सीयाभजेसवले अरि हरहे २९ बानीपाति
महासंधार वैधतिश्रासांजोगमेहे केन्यावाल कतेजन माई लषेपरसवोरहदहे ३० ती
जेषहमगपारहि थाहीपरेउ चकेतातसनी तेतकनाकारहीनसलाही रहनासतोहास
जो ३१ ॥सोरठा॥ होइपरसपरवीच चारिरासि वारहवा नेमदोषकरिमोच परपरसुभा
नचते ३२ ॥दुर्मिलछंद॥ लगनातेरतै पाहीकेइहिमाहा नेम चरसदराहमवलो सुरा
ग्रहजाहीनाहिफाहीन रमकेरी तर पत्नी ३३ तिनवाधारकेरी आयुनिवेरी
उजोहोइनरा दसवरघउ नोदोहाषीवायासा उपाभातवरा ३४ ॥सोरठा॥ देप

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कान्यारुआप अहस्थपनेअपनहो रेवापुनि ग्रहथाप वक्रसाम्रैई आयुतिहि
॥ २५ उच्चनीचतनभाग ॥ अगसतकेइव यानिये ॥ जोतिषकहत प्रनाम ॥ जिहेपुत
षसतवरषलो ॥ २६ ॥ दोहा ॥ लगननाथजोउच्चको चंदपरेवलवंत ॥ इंद्रग्रहनिज
रासिके चायुसौपतिहिगंत ॥ २७ ॥ सुभग्रहमूलत्रिकोनमेउच्चग्रहतनको र ॥ च
सोवापकरिच्यारवलजनममेजोउग्रभोर ॥ २८ ॥ सरसी छंद ॥ लगनसनयोग सु
ममंदिरवेरसुतहिनाहिहोर ॥ चपुनेजोइन्द्र असनापनहिघचरकूरसुनदार ॥ कलाई
सकपिवलसजना ॥ नु ॥ हता पतिकान्त ॥ सौ वरसेष नेसनरजौधरिजौविसोमग
नभचर ली ॥ ३१ ॥ चंद्रवारहिमासेसतं मथवारंभपांत ॥ सुरपूजितपरलगनहिवीरेसासेको ति
गे निधनगौत ॥ पापाघरकनारिनरेसेजोजन्मासिसुकोउ भारकोजीवहिवारघेस
नरिभाषनिसंभूसोइ ॥ ३२ ॥ इति श्रीमन्त्रविविजितायजनप्रियबिनुविरचितायांजो
तिषसारपदीपिकाचंदाचंजातकच्यारिस भंगफलवरननंनामपंचसप्तत्रिंशो
विताराग ॥ ३६ ॥ सोरठा ॥ राजजोगग्रहभाव रिष्टजोगनहचार ॥ सवग्रहरसाकल
फल जेनमकालफेरहिजिमि ॥ १ ॥ चंद्रयसापलनरानन ॥ नाकछंद ॥ उतपतिपती नि
जउचकेहैहो ॥ किं ॥ आपन अंसकथानविवेहो ॥ अमूलत्रिकोनियफेनिजवगो

ज्योतिष० १२५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रहकेइविधिसुकहैमुनिप्रियो॥२ असातंगतसेजुनिमानवनाही॥ सुरुपातविकीनहि
इशिपराही॥ सुवङाविताधनसुनातवन्धाही॥ अपनीपुरुषमारपसोयनतोही॥ ३ जन
तीसरयपारहिषसमसोई॥ सुभयोचहजाकरओगुनेहोई॥ धनहसुवचाल पसहि...नः
नरनीतिविनाथातरतनमानो॥ ४ मूसपथनलतोनपराहुपापी॥ दानवतनंदस
हितोफलपापी॥ सुतजापुरेदुष्यहितां॥ गनंता॥ सुतपोनमहाअधिकाधेरंता॥ ५
...एकेथेटयङचयरेहपरपुरुषनिजरासिप्रकासेनु॥ मित्रवासजोग्रहहोइ॥ को
उनाचयरिशसेनु॥ मित्रफलेजानोकहहरेही॥ चेतधरसोसमवानीज॥ गरउचपरेजानिहि
उतपतिरसाग्रस्त्वचवधानीजू॥ ६ ... उञ्चनानाभोगजुतवरतराजकुलमाने ज
पैरसाग्रहहोइ॥ निजधावहिग्रहनुफलानि॥ ७ करकरासिकेरानिपतिहोइसुउतपतिको
त॥ पुनमिरवस्तकलाहिमो॥ फलरसामेवाल॥ ८ कुजधामम॥ मध्यपरानिनुपास तिपिया
लकेसुतनमनेकाल॥ पतिनीपहुकरगोथातभाष॥ सोदसापावफलएनुराष॥ ९ गिस
नाथनार॥ हिवेवाहि॥ जनमनहुडशमावमाहि॥ धनविद्यापाहिहकभिनभोग च
सोमपेसुसुभनारिमो॥ १० सिसुहोतमरधरपरेइर॥ पासरसाजनवकहिसुनिर म केरि

टेकेसुभमीघरस्वअरोथ ॥ मटेरंध्रधामसनवासमोथ ॥ ११ ॥ इसथसतीसभाम्परहाइ ॥ सत
भैसखोरनेकोन्याइ सतिनामधनेसुससिकोरहाइ ॥ विदवेसु आपसो नपुवाइ ॥ १२ ॥
इतिद्वनाविचारफलं ॥ सत्पत्नी ॥ कुंरा ॥ हाटसारविकीमवेवमूलोवरसरिसारजो ॥ इध्रम
तिमदिनआग्रेमभूखकोकैथवपाइजो ॥ मित्रनीसहरसाद्धेवाटहि मित्रभूपतिकेरसो ॥ थम
मध्यमतासुहारहि पुत्रजपालनिवेरसो ॥ १३ ॥ षर्व ॥ पारसुरातनीइगपेट ॥ मधुनिमानि
ये ॥ पुत्रनारिअतिकेदुषेनहाकहे ॥ कुंभिमानिये ॥ मत्र ४ चौर ५ महीप ६ आगीमे ॥ कं
टले ॥ ७ ॥ कुटमाहिले ॥ आह्यरदोहजोनिजरसोपलताहिमे ॥ १४ ॥ इतिदसमास्थान
फलं ॥ अथएकादसभावविचारफलं ॥ मनहरन ॥ रविकीरसामवपर्मउचरिवापती
कुलधर्मपालहिपुत्रजापसुधोयुती ॥ पितुकोधनाइमहामित्रेंथरोरंध्रपे ॥ लहुजा
तकाभामेनेपहोआहतमेसथो ॥ १५ ॥ सुरसामभवरासिउच्चसमजनाहेमो ॥ जुनेकरहोगि
विवाहियावरमाहिनी ॥ रविकोरसा ७ नि जोपराकरहानियो ॥ करिसंपुक्से लता
धपमानियो ॥ १६ ॥ अधरासिकरविपोरसानरभानवो ॥ मवदोलभेहकुलोइली फलस
नेकी ॥ नी ॥ देवाहना विप्रकहरथेनामिया ॥ इगपोरहस्थघमेनानोरहुजोगिया ॥ १७ ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

दस[illegible]न्रपतेही ॥ आसनदेवकम्[illegible]कैचेंही ॥ ३४ ॥ विद्युसमान्नपदर्विनतोमें मानपसनर
चानुरसोई ॥ तेहिवकांघलेरोफलमूला ॥ पावरसांसोलेरफलमूला ॥ ३५ ॥ चौपडसी [illegible]
सुभकारी ॥ केमनस्तुकोपरोउपकारी ॥ ३६ ॥ आनदवोसदेकारी ॥ चंदद स रस्तु[illegible]चनिका
री ॥ ३६ ॥ नीकेमहाजलकंफमीविषेही ॥ निद्रक आलसन्त्रकालेघेरे ॥ वीरनराने[illegible]
नो ॥ हेसुवली अनुरक्त्रबुधानो ॥ ३७ ॥ आनपातिचमहानरतो ॥ वाहलश्चाकफोप्रने[illegible]
हो ॥ चंददसान्नमेनरकोई ॥ सभुकहेतनएफलहोई ॥ ३८ ॥ हेवकला[illegible]हामघ[illegible] सोई
श्रीरकुटेवविरोधिप्रलोई ॥ कीरतिसो[illegible]रविन्नमतीपै कर्मेन्त्रसाधुवचानिवेतोप ॥ ३९ ॥
हेपयहारजनीपतिमुखे ॥ तासरसान्नमोतिविलेघ ॥ प्रत्रंचिप्रासुघसोगनतेरो ॥ हेपयपु
जोपरदेसरहैही ॥ ४० ॥ तोगोलसोमसनुचातहिजाने ॥ व्याधिसमंतिदक्रूरवुधाने ॥ कुरगने
इहिलेघनलेषी ॥ ४१ ॥ एफल हो ॥ विहोवेविसषी ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ उत्रगतिपतिजोपरे
चंददसवाहोई ॥ निजकुलकेश्रनुसारोस्वतरानकोई ॥ जोघाभूएनसुतसुधा प्रापतिक
यहेती ॥ करैविजेसंग्राममेसासिरसालसंती ॥ ४३ ॥ फलतिका ॥ विधुनानूरजोस्नेनेरो
होयरसाभोजाल ॥ पररेत्सिागेनहो ॥ तिरछी श्रुरुवोपारमप्रापातेलयकेरी ॥ रुघ[illegible]सुजनवि
रोधिपाढ़कुवावरानिचेरो ॥ ४४ ॥ ग्रहकेचपारे[illegible]आगमपापा[illegible]जुतचेरा ॥ मातामपुर[illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गिपैजनमेफहूनेदा ॥ उचपद माया है सो सबही क्रम ग्रहलनैना अनचाना वक्रहोते सिखा मनि सो
ते छिदैना ५४ मुगलराति देत सिपरे भवदसा सजोग उन चार तुरको मूत्रहीसूछ नर
भोग सिपारोछाति नमेसुकजुतविभहा ॥ ९ फलवार पेजा तंक फलसके मू नोइ ५५ द
सासुधावरकोनवेरहन्य पुष्कलीरा ॥ लाभमृभान पद्रुइर्भ लेकिक नीको श्रम पता सहवेकु सुप ॥
नुकलापरवीना गृहिजराग नारीभये चक्रको विलसीना ॥ पलक्षणाश्रय ॥ परेसि रव
चंद्रदसा मिहिजोनेप विकल सरीरसम अ पजति शषानप हेवक्रते तडिमोइकामकोहीनारे
जोजनमेकरमकापुलेरनलीनहे ५७ कंन्याकेसमिहोरदसा तिहूँ शोभायै जातलगारोविहरन
त्रियासोभोगव चषेसे तिहिपोरेबुधिको प्रणो पुत्रासहे सनोवालापवीन चंद्रालहिया
सहे ५८ तुलारासेनेचर दसाखावेचाहियो बोरी चंचल चंद उपीसोनारीके निदाम
रनिडयनीन्हसनप्रीतिहे जैसो चेद्रनितारिक ॥ कबहुतहे ५९ ॥ दोहा ॥ परमनीचके
हेडदसा सेजनमेरसमवाल करे अवर भातिके तिहिकलसोवेतात ॥ ६० ॥ नीच
चलको भोगी चंद्रमा उत्तमका सिधु जैसे मैभचवाल चंद्रको दसा प्रकासियु लेईरवान
काधरमाविधमलहयामानिष सबाकुटमयहपाति पोरमहिरिष्ठ मानिध ६१ चंद्रपरेभन
शामरसाति नसौहोगहे ॥ पापनिरयाजकोर प्रथमसदो धनधोवहि वैरमगाको ६३

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सुषनिनि हिंआनिय्र रैषिग्रंथसोसंनुवरनैपलवच्यानियं ५२ मसराअसिवंचंद मास
दसा चेवतारनेर चौग्रमधनलु दयचउरवेराग्रहार कुलेसर रिनग्राती तातोकरसु चावा
ग्रमनवषानियं यानिविक्षिसउ जोचिन्तहं ग्रपलाधिपैठि त्रयानियं ५३ ... पैरपीर
त्विंताबढ़ततन्तहुरवल निविनास डंरदसा भेतरजनेसासे घरतोसे प्रकास ५४
जनमकालविष्ठकुंभहि केरा वेगोतम्र भ्रस्थानहवेरा दसनपीरगर भोवनलोमा त्रि
मसुतामित्रधनतेवियोगा ५५ अघकेवुरदसानि हिहोई तनजीवो चुनि लुमती भोई
त्रिपसुत्तचुतबुरमापंकासी होरवास ग्ररि रतिपलासी ५६ वरगोतम्रजोवुधापिठल्मा
मीनरासिकेहोरविसेषा महिषीगजहयपस्वनवुद्वारी सन्ननामतनसकोग्रधिकारी ५७
छपापनाथकेरदसाजहोई वारहिंउउपातेपररहीसोई डोरतनकर्मकोरगनिपैतारो वढ़तव
रविमिलेफलसाही ५८ छीनचंद्रमा ...केभावा जो केजनमसमधप्रसनावा तो को स
वलसनपहिताही त्रेपालना ... ५९ छीनचंद्रमाउतपतिमाही ...
रिमध्यपसहि वढ़तभानिके कोरनुरागा दसाग्र्यापनापारमलागा ६० पापग्रहदसतेजो
रपराही जानोनिधनमत्र जनिहिकाही ... नरकोग ... एफलधोरी ...
जे ६१ इतिचंद्रदसाफल ... निहि उजउचपाइजो केन्द्रपनेघरमांहि ...

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

यविरे रसभोमफल आहि ६२ भोमि कांड० भूमिपुत्र कोइ मानेरे वरी नाकिनास सत
तेनहि सही हानि वेल चोपरासे तेपुनी भानितो अनेक उपमा गुनी ६३ पिन सोगार को वि
कों कुपाये नांहि हास भेभूवारये नाग्रह नास्तिक जहां गनो रातिये सत्र आ वहां अ माने
६४ शरण मोहेरे विषेतिरी कों नोतिषी कहे तहां फल भेरो मूलप्रांचि कोनि भोम सो परे
पुत्र नारि सुख कोर सा वेरे ६५ सारसी कहै वाय मेरवा रहे नीक भीम भीसातउदमार है भेपुर
सिकरा जो मरी तने भोदमा विषे बुजे ग्रहाम ने ६६ माहमी वसे वली कहे महा सम सिको वे
धामहा भी तहां भोम नो छठे हि रासि वे परे ता सुवी रमावत्ता रकोधरे ६७ दर्भ न ते है वक्रत
वक्रपा देव हरगृह कोभ कया हपरो पकाय आरी कोरे संग्राम नंदता हि कोक है ६८
कुमलरा मिव भूमि सुत रसात लगभ वकाल वात पित्त कोपति हि आते पर रेमा वास ६९ को
जन विरोध वकप वेम हलु वारे वकूइ वीन कला विधि सो धरे कुनकुल रहि गनो च
व तारे इहि विधान फल अनु सारह ७० वहुत डागा रहि तेसु वेभो मे से रहि हेउ चांचे पालि
हीले इथि तन्मतिमरा वस ही न है वहहि सो नि मिचिं नप्रवीन है ७१ तन हि माल नो च क
श्रेससी नमन ने सुरसा अवतसरी सपल सांपगुना नि छवा न है नपानि चोप मे चलहीन
है ७२ गृहि जसभ वानि सोर पहा जो ति सो सोमपुने सिंह हा सिर ज औ र ना सह सो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नरजन्मधरी ॥७३॥ बहुजननायककनारि ॥ हैविजौहरिसियपुत्रतै ॥ कहेंसंधपुनतारि ॥ सवैया
जाधाकै ॥७४॥ दोहा ॥ कुम्याकैजोभमिसुतजनेंदसासुखकंद ॥ केन्द्रचारिजमपादिवेरमाद
भमसुघवियननैंर ॥७५॥ विकलहरहै निसुतासवीऊजोपततैतोहोइ ॥ तासुजनमकुजलासेवनि
उधजरस्तातिहितोर ॥७७॥ तारकंदोहा ॥ दकेनावकरहै किविहा ॥ केतैयं ॥ उग्रमसंगहमध्य
सोई ॥ जनहैघिलताहिगनोपरनामा ॥ नरजोतिविभाविनिताफलनामा ॥७८॥ धनकोहिति
पुत्रदसातिलवेरी ॥ नरजोजनमौरंनभातिनिचेरा ॥ सूरविप्रनिकेसिसुभक्तिकरैही ॥ नपतिःशुभ
लाभसरासुमिलेही ॥७९॥ उतसाहसुभेटहिलघानिकेके ॥ सबलहनजोतिविभावहिलैके
धृथिवीसुतमन्नाहिरासिविराजे ॥ नरहाइजबेहिदसाधरिवाजे ॥८०॥ दोहा ॥ कुलचातुमा
सुराजकुविजेकुरअस्वार ॥ अवजवाहिरसुघसहितयाविधिफलभरजार ॥८१॥ दोहा ॥
दोहा ॥ पर्मडचक्रेकरथ्रंसत्यागिमोमममकनारि ॥ जोरसातोद्विजनेहिकूजसिद्धितावकामि ना
स महीक्षमेत्रहर्षियारतैनाशगात ॥ चौरेहैसतोछवरस्तुरूपतावेनुचात ॥८२॥ दोहा ॥ स
तकरचितामचवक्रहहिजिदासितअंग ॥ अनाचारखजगासिघटरसाजन्मपरसंग ॥८३॥
मनहरछंद ॥ अष्ठरासिकेकुजजोतिनगाइये सुतचिंतयासिनरोगदइवतारदै शुनिधवेहु
इकौवेदिहसाहितामयो ॥ ॥८४॥ दोहा ॥ होइजुकुजवागो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम०
१९८

तमीजेनेद्रमोकेकाल। नयननरपावहिसमुत्सैवलग्नठतसोवाल॥ ८५॥ नागलखनि
छंद॥ अनुपमनीचचञ्चलसही यहकुजाप्रमससरी॥ इलावेकैनराजने यहेविघारलामुनै॥ ८६॥
विहोनसोवजाइया॥ पनैजनीचगाइया॥ नुमेजपाहुजानिये॥ सकाजहूरिगानिये॥ ८७॥
त्रिकोनिमूलउचेके॥ परेमहोजतचके॥ ततैगोरमगारहे॥ दसोविंदलेहे॥ ८८॥ मिलेत
राजुयागुना॥ मारीनितेचिजगुनी॥ विभूयनासुवाहना॥ कवीनिमोफलानना॥ ८९॥ पद्धति
ओमत्सायपुलोपद्धरा॥ प्रभुताविद्यावंतनरषेती॥ वेनवसे॥ करिहिमवनजोरहीह्रदसाफल
हे॥ ९०॥ मिसावलोकनछंद॥ नोसिलेनपकर्मपूर्वीनम्भोनो॥ अतिमानरहेउतसारहेवीते
तिहैहरिगीतासुवीवुको॥ सहतंसुवलह्नसोपलरे॥ ९१॥ पकहिंहावितभूवनसामतहो॥ गहे
वामनलेनवीनवहा॥ वहजोजनमेकहसोम्मदसा॥ तेहिसंवुपरेहनिचिनरूमसो॥ ९२॥
दरूयाजिनिकेनुरहास्वरो॥ करवेगुरुभमलपचारिधरै॥ धनंपचवस्त्रहियारतहो॥ लकोा
मिनिहुवचुधानिलहा॥ ९३॥ गाहे॥ रायुच्यपाकफ्वाततना॥ तनापितहिकोमजलाहिमना
मनपुनपकौधनहोइनहा॥ नहंजन्मरसाउपकेहिजहा॥ ९४॥ कुंडलिकाछंद॥ अजोसनाक
पुष्यरूवलमनेतकेहीन॥ चिनहमाकुम्भानिमेदसामध्यमनीरीन॥ दसामध्यमनीरीन
वहसुतलेराहिमध॥ दसामध्यज्ञोहोइभूलभ्रोञ्जालेवे॥ महताचुलनरूचोसारपकोरी
तिरगानाहौनहमंद॥ निधनानिरखजाहिइगानो॥ ९५॥ मत्थिकाछंद॥ गुरुजोउदै

श्री०शि०
१९०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पराइ॥ ताइ रसा विधे दसइ॥ ध्रुव नारि के सके हि॥ चित चाहै रस कोरि॥ ९६॥ पंचे रस्य को [illegible]
र॥ रोग चोत के मउआर॥ सम्तु स माता सास॥ एता विरंतो स्वकाल॥ ९७॥ तो म्यतो रस्तु गोलस॥
जो मन में रसा हुलास॥ वा मे दो रुपै जो॥ मान सुमन नाहे जुन॥ ९८॥ गोरि सुरूप पायो तो॥ सुख
हैम्द तो हि यैहि॥ हुगो विरसल हुदास॥ मोषरहि फिर रेपी प्रकाल॥ ९९॥ रोहि नै पुर्व नो रोसि॥ तो सकी
रस्ता पत्सा ते॥ जो जै न मे नि थ्रु सोइ॥ ध्रुव तो वि रोपि रहे॥ १००॥ सो च सो वि रस मा ति॥ मन
घने रंग नो आलि॥ पाय चो वर्षे नी व॥ सो [illegible] ॥ १०१॥ उद्धे मिर को इमात॥ [illegible]
होन ज्ञान तोलि॥ दे लोकी वि मो से ना॥ [illegible] नेत॥ १०२॥ बुद्ध उच्चे के पगार॥ मन
कानले भइ॥ जो रसा हि मे सुराइ॥ हवि सो सम्म समाप॥ १०३॥ दोहा॥ सेवक के ऋतु रति हि
या कविताई सुकराइ॥ तो नवल नवल ज्ञानि थल हु नवरस ते बोइ॥ १०४॥ भुजंगप्रयात छंद॥
दो॥ सुमूलो निरो तो कुपायो इ साहो॥ रुचि तो विहे सा गुने पर साहो॥ निसा पायो बोधे नेहा॥
म्रेतो माहू परा व मे ते इच्छ पावे सुधा रू॥ १०५॥ सुद्ध उच्चे निकानी रसा उद्दे री॥ न मोसा पसु
सुध्यना सहु वेरी॥ तन आव कुल्लो रुजते सन सोई॥ महा कुहोलो वलो रीन हो ई॥ १०६॥ तो
लो रहसा नै रत्ना की जु हाई॥ सुधो पार मे इच्छ जो रहि सोई॥ गन्वो हानि रस्सी कव ना सुधो
॥ महा सिन्यु व सा॥ नि मे गपा न लो पो॥ १०७॥ दोहा॥ च [illegible] के दुद्द नास॥ रसाला सुउन्हे

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

इसितु ॥ अचारीननि पाल ॥ लघु संतो बाधु वर्जत ॥ १०८ ॥ उत्तमावा छंद ॥ धन जेम सिसुतना
कीदसा वहुनाय कमं चीमनिपु ॥ धेती सुकमें जो धक्तु जेरे मिलकि ता वता को गनिय ॥ १०९ ॥ बु
धमगारासहि ताको दसा वडोरिनो भटके उपया ॥ चोनी चरपावा परी मरा सुमे तिहीभ प
लपजुधा ॥ ११० ॥ अनालिका छंद ॥ ममलजकुंभ रासिके करी दसा पुकासिके विहीनते
जानिवेली सुचिंतअवताहे रत्ती ॥ १११ ॥ अपातनेचियासधे हरे विधेतता लषे परा इदस
मेवसे इतो सुचिंन्ततालसे ॥ ११२ ॥ ममजनीचकेपरें तिसीदमा सु औतरे वले विवेकहीनेहो
वेसेसुपारासेथही ॥ ११३ ॥ सुअल्पलाभनतेहे डबनताव हुतेहे सरीरता सइवेला विहीन
तामहानता ॥ ११४ ॥ उतिमुंथ मकरकेचारदसाविचार छंद ॥ जनमतगुरुदसा माहि नृपति
सविवजानतुहि पूजतातिहि भूप भारि इहा मनपावे आगमअतिअधिपदतमनखुसीहै
नेकमटतकमेधमे सुभगरटतमोहुसि रखतावे चादरीवडुजमपकरो सरडुजाजियुभाहि
धरतवहुधनी दिवे सुभरत उच्चनुपितिकेता चेवरमाहिहयमिलाहि वलीकपटदुष्टमसा
हिमंगति सुमसुंदरताहि पूरिमतिमता ॥ ११५ ॥ दोहा ॥ आवोगमनविचार हीदाहु आदि दे
पीर श्रीसमधुमानि लोडप्रनिजोरिउचरगुरुवीर ॥ ११६ ॥ इति श्रीमानसागरजन्मपत्रले ॥ जो
वरसा जोजनमपनावरैसु फलविस्तार मेमहतसिनेदेषिकरिभाषा ग्रंथविचार ॥ ११७ ॥
दोहा छंद ॥ गुरुमेघपालिपताइ तितिजोहसाजनमाइ धनेसुपाउनाहि नीति बहुनाइके श्रो०सिं०
१९१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गतिपैति ११७ पुरमें निजोक्षघरासि जनमेरहतासु प्रकासि धनमाल्ल छिविदरि गत
साहसोलवले सि ११८ गुरुजुग्मकेरप्रताप जनमेरसा तिहिपाय करमा नता नुसु देति कुट
मैं विरोधसु लेति ११९ अतिकर्जा जिलनारि तिहिते विवाहु विचार तिहि तेनेग्रदवा
हु आयेल सनैतिहि सोत १२० गुरुउ चापेऊ अविदेता जनमेरसाजुसमेत उदमीकरानामिल
त घरमेविभो अनगांत १२१ विहिमातिउनमराज प्रनितासडी तमव्राज जमुवित्तरेस
नसार जगजाहिराऊ विचार १२२ [illegible] पामऊ चरीके तजि चसहि जीवकु
लोरहता स्रवतेहि मातपिताइ घरानिधनितय कोवाहू स्रामि [illegible] कुछिचिंतय १२३ केंहरि
रासिघरे गुरहेवहू तासुरमानपमहतहेवहू वधसुज नियमेहपाय दोनि कनी इतित
नमन्हाय १२४ चरितिलुवनपतिके गुरुकंन्यहि वालकाहुरसाउतेपंजाहि जापतिसुध
त्रियसुततैधारिय भूपतिकेपुरमे अधिकारिय १२५ हूदाहू आदिकनाचलपाविप ति
हि विधिक थकर्कता गानिलखिय भीवाथ थवनाइ विम [illegible] एफल जोलके सोचे [illegible]
१२६ जीवलुलासुरसाअवभानहि भोगफल जोविवेकनजानहि तिपलु नमन भरि नीनर
मानहि हीनप्रनेरफलेउनपावहि १२७ [illegible] भालेकसु जवनाडी सवत्यनेर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०मं०
१९२

रमजिज नमरसाही ॥ नियमही नमसासाही ॥ संतोषीकरिनाउनसाही ॥ १२८ ॥ सुमतिरमाहेबो
ई गुरुमूलनिकानी चापराने डेरस्किर तिसचाकिराई ॥ चूवनमेरातिपितोचितवाई ॥ १२९ ॥
चौपाई ॥ वीसच्यौ ममतेसुचापवेरहेव प्रजाहोइ ॥ जोरमावेकेनने अवतिविनिहारसोइ ॥ ज
हा गएकोकरेमें बहूत चापरानिराष ॥ लहमीकांचे नहीं इचिन्ह एतसंजनाथ ॥ १३० ॥ जन्मकाल
ला देवपजहार पर्मीनाचकेर ॥ लालहाई रसासुरुतांचे ॥ रत्तानिवार रोगादेसुह मध्यपोपराक्रमं
लीन इच्यते वियोग आरथमेता ॥ बुद्धिहीन ॥ १३१ ॥ नीचेस्थसकालिछाई मङ्गसालि भेविद
व तासु ॥ रसाविपेत नेमनेकहासुमे ॥ प्रथवेचना ॥ लिवक्रलाभमरूपजानि ॥ शतिते सुई
बहार एताचेरह भानुवानि ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ रसाम्मध्यउतपानेपरउनुभ्रमासिचरमांडि के
लीचनहे वियासुधियु ॥ चेपविलासिनुरतांचि ॥ १३३ ॥ मालिनीछंद ॥ अमरसाचेवहोवे
रासिमो नेरसाही ॥ चियसुतसुपउजानी जोमनस्चीकजाही ॥ धनिसुपातहो केहारतेसं
पदाही ॥ अरसुपसनमोना ताहिकोजो मिलाही ॥ १३४ ॥ इतिगुरुरसाफलं ॥ अथ बुधव न
रमाही जन्मके कालमाही ॥ चमेरनबसनाहूना दिनोको मिलाही ॥ मिलाहिसुपजुहोही
जो नवैरपतेरी ॥ बहुविधि विसनमाना जोतिरोपामनेरी ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ ताहि जवाहे जो
मिलेपाविविलजनपाति ॥ ताही विधिसरबरनमो कठ्छुपलकमाति ॥ १३६ ॥ गी ॥ वृ

जो०सिं०
१९२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्पमहरुषमहाविदासीलसुपंप. करह. कवीरदसतोलिवी. सुकदसाला. पुसंव ॥१२३॥
कीनरानहाविहार. जो हासहिउमें पवा. जो पूरै रसमुसहीपा मकारबोले लोन ॥१२४॥
गुरीअंग ॥ सुतहहनगैपासुर रखिकेपानातेनिस जुमेहमतेहा ॥ पुराहनेसुरमेता
सोधनुपापाकरवेसहीमेकेनाहर ॥ चलपिर अरखानाताहिवपानानोचेसदुकदपानालु
हा ॥ रहेसनतवठोनाहिहोनालीना ॥ मिनेरमुन्या ॥ हाठेवि वोनि ॥१२५॥ ॥कालरा॥ सूरमावि
दपरकासहर ॥ सुरमपरनेवफल ॥ अवेवरमतफ्तराप्त ॥ नरानिरवलगरपापडो ॥१२६॥
वसेतनिलकअंग ॥ जोमेवर ॥ सिस्प्रनापदसाजनहा ॥ गयासुगोधनवंतसुरामूपहा ॥ वि
नाउदास रपलोपिहि विरौ दवंता ॥ संजदुरत्तेननतेहगालन्नननेत ॥१२७॥ जोसु [illegible]
चरा ॥ सेरसालुहरि ॥ पेतीकरैसुधानेसत्यसंजनसोर्ड ॥ ग्रेध्यानिमेमतिपानि [illegible] ना
कंन्याजनैनिजानामसुधिजाप्रमावो ॥१२८॥ जोसु [illegible] रासिमिजपुनेज नपेरसा ॥ कतोस
काव्याविसमेदकथासुहा ॥ विनाविरमसउ [illegible] हास्यवा ॥ [illegible] ॥ लोनर कम
तकुलाधिका ॥१२९॥ सुमाकुलीरा रसाजनमूतकोई ॥ कन्नाउ दिमभ [illegible] परवानको ॥ स
इ जोरसका ज्यानिजकानेनिए रसारो ॥ जोजो [illegible] रसा [illegible] लोकितारी ॥१३०॥
जोसचके [illegible] मदेवानि [illegible] रसाते ॥ हे [illegible] सुव [illegible] नेनिपाते ॥ जोगधन पर स

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
१९२

याचक्सु जाचो संभु लोक कलु जाहि रे सो वश आवै ॥ १४५ ॥ ता कारे समजन तओं न्पाहि
उमा आवा ॥ हुंच कलीव सुखधाम अधिकार गादा ॥ हुवे ब अल्प बुधि को अभिलाप
भंगा ॥ पाई फिरे सिध्वल मोह रज आरम्भ गा ॥ १४६ ॥ छंद ॥ छंदा ॥ तुलसा अस सिगु का
रसा तासु श्रोता र ॥ बनी वाहु ॥ पारी हो ॥ आपार ॥ महा सुख पावे तहु गया ॥ आहि
ये ॥ महा वति नारी इती चिन्ह आरीय ॥ १४७ ॥ भलो रा सिउ सा रसा सा ॥ विसा हो ॥
यो का जमे नि ॥ होरे प्रतापीक ॥ रिनो के लि नारी अनुर कपर हसि ॥ कहे जाति छी
चिन्ह जानो सुनो पासि ॥ १४८ ॥ धने सु जो है रसा ना तासु को आहि ॥ कला चारि रो भू
पतेह प्रति छाहि ॥ भलो सुख दाता तहाँ स्वोराध ॥ सुनी कसंभु सुदेव गण संभ्माव ॥ १४९ ॥
चव ॥ छंद ॥ जौ भगर सहि है अपन मता अमिये ॥ विंत कुट मसरुका रिपुरनिये ॥ बात
कफ सहन्यु दल रहम निये ॥ सत्वा हि कव्य हरक फिं ॥ बीग निये ॥ १५० ॥ दोहा ॥ भया तुल
जाहि के परे जन न मेरसा ज्ञुप में ॥ मिथ्या रोगी हो न ड्रा ॥ ओरे नियस भक्ते ॥ १५१ ॥ चौ
पाई ॥ हुये धक स्त्र ॥ होड दशा ति हि मनि महीप सत्य मा ॥ नेक हार्य ॥ सो गई सुख के
॥ बिहार मता लिय ॥ लछन शति क्रमुनी पाल निये ॥ १५२ ॥ है सगु रूप रमउ चारि केवल ॥

जौ०लिं०
१९२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कमिमवनादिमिलगा हिरेश्वाहि होयुसिदुकादिदसाकुमाप धारि वंसपा॥ आ॥ किमो
जगमोगा॥ १५३॥ दुर्मिलगुरुमाकलौ॥ ओमदवनचसमंदसाम्बर पापतो॥ तेकिहु नर
डरशामहि हेतुघिबाउनेरानसुहेवह॥ चोसाठकलाने वोमनाति हेकर॥ १५४॥ ओग॥ दप
परहेमामिलेश्रम॥ नंग अमरहेजपूमकहेनरु प्रापालसुबनेजमूजतेहेवल॥ निदसाहेत
श्रतिश्रासा॥ उचरे॥ १५५॥ श्रामेउपेनवकफवारघमानिय॥ हरि मिलाहितो॥ चारिलुम
निय॥ दहुपातोहेननघाजवआनिय॥ जनुनातिरिदतिसाउनमानिय॥ १५६॥ दोहा॥ सुकुम
फल वणमाहि केहे श्रववरननतफलगासे॥ वालवलपहलेरलावेतसफल॥ दसाप्रताप
॥ १५७॥ मंदरदसाजोनकजनेराउ॥ नंदनजामेघ॥ धाजरागतनरपोउपसमानहूसेघ॥ १५८॥
कुमारललिताछंद॥ परेतहडुपसन॥ तराति हिरदमाजनं॥ महोपसमताग॥ विजयं एम्सल
मती॥ १५९॥ दसामिघुनमंदरा॥ भयाजनघनादोसुचारपरकासिये॥ मनोहरविलासि
ये॥ १६०॥ मार्गिकाछंद॥ परउक्कोरिरनमे पर फूलताकननये रावसुतककेसुपर
जनमूरमामसुधरा॥ १६१॥ चितसुमघनोसुनमे इगद्य धनपीररमे॥ निरमलसोभातनद
दसानिदसाकेफलपे॥ १६२॥ आलिछंद॥ केहरि॥ परेसनिदसासु॥ नाहिय॥ पीश
कुताहकारहिजेरमननाहिय॥ करेकरहाने पद॥ सोहितरासनानाहि॥ मानसुधर॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar.Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

गोकोलेककरिपत्नाकेहि॥१६३॥ बरवैछंद॥ कम्पारबिसुतहोनजानमतेकाल। हमानाल
भ्रनिसाउजनमेवाल॥ ॐ उठार आहत्र हजनलतं पोर॥ माधनसं मद्गसइनगुनगीर॥१६४॥
मोतिनछूपानेरतासहसाउ॥ गजरहय परबद्धरोमेलनछनोरछ॥ पाइेतकहो। विचारिभ्
परपाल॥ हमामध्यपारिनामरणकरवाल॥१६५॥ सोरिपरेश्रुालेहारि हतसुसामि। सारिसम्
मेद्रथ्य॥ श्रुकालामि॥ नोवपुरषसनेहराप हो॥ हे श्रानाविपावा॥ सामेसुलीना॥१६६॥
श्रासितपौधना॥ सिदसानुराइ॥ धोरजकोश्रोभकारनमेसछ॥ सेनाश्रुानपसंत्रिश्रु॥
श्रानेर॥ वि पसुविसतनिसमेतशमेफलखंद॥१६७॥ मदमूकरकेहोइहमाश्रुतासं॥ वहरन
करहतोइव्यनेरेकाम॥ धावाजतनलमूहेकमिवास॥ विपजनसेवा लोनहथनमा॥
॥१६८॥ हेपसनोचककेमदसाधुनाप॥ वइप्रतिसावतकुलकेरोप॥ बेतोकनसुनेप॥ नेनउ
नश्राफि॥ उपरेहलसुकुनाजानमताहि॥१६९॥ दो॥ जोतिघविधाम्हरिसुकलहुनग
नघवास॥ रोछिजातनाश्रेपातेमावेसभूलास॥१७०॥ उपेंद्रवज्राछंद॥ दसोलनोकीश्रव
श्रापहोई॥ जनेजवाईनरनगसोाइ॥ सुषेसुफावेरग्रामेतहो॥ कहोसुजाय॥ लिहि श्रोर
हे॥ १७१॥ मालिनीछंद॥ हकरानेकेनरीइ॥ कानसउनमह१ मध्यमा२ निकह१
गानईसकोपधसलोछिये॥ पन्नरासनापपरनेपासके॥१७२॥ नोहरा॥ सेकापा॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कुजो वहो तीसरो ठि[illegible] नाताहि होवहो मेव [illegible]रिदै स्वल्ल भैरवरा उभ[illegible]सव्यन[illegible]
फल॥ १७३॥ दोहा॥ स्वनविचार। येसल गनको अशुभ भवमसम [illegible] दुतीयभा[illegible] फल
शुभथनमतु भालिन्र॥ १७४॥ चौपई॥ द्वितीय [illegible] जाघटाहू केरा जनमभन [illegible] सरनाहि [illegible]
मनमहिं जोररसा तेहिया ही सोनरमो [illegible] हि सुभगफलाही॥ [illegible] सुभमवपम [illegible] रते [illegible]
जैसो होइ द्वितानक[illegible] स्थानन[illegible] तैसो शुभफल हो। हूपति नामरसा विवह॥ १७६॥ लग
नईस पुली मध्य दलोरे [illegible] वाने वेल जानो साई। इसा विवाह फल तत सऊ। नोपाहि जोन[illegible]
साधा[illegible]॥ १७७॥ तेज सांह तादृश[illegible] जो होइ [illegible] फल याविपसाई [illegible] कोना
दिसाई [illegible] शुभा [illegible]॥ १७८॥ चुनि[illegible]॥ जो जनमेत [illegible] कीन [illegible]
सब[illegible] धनआगम[illegible] कोयरक [illegible] तार॥ १७९॥ होइ[illegible]
[illegible] होइ [illegible] प्रमानो [illegible] हिकारपर[illegible] बखानो॥ १८०॥ दोहा॥
सदा[illegible] नाल[illegible] मिलिन[illegible] फल[illegible] जसम्भूत॥ १८१॥ सोर
ठा॥ [illegible] मध्य पो [illegible] मारग॥ तिह [illegible] सवं [illegible]
[illegible] प्रमान [illegible] जनम [illegible]
[illegible] जो [illegible] १८२॥ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भानिये॥ जु दसा दुपाइ ग्रहमानि॥ १९४॥ जु कहे रितातो कुर दवो॥ दुह मे सवासि चिंदे सद्यौ॥ पल
रतवा नयुभ सवै॥ ग्रहसंयुभा ते जिवर्ने वे॥ १९५॥ [illegible]॥ राऊ तन्वे ओर धेर घुपे रसालि
न जानिये॥ ओर हेद्र रसा युग्रमु तो छरि रेपुमानिये॥ उप्प दाइ काला ने दो छ रुता॥ देसे पसान
है॥ पाइ केनरसा जो दसा फल सर्व नाहि पवानने है॥ १९६॥ लपर्न स्वदसा॥ सिको पति ताह सो रिपुस
इजो॥ जन्म सो सरमे दसा तिन भाक्ष जो ति चिलोइ जो॥ बुद्धि विभ्रताहि को श्रम लज्जु॥ स्वकुल प वली
सो नहे बलवो महा कल ही धनाजन गावही॥ १९७॥ [illegible]॥ जनमे दसा लुता स॥ ओउ पा लुल ता
न पति॥ पीडा सरी कास॥ आयु प्रसव को श्रल्प फुनि॥ १९८॥ चेरक कुरे दसाइ॥ ओरदसो जेनु
र की॥ रिपु तै धन सुष॥ धार॥ जीवन ता सुषी भूरि बल॥ १९९॥ दोहा॥ येन जो लगन हि वैरे जे न र
सा तिनपे पि॥ तोत द्वाद जो ति रिग भो फरि कवि गानि काविसे षि॥ २००॥ [illegible]॥ मोर्द
दसा पते॥ उ लय त्वल यते॥ तो न पर दसा के॥ ज्यारे है न भे त कै॥ २०१॥ को दिव रवि सी उ॥ हो राति
को न उ॥ रमु को रसा नि ये॥ सो दसा जानि ये॥ २०२॥ [illegible]॥ इष्ट फल दाई सुभ मार सार
अ सुभ प्रले जो अ सुभ प्रदे॥ सम पा पी नाहि होस॥ जु पाइ तो फल मिश्र दसा॥ म धिक्को॥ भनु दसानि
री॥ जिहि गृह को मूल त्रि कोन उच्च कहे॥ स्वभ मित्र गृह माही और पा ति॥ के सुभा मित्री वा मदे॥ २०३॥
 दोहा॥ के सुभ ग्रह लय ताम॥ तो रक्ष्य आदि दसा न ते सुभ पल लें कात॥ सो फल दसा न दे पपह॥ २०४॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मनिप्रागेश्वरप्रहतेम दसाकाङ्गुपरदेसपी ॥ अंतरदसा प्रवेस लि[illegible]॥ २०४
तामेतुलक्षकढंढ ॥ सकप्रमानसोभागनकरौ ॥ मध्यमुलफेनचवधापि एतदसा बाधिरघा
ई मध्यमकेमाहेसुधीर ॥ २०५ ॥ अंतरदसा प्रवेसवखाने ॥ ग्रंथानिलखिजोतिषप्रमाने ॥ चे
रदसा औरकोजोई ॥ लहन याकोविधिविचारहोई ॥ २०६ ॥ तासे आदिके जे हुजानी ॥ प्रथमपुर्वला
कौतेजानू ॥ कौरकुरीसोजागारी ॥ आठनसपुमसाहेसोई ॥ २०७ ॥ कि हितेरहदे चंद्राहिसा
ही ॥ गतिजैसराप्रमानतहाही ॥ आठसहिन दवाताहिके भाग ॥ होगानिकेवरहिजुत ग्रहराम ॥ २०८
मारता ॥ भोगेव चेद्दुसेष दसाचे दिनजोगगानि ॥ भाग भागविसेष योवलदसा पयोगहै
२०९ ॥ ठेतग ॥ सहुजमजेनाडिकावरषविधेसुकहाहि ॥ तराग योसमजानिपु दिउसवि
चारिजुताहि ॥ २१० ॥ घनानंदछंद ॥ होरये भागहि देपितीसाहिकरसे घव चओ यमोनि
गासीतिथवधानियाहिदमा निलवधमा समयुजानिघनि ॥ २११ ॥ शकलिछंद ॥ दिन
गनिभोगसञ्चसहे सेष चचेतिहिचारवौ ॥ बावर समकौ आदिकेहु ॥ वासरसारसमधोकर
तेरे ॥ २१२ ॥ नाकरसाकहिजोगमही ॥ ताहीकपुनिमासमहो ॥ तिथि अमावासरतहाल
सा ॥ मासेनिगतपुप्रवेसदसा ॥ २१४ ॥ भाउदोहदसाजुपरे ॥ सारकराहिकलाविवरे ॥ सा
हिसहोपुनमध्यगती ॥ भाइदसातुअमाहुजती ॥ २१५ ॥ इति श्रीमत्पादतबिहारी

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

राम
१८६

जन्मोर्लग्न विरचित पौंजो निषसिंधर्हि ति ग चदाव महतवलदशा फलवरनें
नाम ब्रव ने छन्दनिं सतिलं गमा २६ ॥ अंतरदशा वर्नेनं ॥ सोरठा ॥ अंतरदसा सुमेद
सर्वेषेरकौ कहतसुव ॥ विरचत सेवस बुमेद जो र फलनि तेतु सुफल १ ॥ दोहा ॥
कहे फूलाफल सकल सुभ अप्रथम हिकोविद ॥ निसेषि ॥ सुभ दसनेहोस मनमा आमच
सिपयाधि २ ॥ अंधाना छंद ॥ पारषेट अंतरदसा मफकरि हुयरहै ॥ तौसर्वे सुभेफल
फलें भनाकोकादेरहै ॥ नरहचिवसु सुखहद नेन ॥ अंतरम्य पते जासा ॥ पापग्रेहलं हनरम्य
कष्टनि देधनननासा ३ ॥ जो ग्रह करिवे नहीं इसाहो र सम ग्रह मा ताहि ॥ जकौ नरसुपति मेली
करहि कविवेकानहि ॥ चैमुभम्रपाचर हरोगियाउ कलहाने भंगा ॥ संगातिनी चाहिकौर
ही धनुहारेइहिरंगा ४ ॥ होइजासु अंतरदसा ॥ ग्रहको ग्रहसोर ॥ तौ सुरि स्वजु भातिके सुन
मसम्म पेहोइ ॥ सदाइवसाहितनरारहेधननाम्रवचानो ॥ जौ ताइ स्वग्रह होइजु निरंतर ॥ रिपु करि
जौनी ५ ॥ अरिल छंद ॥ जिहिछरहिकी जान ॥ अंतरदसा जमोन ॥ सो ग्रहदसपत्रिकौन ॥
शहा वि विफलनि हितेन ॥ ६ ॥ दसहसा जनमारि ॥ भानउ अंतरदसाहि ॥ गहन हेमप रपार ॥
सुरूपागपाधिकाइ ७ ॥ करहि बुद्धमवीरमनु ॥ सपुताको सरसनु ॥ सुधो वदेस नमान
पा विधि सुवमान ८ ॥ दोहा ॥ भानुर साजनभेसस्मय अंतरदसा सुसार ॥ बड़ो लाभ तारन

ज्यो॰सिं
१८६

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ध्यै॥ त्रियप्रभा इकीपीर॥ ९॥ रवि में कुज अंतरदसा आपति स्वान प्रचाल॥ मनी वसन न नंद म
यला भूनपति तेपास॥ १०॥ चुनि बनालाछंद॥ उडदसा जो आन मे राउ पा जका रिसोइ जु संति॥
पाप हसेत व्यथाकरे जुनसकहे नति ओहर रेहो॥ ११॥ गेनाछंद॥ रसा आन भए कालानीव साति
हि मे श्री नो॥ दारा मनोहर वसन संग रनेश चो श्रानो॥ गड वियु श्रुते वपसइ नखु हवरी॥
नृपते कुसन मान लाभ प्रनेइ च्याहि वरी॥ १२॥ जोर दिवापति माहिरसा चंत्र अरु होइ॥ अम
हि मा विरसजो जन मे नालोई॥ पीडा फु कलनि होइ दुध से रसूलनदेइ॥ संका रोग जन नि तमा
हि फल पावहि देई॥ १३॥ मरजदसा विषे हि अंतरदसा सनि केही॥ उच्चातभय गन ता सव
रिन्रपनी चाहितेही॥ होइ सत्र समभित्र होइ पाज तनरोगा॥ कहे संभु प्रचिन्द जो राज नम दोन
गा॥ १४॥ इति रविदसा मध्ये अंतरदसा फलं॥ दूरपहूछंद॥ पहिलहि मध्य अंतरदसा निसिपति
मेले षी॥ नौवेदा सनृपते मिलै लाभ अरुपथ पेधी॥ श्रोतविकार छरोगा ते परिमान प्रमानो॥ चोर
उतासन भय तिही फल रपहि चानो॥ १५॥ जो विधु अंतरदसा नरको कुज करी॥ रक्तपित्त निय पर
घरेउ धि रोगा निवरी॥ धान्य भूनर भूरु व पापितुमा नाहि देई॥ देषि पुत्त दानि मे फल सकु अति
नालेई॥ १६॥ चरविधु अंतरदसा भासि सुतकी होई॥ लाभगाको होइ गो अरु गुज नह य साई सुभ
कितावन पदेइ जो धन प्रापति लेई॥ रानासाह सुजा नियो विद्या हि पदेई॥ १७॥ चनदसा जु जब
की सति दसा मध्यगी॥ सुतसु सवगज अवे को सपति अधिकारी॥ राज अदि धन धान्य की भांति

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कविलोई सुदृढ धर्म विस्तार जो लहत नर तिसोई ॥ १८ ॥ अथो धाम धन नीर नीति हिंको सुविकाम ॥ जो तिनि के भूषन रचै ईश हि मानि विचार ॥ नाना विधि पुनि विलास को सोए फल होई ॥ जो सप्तिके रिह सा विषै भए दुको गानि सोई ॥ १९ ॥ अथ उत्पति न पंचो रवि सु शुभ आगि हि ते सो सुख हि नो तिय पुत्रै तें तन रोग रुदे देही ॥ दुषित होइ बहु भाति के रागा बिन्ह पुरमाने ॥ जो ससि में अंतर दसा सनि के रिपुमाने ॥ २० ॥ इति श्रीमानसागरे मासप्रमुखे अंतरदसा फलं ॥ दो हा ॥ बहु भाग अब बहु भाति के नृपसन्मानि कंजा न ॥ कुज में कुज अंतर दसा विजई चे हृवपा ॥ २१ ॥ अरिल छंद ॥ गद सेल बहु भाग को निसा दिन रहे चित आनंद मावै धसो विधि विमन ॥ जो कुजफो पल दसा तिहि मे रविके रिहि ॥ दाहि विषै जानि षि नृपलि वहानि दोरीहि ॥ २२ ॥ सुत काफल भूषन जुत हर्ष बहुत उत्तम मति ॥ धी पाने सुख जुत चो ति षिकावे ॥ प्रीति उरो समसुमित्र तेगज च सो घ प्र मंगलदसा में अंतरदसा बुध श्री ॥ २३ ॥ दोरे भूपत सत्रु पुनिकर भपरो गाहि ॥ नोरु भूमि चलै सनि परसादि रोगाहि ॥ बुधकी अंतरदसा ओ दसा मा हि था ताके तो तिहुं सचकहि चि यदगा ॥ २४ ॥ अन्य देस छंद ॥ सुनारिया हसो धा सजुत गारवे ॥ २५ ॥ हरव धन धान्य को कुलराय ॥ २६ ॥ सम कार मि अंतरदसा ॥ गुरु को रेव ॥ मा ॥ गुरु अंतर दसा विषै फल सोच ॥ २७ ॥ कामध्य चौरस्याद साम गुरु आनैत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

निजयंसवध्यावैअनुपमध्यानिधै ॥ दरसीय याना विरैसकोंदृविलिनि या ॥ धनचेयबकूणनो
गराइहिजोगिया ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नोरगुनानिजवेसंकोगढवाधाारिनरेनि ॥ ऐघर लागेमं लीधा
नयघानकहैने ॥ २७ ॥ इतिश्रीआनंदमानग्रंथेश्रीनरदमापदन्ना ॥ हेमदूकलप्रवालजानिघ ॥ पानिगये
इहेर ॥ हारोनिभाचूलभा ॥ वैदूधनिनइसाप्रसंगा ॥ २९ ॥ अथ मगुणवर्णन ॥ तजेपी ॥ चलैभ
ाकेइसउनानिधि ॥ लनंध्याइकलोगकरावानूरनिधे ॥ अरुकतसुपनाहिंकवरूकनानिधे ॥ दे
धवरि ॥ इसालविभावदसानिधे ॥ २८ ॥ वकूमातिनेकस्नुनामप्रहवहूपे ॥ उपजेवकूहचेत
जीवनचेनहिपे ॥ पिनकोपहिवारनपाइहेजोकाहपे ॥ वुधदरिरसाभावंदसालहि ॥ २९ ॥
दोहा ॥ गुरुणोमतिहियचैदसुनेप्रसुनगीतिविधु ॥ लखपतधर्मवुधंनगनोरमकुसुनकविष
ाव ॥ ३० ॥ श्रीमरउवृ ॥ नाहिपजहूवैनकैसवकेरहेतपो ॥ नीकवानिद्रदिनंप्रकोभूपलागनोतप
भूपमंनिरोरलासुतनमानतोनपे ॥ दइमध्यजीवकूअतरोरसाजुसीनपो ॥ ३१ ॥ लोभमगतीवहै
सोकेचादकमेपु ॥ भोगवेअभनैवरखलावउरस्यधमये ॥ शहनेसुपनबनतोरगपमानिधे ॥ सो
रनो इलोजनेहिरपा ॥ घुनजानेघ ॥ ३२ ॥ सीलतोगपोनिरावरध्रकोपवासपे ॥ उदयमघमनजो
इसाहगितानसे ॥ चोतोइसापलपुनकहेरकोरपो ॥ ३३ ॥ सालजोइतीदभाविदेवकेलिघा ॥ ३४ ॥
रमदुकाविसुधमा ॥ नकामहानये ॥ वा ॥ यानासरीरमचवासलीनपे ॥ सोविधदसनोरनाकेको
सलीप्रकानिधे ॥ संपुरफल्नेकरेरेचिरंपघानिपे ॥ ३५ ॥ इतिश्रीआनंदमानग्रंथेश्रीनरदमापदन्ना ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ग्र॰म॰
१९८

उनई च्यता हि केमहा विधी मिलाप ताहि ये॥ भूपमान तो वदेस्व मानजुन माहि ये॥ लोजो इसार
नी ग्रजन्मकुलजा निये॥ ताहि मध्य इस अंतरदसा वषानिये॥ ३५॥ सोरठा॥ चितवजनारि वि
लास॥ राजा तेरीसुखि जहो॥ धन विद्या सुत तास॥ गुरुसासे दस समेति मानि॥ ३६॥ दोहा॥ पाप
तिजसर नभगेमधनीआगसुभहोरे॥ वादे अनापञ्जतभत्तो जोवदसासुभजको॥ ३७॥ गुं
डिलाछंद॥ पोराग दे केवि ष्कुसोसवोतसत्र ते सुत्रासवान॥ होइ हीन पावले मतीमजो
धमेड पाम पाराजान॥ होइ भोम अंतर दसा सुजीव केरि जो दसा मध्ये॥ ए पले धरेयो रि
वानि केसु गंध राष जानि लेउ॥ ३८॥ देवनासु फलकी सुबुद्धि होलत्तमीका स्यामानु को
इनानि पनपोकाल त्रस्य संतति ही वषान॥ देवनाध को गोधकी दसा विषे मनो हि
हिसाम॥ अंतर दसाइ सोम्य की जो इती फलानि ये भये॥ ३९॥ जो भमान करे हि साधि
देस चित्र पोभ्रमे हितास॥ यंव ते हि त्रास पाव रुतउ पंजेख पासिरे निवास॥ श्री गस्या
मावदंग्र इदसा विधे जुकुद को रि॥ भावही केहु नी सपाहि भाति लरने निवारि॥ ४०॥ सोरठा॥
कफ वाइवरोग॥ जनावि पेमाव नहीं नेहे॥ अहे वैस संजोग॥ गुरु मे जो भगु की दसा॥ ४१॥
दोहा॥ सत्रु हवि ग्रावसन को धर्म राज अधिकार॥ उना सबरे जगमहे साधु विप्रसंग चाइ॥
४२॥ जीव दसा महि सुत्र को जो अन ग्रहि काल॥ पेद कहको उक्कोविपाडकाफलहाल॥ ४३॥
मुडिला छंद॥ केरो घिज रंग्या भाति कोरे मेही॥ आप धन बाज नत्त उच्चेद देतो

जो॰सिं॰
१९८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

लपूगर्धवाउरदकेरी गुरुमखिसनिकेरीजोइसाहोइफेरी ५४ [illegible]
महाननृपतितेहभीतिनासेकराई चउदकुलमननैहोविननासेतसलाई अथ [illegible]
पेखेनाधिकाई भृगुसुतनरसानेभानकेरीइसाई ५५ इसनउनकमसपीरनाकोभूमानी
३६ चाधिकमदगयोमित्रकोसेवकभो चउचाभिमंतासीवाधनेतेहसार चउथासुवेनना
हीरहपालोकजोई ५६ माहुतरचउचमापिदेवसोपूजिवेरी [illegible] सुभदितिओप
रतेही भृगुसुतनरसामेचतुर्थनरेताहू पल्लराविधिभावेसुपावेनेताहू ५७
[illegible] मित्रराकोनाहिविकार विकलमात [illegible] रावनपूजेदसोदमो
कुजकोचतरसमावचारी ५८ भृगुकोलानभूपतितेजान सनमानकेचारसुधनना
चंतरदसामलैसुतदेरी केचितएफलभाइनिवेरी ५९ चोपाइफलनमहेतैसो प्राप
तिइच्छसुहोइहिवेरी कोकेवानवेरकोसुवीता भृगुमंडहरसानदमीता ६० गौपचा
२ दिसुमकमेसाही अरेसोधवनासनचारी भूपनानेपसुतसोइसमेता नमनदेजा
मेफलधेना ६१ चंतरदसाओखकोहोई भृगुवनदसामधेरसोई इफलभाषागेपदना
इ संभूसंतहतहितल्याई ६२ [illegible] भूदेनारिपतिमेकजतहोनायचउरगाय रिपुन
सेजोभृगुविधेचतिनरसापरिनाम ६३ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०न०
१२२

इमिपीरतनेधनवंधमनो। ग्रहकामिनिकोउनिहारगनो। वडियामिसुआपुसरीरमहा
आतिभजताहियमानिकहा ५४ रविनंदनवेरिसुविपरी। दिनमाहसुपुनिनोलिष
हीउतोलदनभावतमुकुकी। इतिजातकभूषनउक्तिमवी ५५ तिसवंसावेषकलाग
निये। तरुनोकरिमनुकोमनिये। उतसाहकहोनकसाधधरे। ग्रहजोरसुदेहवियोगपरे ५६
सनिकोदिसमधितापुकहा। समेकोदिसपुनिसोतहा। इतिलक्ष्मसुतरोनाकीरे
सउकेरशमिचिन्हपरा ५७ विपसनतजेभवधानविना। धनहीनमसाविकलोमना। तिन
मानततवाहियेनलहा। सनिमेदुजवेरिसाफलहा ५८ धननारिसपीहततेसुसदी। फल
तीकथपंडितमिवरही। अथिसंपतिसंचातिमेरविके। नपञ्चारगवदंदमानुलिके ५९
दोहा भवेलभ्यनपूतगनेचाधसकलाप्रवीन सनिमेगुरुचतरदसाभाषाभाषाफलमन
६० दोहा त्रिपाभग्रपुत्रसोग्रनुतनयदोराधूते गनोजसउरेहुजानमुषिक
रिदसारहे मनीचरावेषसुचनतरदसाभ्रमोगातहै जनेमनुजसहिजोगकहियसुषीवतर
हे मेररसभवकाल चोतरसानुनालुकी काहिपीनिधनसबाल जोरग्राप्
६१ वरुवरषतिहिं भोगनमायकोमन सोधनेजनमेलगनमे तोदुरसावलमत्र न्यवहम
नातकेसगुमानी ६२ इतिमदरसुनमध्येमहपचतदसाफलं। इतिश्रीमयंदिनचिरानामे
श्रीसंतविरचितापांभोगमत्रियद्धतियचवनवरआरपदलमनेषोप्रगेतदसा जोधसिं०
१११

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

फलवार न नंमा मप्रकर्नमप्रवेन निमरंगा ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ हंसप्रगटे है मोग्रल कोई पल
तिन कोरान संसकृत्या सो संकुकवि भाषा गान रमववान ॥ १ ॥ निषिध्यानिकालेउदा ॥ चानूके
हि गोगुरू हंस नवल कुमार है । बरक्षु समीप निकल नयन कुमन नहे है । जैरन चार कलम कबलोनतो
कहा है । गाहि निपीरकादन सुरहवाई है ॥ २ ॥ इति नियुतिपीडादान ॥ बाइकार पान भामडल
जता है । गाहस्नतनक्रकपरस्त्रुवाई है । बरछलुभभोति शत्रुलुंभ प्रतलीनो है होइ माल
पीरति हि दान इन रसजि है ॥ ३ ॥ इति वैरपीडादान ॥ गो इस पद भूपफूल भारि चवलनामुहे रजा
पद राल ग्रंथ के वन भ्रनामंहे । फूलजुको गि चारदान इन रेर है ॥ जोषितु मकोहरतिसंजुर
हि भेर है ॥ ४ ॥ इति भृगुनपीडादान ॥ लै घृत कमर उनि पत्र तेल पनी पहे । हंस गज नील पट
मू मग्र निलीप है । फूल का वै सा हू को सदुपवीपूहे । मेघाहे धूपा सहुपदान रजनी पहे
॥ ५ ॥ इति बुधपीडादान ॥ दोहा ॥ हिउस हार रत्न निसर्करा वाजि नो नवल धोत । कुष्णा
जो विप्रो वसन दान संग्रह होत ॥ ६ ॥ इति गुरुपीडादान ॥ तंदुल धी उदमान उजीनिशानार
को है म । चंदन लुभ सह पपचरंगो वसन दान भनुनेम ॥ ७ ॥ इति शुक्रपीडादान ॥ दोहा ॥ तेल
तिल लील कुर्थी पर्लेशि । आरु उईली हरभोगी । दिपत नवीनो सनि इन्द्र । इनदान नेम भवि
हवे ॥ ८ ॥ इति शनिपीडादान ॥ परलोक नाक्षाज । सूचांगा उरपशु ज । तिल तेलमची

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रवयान स्नान लोहपीतसमदान ९ ॥ इति राहुपीडादान ॥ कलत्र रिकैवार चार लहमेष
योहाथ ल्यार अस्नान तेल विसेक हस्त्याधिकेत अनेक १० ॥ इति केतुपीडादान ॥ इति
नवग्रहपीडादानविधानाध्याय ॥ अथ नष्टजन्म ॥ दोहा ॥ जानेषमेनगर्भको
जन्मकालनहिभाव जो तकलष्ट विधानतें जनमचिन्ह अनुराध ११ फलसबु भाषु
अजातके कालगानीतवृछ विनाटीप नापाव फल भाषे नासीनष्ट १२ ॥
॥ मेषादि सारिक वारह रासे प्रम कलग्रहहोइ प्रकासे ॥ ताकरि सोधि कलासु करे
रो भाषत जो तिथि जो विधि फेरो १३ सातहि साहि कलागुन वारे एससुलग्न कमेष
ताताई लग्नमहाग्रहपरमाहि केरो कर्तेर सोगुन मेषनिवेरो १४ एलक्षसु इहिभांति
सुनीहे जन्मसुलग्नरासि फुनीहे तेऊ मसोइन अंकगनाई आठहु चारि हसो
घगाई १५ ... सुकामिनितो सिनलीयाहे अयवा पुनि जो रदक्षिणा पाचहु सात
... आठ विसेषे भाषत जो कलसो गातीरे ये १६ चापहुम अरु कुंभ मीना प्रथम
मेकविभागबखाना जानहुनो ... ग्यारह सोई औजुबारह मानहु सोई १७
एसलमेकरिलग्न केरे सुक्रमहीना जीवनिवेरे सातह आठ दसो तरहसोई
जोरकलाकमसोगानेसोई १८ ... अरुनि चौराहोई एसलमेलगन्नेगानेसोई

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पाच ४ केलखानेमोगुनितो जो संभु कहे यहि बानि तुलीजे १९ [illegible] दोपुरुष
षवा चरू लेके प्रनकलगानहितो तो सरहिबारेन नेगनो प्र [illegible] जो २० [illegible]
हरिहिभानितेसो करि के जो बिधि [illegible] पद्मनालेसो [illegible] जो [illegible] २१
[illegible] प्रमेसुवासिगुने गुनिसाहि जो दुष कानतु [illegible] ताहि विधि गुनि
गनि जो रै [illegible] सोमाति धारै २२ जोइ प्रकानसुरसमानो प्रमु [illegible]
नपमानो तो [illegible] जोरै गुनि [illegible] २३ जोइ [illegible]
[illegible] तिहि [illegible] तोनव [illegible] जोरै साधक जो [illegible]
२४ विसोरै भाग सतारस [illegible] बोचहि [illegible]
[illegible] तिहि तचा २५ जो पति नीसुत [illegible] सचा [illegible]
[illegible] औरहु पाचो [illegible] २६
[illegible] जाहि [illegible]
हि २७ [illegible]
तिहि जाति २८ [illegible]
[illegible] २९ [illegible]

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा०म०
२०१

जातकर्मविधान पुनि करिकै सुकुलाचार मानु ॥ तहाँ नव ९ अंक घरी खवार उदुरवर्ति
दोउ रूप ॥ २० ॥ तिहीसम दिसति ॥ भागहरेहि जोवै पुनि चउ रासे धव देहि तिमे धरवे
गनजानि पुसोइ ॥ वेदे लावे प्रजवा ॥ २१ ॥ २२ ॥ धराजन्मरासिपद पुनिन्यारि छाइहे ॥ स
मभागहि ताहि विचारि ॥ वचेवकु सपत ॥ २३ ॥ तेहु जान जरासे सेरा रितु सादिवदान
॥ २४ ॥ दोहा ॥ भागे कर्मविधान सो दोस विचरिनि ॥ लीजे सप विचारिकै ॥ २५ ॥ दो ॥ व
तेस्व चेक ॥ २६ ॥ तिहि क्रम प्रथम दस सू मो विचारि हितु मास ॥ २७ ॥ वर्न सोअट्ठ लेप
विधान प्रकास ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ पुनि नव ९ घटि वटी सुकरू ॥ समकरि पारु ॥ से
प्रवस मुगमत ॥ भागहि जो रवचे इहि गननाप धवार रचे ॥ ३० ॥ इहि विधि भागहि
इसेहा वरनव चेजसे पकुहा ॥ ति थिस मेले कि मेजन्म हि कौ सो चेसुव हेग तिमसहि
को ॥ ३१ ॥ नषत्र सुवासरा ते थल चे ॥ चहरगन्या रिवनाड ॥ ३२ ॥ तिनसह सो ग्रसमो मिले
सो करहु तन्जु जोति विलोइ सही ॥ ३३ ॥ का मविधा नसरी लियवे गुनि सहि सासमान पधो
घटि चढि कि तसुप वेद्रम सुहरि पमानक ॥ अंक नये ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ सब भागहि जोरव
वे इक जुग ॥ सोउ नेज्ञानत चो जन्म नक्षत्र कौ जानि सही ॥ रवि सान सासु वि सावे
कही ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ गुरोवाच ॥ सोराशि कर्मविधान वखानिये ॥ क्रम सो पहिले पका

श्री०सिं०
२०१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

से घरावटी तिहि के विषे ४० आगहरहि दिनमान कै रातिके मान सो [illegible]
पै वैसे असोना [illegible] का ४१ [illegible] आगाकी [illegible] कावेइहिविधि मानपत्र २ ताहि [illegible]
रनकर श्रापरी पकरपुर ४२ [illegible] श्री [illegible] नपातेको चाहिदै पराहेनु
श्रह्मधेर सो जानइहि विधि [illegible] सम्मेर ४३ [illegible] जो परा [illegible]
न सोभैरजरी [illegible] श्राउधमच रजाहि नीरने सुमीचताहि ४४ सोम [illegible] सुमारनोव [illegible]
द्वैले चेरसुमीच नीरसुत [illegible] सो चरा [illegible] ४५ [illegible] चरदारत्वमार [illegible]
नेतरा [illegible] श्राठ देसा [illegible] सोमर नसुठार ४६ [illegible] जो [illegible]
[illegible] धरवलो सुधरै तेसकूा [illegible] जातवन श्रानै ४७ घरदलीव [illegible]
और रिधे तो [illegible] नासालिवे पितम [illegible] आरा [illegible] ४८
मीचूरः [illegible] फोर [illegible] जोतद कोपति [illegible] जोतक [illegible]
मुलहै ४९ [illegible] कारन्म [illegible] विचारिमहु जोति [illegible]
नरानिविचारिसहौ ५० [illegible] गहु वेडनहौ [illegible] तो [illegible]
तथो जोइ [illegible] सुवारसपी ५१ तावरस्वा [illegible] जोनग्रहा [illegible] नासकेरमुनहो [illegible]
रवे केसुजपा [illegible] ५२ [illegible] पानेकजलौ [illegible] कान

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

पतिजोइ अवविस्तारिकहेत फलइ घकानसमेत ५३ मषरासिभउमाहि आदिइघ
कानआहि देपनसुभग्रहतीहि पापीजोनजराहि ५४ तेनपलीहविष पिन तीहकेरना
सकाहेन भाविनिसंगराम रतुकाचेनहप्रकास ५५ इजमघइघकानतेजलके
वनचारा निलवतीजपे मनुप्रानेतीनकूपनेमत ५६ उषरासीआहिइघ
विषेगधाऊरतैमाचाजे चौरहूलासनापेन हितेअहूजानेवलानेहेचीचाज कुन्धेजाउ
गहकेहपतेउनिजानहमतुविसधोज त्रिलवतीतरोजननभावे घतलअघकोरी तिलुवेडा
जे ५७ इघकानजोपहिलोमेउनहू पउनसीकोतेनामाहे इसगाइनेइरातेनानहूजो
रसुवेलप्रकासाहे इघकानजोतीसरभाविउजगलतासिविधिमानाहे हारोहितेइ्यारहे रि
परजानातइागअस्थानाहे ५८ इघकानकानजोअथमकरककोहोइहितिसुचवताराज
कंटकचरनप्रभेयहितेह्लाभरेसुधोहे प्रकाराज अजीसराविषरोषमेरेहोइसराजेल
धकसीराज संभुसुतिहिविधि आसकोरभाषत मत्यकहहिकविवीराज ५९ इ
घकानजोतीसोरहरकबकीरासि गुलमसलपलोहभयताकोमत्युप्रकासि ६०
सिहर प्रथमारो त्रिलवजुआरो विघजलहजसोमोष जगाचिलवराजो
गाजासकोतापोअमोरोच इषकानसुताजजनमभानिजहोइकू हीनय विषसवु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

स

वजाँ नै पावि धिना नै हो रम जमो अम ६१ प्रथम हे र पकाना कौ पी रि ओ जा आर न विनि म
होय सोढ़ा गोरे हभूप ह रे हो इसा नि लबे लाग हा पेडार चनि जान्वरि रान मैना छोर पर म
छोर ऊद कलो जो ता रि ल्व तीजे कन्या को जो जाति ६२ ड्यकान न त प्रथम फल न र तून
नकुर ला वे पशु पाता नि व सो नो दामा मि जा नाइ नि तेहूं मनु रोव तिरि पट भा इ स र जो गा तो
ज च उन कलाप गुंह विधि न जि देशान हि सं र हा पं डि न कर तत था पु ६३
जा नो शु धम वसा न फाइ ड्यकान जो रो र ता तुला संचि व चुं न ते जु हा धिपा रोआ ३ चुगुहा
धारजो र मन भा रसु फा रो गा दूजो विलवा मैं नाहो र त्रि लो हूं जाग ओल वध्य पर ना
लोह जोका धपा नै जै धर्मंग विहो इ बिलव तो सरमु जानो ६४ ड्यकान जो पहि ला हि
इ चापको रासि रोग गुदा पी उमकत ताको मस्तु पकाहि ता को मत्तु ड्यका स गरल मर ते
मनु हा हो ड्यकान जो र ज नीर चर तेजल माहा को ह रोग पाने ताहि विलव उपनि तो नर
जानो धनु घरा सि को जरा संधेय हका हि ड्यकाना ६५ दे पो जो मृगरासि को विल चतल
ठानि हो र नाहरा सिर व राह व ककन तेना माहि सोइ उनतेन भमाहि सच सपकरि भा गांव
को हाइ नाग तभी चर संसो जो ड्यकाना चा रु ता स न स प्या वि ल वं गो ता गा वि सपा उर
वो धिने र कौ मरन सटे कारे गानि वरे भो ६६ घटरा स ड्यकान जो रा ड्यथ म ही भार मन

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

१म

त्रिर्पीडापैदकोमुहारोगाउनिसाउ गुहारोगाउनिहदं दूसरो चेलक्तुकलसे आंमतीआइ ब
कानराजुपपवुदिगमैलस तो न त्रिलपुई भातेसङ सातहरप्रवाले जानवेग जाके
विनानलाजे धदास ८ उपापतिकालोजापरे बीनव पनइपकान गुलमसेन रूपत
विधातेगग्रसहनान सेग ग्रहनेजानदूसरोविलपवताऊ विघापरगजनार मेमाति
सुईनाऊ हैपकानअवमर नरकोरोगसावाला संतु त्रिलवएतनहरस्नोडतभीकोला
६८ इहिविधिवाढ़ताले विधनावलवमतजानेप्र नहरदेनपकाति आंति
वग्रपनिकादेव ६९ बुधापितुकन्याराशि पापषटत्रीनगविधे रजोतहीपतीकोलिके
सोपतनोतहा ७० बुधपरस्त्रोनरोग पतितनतप्राढ्यवने परमाले
देवमरेकसुजाणे सामने ७१ विकोनाहैकमध्यपापपहार
तिहोनोपापोयरुदुहेसोई कहेकेसुकाठा ताहोप्रगई वंधपासितो तानह
ता ७२ गंनवालजोइ पकानहिमाहा सुतामुचेतोवालाहदोउपजाही परोकमरैला
दिवेदापधाने कोजातवी चन्द्र ते भगनं ७३ प्रथमाद्या त्रोदले रवियो स
म सोत्रतपापोहसनरोगे तिपापकोरो करमपतरहो नातम नेहारोग पतेहे ७४
ससाढीनवपावदस ३६ चौथे सुतासंत्रो हेरु मरिष्टमे ७५ तरोगसरपगो

सं. २०१

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

निकों नाहि माही ॥ मैं रेस लजोगा हि लि सगु नाही ॥ ७६ ॥ परै वंधु के धाम जो दौसनु मह
पुत्र सो तो रेसै सुअजाई ॥ लेषे भाग्न को पुत्र को छीन चंदा ॥ मैं रे सो नरा हू सहा कष्ट फंदा ॥ ७७ ॥
पिता के कहुं छी ने कुजा नील रूपा ॥ कहें ओर तो को तहा चोस भूपा ॥ परै लाभ माही तनुस्वा
भावे ॥ परा लाभ सो गोगा ने ना सपावे ॥ ७८ ॥ रसै ही नृपे ही गनो लग्न केरै ॥ परे पाच ये सो ग्रह
एनिवैरै ॥ तहा मारा मा को वसे भा मिलायो ॥ तहा छोड़ि ताके तना प्रान भागो ॥ ७९ ॥ [illegible]
पुत्र सिषु दस सो भाव ॥ भसुत रवि सु रूस निसदा ॥ कम सो मतु नर पाव ॥ सहज सुनिल्य
हिपाल्पै ॥ ८० ॥ मंगल चंदा मंद ॥ दस केचो थे रूरा हि ॥ परै सुचोरी फंद ॥ कीरा पर छीतया
उतै ॥ ८१ ॥ [illegible] रवि विधु कुज दस सो भवन नन मत तम यतास ॥ मनविदेस मे अनल
मे वाहन हाल विनास ॥ ८२ ॥ छीन चंद्र मालग न को सनि सुरू सनि केतात ॥ कुज सात पूरा
री चोप इहि विधि ताहु निपात ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ तुला रासि कुज रवि कुज धाम ॥ जन्म मांझ
प्रसिर विगूह हा मा ॥ उपजे ... सो घ प्रमाना ॥ तन नास इहि भाति बखाना ॥ ८४ ॥ कर्म
सुतलष घर सरिमाही ॥ कमचंदा भेदा कुज आही ॥ गद द्वाइ ने गिरि सो नामे ॥ केपु नि विप
न विधे करि ता मे ॥ ८५ ॥ आठय छीन चंद्रमा मंदा ॥ नजरे जो पु निषरी चंदा ॥ ग्रह व्याधि क
मिरोग सुनामा ॥ नि धन हो इति हि यधिसंग्रामा ॥ ८६ ॥ मित्र भाव चिपमंदिर वे ही छाया सुत

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

कुजक्षाठयमेरे मीन्ह विहंगम त्यौं लेषी कहै मुनीस्वर इहि विधि पेषी ८७ तनपति च
ह त्रिकोन मांही मांहीं रवि कुज मंगल चंद्र पराही गिरि तें के भी तिहं सो गिरि के मध्य पु
न जो सोई ८८ आठय रा हि नेय जो होई रं भय गर न जरी ति हि मोई धरम भवन को पति
के देषे सुंदर षट के वेरि बिसेषे ८९ येह जो जो तीरथ नासे दोइ जो भाजो मिले प्रकासे
तीरथ में ह ज्ञान परिनामा देह तजे सुध्यानु धरि रामा ९० सोरठा धाम सदन को नाथ
धरम धाम में होइ जो पीच बुध नल के हाथ होइ अहीरा दिक जनदा ९१ मित्र भवन के बीच
लगन ईस जो मित्रपति होइ सुरी कर मोच होइ नारि सहगामिनी ९२ दोहा मृ
त्यु दिक् ततनि ज्ञान यो पूरब रिषि निरधान जवना चौर जवा क्यप हस भृगु मुख्य सुजान
९३ इति श्री ... ज्योतिष ... हितिय च
... ज्ञान ... नाम प्रकरनं ... समाप्त ... ॥ २४ ॥
अथ चंद्र ... दोहा मेष रासि को चंद्रमा जो जनमें कहूं बाल
भाग्य संभव वान होइ हि विधि लहै न मास १ ॥ हरि ... ॥ धन वंत जाके पुत्र पुत्र पु
नि उपरे ... हहे ... कारन कारन को ... तत परो ... नेहहे ... धर्मनि
कारम सदरी ... पानि सो अति प्रेम है भव दैवता अभिराम यो गुन पूजन के कारये मरे है ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

श्रुतिहीहरुचेतिहिसाकपेोसबश्रुलपभोजनजानिये । दृगसालजोसदमारहे श्रुहुकारन
शेरघमानिये । पासंनहुघश्रुहुसूरलीरघकामिदुर्वेलनाथरे । कुनघाक कोधीहमम
धेदानकरतंसनाथरे । २ । तोकोवियाघुनिदोरहेश्रुभीतिरनचलाचेनहे । संवतनु
थमश्रुहसपतमाहीतेरहीज्युरपिनहे । श्रुसालहोराहेसचहीमेउपजवाछीछाजेहे
। तीसरीश्रुसवारहीकेविषवड़ासुवाचाजिहाजेहे । ४ । संचातसुपाचिसवरघमाही
ताहिरातिउपवावेहे । ५ । निसालवतिसकोदिखेतिरिसघरीकोघावेहे । चितविचारिमन
रतकाजसवहीसुकहतगतहेने । परदेसहिचित्तनिगानदुर्बलचलनश्रानुत्सवहेने । ६ ।
श्रोभमानिसंदराजानिलेश्रुतबहुनिसरीरहे । नघमोकिपेवहवारघनहैजानरनरानश्री
रहे । सुनिमासकातिकनेमिवुध श्रघरेनसमयपुषकासहे । कहिसंभुमोसिरोगमतु माल
घजेश्रजरासहे । ६ । [illegible] ग्रहमगासेनिजीन संबद
घिकरिमतमुधा सोश्रुवकहत वमान । जमवजुगमयेकालफल । ७ । श्रुलपतेजश्रुगि
मान सहमतिधरमजुचुविया । बोलेसत्यवमान । पानीधनीसुनारिवस । ८ । [illegible] श्रु
लपाचिश्राचिरुजीवपानेताचितपरमाघ्य । जननिजनकगुममलाजियसघासवनि
नृपकथ्य । ९ । चातुरसोश्रुतिसवविघेसंतोषीवहुभाति । वषमवरघपीजलोरनतिपन्नु

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नलउतपाति ॥१०॥ सिष्यछंद ॥ सपतनखवरषजुविसूचिका ऽलमषिवाबहोइ ॥
आलवारितिमिरेउइहैतेतलादसप्उगलरकलोइसोइ ॥१०॥ सोरहीमध्यहि होइपुनितां
हिव्याधिउनईस ॥ पचोसहूजलबुडतवुचैवांधितिहिकाउचोरउनईस ॥११॥ ज्यांजुतीस
स रीवनौंकुककौजोविकारहोइ ॥ औसांतिसूरइनिचिंन्हपूरसोसहकरुहेमातिवंतसोइ ॥१२॥
चंदकहदेषहीचंदसत आनवैवरसऽाउ ॥ शीतपनतीनजोसुकालीनहोतुहिसुज
सहूउतकर्षभाउ ॥१३॥ माघपलसुधनवे तिथिरिनाछितेमगुवारहोइ ॥ प्रानेतजेसोसो
विषसुगोगासिचंदसुविधिजानुसोइ ॥१४॥ इतिश्रवणासिचंद्रकृतनिर्णय ॥ दोहा ॥
जुगमरासिकेकहतऽवलइनजोऽसराध ॥ जोकछुकरतानिस्मयउसोईगुंथयानेसा
ध ॥१५॥ चरनकुलकछंद ॥ मतिग्राग्रीनचतुऽषिकारा ॥ वुद्धिवंतइठशीलिमआरा ॥
मोहैमोजनयोकारवाई ॥ सीलवानवऽनीतिसुभाई ॥१५॥ औनवचऽवऽलनेना
प्यारोसवपरिसुषेना ॥ ठकुरकाहिचीयऽतिलागै ॥ कोतकीकमतिसारसभागे ॥१६॥
वऽमहिपनमाहीहुवभोगे ॥ जानमधमामषिमसओगे ॥ दृष्यानिइछेसोविपनतीजे ॥ दो
ऽवलनिकोपतिगानिलीजे ॥१७॥ गुरुनिरजरकरमलेवधानो ॥ औरमनोहरगुननिनि
धानो ॥ होरऽधिकताकेपुनिकेन्या ॥ ऽरुथोरेवालकउतपंन्या ॥१८॥ वरषपाचईचादि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

अविचारा गौरसुक्रद्वदूरिकैडारा। रिपुभूपडपजेषोउ्रसमाला। होइउछाअोरहीकाला
१९। वरषअ्रनाहिअसमानिसाधी। होवहिताहिप्रवनकीव्याधी। सोमसूलवीसवरषा
ई। आतिसुवरषामसनिवाई २०। दानाधोनोमूरिमाव्यारी। सत्पथअमोनेहराहारी। गी
तन्रत्यआतिनाहिपियारे। ताकोविषईवुद्धिउचारे। २१। धर्मसास्त्रकरिमहाप्रवीना।
सुभगगिरावानीप्रनिलीना। अ्रसीवरषलगिआयुप्रकासी। छीनकलेकरातिहिदवपा
सी। २२। सुकलपक्षआसिषदेसाषा। हारमतिपिप्रुथवासरराषा। इयहरवेनहत्तम
तारा। भवसागरकोहोइसुपारा। २३। इति मिथुन विलग्न निर्णय। राषिकुली
रहिकहौवषानौ। जीकक्षतन्नकहासुनिपानी। संचतिधनपतिआयुरख्यारी। रूपकूल
तिनिर्णयकहाही। २४। अथ कर्कलग्न। परउपकारप्रवीनमतिच्चतिधरीरमैचित्त
रहेई। सुनुनवंतपितुभक्तिजिपसाधुधनिकाञ्यिजिन्नचहेरे। २५। पहिलेपनमेनिध
नीसुषभोगीपनमाहिंवषाने। तीसरपनधनधरमपतितीरथजातधमहिपूषाने। २६।
हाकालछंद। रेषसुता लूलिलाटविषे। लक्षनजोइमिताहिलिषे। वामकरवरच्चाषि
जरै। मत्तकपीरचक्षनधरे। २७। बंधवहोवहुनारिपती। जोतिषमधप्रवीनव्रती। जि
नवहोषियवेनकहै। वनहहेहसगुदीनरहै। २८। रोगासुन्यारेहिंवर्षभनो। नाभिविषा

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तति वर्ष गनै। संवत ये ऊकली सम्है। सो न्नाहि सो नर वांछि रहै॥२९॥ वनितवर्ष
विर्षे लतहा। भांति अनेक निपीरतहा। जीव हिं वर्ष पचासि भुरी। या विधि जोतिष
मध्य धरी॥३०॥ सत्व सुमा घन वेग निले। वासर सुकृत हा सु निले। रोहि दिसे तनु त्याग
करै। देषत जो परिवार भरै॥३१॥ जो र कला निधि वर्क धरै। जो नर पाप हि जन्म धरै। सो पर भा
षिनि सम्भु कवी। लक्षन सुर्त्ति सु सुम्रिति फवी॥३२॥ इति कर्करासि चंद्र कर्कलग्न ए
र्त्ति वर्णन॥ अथ सिंह रासि कार करवषान। प्रकृति करूप निर्जोनजान। धन पन भु
भोग गा निरोग लेह। धन सर्व भांति परिमान पेह॥३३॥ धन धान्य के रसंग्रह कराइ। वष
ती कहोर परस्त्रिद्र आइ। सुरग पार वाहिर तिनारि दीप। चतुरांवि देसि पुनि ता हि लीप
॥३४॥ नैनाविसाल अति ता हि सोइ। क्रोधी कसे चती[illegible]ल पह होइ। सुरि मारग भिनिहु रा
वषा नि रनसी सपीर विलप सज्ञानि॥३५॥ प्रथमे हि वरष भय भूत केरि। पाने खम गि
करि जौरे फेरि। सो नै सु वरष ज्ञुरता हि होइ। नवई सु वर्षी विसूचि सोइ॥३६॥ वरषा सुधी
सई भे भुजंग। अरु पीर होइ इक ईस रंग। कहा ईसो वरषा प्रसंग। सो पर त गाज वा चेन
अंग। भुज मूला गही वैल संग। वरषा सुती सजा के श संग। पैंतीस वा उदर होइ। पुनि जो
गुल मति स्त्रिका हि सोइ॥३७॥ सोरठा॥ पुनि संवत अरतीस। रकत नारि तिहि लागही॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रसोगचालीस॥ श्रोनितबूंदसुधारिके॥ ३८॥ चारसपचिसठाठ पेटिरहयतेजोगिरे
वाहिरचलतनिवार मिलेनचानकवाथतिहि॥ ३९॥ [illegible] ॥ सुभसुभाउसुसीलम
तीचहै॥ अधिकसाचमलोचनलावहै॥ असवसपलजाउलुटीजरू॥ मनितसंकरपगनरी
तह॥ ४०॥ सुभयसवुधतानहिदेपही॥ वरघसोतिहिजीवनलेघरी॥ मदसमेतमहाचुरहका
रहै॥ धरतजोउतकर्मविचारहै॥ ४१॥ महिनफागुनसकलसुपाचरू॥ दिवसचंदनहाहिनकी
नही॥ परहिसोसुघसोकुटमैमही॥ मरहिसोनरनीकपटलीनही॥ ४२॥ इहिविधेगनजो
तिषमाहिये॥ फलजकेहरिरासिकहाहिये॥ विटपमाहिसवेगतिभाषही॥ मनिवसंभुप
हेलाघिसाघही॥ ४३॥ इतिसिंहरासि[illegible]कृतनिर्नन॥ [illegible]॥ इहितारासिग्रमानचवजण
ग्रथमवउन्नि॥ संभूसोविधिसउच्चिकरिभाषतभाषाज्ञानि॥ ४४॥ [illegible] ॥ प
तिवारहिमाही सुघराजारी हासनिकाहीधनीमहा॥ सवकलाचतुरनरहवैदेसुपरश्री
यमनिगुरसदातहा॥ देजदेवनिकेसेभक्तवदेरोसोनरहेरोचिन्हजुता॥ सवधमकतेन
तिमहानेकमतिहोइपवजनि घोरिसुता॥ ४५॥ [illegible] ॥ लहसनातेसतितिहि चोगमेच
घवाग्रीवप्रदेस॥ छत्रधकुलधर्मकोसाधकप्रामसवेस॥ ४६॥ अरेअनलतोमारिवर
घपाचेपीरासुत॥ नवेतेरहीज्वरविघाइरवलदेहघमहि॥ ४७॥ [illegible] ॥ ओद

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

तहांपंडरि वर्षमारी ॥ वाचेकहूकारनसर्पमारी ॥ वर्षे इकोसेमहूसोगिरही ॥ इहैच
देकेरि सुमीतिन्नारी ॥ ४८ ॥ ताकोतहातीनहिवर्षभाऊ ॥ डगेविषैलागहिसम्बधा
के जीवेनरावर्षचलीयुसोई ॥ ज्ञानरसोजनमभरेहिलोई ॥ ४९ ॥ हेहूरमचेनारिके
श्वेतवारा सोतरसोप्रानहूदेपधारा ॥ सकेपकन्यानिरजानभाषे ॥ संभ्रतहारलाषिग्र
थसाषे ॥ ५० ॥ इतिकन्यानामिचंद्रकृतनिर्णान ॥ सोरठा ॥ जुकरामिनिजोन ॥ चवता
केलछनकहत ॥ भाषाकरिपरिमान ॥ संभजोभाषोरिषिनि ॥ ५१ ॥ संपूहचसत्चनेद
चरववकारहेजगताहिहूरवहूसेवकेसाविवेक ॥ धर्मनीकमोपीधनी ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥
वाचरिकूपतनावकीरनमेहाचिमतिलीय ॥ मानवंतग्यातिचतुरमातिमहिपालित
कौशीप ॥ ५३ ॥ चौपाई ॥ हाचिमीरेग्रुपनारोचिसरवनाभक्तपिताकोताहिग
नौ ॥ सुतेसुलपजनमधरज्ञलपसहोदरवेतमभअमेगयांनभनौ ॥ मूलवारेईवका
स्वतेईदेवविप्रभगीतिधरी ॥ विप्रकेरिराजाईसोचलवाईलेइनाहिनेवसुकरी ॥ ५४ ॥
सातयवरछाहूभयचनलाहूचाहेजूरनेज्यानसही ॥ जतनेभयहोईवाहिसोईसु
लपलमानसवरनिवही ॥ हयमेसमनूषाकेपुनिहूजावीसहिसालगिरीयपरे
सरपुरदेवारहिवधमझारहिव्यथावर्षप्रकटसमधेरे ॥ ५५ ॥ विप्रकोरिधमाईसोमध्यहाई

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

सालग्यानवैसोपिजिये॥ ग्राठेतिथिमाघावदिरैसोप्राप्र स्त्र मेघाम्रघनालेये॥
पुनिपहिलैजामाग्रनंतनताभाष्याशतीरयकीनसतो॥ होरिपंकजचंप्रनवैरेवरागन
हीलिखरासेप्रयावप्रहो॥५६॥ इतिश्रुतनामलिवेद्रमैनानिनीया॥ नारदोक्त॥ ग्र
लिरासिहिकोपरिमानप्रमान्यो॥ निरंलैग्रुरजोनिरज्ञानसुजान्यो॥ लषिनानकवेदि
मनोहरग्रथा॥ कविसंग्रुचलाइवभाषहिपथा॥५७॥ रिपुमारककोमिलतिसनमा
ई॥ कलहाधिपताचरिड्रोहलहोई॥ गनिकासुखयातविषम्रातिप्रीती॥ ग्ररह्रोहलघा
अतिकेचितरीती॥५८॥ सवसोघनताकहपूजकराजा॥ विप्रनैसुतहाइपरावेहिका
जा॥ सुभलहनसंजुतविकापिभाजा॥ ग्रगुगोप्रारिपापसुनैनहिलाजा॥५९॥ वह्रपुन
सुरेषसहीदेरवारी॥ जुगकामिनिकोपतिभावविचारी॥ छुनहीपरसंनछुनैमति
रोसा॥ कारहानदीनपरैयरहोसा॥६०॥ जुरहोइहिग्रारिहिवर्णविषेरो॥ तिनुरीपहुता
मनमभ्यजरेही॥ पुनिपाचहिवर्षजुराउपजाई॥ तिहिहोइसुताकहपंडुहिवाई॥६१॥ प
हपल्हिमसुवरभावषाना॥ नहहोइहिपीरमेरेहिसमाना॥ उरपालहिरेघाहिरंप्रयप
हाई॥ नरवषनवेभारजीवुनताई॥६२॥ इसमीतिथिकोसुरिजेठमहीना॥ उइहलग्रवा
हतनैसासिलीना॥ ग्रयहातितजेतनह्यंचिकधारा॥ हरिलोकवसैनरदेननिहारा॥६३॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नम०
२०८

इति श्री गुरुनानिक चंद्रकृत निर्णये ॥ दोहरा ॥ सुवचन है एत दिषि वाप अल्लवस कै
पसुमावता ॥ मधसंभुकृत तरुप ॥ दतन विंदको श्रापुधने ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ धरमनीक
मतिमानवरु सुतन्त्रपसोहित होय ॥ प्रियमनपूजक देवकुल संग्रह में नाचै सोर ॥ २ ॥ सभा
मध्य वक्ता निपुन सुनवीतु मति अनूप ॥ पलरसनग्राव अर्थ उद्दित कवि सुधमूप ॥ ६ ॥
चौपई ॥ कुलचतुर सुधा नी सुंदर हानी वेनमित्रता सुष ॥ तन्त्र उन्नि सुहोर ॥
सं भना नाई साहसी क्षवानि कृहा ॥ छिनमें परसै नै रिसमाति छिनै नपसीभोन्नसुख्या है
अलपपुच्च अरु अलप सहो रहल हिरु निमेषअनु कल्या ॥ ५ ॥ वयमा वद है ईश्रुरा तिहि
लोई ते राहिवा धिगना उ ॥ री या अ्रसहि पारे कैपचह तुरी इन संवत कोरे जाउ ॥ सुभ
ग्रहहि घाही चंद कारी सो लगि जाउ वताउ ॥ भग्र पाचै ग्राहा उस अभाहा हसो
नपतु निमिषा उ ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ निरनय अ्र हनिज्ञो वरषि करि उभा षिधनगासि ॥ जा
तक ग्रथ विलोकि करि भाषा थोरै प्रकासि ॥ ८ ॥ इति श्री गुरुनानक चंद्रकृत निर्णय ॥ चौ
पई ॥ वक्र गामि निरिजा नसु भारी ॥ वनि गुनिना के कारमनिकारी ॥ अलप अरुवल
वधत गनाए ॥ विषा हसु अ्रहधारम कहाए ॥ ६८ ॥ पीर चंद रहे मिअनि नाई ॥ विप्र
पान सतवंत प्रभाई ॥ रानी साति के कालसिजानो ॥ अव्वला केव सहै धनवानो ॥ ६९ ॥

श्रीगसिं०
२०८

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

नानाकारउनितास्नकारा ॥ जानैनाकरिलविलासा ॥ प्रथमहिवातविधजरहेऊ ॥ मलय
प्रभारसपनमैसोई ॥ ७० ॥ इसयणीगैचंदिमहिलेही ॥ वारहितिहिहवियालगेही
॥ बीसहिसंनिजताउपजारी ॥ वाघवचौसहिदाणिराही ॥ ७१ ॥ जरेच्छनलसोवाधैने
गा ॥ पैतिसंसंवतकेरप्रसंगा ॥ नवैवाहभरिजीवहिलोग ॥ च्यारुछौनसौगनेगे
गू ॥ साउनसहिकुजवारहसैऊ ॥ नघतजेछाजानिसुलेऊ ॥ अमकेमारीग्रानपया
ना ॥ संमूकलोप्रकारनिजाना ॥ ७२ ॥ इतिमकरगतिचंद्रकनिर्जीना ॥ सोरठा ॥
घरनिरजानहिजोइ ॥ कहौंवारनिसवहेंउ च्यव ॥ प्रानच्यलयकोहोइ ॥ जावांचैजो
रीपत्रहि ॥ ७४ ॥ च्यहेकलेकाछौन ॥ बोलेथिप्रसवसोवचन ॥ दानाधरमप्रवीन ॥ भोज
नमाठेसचहितिहि ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ च्योथीसंचतिनारिच्छुगमरनीसवधनहीन ॥ लहस
नवाहेपानिमेवाहैवेननहिरीन ॥ ७६ ॥ नागमकविनीछंद ॥ वाधासुग्रादिवधिहै ॥ ज
रेउतासपन्चरी ॥ नहासुगोरभेदसे ॥ भुजंगावारहोइसे ॥ ७७ ॥ च्यठारघाउतासरे ॥ स
मेच्चारतेनरे ॥ नवैसुचवनीरही ॥ सुउभभावसीवही ॥ ७८ ॥ उनेरयइचौपरै ॥ वछ
उभनिमेदहै ॥ निसामुच्छईकनेहे ॥ जुतुंभगासिवनेहे ॥ ७९ ॥ इतिभंगानिचंद्र ॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ति र्णिन॥ दोहरुछंद॥ मीनलग्नग्गसेसुत्रो नेसुक्र गहं॥ श्राघवुनीसन्ञो॥ श्रमानह
माघहिभाधिउतंभुकवीयह॥ ओक्रकुग्रथ्यनिवैरिविंछेकह॥ २०॥ गर्भि नमोगीथनी
पासेंनह॥ मातपितागुरुमंजचवकोनह॥ हेलनयुतागताहिप्रमेनह॥ श्रीहरिएजकयोनि
तपेनह॥ २१॥ मेष्मनुश्चोरधुसाघहिमाहिय॥ वासकोजियमेंग्रिपश्चाहिय॥ [redacted]
[redacted] [redacted] श्चुवहिनैमयपान्चाहिसालहि॥ श्चु
ठहिमेजुरपीरहुप्यालहि॥ व्याधिसुवासमर्थधमश्चारहि॥ धीरवर्तमरीरघभारहि॥ पूर्व
हिमागवमाउकाहिय॥ श्चायुरताकरिठोनकसाहिय॥ २२॥ रंमाग्रहातुतातहिरेयहि
मीयहिमीननवेसुविसेषहि॥ श्चस्थमियोसुरिहोरजजानिय॥ वासरंग्रुगुरुपानमानि
य॥ २४॥ रेनिसपेसतितकायुश्तारह॥ मेमंसवारिभपारश्चपारह॥ पेहप्रानमजोछिलेख॥ ति
ति॥ याविधिसोनिरजोनविसेषहि॥ २५॥ इतिश्रीमल्लं इतिभिनतम तथ्यामेश्रावा
तिनायोजो॥ नवमिंद्र हितीयचेदानहारमगाम वेदुझननिजानवरननतनानव
कन्तउनी समतं॥ ॥ २६॥ ॥ अथचंद्रनोमानकवरननं॥ ॥ तिका छं॥ नजन्म
कफलसर्वुभाचिउजोतिषेलाविजोगह॥ तियवेनेतफलनहोइसोश्रहच्चानमातिप्रयोग॥
॥ श्चवनासिजानम्यारभाघतजानगउमिलोजाए॥ कविसंभ माछिउमाघहीफलजोकंद्र

वियोगए १ [illegible] अबलग मैं औरउ सखी मनै। इनतें हि जो बड़ कोगनै। इन दीनि
तें लह सात्तुए पतिभाव सों कहत्याताए २ तननें सखी धापाचए सनतान हूत हमाचए घर
आठ एस बिचारिए बयप यताप निनारिए ३ दुधतात तनु ग्रहि कों परें अहुपरि तसिहि
चौ ब्रह्मलीभली तिहिनारिए सुघ सत्य देभरतारए ४ सखिबुन जो जुत घरहे तउ भएनु
जुतरूपहे इगदेषहे सुभषचरा सुभ जो सुकूपमउच्चरा ५ तनचें रऊ नियराति मिं चारि
इनारि प्रकासि मे दिषपाथि जो विय निगुनो इभगप सील धीप्रनी ६ [illegible]
देवली निसिसलग्र वेरमौ मभामगाहि औरहु नकें विसंससमे वियाकु जो जनाहि तो विया
हि निंदती गुरुवंसुसपाते हुति अभिपुत्र कें विसंसना रिचितऽरसातें ७ [illegible] जो जं
नमेदु धस्रस तो माया विनिज्ञालिये होरहु मद्रविसंस दासीजारि बंधा निये ८ जो नन
भेकूनारि पंडितमनत बिसंसमें से फलकानाहि अवग्रहता करवे गिरे ९ [illegible]
पुत्रधाम मेहो इविसु बिसतमें जलीन सुवला गतुसोक परनीसुत मना भवहीन १०
जो रसैम्प वियसै सबै रमनि जनम सं जोग संजुतवरु तुग्ना निकुरि भनतं जो निधि लोग ११
[illegible] जो गुरकेउ निश्च साहि माही पतिव्रता के विभप्रततांही सोरिदे
भ्रमसविषेजनताही तोरवली वहभासजनाही १२ जीवधरे ससिजो सुवसा ग्रस भो

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

ता हिय केरा बिसेसा॥ कैउ तप तीहि लग्न हिते ही॥ माघहि जो लखि जो विषयेही॥ ८३॥
मंगल केउ निध्यंस विषेसी॥ तो त्रियवो गुन वेतलि षेही॥ वे फाहि जौ त्रिय व्रत समआरी॥
सो परि पूरज सीलिय नारी॥ १४॥ जो रूस मो उध ध्वंस वधानो॥ रंम्य चि भौति हि केप्रि
जानो॥ भार्ग वध्वंस निते हि गनाई॥ पतिव्रता त्रिय केर सुभाई॥ १५॥ केरी रिध्व ल्वह दुति
विसेषी॥ मंद व ध्वंस कचंद हि लेषी॥ जो लिष ग्रंथ विलो कितहाई॥ एप लभा छिउ सखुव
नाई॥ १६॥ दानव मंत्रि धरे सलि होई॥ जो वहि के त्रिय संसक सोई॥ लग्नहि को लिसि ना
धुक संसा॥ जु तूत हा तरुनी ध्ववतुसा॥ १७॥ दोहा॥ मंगल के त्रिय संसमे सयु वंद बेली
य॥ ड स्म ग्रेह मे होउ जो होइ छाग नि चीय॥ १८॥ सारठा २॥ जो वधवे त्रिय संसम
ही॥ कै स लिलग्न विषेहि सही॥ है निज कर्म त्रिया कुमला॥ मग्न महा ध्व वस हि केला॥ १९॥
लग्न मसी गुरु देत्य धरे॥ ओ त्रिसंस वलारि धेरै॥ चंचल नारि गुना निउनी॥ संपु वनी
को
दृहि भा लिगुनी॥ २०॥ जो सुनि त्रिय संस भनै॥ लग्न न छत्र पती गुगनै॥ नारि पुनर्व
वदेष सनी॥ माघ तहे ध्वासि तारमनी॥ २१॥ हेत जो मलि मेरय से॥ भौम कवि सति ध्वं
सको है॥ जो सुता कहुँ ओ न रही॥ जानकुविं करि ता हि सही॥ २२॥ सो म्रह विंस ति ध्वंस
मरी॥ पापिनि तात रुनी गन ही॥ जो गुरु के त्रिय संस विषे॥ स्वामि प्रभक्ति निवाल लिषे॥ २३॥

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

भार्गव बंध्य सुताहि करै । जन्म त्रिंसंस हि पाउ वरै ॥ जो लगन मै आरु चंद्र ग्रहा । सो रस नी त्वरा धाम
महा ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ आरु सनि के त्रिंस संस । जनम वं निकाइ निलमे ॥ हि विधि तिताहि त्रिंसंस ना
रि प्रकृत बिन सिसे ॥ २४ ॥ मनिका छंद ॥ लग्न भान धाम कीय । अथ्य वाल सी पलीय ॥ भौम त्रिं
स तीय अंस । स्वछंद चारिनी प्रसंस ॥ २५ ॥ वुद्ध के त्रिंस स माहि । तो फिरो छिनी त्रिपाहि ॥ जीव के
सु अंस जानि । भूपनि ताहि मानि ॥ २६ ॥ सुक्र के त्रिंस सजोइ । लग्न चंद्रमा सु होइ ॥ पुंचि लाइ जो
ग ये हि । विभचारिनी सुवै हि ॥ २७ ॥ सुमुखी छंद ॥ तन अरु चंद्र हु भान ग्रहै । सनि त्रियंसं स
कहो इस कहे । नरकर वाहि भेषजनी ॥ त्रिपुंस वतं सप चंद्र अती । उआपति लग्न सुदंइ गुरू गु
ज त्रियंस सहो इ अरु । मन राहित स्वछंद चारिनि या । उपजहि जो इ न सानि तिया ॥ २९ ॥ सनि स
त के त्रियसंस मही । भव लगन मै अरु चंद्र सही ॥ सिल्लप वहला परवीन तिया । इन सह कौ इहि भांति
षिया ॥ ३० ॥ सुभ गुन तो ग्रह ते गभो । भ्रगु पति विव तीरह नारि भनो ॥ सुनि त्रियंस सहि मध्य परे प
ति कंर सो त्रिय धान हरे ॥ ३१ ॥ उमन स नीच दो उ ग्रहा । पस्स परे त्रियंस समहा ॥ कि धिप
लपे इ इ आउ सभै । कि सिइ नरा सि ग नो भव भै ॥ ३२ ॥ कि म्मि त्रियंसं स सुकुं भ हि को । इति
फल जान करु वाल हि को । भरन विहीन तिनी कहिये । नरकर भेष त्रिपा महिये ॥ ३३ ॥ सत
म वर्जित घैटा हो । लघहि नहीं ति हि रम्य घरु । आ सुभ घेटक हीन वदे ॥ [illegible]
...नरा त्रियाहि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

न बीन मिलै ॥ ३४ ॥ बुध सनि मंदिर सप्तम हैं । ताते हि मैं जु तषे र गनौ ॥ मिलहि न एं सकनारिप
ती ॥ फल कातसं भुजथा छपती ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ जो रासि सिसपतम है चार परदेसी पति ताष दु
ख युह्त सप्तम लगन मिश्र फल निश्च निभाष ॥ ३६ ॥ जो लपतम रविभवनसमें तो त्रिय कोप
ति छोर ॥ कुजसप्तम मैं व्याहे लषे सु धे चर छोर ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ हो वे सु भानुसुत सप्त
म हि जरा त्रिय हि आदर करै ॥ जो पाप षेट सप्तम कहू क्रूर त्रिय कचवीर रे ॥ ३८ ॥ जो पे सु
मिश्र षेचर सप्तम पुनर्भव त्रिय सो कही ॥ अलभाव पापी हीन बल सुभ ग्रह हीन बल षे सही ॥ ३९ ॥
दोहा ॥ सप्तम ताहि फल ये कहे त्यागे पति च्युपराधविन ॥ भगु बुज ग्रास परे कहू जो त्रिय सुस
हि प्रथम भनि ॥ ४० ॥ त्रिय ज्ञान दव मैं जान परगति सो हिन मानही ॥ रेव हि कल्लो निधानं भगु
बुजात न लेस नृमे ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ लगन के सु भगु मासि परे स निकजु शासि सजोग ॥ तो पति त्रि
य मात त्रिय कहे जोतिषी लोग ॥ ४२ ॥ बुध को द्रष्टि विसेस के रि जननी कुटनी नाम ॥ त्रिय ता
को हि जनम कुज देखहि मदप्रकास ॥ ४३ ॥ न [illegible] की के निका इहि विधि जान गनि सोय ॥ जोनि
कहत जोतिषी और कवि जातक नारी जोय ॥ ४४ ॥ अथ निष्पत्त ॥ सप्त भुमि दिरमूल्ल होइ
य केरन बासक जन्म हि जो इय ॥ काम विहीन करै पति ताकर ॥ चंद्रमा रासि मसि जो सप्त
घर ॥ ४५ ॥ तो पति कों मल भोग करे हिय ॥ ए फल जातक देखि धरे हिय ॥ [illegible] सप्तम मंदिर

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

मे हिय। स्वंसहितै पतिको धुमने हिय। ४६। विद्यावानतनु रूपरै हिय। गुनसमेतियपति
जोवकौ हिय। भाग्यवंतमग करे प्रवीनारि। मैस्कौरै पतिकोमानतहीन। ४७। देत्यपस्पसाति
मोमभूमाहिय। सप्तमचालपक्षप्रपराहिय। मानवनारेमिलो त्रियजोवह। ईश्रबसोवक्ष्मा
तिकोजेह। ४८। जोवुधमर्कहिहै सपतमधाम्हि। संजुतशुभजानोवहवामहि। उत्तिमगुन
निकलासुप्रवीनहि। याविधिचिंन्हत्रियापतिहिलीनाहि। ४९। जोभ्रगुबुउपरैसपतेमा
भाषिकेहेफलजनमंत जोसा। संदरभाग्यसुहागसमेतिहि। चिंन्हकहेसुचियापतिहिये
तिहि। ५०। दोहा। अथदाम्पभ्यस्लगनवेहोइहिजन्मतकाल। नानाभूषनगुननिकौ
रहिपुकारसुवाल। ५१। पापपेरजोजनमकेजन्मलगनपरिनाम। सोफलफलदेजा
नियेजैसेचिंन्हनिवाम। ५२। चौपाई। पापियपेरस्व्रएपराई। कामिनिवि
धवंवेगिकराई। शुभमेदिनापक्षतहाई। जोरतिहोत्रियसंसयाहाई। ५३। जोधनमेह
रमेवुधहोई। जन्महिकेसमएमहसोई। सोपिदसाजवभ्रपनिपावै। मन्तसुतापहि
हालकराई। ५४। मानइसेसुखभावतिभोभा। जन्मतेत्रोसरकेमायिप्रामा। पवंतो
गीरिनामसहिचारी। पंडितभाविनेचिंन्हविचारी। ५५। भौममसीघ्रहतरभान।
कमेकूसप्तमकोसुघणान। कुपरवादोरमेगिरिसोई। याविधिनामनियाविहिहोई।

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

५६ ॥ अंतिकाऊरः ॥ नारिके सुरहो स्थान चंद्र मारू पापखेट चंमहोइ ॥ वीर्इ हि पापसेरे
रिया प्रमान जानिये सोइ ॥ केंद्र पासिके त्रिय मरे तहां जनमै सुनारि ए हि जोग दुख पा
वनौ लते नैत हासु लौपि अबुवृर्दसी वियोग ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ रविसुत दसये मुरि मत ही होइ
बुध लात निधन जलंधर रोग कारि वंही नारि विख्यात ॥ ५८ ॥ पापखेट अस्त मसी
परै भर्तिन सुत सहाति मतपुत्रा सुकी सत्रुते और चव आगि द्वकासि ॥ ५९ ॥ तोमर
छंद ॥ ग्रहपाप सप्तम जा हि ग्रह रंध्र धर्म हि माहि जनमा हि जोग नारि अवघ
तनी सुविचारि ६० सरिकेन्य सिंह स्त्रलीय बुध सुक्र तालजरीय सुत अल्प ता
कि हि होइ अरू नैनसुंदर सोइ ६१ सुभखेट है सुतधाम नजरे सुखेट ए नाम सुतअ
ल्प के त्रिय वाम प्रनिपरहे गुन माम ६२ वलहीन सौम्य चंद्र बलज्ञ अंगछपा
मंद बलि सेष खेट सबंद विषमा स्त्रलग्न सुनंद ६३ पतिते जंद अस्ती य क
जाति घान मनीय फल एत संखुभा गब्दहिमा ति जागकुलाह ६४ ॥ अथ त्रिभं
गी छंद ॥ जनमत भृगु बुध चंद्र गुरू परि उपजालग्न सकल खेट सुंदरा त्रिया ग्रहगण
नमेमग्न वृत्तश्च नमें मग्न सुमति संपुत गुन ग्याना सुलपति श्री युनिरानतारि

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

त्रियएफलजाना॥ इहिविधिकरिविचारिभाषऊनिलच्छनउनमत॥ कहेंसंभुन्यारि
नारिपरैसुभचारोजनमत॥ ६५॥ दोहा॥ सुस्त्रीजातकजोगहैदेषौचारिहिकाज॥
उतपतिप्रह्वालगनमैऔरविचारविराज॥ ६६॥ अथ
संन्याकारनलिष्यते॥ दिनुहा छंद॥ नारिन्या
रुनहीं॥ चंक्रलेषत्यही॥ अंगन्हिंगेमही॥ रिषुधारैस
ही॥ ६७॥ मंथानछंद॥ तीनरिहलेउ॥ सीसमधरेउ॥
सातलैनछत्र॥ लेधरैमुतत्र॥ ६८॥ श्रीसछंद॥ दोनो
कुचैठाउ॥ तारौधरौआउ॥ हीकैविषेलीन॥ नछत्रजो
तीन॥ ६९॥ मंथानाछंद॥ धरोनाभिमाही॥ सुखहो
निकाही॥ सिऊनेत्ररिहा॥ धरोजौपतिह्वा॥ ७०॥ भु
जगछंद॥ रविसुनधन॥ तिहितिभनत॥ ससिनषत
हि गनिफलकाहि॥ ७१॥ सुगीछंद॥ तारासिरपरै॥ संतापहिकरै॥ नारीयमहिये॥ ए
चिंनकहिये॥ ७२॥ मंहिमाछंद॥ गुह्यमीठसुखभोग॥ एतचिंन्हनीसजोग॥ येमप्र

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

षं नारि माहि रिह्यो पयोधरा हि ७३ ॥ कमलछंद ॥ नषतहूं इये पौ हर षज्जुतउच्च
रे नषतज्जु नाम है ॥ पुनि हि मन नेह है ७४ ॥ कमलनी छंद ॥ नारि के जो नितारप
रे तो तहा चिंन्ह एते करे ॥ आनि के रत्यु वीलासनी ॥ नारि ए चिंन्ह ए तासनी ७५ ॥
लग्न प्रश्न विचार ॥ विराट छंद ॥ मेष स्थूल ग्रह हि पुत्र जनै ॥ सिर पूरव जो तहती न अा
इय ॥ आवहि ता सुन रासु वर्धा गल रोइ उठै वहहो ततहा इय ॥ है शुभ सो मद दिया मा पि
ता घर हा इ यह उतिम जातिसु ना इय ॥ घा ट हि के पद तीन फरे फल संघ घरी यप शालि छि
गा इय ॥ ७६ ॥ इति मेषलग्न प्रश्नविचार ॥ मुकुट छंद ॥ वृषलग्न विषे सिसु जन्म अत
रो वहिं दाइ यु नी चि पिता घर वाहिर ॥ सिर दाहिन कंठ नरा तिहि जान समैं तिहि चारि
या तिहि छाहिर ॥ विय दोइ हु द्वार हि एक सु आडि लियें सुत ता दे तहा त्रिय था हिर ॥ पुनि
सो हरि या इ सरै कर संभु सु सात दिना प्रसु कष्ट सु जाहिर ॥ ७७ ॥ इति वृषलग्न प्रश्न वि
चार ॥ ॥ जुग लग्न मैं नरा सु दाहिनी थकु विशेष हरी सि ताव ॥ पहिं सा कु सो
स यमु नारि चारि रा इ एक जो वता व ॥ धाम मैं न वंश तो सुदा पपा हि पछ्छे हीन हा सुजा
न पुत्र कष्ट अष्ट छो म सो सु चंत रोग मैं वषान ७८ ॥ इति मिथुनलग्न प्रश्नवि

ज्यो० सिं०
२१२

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

चार॥ अथ कुं० ॥ कर्कलगनजो होइ सी ससताउनर जो दृहि । नरा दा हिनी जंघ वडी वरिया
सि ऐसो व हि । कुं डरि सो त्रियसत [redacted] धाम्म करू भराम्लू हिनेवा । देषो
वाहीसमै षोत पितवाषरिसो व हि । माता सु जन मसु षसो मले छी कहिके न्याजननपुनि
लहस न ससु संभुवा अे सुगाहि कर्कलग्न एचिन्ह गनि ॥ ७९ ॥ इति कर्कलगनस्त्री विचार
॥ कुंडलिया ॥ सिंहे लगन्न नागौरे सिर पूरव संजत गर्भि निक त्रियमन न हइ वके
कनियापुत इक कै कनि या पूत पाच त्रिय भीन रयेहा दो हारेइ वा सुतिफ टे त्रेषारप चेहा
चित न देस सिसु व्याधि जन मत हीरोदन मगन ॥ करगिरि वामन वजेद जरी पसिंहेलग
न ॥ ८० ॥ इति सिंहलगनस्त्री विचार कुंडली ॥ कं०॥ कन्या लगन न रावा चै लिय रुद
तश्रेल सिरजाम कनि यसुत निज रक दो हारे पाच सघरमै वाम फटे षाटके नो नि
पचै वा दाई नी ची होइ व्यथा मात को पिता चाल ये वाहे संभुय हमो इ ॥ ८१ ॥ इति क
न्यालगनस्त्री विचार कुं० ॥ जोतो लिन लगन कतह त्रियत हमा नन
कनि यसुत्ता इक जनन त वैर सिर पति मया हि निनी चीदारंनि नरा सु दाहिने कोष
कुवे पितु मंदिर वाहर लरिकाइ वा छोरकहा न रकान मसा अधिकारी कागुर वि
रली आल रु नैन वडे धर तुला इसा ॥ ८२ ॥ इति तुलालगनस्त्री विचार कुं०

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

रा.ग्रं०
२१४

८॥ लग्नस्थलिहोइसिसुउत्तरातिसीसमित्रियजुमातठाइयै। छातिपरजोनरा वापुथरवाहि रउत्तमसुदाइयै। षाटपददोरफटहोइपुनिरोगसुनाहिंनेनमाहियै। रोवहिसुअैलकछु पुत्रमतिवंतछातिकवीरकहाहियै ८३॥ [redacted] ॥इतिल ग्नधनलग्नस्थविचार॥ अथलग्नभेद॥ लग्नधनजोजनमपखवहिसीसलिपटो गलनराइसुवत्रियसातेहै। हगारमिनीउकत्रियासुउककाम्रिपुनि[redacted]दाइयसुउत्तमह तहछ्यातेहै। पुत्रइमयावहि विदेसपितु[redacted]विनदीपदियरसरहुसिसुरोव षाटपद साजइकहरपुनिकुंडनरसंभुइहिभालिनिहिगुनहोव ८४॥इतिधनलग्नवि चार॥ इकलाभेद॥ अलाभमहिसोईजानकहोइ तहांकछकछुमातलनेरोवत सुतसोईधरनिपराईनरादाहिनीकृषिभनै स्रवलापाचकेहोरतहा पुनिनीचीराईपि सुधरनाहीदियापीठिपाछेसुजरा ८५॥इतिभकालग्नस्थविचार॥ दूटपहाभे द॥ कुंभलगनरूपवेगिरेगलदहिनिजराहै पाचवियाइकसुतालियेसिरपछिम आहै पितुमंदिरसामेदियाचरनीचीराई ज्यानहोइजोमातकोगुनकुंभतहाई ८६ ॥इतिकुंभलगनस्थविचार॥ वेकल्लाभेद॥ मीनलग्नपुत्रहोइच्याविहीनरासुमी

जो०लि०
२१५

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

वे दाऽउन माझ मीस्रउ नरेकहीं जन्म होत वेगी रोग घाट याइ पाटतीन दापलो इ
वो पुधाम नाहिं संभु मीन चीन ॥ ८७ ॥ इति मीनलग्न प्रकाशिका ॥ लग्न वरन वर
॥ निज थान्हं ॥ मेष सुलाल कहौ वृष स्वेत हरी कहि जुग्म सुवर्न बषानौ ॥ पांडरि कर्क कहि
धूसर सिंह त्रिया पचरंग तिही पुनि जानौ ॥ स्याम तुला अलि पीत गुलाव धन्व मृग कौ द
वरोउ न मानौ ॥ कुंभहि भूरि कहौ पुनि संभुव मीनहि मीन समान प्रमानौ ॥ ८८ ॥ इति
लग्न वर्न ॥ चौपही ॥ वाउ रि मो रौ रंग विचारी ॥ ते लग्न औ रश्मि तिउ चा
औ कहु जोति ग्रं य विसेषी ॥ भाषिउ संभु जथा मति देषी ॥ ८९ ॥ कुंडलिका मेरा ग्रह जे
ई तिनि तुसा सो भाषि कहेई ॥ जिते होर मूलेरन सोई ॥ तिते घाट को फल गनोई ॥ ९० ॥ पर
प्रकार ॥ दिनना थ पर जो दिसा जो न ॥ दीपक सुजान सो दिसा तो न ॥ जिन होर में ग्रह
जानि सेऊ ॥ ति न गनु कुलो हम निम भयेऊ ॥ ९१ ॥ इति कुंडली भेद ॥ इति श्री गणेश
नतसिंहात्मज श्री मंगु विरचिताया षिधदितो प्रचटव व्य मम भरे वारन मेनाम
प्रकर्णो विसतन रंग ॥ ॥ इति श्री प्रचटा व संपूर्ण समाप्त ॥

CC-0.Courtesy Shri K S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0.Courtesy Shri K.S.Parihar Librarian Government District Library Varanasi. Digitized by eGangotri